इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल की

बेहतरीन ग़ज़लें

संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति

रमेश 'कँवल'

इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल की

बेहतरीन ग़ज़लें

संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति

रमेश 'कँवल'

Anybook

Published By

Anybook

Cell : 9971698930

E-mail : contactanybook@gmail.com

Website : www.anybook.org

Price in India : 799.00 /- INR

First published by Anybook in 2021

Copyright © 2021 Ramesh Kanwal

Printed and bound in India

Cover Design & Typesetting by Anybook

ISBN : 978-93-90944-01-9

The author asserts the moral right to be identified as the author of this work

All right reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by means, electronic or mechanical and including photocopying, recording or by any information storage and stored in retrieval system, without the prior permission in writing of the Publisher and Author, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्॥

आदित्य चौधरी

'गायत्री मंत्र पाठ हेतु तैयार आदित्य चौधरी'

भावार्थ : *उस सर्वरक्षक प्राणों से प्यारे, दुःखनाशक, सुखस्वरूप श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतरात्मा में धारण करें... तथा वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें...*

मंजु प्रसाद

तुमसे ही मेरी ख़ुशी, सुख का तुम आधार
स्वस्थ रहें दोनों सदा, बना रहे यह प्यार

समर्पण

सभी कोरोना योद्धाओं और कोरोना के कारण
जीवनपथ में हाथ और साथ छोड़ने वाले समस्त
शायरों, साहित्यकारों व कलाकारों को

श्रद्धांजलि

सबकी आँखों में नीर छोड़ गये
जानेवाले शरीर छोड़ गये

-ज़हीर क़ुरैशी

रमेश 'कँवल'

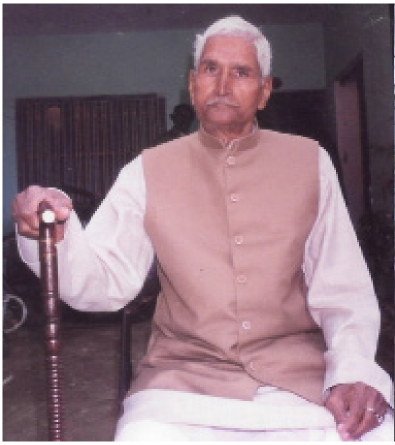

स्मृतिशेष प्रात: पूजनीया माँ कमला देवी

महाप्रयाण : 22 जुलाई, 2020

एवं

स्मृतिशेष प्रात: पूज्य पिताश्री हाकिम चन्द प्रसाद

महाप्रयाण : 5 फ़रवरी, 1999

जिन्होंने मुझे बोलना, चलना, ठुमकना, लिखना, पढ़ना एवं जीना सिखाया

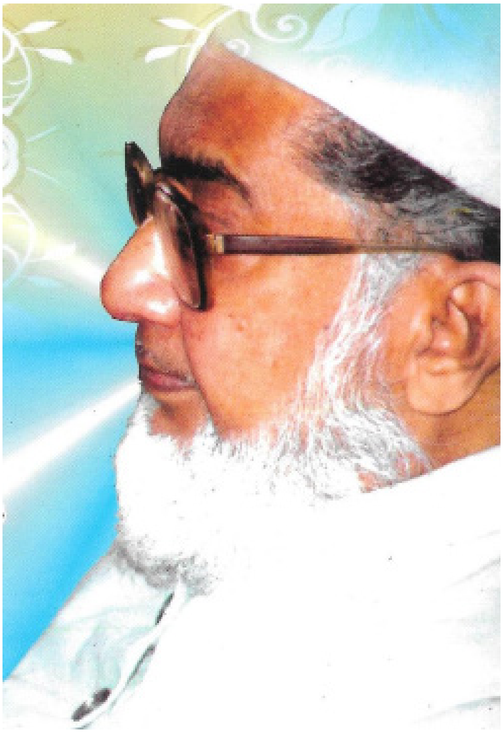

हफ़ीज़ बनारसी

तुमसे शुहरत मिली ज़माने में
वर्ना क्या था मेरे फ़साने में

यादें

दिवंगत शायरों-अदीबों के फ़ोटो और नाम

कुंवर बेचैन

29 अप्रैल, 2021

दरवेश भारती

3 मई, 2021

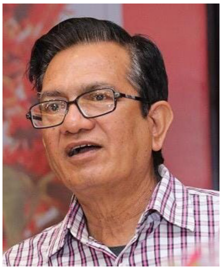

ज़हीर क़ुरैशी

20 अप्रैल, 2021

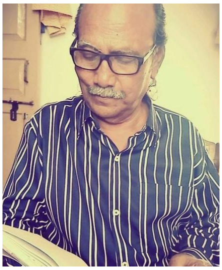

सुल्तान अख़्तर

21 अप्रैल, 2021

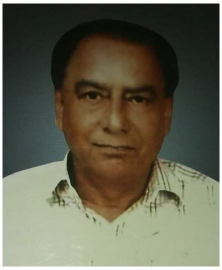

मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

17 अप्रैल, 2021

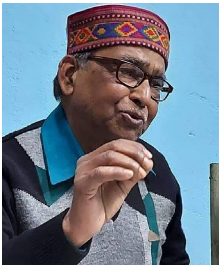

कवि घनश्याम

19 अप्रैल, 2021

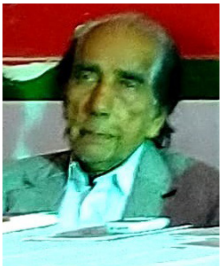

सैफ़ सहसरामी

16 अप्रैल, 2021

कुमार नयन

27 अप्रैल, 2021

गोविन्द राकेश

21 मई, 2021

यादें

दिवंगत शायरों-अदीबों के फ़ोटो और नाम

डॉ. रविन्द्र राजहंस

10 मई, 2021

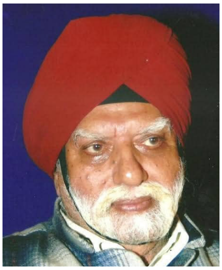

मेजर बलबीर सिंह भसीन

8 जून ,2020

पद्मश्री शांति जैन

01 मई, 2021

शमीम हनफ़ी

7 मई, 2021

डॉ. सतीश राज पुष्करणा

28 जून, 2021

शौकत हयात

21 अप्रैल, 2021

एम.ए.हक़, राँची

18 मई, 2021

नरेन्द्र कोहली

17 अप्रैल 2021

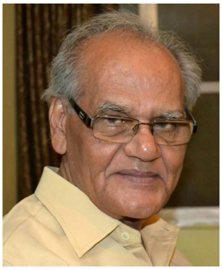

रमेश उपाध्याय

24 अप्रैल, 2021

यादें

दिवंगत शायरों-अदीबों के फ़ोटो और नाम

राजकुमार प्रेमी

29 अप्रैल, 2021

भगवन प्रलय अंगिका

2 मई, 2021

रोहित सरदाना

30 अप्रैल, 2021

पुरुषोत्तम नारायण सिंह

15 मई, 2021

प्रभु जोशी

4 मई, 2021

मुशर्रफ़ आलम ज़ौक़ी

19 अप्रैल, 2021

तबस्सुम फ़ातिमा

20 अप्रैल, 2021

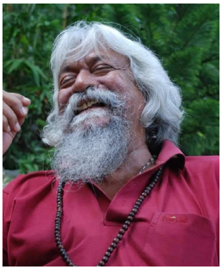

स्वामी जीवन साजिद
(मोहनलाल तिवारी)
निधन 2 जुलाई 2020

मधुकर गंगाधर

06 दिसम्बर, 2020

अनुक्रमणिका

यादें -दिवंगत शायरों-अदीबों के फ़ोटो और नाम 10

'21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के फ़ोटो 32

आमुख- डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' 40

संपादकीय-रमेश 'कँवल' 43

हिन्दी-छंदों और ग़ज़ल की बहरों में मात्रा-विधान - डॉ. ब्रह्मजीत गौतम 49

चार सालिम बहरों का विवेचन - दिल सीकरी 54

ग़ज़ल की प्रचलित 32 बहरें - नवीन सी चतुर्वेदी 65

कोरोना काल में साथ छोड़ने वाले साहित्यकार- शंभू पी. सिंह 77

यादें 80

- कुँअर बेचैन 81
- दरवेश भारती 82
- ज़हीर क़ुरैशी 83
- सुल्तान अख़्तर 84
- घनश्याम 85
- शांति जैन 86
- मनाज़िर आशिक़ हरगानवी 87
- कुमार नयन 88
- गोविन्द राकेश 89
- हैरत फर्रुख़ाबादी 90

धरोहर 91

कृष्ण बिहारी नूर 92

मनोहर शर्मा सागर पालमपुरी 93

प्रदीप रौशन 94

सालिम बहर : बहर-ए-मुतदारिक मुसम्मन सालिम हफ़ीज़ बनारसी के मतले 95

मशहूर शाइरों के मतले 96

मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े 98

बहर-ए-मुतक़ारिब मुसम्मन सालिम हफ़ीज़ बनारसी के मतले 100

मशहूर शाइरों के मतले 101

मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े 102

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी / रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे 105

इधर भी तबाही उधर भी तबाही 107

21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें 108

‘21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें’ के सुख़नवरों के जीवन साथी 109

1. हम्द - अरुण कुमार आर्य - ऐ ख़ुदा आसरा तेरी रहमत का है
बता ऐ ख़ुदा ये जहाँ किसलिए है 121

2. अकमल नईम सिद्दीक़ी -
ज़िंदगी है बहुत मुख़्तसर दोस्तो/अदावत अँधेरों को है रौशनी से 123

3. अनिरुद्ध सिन्हा 124
वक़्त के खौफ़ को यूँ सजाया गया/वही रोज़ खिच-खिच वही है अदावत 125

4. अनिल कुमार सिंह 126

मुझको मयकश न कह झूमता.../उनके होंटों पे जब भी हँसी.... 127

है ज़ुल्म-ओ-सितम की..../मुझे जिस दिन से तुमने अपना दीवाना.... 128

चलो ये ख़ास नुस्ख़ा आज से ही.../हुई आने-जाने की बिल्कुल.... 129

5. अमित अहद - 130

ये रहा बस तेरे बाद का सिलसिला/वफ़ा के सुहाने सफ़र को सुकूँ है 131

6. अय्यूब ख़ान बिस्मिल - 132

शर्म जिसकी रिदा सादगी पैरहन/न करना किसी पर भरोसा ज़ियादा 133

7. अरविन्द अज़ान - 134

क्यों भटकती रही उम्र भर ज़िन्दगी/उसे आ गया है तरस बेबसी पर 135

8. अरुण कुमार आर्य - 136

मुझको हीरा न मोती न धन चाहिए/रातें ढलती रहीं दिन भी ढलते रहे 137

जो ज़ुल्फ़ो से अपनी हवा .../बना दे दोस्त दुश्मन को है वो तासीर ... 138

न जाने इश्क़ ने कब दिल को दीवाना.../ये क्या हो रहा है जहाँ में इलाही 139

9. अशोक अंजुम - 140

वक़्त जीवन में ऐसा न आये कभी/भले सब इसे बदगुमानी कहेंगे 141

10. अशोक भण्डारी नादिर - 142

एक मुद्दत हुई हमसफ़र न मिला/नज़र में मेरा गर वो किरदार रखता 143

11. असग़र शमीम - 144

ऐसा वैसा बहाना नहीं चाहिए/नज़र आ रही हर तरफ़ अब सियाही 145

12. असीम आमगाँवी - 146

मेरे बारे में जो सोचता रह गया/किसी से अब कोई मिलने किसी के घर... 147

13. आनंद पाण्डेय तन्हा - 148

जब समझ में नहीं आये क्या माँग लें/वही तो कहें क्यों नशा छा रहा है 149

14. आराधना प्रसाद - 150

कितना वीरान है गुलसिताँ देखिये/उम्रभर हम सफ़र में भटकते रहे 151

चराग़ो-मुहब्बत जलाने से पहले/हुए एक मंज़िल के हम ऐसे राही 152

15. एजाज़ उल हक़ शिहाब - 153

इक नया ज़ाविया इक नयी रौशनी/ये कब तक कहेंगे कि कल देखते हैं 153

16. ऐनुल बरेलवी - 154

आँसुओं से नहाई हुई ज़िन्दगी/मुहब्बत मेरी आज ज़ाया नहीं कर 155

17. ओंकार सिंह विवेक - 156

दूर रंज-ओ-अलम और सदमात हैं/नहीं चाहूँ ख़ज़ाना या कोई.... 157

18. ओम प्रकाश नदीम - 158

तुम मिले तो मुझे हर ख़ुशी.../ये रिश्ता हर सफ़र हर मोड़ पर हर.... 159

19. करण कटारिया - 160

तर्क चाहत हुई, और क्या रह गया/फ़लक की कोख से बिछड़े जो... 161

मुहब्बत ने दी, मेरे हक़ में गवाही/मेरे पास आ, मेरी बात सुन... 162

ग़मे-हिज्राँ ने इन आँखों को ..../आज सहराओं में, सरख़ुशी... 163

20. कालजयी घनश्याम - 164

मुस्कुराते हुए तू अगर जाएगी/आज छत पर वही दिलकशी आ गयी 165

राह में इश्क़ की हम मचलते रहे/न अब हाल दिल का सुनाऊँ सभी को 166

वतन के हसीं राह के हम सिपाही/चपल चंचल नयन ने घर 167

21. काशिफ़ अहसन - 168

आपको देख कर सोचते.../मेरे लब पर कभी जब.../शबे-हिज्र में फिर... 169

22. कुमार पंकजेश - 170

माँगने अब लगी है क़ज़ा ज़िंदगी/अपनी हालत पे हमको हँसी आ गयी 171

ये सच है सभी को तो इक दिन है जाना/गुज़र तो रही मेरे दिल पर तबाही 172

जहाँ भी देखिए इंसाँ परेशानी में रहता है/तेरी सुहबत ने इक नादान को... 173

23. केशव शरण - ख़ूबसूरत नशीले नयन क्या कहूँ 174

मौत की रात में ज़िदगी आ गयी/याद करके ज़रा देखिए तो उसे 175

तुम्हारी महफ़िलों में मैं रहूँ इच्छा .../करूँ क्यों न उस रूप की वाह-वाही 176

चमन हैं कई, एक में घूम .../निछावर प्राण कर दूँ ऐसा दीवाना... 177

24. ज़ाहिद अब्रोल - 178

एक ग़ैबी-सी तलवार है कारगर/नदी के ज़रीये समुन्दर में उतरा 179

25. डॉ. अनीता सिंह - 180

नींद हो चैन की रात हो .../ ये रोटी खौफ़ की उस रात का ... 181

26. डॉ. आदर्श मिश्रा 'साहिबा' - 182

मोजिज़ा ये हुआ देखते-देखते/सभी दोस्त मुझको भुलाने लगे हैं 183

27. डॉ. आरती कुमारी - 184

कहना दिल ने कभी मेरा माना नहीं/तेरी याद में जो गुज़ारा गया है 185

'21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के जीवन साथी 186

28. डॉ.कविता विकास - 198

उससे बेहतर तो कोई नज़ारा नहीं/नित नये ख़्वाब आँखों में पलते रहे 199

अजब एक हलचल हुई है बदन में/मेरे दिल में तेरी मुहब्बतों का वो ... 200

करो कोशिश तो लाज़िम है सभी.../जिएगा क्या वो जिस को ख़ुद को... 201

29. डॉ. कृष्ण कुमार नाज़ - 202

जीत किसके लिए, हार किसके लिए/ समंदर में रहकर भी प्यासा रहा है 203

30. डॉ. नलिनी विभा नाज़ली - 204

दुनिया भर का है वो एक मेरे सिवा/बेघरी आयी फिर भुखमरी आ गयी 204

मुझे आँसुओं में डुबाकर न जाते/ बताएगी क्या, बेज़ुबाँ है सियाही 205

31. डॉ. नूतन सिंह - 206

साथिया बनके तो साथ चलते रहे 207

गिरे हो तो उठो ख़ुद ही, उठाने कौन.../यक़ीनी न कर दे हमारी... 208

चले आओ हमदम गुलाबी.../हमारी झील-सी आँखों को मयख़ाना... 209

32. डॉ. ब्रह्मजीत गौतम - 210

हम मिले थे कभी सतपदी की तरह/ये मुसीबत कहाँ से नयी आ गयी 211

तुम्हारी निगाहों से जिसने भी पी है/नहीं जा रही ये वबा या इलाही 212

हमारे दिल पे क्या गुज़री है.../ ख़ता हमसे हुई है क्या... 213

33. डॉ.भावना - 214

फट गया है हृदय छलनी चाहत हुई/बहुत यादें लाता है बारिश का आना 215

34. डॉ. यास्मीन मूमल - साँप का ज़हर फिर भी उतर जायेगा 216

मुझमें ऐसी भी क्या कुछ कमी .../मुहब्बत की बस्ती नयी 217

35. डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता शलभ - 218

ज़िंदगी है इसे तू न अख़बार कर/ मुहब्बत में हासिल गुहर देख लेना 219

36. डॉ. श्याम सखा श्याम - 220

घूमना है बुरा तितलियों की तरह/बात अपनी कहो कुछ मेरी भी सुनो 221

मुझे देके थपकी सुलाने लगी है 222

37. डॉ. सीमा विजयवर्गीय -मेरी ग़ज़लों में बस प्रेम ही प्रेम है 223

38. डॉ. सुधा सिन्हा सावी - 224

प्यार है आपको तो जता दीजिये/ मेरे होंटों पे माना हँसी आ गयी/

रोज उभरते रहे रोज ढलते रहे/लबालब है लब पर वफ़ा की सुराही 225

39. दीपक पुरोहित - 226

लाख आईने में वो सँवरता रहा/करे रद्द मुन्सिफ़ जो सच की गवाही/

सबको आती है मुझ पर हँसी, आ गयी 227

40. देववंश दुबे - 228

ज़िन्दगी की हक़ीक़त भुला दीजिये/चिराग़े-महब्बत की क्या रौशनी है 229

41. धर्मेन्द्र गुप्ता साहिल - 230

पाँव बेशक हैं जलते कड़ी धूप में/दर्द में याद यूँ आपकी आ गयी 231

ये मंदिर ये मस्जिद के झगड़े मिटायें/मेरे दोस्तों ने दी ऐसी गवाही 232

ख़ुशी का घर था जिसको तुमने.../गुज़ारा साथ जो हमने ज़माना याद... 233

42. निर्मला कपिला - 234

सच की तह तक ज़रा पहले जाया करो/कभी हिज्र देकर रुला तो न दोगे 235

43. निरूपमा चतुर्वेदी रूपम - 236

रुख़ बदलती हवा पुर-ख़तर देखिये/ये कैसी है आफ़त ये क्या हो रहा है 237

44. नीरज गोस्वामी - 238

मुश्किलों की यही है बड़ी मुश्किलें/नहीं है अरे ये बग़ावत नहीं है 239

45. प्यासा अंजुम - 240

कल की अख़बार से यह शिक़ायत.../मौत से लड़ के जब ज़िन्दगी ... 241

क़ज़ा से भी निपटने का क़रीना जानते.../सदा सच की देने जो ... 242

मेरे शहर की जब से बदली.../तुम्हारे इश्क़ ने मुझको है दीवाना बना... 243

46. प्रेम रंजन 'अनिमेष' - 244

आदमी के लिए आदमी अब .../भूले भटके कहीं से ख़ुशी.... 245

जिन्हें ज़िंदगी से शिकायत.../तरसते हैं खाने-पहनने को... 246

कुशल सब बताती है बेटी बियाही 247

47. प्रेम किरण - 248

क्यों है चेहरे का अब रंग फ़क़ दोस्तो/न मैं बोलता हूँ न घर बोलता है 249

48. मंसूर उस्मानी - 250

चाहे दिल ही जले रौशनी के लिए 251

49. मीना भट्ट - 252

अब कोई भी नहीं रहनुमा रह गया 253

50. रघुविन्द्र यादव - 254

हारकर हौसला.../अगर अब छुपाते.../लहू में हमारे तिजारत... 255

51. रमेश 'कँवल' - 256

कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है/कभी साथ उनको रखा करो कभी... 257

ज़हर की शाख़ पर ख़्वाब फलते रहे/करोना ने जमकर मचायी तबाही 258

ज़िन्दगी में मेरी ताज़गी आ गयी/ वो जो घर था, तुम से ही था वो घर... 259

52. रवि खंडेलवाल - 260

हाथ को हाथ देता दिखाई नहीं/शे'र में शे'र की, बानगी आ गयी 261

बिना बात की लड़ रहे हम.../बचाने को अपनी सदा बादशाही... 262

पुराने पड़ गये खण्डहर ज़रा.../अचानक वक़्त ने अपनों को बेगाना... 263

53. लोकेश कुमार सिंह 'साहिल' - 264

हर क़दम पर दिये तूने ग़म ज़िन्दगी/जो मुहब्बत कोई बाहमी आ गयी 265
जहाँ वोट की हो रही है उगाही 266
सिलसिला इब्तिदा से जारी है / कहीं भला-सा जता रही है... 267
54. विजय कुमार स्वर्णकार - 268
क्या पता कब ये दलदल हमें.../किसे दोष दें घर के सपने... 269
55. शुचि 'भवि' - 270
सबकी क़िस्मत में क्या आज हैं .../ख़त में जब गुफ़्तगू वो दिली आ.. 271
सुब्ह उगते रहे शाम ढलते रहे/भला दिल से अपने लड़ोगे तो कब तक 272
नज़र और कुछ दे रही है गवाही 273
'21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के जीवन साथी 274
56. शुभ चन्द्र सिन्हा - 286
गुफ़्तगू ख़ामुशी ही कराती रही/राज सब खोलती बेकली आ गयी 287
ख़्वाब जो साँस दर साँस जलते रहे/न हो प्यास तो कैसे टूटे सुराही 288
हँसी लब पर मगर दिल में छुपा... /ज़रा-सी तिश्नगी को हम ने पैमाना... 289
57. संजीव प्रभाकर - 290
बाख़बर हो जताना मगर बेख़बर/मुझे भूल जाने की आदत बहुत है 291
58. सतीश शुक्ल 'रक़ीब'- 292
फिर से शहनाइयाँ शामियाने में हैं/तिरे सर से तेरी बला जाए जब तक 293
59. सागर सियालकोटी - 294
लोग कुछ मुझ को यूँ आज़मा तो चले/राह चलते हुए तीरगी आ गयी 295
ग़ज़ल से ग़ज़ल इश्क़ करने लगी है/नज़र आ रही थी तबाही-तबाही 296
सफ़र कैसा है ये जिसकी मसाफ़त.../ज़माने के अज़ाबो-ग़म ने यूँ... 297

60. सुभाष पाठक ज़िया - 298

लुत्फ़ सारा मुहब्बत का जाता रहा/फ़लक से सितारों की बरसात होगी 299

61. सोनिया वर्मा - 300

गर बुरी आदतों का पतन.../मैं सूरत देखकर उसकी जो घबराई तो... 301

62. हरिवंश प्रभात - 302

जन्मदिन पर हसीं पैरहन देखिए / जिन्हें रौशनी की ज़रूरत हो आये 303

63. हिमकर श्याम - सामने आप मेरे रहा.../बेबसी, बेरुख़ी, बेकली आ... 304

भला क्या, बुरा क्या नहीं वास्ता कुछ/मिटेगी किसी रोज़ ग़म... 305

64. ज्ञान प्रकाश पाण्डेय - 306

पास रहना अजी! फिर.../ये रहबर! ये मंज़िल!../ज़िना है हवस है ... 307

65. अनुराग सुरूर - 308

ईद की ख़ुशनुमा लो घड़ी आ गयी/जनाज़ा किसी का उठा जा रहा है 309

66. अरविन्द असर - याद मुझको मेरी.../अदालत में चलती है झूठी... 310

67. इक़बाल दानिश - 312

हुस्न में जब कभी सादगी.../जहाँ खौफ़-ओ-दहशत की छायी... 313

68. डॉ. अब्दुल क़ादिर - 314

आह फिर रात तारों भरी आ गयी/आसमाँ सर पे उठाए हुए हैं 315

69. डॉ.कृष्ण कुमार प्रजापति- 316

मेरे घर एक नन्ही परी आ गयी/जिधर देखता हूँ उधर है तबाही 317

70. डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह - 318

तीरगी मिट गयी, रौशनी आ गयी/नहीं कर सकेगा प्रदूषण तबाही 319

71. ज़फ़र महमूद - गुल खिले तितलियों को.../हम मुहब्बत की राहों में... 320

72. नसर आलम नसर - आप के आते ही.../ मुसीबत बनी है तेरी... 321

73. नवीन सी चतुर्वेदी - 322

जैसे ही हाथों में ज़िन्दगी आ गयी/उठानी थी हम को सलाहों की गठरी 323

74. प्रेम पहाड़पुरी - 324

याद जब उनकी नाराज़गी आ गयी/इधर आ रहे हैं वो लेकर सुराही 325

75. पूनम सिन्हा श्रेयसी - 326

रोज़ मिलते रहे, दिल मचलते रहे/मुहब्बत मिरी दे रही है गवाही 327

76. राजकांता राज - 328

मेरी ख़ुशियों में माना कमी.../इश्क़ के बाग में शूल.../मुहब्बत में जब... 329

77. राजेंद्र तिवारी - 330

हँसते-हँसते ही बरसात सी आ गयी/ये माना मेरी कोई हस्ती नहीं है 331

78. विजय वाजिद - मुझमें भी, तुझमें भी तो कमी आ गयी 332

79. कुमारी स्मृति कुमकुम - हर तरफ़ दहशतों.../ नज़र और कुछ दे... 333

80. शकील सासरामी - 334

थी ज़रूरत जो घर की वह.../ रुख़ जो बदला किसी ने तो... 335

81. शरद रंजन 'शरद'- 336

फिर से चिट्ठी वही सुबह की आ गयी/ठोकरें खा गिरे उठ के चलते रहे 337

भला जो भी उसका तो होगा भला ही 338

82. फ़रीदा अंजुम - सियासत फ़क़त अब है राहे-तबाही 339

83. सईद रहमानी - दोस्ती में ये कैसी.../उमीदों की खेती को मिलता... 340

तुम्हारे हुस्न ने लोगों को दीवाना बना डाला 341

84. सिद्धेश्वर - 342

दूर अँधेरा हुआ, रौशनी आ गयी/नज़र और कुछ दे रही है गवाही 343

85. सुनील कुमार - 344

इश्क़ कर देख ली बेबसी आ गयी/मुहब्बत जो की तो वफ़ा से निबाही 345

86. सुरेन्द्र नाज़ - वो महीना वो दिन वो घड़ी.../ कोई जिसमें खिड़की कोई... 346

87. ओसैद रहमान - हादसे सब मेरे सर से टलते रहे 347

88. के.पी. ‘अनमोल’ - 348

तुम्हें जिस भरोसे का सर काटना था 349

89. कैलाश मनहर - 350

उदासी को ओढ़ा उदासी को पहना/उठ रहे हैं गाँव से डेरे मगर 351

90. ओमप्रकाश खींची - 352

उबूरी है सब कुछ जहाँ आरज़ी है / ग़रीबी, बिमारी, अशिक्षा, सियाही 353

‘21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें’ के सुख़नवरों के जीवन साथी 354

91. राजेश कुमारी राज - 358

बहारों के दिलकश ये साए न होते/चला जा रहा तू किधर बोल राही? 359

92. प्रशांत कुमार मिश्र - ख़ता गर मेरी आशनाई .../तुम्हारे इश्क़ ने यूँ ... 360

93. सुधीर कुमार प्रोग्रामर - नहीं चाँद फिर तो बहारों में हो 361

94. चैतन्य चंदन - 362

वतन की फ़िज़ा में मची है तबाही 363

95. डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव - यक़ीं कैसे कर लूँ तेरी बेगुनाही 364

96. देवेंद्र गौतम - तबाही... तबाही... तबाही... तबाही 365

97. डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ - 366

भला इससे बढ़कर हो क्या बेपनाही 367

98. प्रणय कुमार सिन्हा - 368

नज़र और कुछ दे रही है गवाही 369

सालिम बहर : बहर ए-हज़ज मुसम्मन सालिम में

हफ़ीज़ बनारसी के मतले 371

मशहूर शायरों के मतले 372

मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े 374

ईश वंदना - ये दिल ढूँढ़े तुझे हर पल कहाँ भगवन छुपा 376

माँ - बड़ा कितना भी हो जाऊँ मगर.../न जाने किस लिए कुछ लोग... 377

हमारा ज़र्फ़ है वरना ज़बाँ..../दुखों की बस्तियाँ आबाद थीं जब 378

अगर दिल से कहूँ ये दौर ही मनहूस.../मुसलसल रातभर आँखों से रिसता... 379

कमाल-ए-ज़ब्त की होगी बयाँ.../ ये क़ुदरत का हसीं बर्तन ग़िलाज़त से... 380

तुम्हारे कारख़ानों में, हमारा ख़ून जलता है 381

हवा-पानी की साज़िश से रही यूँ.../ फटी गंजी, फटी पनही मगर ये शान... 382

ग़ज़ल में मुस्कुराहट व्यंग गुलकारी.../ कभी मेरा ग़मों से रिश्ता-नाता... 383

हुई तेरी इनायत जब, मिला तेरा.../ मेरे वो प्यार में तो है, मगर मेरा... 384

मेरे हमदम तुझे मेरी ख़ुशी और.../ बहाते हो लहू इंसान का हो किस... 385

गुरुद्वारे, सनमख़ाने, कलीसा-ओ-हरम उसके 386

हुए हालात हैं बदतर दिल-ए-ग़मगीं.../न कोई तीर है पंछी न कोई जाल... 387

तुम्हारे मन में दरिया लाँघने का भाव.../वफ़ा की बात पर उसको बड़ा... 388

मेरी आशिक़ मिज़ाजी के भले चर्चे 389

सँभलकर राह में चलना वही.../हमारी ख़ुशनसीबी के सितारे हैं... 390

जहाँ में इज़्ज़तो-शोहरत किसे.../ कभी कहतीं, कभी सुनतीं, तेरी आँखें... 391

जिसे पढ़ने को जाना है उसे नौकर.../वो अपनापन वो भोलापन वो... 392

शजर को तुम बचाती हो बड़ी.../ तसव्वुर के ही दम पे जो समर की... 393

वफ़ा का जाम ख़ुद ही क्यों पिये रहते हो अक्सर तुम 394

जुनूँ की रौशनाई से कहानी इक नयी लिक्खें 395

कभी पत्थर कभी काँटे कभी ये.../ बताओ तुम कब आयेगा हमारे साथ... 396

हर इक बीमार को उपचार की.../ किसी की याद में जीना तड़पना और... 397

तमन्ना सरफ़रोशी की ले सरहद पर खड़ी होती 398

मिटाने को इजारा हुस्न का तरकीब ये की है 399

ये किसने चलती-फिरती सड़कों को सुनसान कर डाला 400

सभी ख़ुशहाल हों क्या रास्ता है.../ मुहब्बत भी निभाई है अदावत भी... 401

फ़क़त मेरी नहीं है बात, ये जज़्बात सबके हैं 402

बड़ी नाज़ुक, बड़ी शीरीं, नहीं.../ दबा ली दाँत से उँगली कि ऐसा हो... 403

ज़रा भी हौसला होता तो तूफ़ाँ से.../ सभी की कुछ न कुछ पहचान भी... 404

नहीं रखते हैं जो आधार कुछ अच्छे.../ रवानी गर नहीं हो तो नदी अच्छी... 405

बहरे-हज़ज मुसम्मिन सालिम - बस इतनी बात का यारों ने ... 406

बढ़ा के तल्ख़ियाँ दिल में जो अंजाना.../अगर देखो तो इक शीशे को... 407

वो जैसा चाहते थे, मुझको मनमाना बना डाला 408

भला क्यूँ उस ने दोज़ख़ अपना.../हमें मख़्मूर उन आँखों ने मस्ताना बना... 409

मुझे बेफ़िक्र तरबीयत ने मस्ताना... /अदाओं ने तुम्हारी मुझको दीवाना... 410

नगर-क़स्बे को जब हाकिम ने वीराना बना डाला 411

जब उसने ज़ीस्त का अंदाज़ शाहाना बना डाला 412

ख़ुदा की फ़िक्र ने ख़ुद से ही बेगाना बना डाला 413

तुम्हारी आँख ने कितनों को दीवाना.../तिरी आवारगी ने आज अफ़्साना... 414
यूँ ढाई आखरों ने हमको दीवाना बना डाला 415
हमारी रूह को भी उसने तहख़ाना.../मिला ख़ुद से ख़ुदी को हमने पैमाना... 416
हूजूमे-यास ने ऐसा सियहख़ाना .../नमक, मिर्ची, खटाई डालकर गाना ... 417
सालिम बहर - बहरे-कामिल मुसम्मन सालिम - वो फ़ुसूने-जल्वा-ए-यक ... 418
मशहूर शाइरों के मतले 419
मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े 420
हम्द - तू छुपा है सबकी निगाह से कोई तुझसे फिर भी छुपा नहीं 422
मैं उठाये अपनी ही लाश को खड़ा.../ न थका कभी न बुझा कभी न ख़फ़ा... 423
मेरी जाँ नशे में नहीं हूँ मैं तेरे हुस्न का.../चलो आज सबको बता दिया... 424
अजी कुछ ज़बाँ भी हिले-डुले कुछ.../ तू चली गयी तो लगा यही मेरी... 425
है चली ये कैसी यहाँ हवा ये.../ तुझे देश सौंपा है इसलिए कि दुरुस्त... 426
तिरे ग़ाफ़िलाना मिज़ाज में, कोई.../ जो तू ज़िन्दगी में न मिल सका मुझे... 427
यूँ ही गर्दिशों की गिरफ़्त में.../ यूँ न याद आ मुझे अजनबी... 428
नहीं साँस भी ली थी ढंग से.../ जो मेरा न था वो मिला नहीं... 429
मुझे इश्क़ का तो पता नहीं.../ वो जो साथ तेरे रहीं सदा वही... 430
मेरी ज़िंदगी का उसूल है कि.../ नये हादसे को न जोड़िए, गए 431
मुझे क्यों लगे यही, बस यही, तू यहीं कहीं मेरे पास है 432
हुआ किसलिए है तू बेवफ़ा.../ ऐ ख़ुदा यही है दुआ मेरी... 433
जो कहा किसी ने कभी मुझे.../ नया गीत हो, नया साज़ हो... 434
तू किसी का ख़्वाब हो जब तलक मुझे देखने तो दे तब तलक 435
ये नये उसूल का शहर है.../कहीं और ऐसी लचक नहीं... 436

मेरा हमनवा मेरा हमनशीं, मेरा चैन मेरा नसीब है 437

न चराग़ आस का है कहीं, न ही आसमाँ में क़मर अयाँ 438

कोई रहगुज़र न हो हमसफ़र ये सफ़र रहेगा यक़ीन है 439

तेरी हर ख़ुशी का ख़याल हो.../मुझे मुन्तिज़र न रखा करो... 440

ये जो बादलों के पहाड़ हैं कोई.../ किसे है ख़बर सुने कौन अब... 441

मेरी ज़िन्दगी तू मुझे बता, मेरी बेबसी का है नाम क्या 442

मैं हूँ बावफ़ा या कि बेवफ़ा करे तू सवाल तो क्या कहूँ 443

अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया मिसरा-ए-तरह 444

कई फूल नज़रों में खिल उठे वो जो राह में मुझे तक गया 444

न हवा चली, न धुआँ उठा.../ मुझे क्या हुआ मेरी आँख से... 445

वो लगा-लगाके जो बू गया.../ वो हमारे वस्ल की शाम थी... 446

रखे दो क़दम ज्यों ही आपने.../ मेरे हमसफ़र को ये क्या हुआ कि... 447

वही था जो मूनिस-ओ-मेहरबाँ.../ चला जा रहा था अँधेरों में... 448

जो बना सभी का था राहबर वही.../ न इधर दिखे न उधर दिखे... 449

कभी चाँद बनके चमक गया, कभी शम्स बनके दहक गया 450

मेरा सूनापन मेरा आशना मुझे छोड़ मोड़ तलक गया 451

उसे शोहरतों की हवा लगी, तभी चार दिन में बहक गया 452

कभी बुलबुलों-सा चहक गया कभी.../ हुआ इस क़दर वो निगेहबाँ कि... 453

सिवा इसके हो कोई चाह क्यों मैं तो ढाई हर्फ़ों तलक गया 454

वो हबीब है कि रक़ीब है मैं.../ तेरी याद का वो जो फूल है... 455

अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो मिसरा-ए-तरह 456

वो गली-गली वो नगर-नगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो 456

वो जो प्यार मुझसे था पुर-असर तुम्हें याद हो कि न याद हो 457
जहाँ हम खड़े थे वो रहगुज़र.../ वो हमारे इश्क़ की रहगुज़र... 458
था यहीं पे छोटा-सा अपना घर.../ वो जहाने-इश्क़ की रहगुज़र तुम्हें... 459
वो अजीब दौर था हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो 460
रहे जन्म-जन्म में हमसफ़र.../ वो दिवानगी सरे-अंजुमन तुम्हें... 461
मेरी इल्तिजा रही बेअसर, तुम्हें याद हो कि न याद हो 462
मुझे याद है वो हसीं सफ़र तुम्हें.../ वो सुहानी शब, वो हसीं सहर... 463
भरे पाँवों से थे ये रहगुज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो 464
मिले बारहा ही तो रहगुज़र.../ थे ग़रीक़े-इश्क़ भी सर बसर... 465
यही राह जाती थी सबके घर तुम्हें याद हो कि न याद हो 466
अन्य प्रचलित बहरों में कुछ और बेहतरीन ग़ज़लें 467
21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के फ़ोटो 469
'21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के जीवन साथी 470
महा मृत्युंजय मंत्र 471
99. विज्ञान व्रत- 472
आपका ख़त मिला.../आप कब किसके../सिर्फ़ क़िस्सों में ... 473
आपसे रिश्ता हुआ /क्या बनाऊँ आशियाँ/है अजब ये ख़ामुशी 474
मुझ पर कर दो.../मै कुछ बेहतर ढूँढ़.../जुगनू ही दीवाने... 475
भर दे साक़ी अब पैमाना 476
उनका रोज़ बहाना भी/वो तब तक दरिया न हुआ 477
100. कृष्ण कुमार 'बेदिल'- 478
हर तरफ़ एक तीरगी है.../ राख के ढेरों में कुछ.../ज़हर के कोने से जब... 479

क्या हुआ तुमको अगर चेहरे बदलना आ गया/ कुछ इधर रक्खा गया तो... 480

ज़िंदगी का ख़ूबसूरत फ़लसफ़ा.../ हर नयी ईजाद की कल तक... 481

होड़ कितनी मच रही है चारपाई के लिए 482

लोकप्रिय साहित्य को जब हम समर्पित हो गये 483

101. राजेश जैन 'राही'- 483

प्यार की कहानी अब हो गयी.../बारिशों में आ जाओ प्यार... 485

102. दिनेश 'तपन' 486

घर नहीं होता दरो दीवार से 487

लाज में लिपटा हुआ.../आदमी बिकने लगा.../तू ख़याल-ए-यार में... 488

मैं दिल की ख़ता लिक्खूँ.../वो सबका है मगर मेरा नहीं है 489

103. ताराचन्द 'नादान' - 490

चंद अश'आर देखिए.../तेरा जल्वा हर एक.../ मेरी दुखती रगें... 491

लोग जब हालचाल पूछेंगे.../आयें क्यों हम तुम्हारी दुनिया में... 492

सिर्फ़ उम्मीद पर टिकी मिट्टी/ख़त हमें भी लिखा करे कोई 493

नारेबाज़ों में गूँगे ग़म जैसे/ये हक़ीक़त कि ख़्वाब है कोई 494

क़तरा-क़तरा पिघल रही हूँ मैं/मौत का इन्तज़ार सारा दिन 495

अब वो पहले-सी मुलाक़ात.../तेरे क़दमों को ढलक कर जो छुएँगे आँसू 496

फ़लक को कैसे बताएँगे.../हैं एक सफ़ में क़लंदर भी मैं भी दुनिया भी 497

ये सोच-सोच के करते हैं.../ रोकें न अपनी फ़िक्र को पतझड़... 498

शामिल मैं मुद्दतों से.../मैंने कहा कि जीते रहो... 499

बुझने न दो चिराग़े-वफ़ा जागते रहो/लगते शराब के हैं पियाले तुम्हारे ख़त 500

उसने नज़र नज़र से मिलाई ज़रा-ज़रा/अपनों के दरमियान सलामत नहीं रहे 501

नाज़ुक बदन लिये हुए मैं.../हिम्मत पे सिर्फ़ अपनी भरोसा... 502

यक़ीं नहीं था मुझे कि तुम भी ज़माने भर की कही कहोगे 503

हमारी जड़ में है खाद-पानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर 504

उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं योमे-वफ़ात पर 16 जून 2021
की शाम 7 बजे ज़ूम क्लाउड पर एक ऑनलाइन शामे-ग़ज़ल की रूदाद 505

हँसते-हँसते तय रस्ते ..../दिखा कब सही शख़्स था... 506

मेरे हाथों की लकीरों को तू गाढ़ा कर दे 507

दिल ये कहता है कोई कहानी लिखूँ 508

'2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' पर प्रतिक्रियाएँ 509

मैंने तुमसे प्यार किया है, सब कुछ...-गीत डॉ. यास्मीन मूमल 522

शायरों के जन्म दिन 523

शायरों के शुभ विवाह की तिथियाँ 524

शायरों के शहर और राज्य 525

हार्दिक आभार संसूचन 526

'21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के फ़ोटो

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'

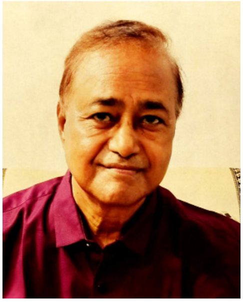

रमेश 'कँवल'

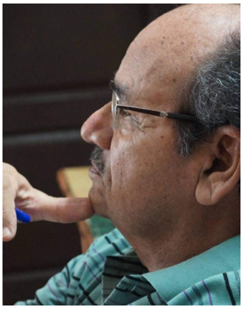

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

दिल सीकरी

नवीन सी चतुर्वेदी

शंभू पी.सिंह

अकमल नईम सिद्दीक़ी

अनिरुद्ध सिन्हा

अनिल कुमार सिंह

अमित 'अहद'

अय्यूब ख़ान बिस्मिल

अरविंद अज़ान

अरुण कुमार आर्य

अशोक अंजुम

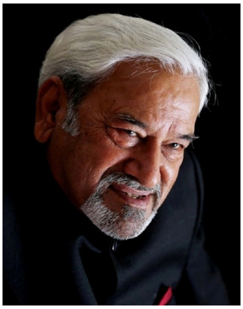

अशोक भण्डारी 'नादिर'

असग़र शमीम

धर्मेंद्र बाबूलाल भालेकर

आनन्द पाण्डेय तन्हा

आराधना प्रसाद

एजाज़ उल हक़

'ऐनुल' बरौलवी

ओंकार सिंह विवेक

ओम प्रकाश नदीम

कमल कटारिया 'करन'

घनश्याम राम

काशिफ़ अहसन

कुमार पंकजेश

केशव शरण

ज़ाहिद अबरोल

डॉ. अनिता सिंह

डॉ. आदर्श मिश्रा

डॉ. आरती कुमारी

डॉ. कविता विकास

डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

डॉ. नूतन सिंह

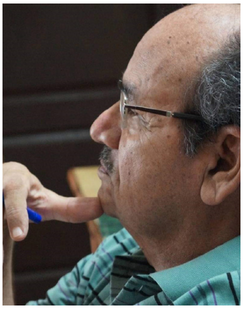
डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

डॉ. भावना

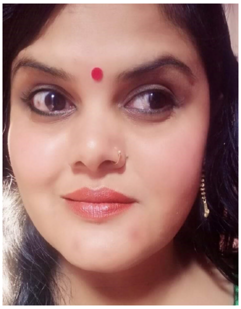
डॉ. यासमीन मूमल

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'

डॉ. श्याम सखा 'श्याम'

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा

दीपक पुरोहित

देव वंश दुबे

धर्मेन्द्र गुप्ता साहिल

निर्मला कपिला

निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'

नीरज गोस्वामी

प्यासा अंजुम

प्रेम रंजन 'अनिमेष'

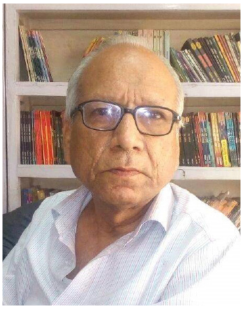
प्रेम किरण

मंसूर उस्मानी

मीना भट्ट

रघुविंद्र यादव

रवि खण्डेलवाल

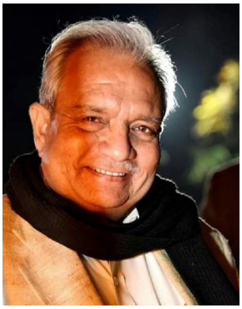
लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

विजय कुमार स्वर्णकार

शुचि 'भवि'

इं. शुभचन्द्र सिन्हा

संजीव प्रभाकर

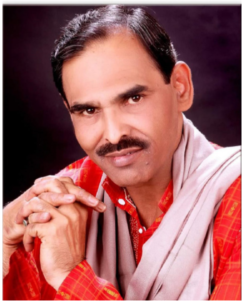

सतीश शुक्ला 'रक़ीब'

सागर सियालकोटी

सुभाष पाठक 'ज़िया'

सोनिया वर्मा

हरिवंश प्रभात

हिमकर श्याम

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

अनुराग "सुरुर"

अरविन्द असर

इक़बाल दानिश

डॉ. अब्दुल क़ादिर

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

ज़फ़र महमूद

नवीन सी चतुर्वेदी

प्रेम कुमार शर्मा

पूनम सिन्हा श्रेयसी

राजकान्ता राज

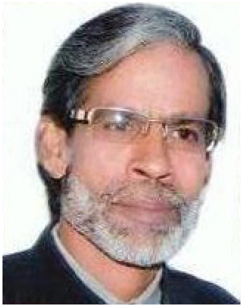
राजेन्द्र तिवारी

विजय वाजिद

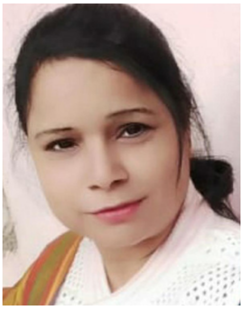
कुमारी स्मृति कुमकुम

मोहम्मद शकील ख़ाँ

शरद रंजन 'शरद'

फ़रीदा अंजुम

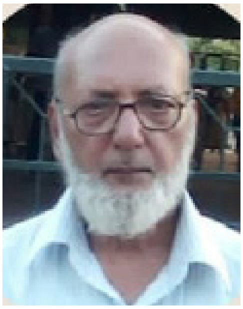
सईद रहमानी

सिद्धेश्वर

सुनील कुमार

सुरेंद्र नाज़ बदायूँनी

ओसैद रहमान

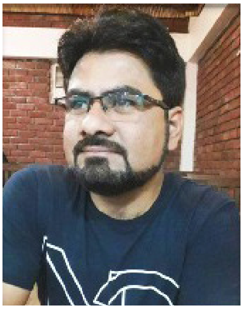
के. पी. अनमोल

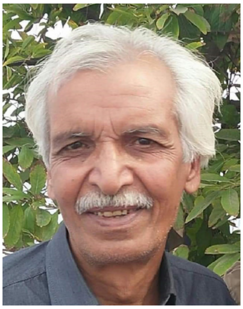
कैलाश मनहर

राजेश कुमारी राज

प्रशांत कुमार मिश्र

आमुख

21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें
मनोयोग से परिपूर्ण ग़ज़लों का संकलन

- डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

अभी पिछले वर्ष की ही तो बात है, आदरणीय रमेश कँवल जी द्वारा संकलित व संपादित ग़ज़ल-संकलन '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' प्रकाशित हुआ। 342 पृष्ठीय इस पुस्तक में सम्मिलित 124 रचनाकारों की ग़ज़लें सम्मिलित हैं। यह संग्रह जब मुझे प्राप्त हुआ तो मैं यह देखकर हैरान रह गया कि कँवल जी ने उसे बड़े मनोयोग से सजाया-सँवारा है। प्रत्येक रचनाकार का सचित्र परिचय और पाँच-पाँच ग़ज़लें उसमें सम्मिलित की गयी थीं। मेरी दृष्टि में यह पहली पुस्तक थी, जिसमें किसी संपादक द्वारा रचनाकारों का प्रदेशवार, निवास-स्थानवार, जन्मतिथिवार और शैक्षिक योग्यतावार शीर्षक देते हुए अलग से विवरण दिया गया था। यानी किसी शोधार्थी को रचनाकारों का विवरण जानने के लिए पूरी पुस्तक उलटने-पलटने की आवश्यकता नहीं है। संपादक के रूप में कँवल जी का यह परिश्रम अनुकरणीय है।

कँवल जी '2021 की ग़ज़लें' नाम से एक व्हाट्सऐप ग्रूप भी चलाते हैं, जिसमें 228 सदस्य हैं। ग़ज़ल में उनकी विशेष रुचि है और इस विधा के लिए वह कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' के बाद वह '21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' नाम से फिर पुस्तक प्रकाशित करा रहे हैं। लेकिन यह पुस्तक पहली से अधिक विशिष्ट है। इसमें उन्होंने चार सालिम बहरों- मुतदारिक मुसम्मन, मुतक़ारिब मुसम्मन, कामिल मुसम्मन, हज़ज मुसम्मन पर ही ग़ज़लें आमंत्रित की हैं। इन्हीं चार बहरों पर मिसरा-ए-तरह दिए गये हैं, जो इस प्रकार हैं-

1. फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन

    1. आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी
    2. रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

2. फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन

    नज़र और कुछ दे रही है गवाही

3.मफ़ाईलुन, मफ़ाईलुन, मफ़ाईलुन, मफ़ाईलुन

    बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

4. मु-त-फ़ाइलुन, मु-त-फ़ाइलुन, मु-त-फ़ाइलुन, मु-त-फ़ाइलुन

    1. अभी दो क़दम भी चला न था, मेरे साथ-साथ कि थक गया
    2. अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

उक्त चारों मिसरों पर कही गयी ग़ज़लें इस पुस्तक में शामिल हैं। चूँकि कुछ रचनाकार तरही ग़ज़लें कहने से परहेज़ करते हैं, इसलिए उक्त बहरों में ग़ैर-तरही ग़ज़लें भी आमंत्रित की गयी थीं, जो इसमें सम्मिलित हैं।

इसके अलावा कँवल जी ने अपने उस्तादे-मुहतरम क़िब्ला हफ़ीज़ बनारसी साहब की याद में गठित संस्था 'बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना' के बैनर तले 16 जून 2021 को ज़ूम पर एक ऑन लाइन मुशायरे का भी आयोजन किया। हफ़ीज़ बनारसी साहब की 13वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में 23 रचनाकारों द्वारा ग़ज़लें पढ़ी गयीं। इन ग़ज़लों में से भी कुछ ग़ज़लें इस पुस्तक में सम्मिलित हैं। पुस्तक के आरंभ में उक्त बहरों से संबंधित आलेख भी दिए गये हैं। इसी के साथ गतवर्ष प्रकाशित पुस्तक '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' पर रचनाकारों द्वारा की गयी समीक्षाएँ और टिप्पणियाँ भी इस पुस्तक का हिस्सा बनी हैं।

कँवल जी ईश्वरीय व्यवस्था में विश्वास करने वाले व्यक्ति हैं। धार्मिक पूर्वजों का हृदय से सम्मान करते हैं। उनकी भारतीय संस्कृति में अटूट आस्था है। यही सबब है कि पुस्तक के आरंभ में उन्होंने गायत्री मंत्र और अंत में महामृत्युंजय मंत्र अर्थ सहित दिया है।

इधर मैंने यह महसूस किया है कि ग़ज़लों, गीतों, दोहों पर बहुत-से संपादित और आलोचनात्मक ग्रंथ आ रहे हैं। उन्हें देखकर तो प्रसन्नता होती है, लेकिन पढ़कर निराशा हाथ लगती है। कारण यह है कि कतिपय संपादकगण और आलोचक संबंधित विधा के शिल्प-विधान से परिचित नहीं हैं। ऐसी स्थिति में क्या तो संपादन होगा और क्या स्वस्थ आलोचना होगी।

मेरा मानना है कि संपादक को निरंकुश होना चाहिए। वह मात्र संकलनकर्ता बनकर न रह जाए। और यह कार्य वही कर सकता है, जो उस विधा का जानकार हो। कँवल जी ने वही किया है। उन्होंने सबसे ग़ज़लें तो आमंत्रित की हैं, लेकिन प्रत्येक ग़ज़ल का उन्होंने बारीकी से निरीक्षण भी किया है। कतिपय रचनाकारों की ग़ज़लों में दृष्टिगत हो रही शिल्पविषयक त्रुटियों का निराकरण भी किया है। मैंने यह महसूस किया है कि वह जिस भी कार्य का बीड़ा उठाते हैं, उसे पूरे मनोयोग से करते हैं।

मैंने कभी एक मक़्ता कहा था-

सबको साथ में लेकर चलना कितना मुश्किल है ऐ 'नाज़'
एक क़दम आगे रखता हूँ, इक पीछे रह जाता है

वास्तव में सबको साथ लेकर चलना बड़ा मुश्किल काम है। सबकी अपनी ईगो है। सोशल मीडिया पर कोई समूह निर्बाध रूप से निरंतर चला पाना आसान नहीं है, क्योंकि वहाँ अलग-अलग मनःस्थितियों के लोग होते हैं, सभी में सामंजस्य बैठा पाना बड़ा कठिन है। लेकिन, कँवल जी अपने ग्रूप '2021 की ग़ज़लें' को सफलता के साथ चला रहे हैं।

पुस्तकें किसी भी रचनाकार को सिर्फ़ प्रसिद्ध ही नहीं करतीं, बल्कि उसे यशस्वी भी बनाती हैं। और यश जीवन के साथ भी रहता है और जीवन के बाद भी। इस पुस्तक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं आदरणीय रमेश कँवल जी को बधाई देता हूँ और माँ सरस्वती से प्रार्थना करता हूँ कि वे इनकी साहित्यिक यात्रा की निरंतरता इसी उत्साह के साथ बनाए रखें।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

दिनांक : 19.6.2021

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
- 9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी
काँठ रोड, मुरादाबाद-244001
मो. 99273-76877; 98083-15744
Email : kknaaz1@gmail.com

संपादकीय

मानते वो न भले, बात तो सुन ली जाती
कम से कम इतनी इजाज़त तो मुझे दी जाती *

-रमेश 'कँवल'

जी ! '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' के संपादन के दौरान एक से बढ़कर एक ख़ूबसूरत ग़ज़लों की चाँदनी में नहाने और विभिन्न बहरों की धूप में मन सुखाने का मौक़ा मिला। बचपन में जब रेडियो पर दिलकश आवाज़ में रोमांटिक गीत सुनने में मगन रहता था तब नहीं पता था कि नग़्मानिगारों को ऐसे गीत लिखने के लिए कितनी परेशानियों से गुज़रना पड़ता होगा। गीत सुनने के साथ ही सपने बुनने भी शुरू हो गये। बहर की बाक़ायदा तालीम तो आज तक नहीं पा सका लेकिन रेख़्ता और गूगल के दौर में ज़रूरी जानकारियाँ आत्मसात करता रहा। जी में आया क्यों नहीं चुनिन्दा बहरों में दोस्तों को ग़ज़ल कहने की ज़हमत-ए-सुख़न दूँ। तरही मुशायरे तो पहले से होते आये हैं। इन पर अभ्यास करने से शे'र कहने की सलाहियत में निखार आता है। कुछ लोग परेशान भी हो जाते हैं। अनेक नामवर शायरों ने किसी के मिसरा-ए-तरह पर ग़ज़ल कहने में अपने मेयार की तौहीन समझी। कुछ ने कहा कि वे तरही ग़ज़ल नहीं कहते तब मैंने उस्ताद-ए-मरहूम हफ़ीज़ बनारसी के मिसरा-ए-तरह पर तरही ग़ज़ल कहने की दावत-ए-सुख़न देने के साथ-साथ निम्न 4 सालिम बहरों का इन्तख़ाब किया ।

1. सालिम बहर : बहर ए-हज़ज मुसम्मन सालिम
अर्कान : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन
मात्राक्रम : 1222 1222 1222 1222
मिसरा-ए-तरह : बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला
क़ाफ़िया : पैमाना, मयख़ाना, दीवाना मस्ताना वग़ैरह
रदीफ़ : बना डाला

2. सालिम बहर : बहर-ए-मुतदारिक मुसम्मन सालिम
अर्कान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
मात्राक्रम : 212 212 212 212
मिसरा-ए-तरह : आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी
क़ाफ़िया : रौशनी, हँसी, कमी, बंदगी वग़ैरह
रदीफ़ : आ गयी

3. सालिम बहर 3 : बहर-ए-मुतक़ारिब मुसम्मन सालिम
अर्कान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
मात्राक्रम : 122 122 122 122

मिसरा-ए-तरह : नज़र और कुछ दे रही है गवाही
क़ाफ़िया : सियाही, बादशाही, राही, वाहवाही वग़ैरह
रदीफ़ : नहीं है (ग़ैर मुरद्दफ़)

4. बहर-ए-कामिल मुसम्मन सालिम
अर्कान : मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन
मात्राक्रम : 11 212 11 212 11 212 11 212
मिसरा-ए-तरह : अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया
क़ाफ़िया : लपक, बहक, फ़लक, झलक वग़ैरह
रदीफ़ : गया
और
अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो
क़ाफ़िया : कारगर, हमसफ़र, मुख़्तसर, जिगर, नज़र, घर वग़ैरह
रदीफ़ : तुम्हें याद हो कि न याद हो

शुरू-शुरू में लोग इस नयी व्यवस्था से ताल-मेल बैठाने में सहज नहीं हो सके लेकिन फिर ग़ज़लें मुझे दस्तयाब होने लगीं। मैंने महसूस किया बहर-ए-कामिल में ग़ज़ल कहने में लोग कुछ भटक रहे हैं तो मैंने फ़नशनास माहिर लोगों से कुछ राहनुमाई की कोशिश भी की। ग़ज़लें कहने के लिए 3 माह की मीयाद मुक़र्रर की गयी। 31 मई, 2021 आख़िरी तारीख़ तय हुई।

लोग शाइरी करते हैं, लेकिन कॉन्सेप्ट महबूबा का रहता है। इसलिए मैंने जीवन भर साथ रहने वाले चेहरे को सामने लाने का प्रयास किया। पत्नी यानी शरीक-ए-ज़िन्दगी। मैंने परिचय के कॉलम कम कर दिये। नाम, जन्मतिथि, पता, व्हाट्सएप और मेल आईडी तक सीमित रखा। लेकिन उनसे पत्नी के साथ जीवन के ऑल-टाइम ब्यूटीफ़ुल रंगीन फ़ोटो माँगे और उसके नीचे शादी की तारीख़ और जीवनसाथी को समर्पित एक मत्ला या दोहा। मुझे ख़ुशी है कि लोगों ने मेरे इस प्रयास की तारीफ़ की (एक-दो लोगों के ए'तिराज़ भी दर्ज हुए)। उस्ताद-ए-मोहतरम की 13 वीं पुण्यतिथि (16 जून) तक किताब की सामग्री मिल गयी। अब इसे सजाना-सँवारना मेरे ज़िम्मे था। शायरों के कलाम भिजवाने, उनसे परिचित कराने में मित्र नीरज गोस्वामी और डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़' ने बहुत सहयोग दिया।

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़' से बातचीत में यह निर्णय हुआ कि जिस बहर में लोग सहज महसूस नहीं कर रहे हैं उस बहर की ग़ज़लों का क्रम सबसे आख़िर में रखा जाय। लिहाज़ा बहर-ए-मुतदारिक, बहर-ए-मुतक़ारिब और बहर ए-हज़ज मुसम्मन सालिम में प्राप्त ग़ज़लों को पहले रखा गया।

इन सभी सालिम बहरों की ग़ज़लों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने से पहले हमने चाहा कि आपको पहले उस्ताद-ए-मोहतरम हफ़ीज़ बनारसी मरहूम के लाजवाब मत्लों के साथ-साथ उर्दू के मशहूर शायरों के मत्लों से भी रूशनास कराया जाय। ऐसा करते हुए मैं बचपन की मुहब्बत की ओर लौट

गया । कितने प्यारे, भले वे गाने होते थे। क्या वे भी इन बहरों में लिखे जाते होंगे ? राँची से मित्र हिमकर श्याम, पटना के अरुण कुमार आर्य एवं दिल्ली के कालजयी घनश्याम के अलावा अन्य मित्रों ने मुझे फ़िल्मी गीतों /गानों के मुखड़े चुनने में सहयोग किया। यहाँ मेरे साथ आए जयपुर के हर हफ़्ते एक किताब पढ़ने वाले और उस किताब की ख़ास बातें बताने वाले शायर नीरज गोस्वामी जी। उन्होंने मुझे 'दिल' सीकरी से मिलवाया जिन्होंने इन बहरों में सैकड़ों मशहूर नग़्मों की सौग़ात पेश कर दी। उनका एक आलेख संक्षेप में इस किताब का हिस्सा बनाया गया है।

बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना का एक व्हाट्सएप ग्रूप है- '2021 की ग़ज़लें'। इसमें 200 से ज़्यादा शाइर और अदब नवाज़ दोस्त हैं। सभी प्रेम से एक-दूसरे के जन्मदिन और शादी की सालगिरह पर नेक तमन्नाएँ यानी बधाई और शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। लेकिन इस साल ये ग्रूप मर्माहत होता रहा जब साथ रहने वाले लोग कोरोना की त्रासदी नहीं झेल पाने की वज्ह से अपनी अमर कीर्तियों से हमें मालामाल कर इस नश्वर संसार को छोड़ गये। ग्रूप उन्हें नम आँखों से विदा करता रहा।

कुँवर 'बेचैन', ज़हीर क़ुरैशी, कुमार नयन, मृदुला सिन्हा, जुनूँ अशरफ़ी ने हमारा साथ छोड़ दिया। बेरोज़गारी की धूप में ताज पयामी मरहूम के घर पर अफ़्सानों का साया मुहैया कराने वाले आरा के नौजवान दोस्त मुशर्रफ़ आलम 'ज़ौक़ी' दिल्ली में अपना अदबी सरमाया कोरोना की वबा के हवाले कर गये। उनकी बीवी और मशहूर अफ़्साना निगार तबस्सुम फ़ातिमा उनकी जुदाई के सदमे को एक दिन भी नहीं झेल सकीं और जहान-ए-फ़ानी से कूच कर गयीं। अनेक बार एक साथ कई काव्य मंच साझा करने वाली पद्मश्री के लिए चयनित आरा की ही शांति जैन शांति की तलाश में हमसे दूर चली गयीं। सैकड़ों किताबों के ख़ालिक़ और मेरे हिंदी और उर्दू के पहले मज्मूओं को प्रकाशित करवाने वाले डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी ने तब हमारा साथ छोड़ दिया जब हम उनसे कुछ अनूठी रचनाओं की उम्मीद कर रहे थे। पद्मश्री डॉ. रविन्द्र राजहँस और बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के मंच की शोभा बढ़ाने वाले मेजर बलबीर सिंह भसीन, अंगिका के साहित्यकार भगवन प्रलय और गोविन्द राकेश भी हमसे जुदा हो गये। दूरदर्शन पटना के केंद्र निदेशक रहे पुरुषोत्तम नारायण सिंह अपने नौजवान पुत्र की मृत्यु का दंश नहीं झेल सके और असमय कोरोना कवलित हो गये। हिंदी में लघु कथा के प्रणेता डॉ. सतीश राज पुष्करणा और राँची के जाने माने अफ़्सान: निगार मित्र एम्.ए.हक़, पटना के शौक़त हयात,अलीगढ़ के प्रो. शमीम हनफ़ी को कोरोना ने मौत की नींद सुला दिया। सैफ़ सहसरामी और सुल्तान अख़्तर जिनकी ग़ज़लें हद से बढ़कर चाही और सराही जाती थीं, इस वबा के शिकार हो गये। ग़ज़लों की दुनिया के दरवेश जिन्होंने 'ग़ज़ल परामर्श' और 'ग़ज़ल के बहाने' से न सिर्फ़ अनेक नौजवानों को शाइरी का फ़न अता किया बल्कि अनेक कुहनामश्क़ शाइरों को भी ग़लतियों से बचने में रहनुमाई की यानी हरिवंश अनेजा उर्फ़ जमाल क़ाइमी जिन्हें दरवेश भारती के नाम ने मशहूर किया गया, हमारा साथ छोड़ गये। हिंदी साहित्य सम्मलेन में राजकुमार प्रेमी की लय में गीत स्वर और घनश्याम की ग़ज़लों का स्वाद-आनंद अब मयस्सर नहीं होने वाला।

राष्ट्रवादी स्वर को मुखर करने वाले ओजस्वी पत्रकार रोहित सरदाना ने भी अपने महाप्रस्थान से हमें मर्माहत कर गये।

एहसास के ज़ख़्मों को छुपाना भी नहीं है
आँखों से मगर अश्क बहाना भी नहीं है*

इसलिए हमने तय किया कि इस किताब का प्रारंभ गायत्री मंत्र से और समापन महा मृत्युंजय मंत्र से किया जाय और इसे कोरोना योद्धाओं और अपने क़लमकारों को समर्पित किया जाये। अस्तु ! आप इसमें प्रसन्नता महसूस करेंगे।

ये रिवाज है कि किसी कार्य का प्रारंभ ईश्वर-वंदना से किया जाए। उर्दू महफ़िलों का आग़ाज़ हम्द और ना'त से किया जाता है। इसलिए उर्दू अरूज़ से वाक़िफ़, मशहूर शाइर मित्र अरुण कुमार आर्य ने मेरी मुश्किलें आसान कर दीं। उन्होंने दो हम्द और दो ईश-विनय से हर बहर में ग़ज़लों का आग़ाज़ करने के लिए अपनी तख़लीक़ मुहैया कराई।

इस तरह प्रभु सुमिरण करते हुए हमने सभी बहरों में ग़ज़लों का शुभारम्भ किया है।

बहरें तो 150 से भी ज़्यादा हैं लेकिन नवीन सी चतुर्वेदी ने 32 बहरों का उल्लेख करते हुए प्रचलित बहरें नाम से से एक आलेख तैयार किया है जिसे इस किताब की शोभा में समाहित किया गया है। हिन्दी छंदों और ग़ज़ल की बहरों में मात्रा-विधान पर डॉ. ब्रह्मजीत गौतम ने एक सुन्दर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है जिस से इस किताब के पाठक लाभान्वित हो सकेंगे। दूरदर्शन पटना से सेवानिवृत कथाकार और साहित्यकार मित्र शंभू पी.सिंह ने फ़ेसबुक पर कोरोना से कालकवलित साहित्यकार मित्रों का विस्तृत उल्लेख किया है। उनकी अनुमति से इस किताब में उनके इस आलेख को समाहित किया गया है जो मर्मस्पर्शी है।

चारों सालिम बहरों में क्रमशः 64, 61, 69 और 3 ग़ज़लें और विभिन्न मिसरा-ए-तरह पर 41, 14, 46, 31, 19 और 18 ग़ज़लें 'बेहतरीन ग़ज़लें (21वीं सदी के 21 वें साल की)' में जगह बना सकी हैं। बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के व्हाट्सएप ग्रूप में एक से बढ़कर एक ग़ज़लें आती रहीं। हमने निम्न बहरों की कुछ ग़ज़लें इस किताब में शामिल करने की जसारत की है-

1. बहरे-हज़ज मुसम्मन अख़रब

अर्कान : मफ़ऊलु मफ़ाईलुन मफ़ऊलु मफ़ाईलुन

2. बहरे हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़

अर्कान : मुफाईलुन मुफाईलुन फऊलुन

3. बहर-ए-हज़ज मुसम्मन अशतर मक्फ़ूफ़ मक़बूज़ मुख़न्नक़ सालिमुल आख़िर

अर्कान : फ़ाइलुन मुफ़ाईलुन फ़ाइलुन मुफ़ाईलुन

4 . बहर - बहरे -रमल मुसम्मन महज़ूफ़

अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

5. बहरे-रमल मुसम्मन मख़बून महज़ूफ़

अर्कान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन

6. बहर - बहरे - रमल मुसद्दस महज़ूफ़

अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

7. बहरे-रमल मुसद्दस मख़बून महज़ूफ़
अर्कान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन या फ़इलुन

8. बहर - बहरे - रमल मुरब्बा सालिम
अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन

9. बहर - बहरे - रमल मुरब्बा महज़ूफ़
अर्कान : फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

10. बहर - बहरे - मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ
अर्कान : फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन

11. बहर - बहरे - मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ महज़ूफ़
अर्कान : फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ा

12. बहर - बहरे - खफीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़ मुसक्किन
अर्कान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फेलुन

13. बहर - मुजतस मुसम्मन मखबून महज़ूफ़ मुसक्किन
अर्कान : मफ़ाइलुन फ़इलातुन मफ़ाइलुन फ़ेलुन

14 . बहर - बहरे - मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
अर्कान : मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन

15. मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ मक़्सूर
अर्कान : मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफाईलु फ़ाइलान

16 . बहर- ए-मुक़्तज़िब मुसम्मन मख़्बून मरफ़ूअ मुसक्किन
अर्कान : फ़ऊल फ़ेलुन फ़ऊल फ़ेलुन फ़ऊल फ़ेलुन फ़ऊल फ़ेलुन

लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि इन 16 बहरों की 50-55 ग़ज़लें आपके ज़हन के सहने-तसव्वुर को नूरानी फ़िज़ा मयस्सर करायेंगी और आपके परवाज़-ए-तख़य्युल को नयी वुसअतों का पता देते हुए आपको मालामाल करेंगी।

आपके इस नाचीज़ मुदीर ने 16 जून,2021 को उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं योमे-वफ़ात (पुण्यतिथि) पर ज़ूम पर हुए ऑनलाइन मुशायरा से चुनिन्दा ग़ज़लों को भी इस किताब में शामिल किया है।

ग़ज़ल को एक दोशीज़ा के हुस्न की मिसाल दी जाती है लिहाज़ा हमने इस किताब को एक

दोशीज़ा की ग़ज़ल से और उनके दिल की पुकार को उनके एक गीत से सम्पन्न करने की हिम्मत की है।

आज फिर उसका तसव्वुर सरे-शाम आया है
सुब्ह तक जागते रहने का पयाम आया है*

ये तो रही इस किताब की बात ! अब हम आपको इस किताब में मिलने वाले कुछ प्रमुख दस्तावेज़ों की जानकारी देना चाहते हैं। इस किताब में आपको शु'अरा और शाइरात के जन्मदिन, विवाह की तिथि, जीवन संगिनी के लिए मतला/दोहों के रूप में प्रकट किये हृदय-उद्गार और उनके शहरों/राज्यों के ब्यौरे भी मिल जायेंगे। इनसे आप अपने मित्रों को समय-समय पर जन्मदिन / परिणय वार्षिकी पर अपने प्रेम प्रदर्शन का अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

वरिष्ठ मित्र विज्ञान व्रत एवं पटना के सोशल मीडिया मंच का उपयोग साहित्यिक गतिविधियों के लिए करने वाले चितेरे कथाकार सिद्धेश्वर जी ने इस किताब के लिए कुछ नायाब कलाकृतियों का प्रेमोपहार दिया है जो 'बेहतरीन ग़ज़लें' के दर-ओ- दीवार पर चस्पाँ नज़र आएँगी।

मैं आभारी हूँ मित्र नीरज गोस्वामी, डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़' और 'सागर' सियालकोटी का जिन्होंने मुझे इस किताब को तैयार करने में सहयोग किया। मैं शुक्रगुज़ार हूँ मित्र अरुण कुमार आर्य का जो मुझे अरूज़ की अधिकृत जानकारी का आइना दिखाते रहे। शेरशाह सूरी की राजधानी सासाराम के दोस्त डॉ. अताउल्लाह ख़ाँ 'अल्वी' का मैं ममनून हूँ, जिन्होंने मुझे ज़रूरी जानकारियाँ साझा करने में देर नहीं की। मैं मशकूर हूँ गुरु भाई डॉ. अख़्तर मसूद का जो अपनी मसरूफ़ियत के बावजूद मुझे ज़हनी तआवुन देते रहे।

मैं संगिनी मंजु का हृदय से आभार प्रकट करना ज़रूरी समझता हूँ जो मुझे इस तारीख़ी दस्तावेज़ को तैयार करने में हमेशा लैपटॉप पर मस्त देखती रहीं और मैं उनके इसरार के बावजूद उन्हें यथोचित समय नहीं दे सका। मैं अपने दोनों अनमोल पुत्ररत्नों कुमार अभिषेक और कुमारसंभव को हृदय-तल से आशीर्वाद देता हूँ, जिन्होंने मुझे लैपटॉप और मोबाइल की तकनीकी अल्पज्ञता का एहसास नहीं होने दिया।

तो प्रस्तुत है '21 वीं सदी के 21 वें वर्ष की बेहतरीन ग़ज़लें'। आपको कैसी लगी मुझे बताइए ताकि मैं ग़ज़ल की दुल्हन के शृंगार-सजाव में अपनी कमियों को आपके मश्वरों, सुझावों की चाँदनी का हुस्न अता कर सकूँ।

आइये! सालिम बहरों की ग़ज़लों के हुस्न-ओ-जमाल का लुत्फ़ उठायें।

है ये कैसा सुरूर लोगों में
कुछ न कुछ है ज़रूर लोगों में*

*सिया सचदेव (तन्हाइयों का रक्स से साभार)

शनिवार, 24 जुलाई, 2021, गुरु पूर्णिमा

रमेश 'कँवल'
चेयर-पर्सन, बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना

हिन्दी-छंदों और ग़ज़ल की बहरों में मात्रा-विधान

- डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

गुलज़ार साहिब की एक कविता पढ़ने में आयी थी, जिसकी कुछ पंक्तियाँ हैं -

बोली बता देती है, इंसान कैसा है !
बहस बता देती है, ज्ञान कैसा है !
घमंड बता देता है, कितना पैसा है !
संस्कार बता देते हैं, परिवार कैसा है !

यों तो ये चारों पंक्तियाँ ज़िंदगी के चार सूत्र हैं, जिनसे हम क़दम-क़दम पर मार्गदर्शन ले सकते हैं, किन्तु यहाँ इन्हें उद्धृत करने का प्रयोजन केवल दूसरी पंक्ति है। बहस करना अच्छी बात है, किन्तु तभी, जब हम उन्मुक्त हृदय से दूसरों को सुनें और अपनी बात कहें। कहा गया है कि 'वादे-वादे जायते तत्त्व-बोध:'। विमर्श होगा, तभी तत्त्व का बोध होगा। किन्तु बहस में मुद्दे का ज्ञान होना आवश्यक है, अन्यथा हम जो तर्क देंगे, वे निरर्थक होंगे। बहस में आग्रह-दुराग्रह भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि उससे तर्क एकांगी हो जाते हैं। ऐसी ही एक बहस कुछ दिनों पूर्व एक व्हाट्सएप ग्रूप के पटल पर कुछ विद्वान साहित्यकारों के बीच 'आत्मा' शब्द के मात्रा-विधान पर चली, जिसका कोई निष्कर्ष नहीं निकल पाया। किसी ने कहा, आत्मा में 2-2 के क्रम से चार मात्राएँ हैं तो किसी ने 2-1-2 के क्रम से पाँच बतायीं। एक विद्वान ने तो यहाँ तक बोल दिया कि किसी भी मूर्धन्य कवि का कोई ऐसा उदाहरण बताएँ, जिसने आत्मा शब्द का प्रयोग चार मात्राओं में किया हो। तभी नीरज जी का यह दोहा प्रस्तुत कर दिया गया-

आत्मा के सौन्दर्य का, शब्द रूप है काव्य।
मानव होना भाग्य है, कवि होना सौभाग्य॥

फिर क्या था, हुआ वही जो दुराग्रह में होता है। सम्बन्धित विद्वान ने नीरज जी के दोहे को 'सरासर ग़लत' घोषित कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने 'आत्मा' का वज़्न SIS, 'काव्य' का SII, 'भाग्य' का SII और 'सौभाग्य' का SSII बताकर अपने अकूत ज्ञान का परिचय भी दे दिया। 'काव्य' और 'सौभाग्य' के तुक-विधान पर बात चलती तो कुछ विचारणीय भी होती, किन्तु यहाँ तो 'आत्मा' के भार पर ही बन आयी। एक विद्वान ने कहा कि 'आत्मा' में उतनी ही मात्राएँ हैं, जितनी 'दोस्ती' में। बिना यह सोचे कि यहाँ यह शब्द हिन्दी के दोहा छंद में प्रयुक्त हुआ है, किसी शे'र में नहीं। 'दोस्ती' फ़ारसी का शब्द है। दोनों भाषाओं के नियम अलग भी हो सकते हैं। इसी प्रसंग में एक विद्वान ने यह भी जानकारी दी कि हमारी वर्णमाला में संयुक्त अक्षर तो केवल तीन हैं -- क्ष, त्र, ज्ञ। 'आत्मा' में तो त् हलंत है। यहाँ त और म संयुक्त नहीं, वे व्यंजन मात्र हैं। एक महोदय ने 'होत न आज्ञा बिनु पैसारे' में 'होत' को 'होता' का मात्रा-पतन बताया। उन्हें समझना चाहिए कि मात्रा-पतन की स्थिति में शब्द की वर्तनी नहीं बदलती, केवल उच्चारण बदलता है। जैसे 'कोई' का उच्चारण 'कुई' (IS), 'कोइ' (SI) या कुइ (II) जैसा करना। किन्तु लिखा 'कोई' ही जायेगा। अत: 'होत' शब्द 'होता' का मात्रा-पतन नहीं, उसका तद्भव या देशज

रूप है। व्रज, अवधी यदि बोलियों में इसका प्रयोग होता है। बहस में और भी विभिन्न विद्वानों द्वारा अनेक प्रकार की जानकारियाँ उपलब्ध करायी गयीं, जिनसे यह सिद्ध हुआ कि 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना' की कहावत यों ही नहीं बन गयी।

पूरी बहस पढ़कर मुझे भी आश्चर्य-मिश्रित दु:ख हुआ। हाईस्कूल तक हम सभी ने हिन्दी का व्याकरण थोड़ा-बहुत ज़रूर पढ़ा होगा। छंद और उनमें मात्राएँ गिनने के नियम भी पढ़े होंगे। अब जब हम कवि-कर्म से जुड़े हुए हैं, तो इस ज्ञान को माँजते रहना हम सबके लिए आवश्यक हो जाता है। आज इस बहस से प्रेरित होकर यह अति साधारण-सा लेख विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत कर रहा हूँ, ताकि हम सबकी स्मृतियाँ कुछ ताज़ा हो सकें।

छंदों में मात्रा-गणना - हिन्दी का खड़ीबोली रूप बहुत ही प्रामाणिक, परिष्कृत और वैज्ञानिक है। यहाँ जो लिखा जाता है, वही उच्चरित होता है तथा लिखे अनुसार ही अक्षरों की मात्राएँ गिनी जाती हैं। उच्चारण के लिए, किसी भी शब्द में मात्राएँ गिराने या बढ़ाने का यहाँ कोई प्रावधान नहीं है। मात्राएँ गिनने के नियम भी निश्चित हैं। कविता की किसी भी विधा में सृजन करें, हमें मात्राएँ गिनने की विधि ज्ञात होना आवश्यक है। हिन्दी की वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण हैं - १. स्वर तथा २. व्यंजन। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ (११) स्वर कहलाते हैं। अं तथा अ: को अयोगवाह कहा गया है, जिन्हें वर्णमाला में स्वरों के साथ ही रखा गया है। शेष क से ह तक सब व्यंजन है। ये सब हलंत होते हैं, किन्तु इनका आसानी से उच्चारण हो सके, इसलिए इनमें अ का स्वर मिलाकर पूर्ण वर्ण के रूप में दर्शाया जाता है। क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त व्यंजन हैं, जो दो अक्षरों से मिलकर बनते हैं।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं - (१) ह्रस्व और (२) दीर्घ। छंदशास्त्र में इन्हें क्रमश: लघु और गुरु कहते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मात्रा केवल स्वर की होती है, व्यंजन की नहीं। छंदों के वर्ण या मात्राएँ गिनते समय केवल स्वर को ध्यान में रखा जाता है, व्यंजन पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। उदाहरण के लिए 'स्वास्थ्य' शब्द के अंतर्गत 'वा' में विद्यमान आ की दो मात्राएँ तथा 'य' में विद्यमान अ की एक मात्रा, इस प्रकार कुल तीन मात्राएँ हैं। स्वास्थ्य = स्+व्+आ+स्+थ्+य्+अ । इनमें आ और अ ही स्वर हैं, शेष सभी व्यंजन हैं, अत: इनकी कोई मात्रा नहीं होगी। एक बार पुन: दुहराते हैं -- मात्रा केवल स्वर में होती है, व्यंजन में नहीं। अब मात्रा-गणना के मुख्य नियम देखिये --

(क) हिन्दी की वर्णमाला में अ, इ, उ तथा ऋ, ये चार स्वर ह्रस्व या लघु हैं, जिनमें एक-एक (I) मात्रा है। ये स्वर जिस व्यंजन पर लगते हैं, वह लघु माना जाता है। जैसे। अनुकृति - (IIII) चार मात्राएँ। इस शब्द में अ, इ, उ तथा ऋ ये चारों स्वर विद्यमान हैं

(ख) आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ दीर्घ या गुरु स्वर हैं, जिनमें दो-दो मात्राएँ होती हैं। ये जिस व्यंजन पर लगते हैं, वह गुरु माना जाता है तथा उसमें दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। जैसे - मेधावी (SSS) - छह मात्राएँ, गोलू (SS) चार मात्राएँ। इसी प्रकार अन्यत्र भी सभी गुरु वर्णों में दो-दो मात्राएँ समझनी चाहिए।

(ग) जिस व्यंजन पर अनुस्वार होता है, वह गुरु अर्थात् दो मात्राओं वाला माना जाता है, जैसे - ढंग (SI), तीन मात्राएँ, संबंध (SSI) - पाँच मात्राएँ।

(घ) जिस व्यंजन के आगे विसर्ग (:) होता है, वह भी गुरु माना जाता है, जैसे - अत: (IS) तीन मात्राएँ, नि:शेष (SSI) पाँच मात्राएँ, दु:ख (SI) तीन मात्राएँ।

(च) संयुक्त व्यंजन के पूर्व का अक्षर लघु होते हुए भी गुरु माना जाता है और उसमें दो मात्राएँ गिनी जाती हैं, जैसे - अभ्यस्त (SSI) पाँच मात्राएँ। इस शब्द में भ और य संयुक्त होने के कारण उनके पूर्व का अ गुरु (S) हो गया। इसी प्रकार स और त संयुक्त होने से उनके पूर्व का वर्ण य गुरु (S) हो गया। यदि संयुक्त वर्ण के पूर्व का वर्ण गुरु है तो उसकी मात्राएँ दो की दो ही रहेंगी। किन्तु बहुत से रचनाकार उर्दू के प्रभाव के कारण आत्मा (SS), ऊर्जा (SS), हार्दिक (SII) जैसे शब्दों में आधे अक्षर को पूर्णवत मानकर उसकी एक मात्रा गिन लेते हैं, जिससे मात्राओं का योग SIS अर्थात् पाँच हो जाने से छंद अशुद्ध हो जाता है।

(छ) हलंत अर्थात् आधे अक्षर में कोई मात्रा नहीं होती, क्योंकि उसमें कोई स्वर नहीं होता। इसी प्रकार वर्णों की गणना में भी आधे अक्षर की गिनती नहीं होती, क्योंकि स्वरहीन होने से उसका स्वतंत्र उच्चारण नहीं किया जा सकता। किन्तु वह अपने पूर्ववर्ती लघु वर्ण को गुरु बना देता है। जैसे - महत् - (IS) तीन मात्राएँ, दो वर्ण। राजन् (SS) चार मात्राएँ, दो वर्ण।

(ज) चंद्रबिंदु की कोई मात्रा नहीं होती। अर्थात् चंद्रबिंदु यदि लघु वर्ण पर है तो एक मात्रा और यदि गुरु वर्ण पर है तो दो मात्राएँ। जैसे - हँसी (IS)), चाँद (SI), अँधेरा (ISS)।

(झ) जैसा कि लघु स्वरों में बताया गया है, ऋ लघु स्वर है और उसकी एक ही मात्रा होती है। किन्तु बहुत से रचनाकार शुद्ध उच्चारण न कर पाने के कारण उसमें दो मात्राएँ गिन लेते हैं, जिससे छंद अशुद्ध हो जाता है। जैसे 'अमृत' का मात्राभार III अर्थात् तीन मात्राओं का है, किन्तु 'अम्मृत' जैसा उच्चारण करके चार (SII) मात्राओं में बाँध लेते हैं। इसी प्रकार पितृ का भार II शुद्ध है, SI अशुद्ध। कृषि का II शुद्ध है, SI या IS अशुद्ध।

(ट) शब्द के पूर्व आये आधे अक्षर की भी कोई मात्रा नहीं होती। जैसे, स्तम्भ- SI, प्यार - SI, स्तुति - II, श्लोक - SI, क्वार - SI आदि।

अपवाद - जहाँ नियम हैं, वहाँ उनके कुछ अपवाद भी होते हैं, किन्तु ध्यान रखने की बात यह है कि अपवादों से नियम समाप्त नहीं होते। ऊपर नियम क्र. (च) में लिखा गया है कि संयुक्त व्यंजन के पूर्व का अक्षर लघु होते हुए भी गुरु माना जाता है और उसमें दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। कारण यह है कि पूर्ववर्ती अक्षर के उच्चारण में बल लगाना पड़ता है। इस नियम का यह अपवाद है कि 'ह' के पूर्व यदि न, म, ल, को संयुक्त किया जाये तो पूर्ववर्ती अक्षर लघु का लघु ही रहता है और उसकी एक ही मात्रा गिनी जाती है। जैसे कन्हैया, जिन्हें, जिन्होंने, उन्हें, उन्होंने, तुम्हें, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे, कुम्हार, मल्हार, कुल्हाड़ी आदि। किन्तु नन्हा, अल्हड़ जैसे कुछ शब्दों पर यह नियम लागू नहीं होता। इनके पूर्ववर्ती अक्षर को बोलने में बल लगाना पड़ता है, अत: नन्हा और अल्हड़ का भार क्रमश: SS और SII ही रहेगा।

बहरों में मात्रा-विधान - अब उर्दू शाइरी की बहरों में प्रयुक्त शब्दों का वज़्न मापने की विधि पर विचार करते हैं। यहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र यह ध्यान में रखना है कि बहरों में प्रयुक्त किसी शब्द का वज़्न लघु-गुरु मात्राओं या वर्णों की गिनती पर आधारित न होकर शब्द के उच्चारण पर निर्भर करता है। उर्दू वर्णमाला में सभी अक्षर व्यंजन हैं। स्वर-चिह्न - ज़ेर, ज़बर, पेश, मद' आदि वर्णमाला से अलग हैं। जब कोई स्वर किसी अक्षर या व्यंजन (जिसे हर्फ़ कहते हैं) पर लगता है तो वह वर्ण बन जाता है। उर्दू में वर्ण अर्थात् पूरा अक्षर। उसे मुतहर्रिक कहते हैं और व्यंजन अर्थात् आधा अक्षर। इसे साकिन (हलंत) कहते हैं। अरूज़ (उर्दू छंदशास्त्र) में बहरों की संरचना इन्हीं मुतहर्रिक और साकिन अक्षरों पर आधारित होती है, लघु-गुरु पर नहीं। इस

आधार पर यदि हम 'ज्योत्स्ना' शब्द का वज़्न जाँचना चाहें तो वह SIS अर्थात् पाँच मात्राओं का होगा, जबकि हिन्दी छंदों में इसकी कुल चार मात्राएँ हैं। अरूज़ के अनुसार, यदि आधे अक्षर से किसी शब्द की शुरूआत होती है तो वह आधा अक्षर प्राय: नगण्य होता है। यहाँ ज्योत्स्ना के प्रारम्भिक ज् का वज़्न नहीं लिया जायेगा। जहाँ तीन व्यंजन अर्थात् आधे अक्षर एक साथ हों तो वहाँ तीसरा व्यंजन नगण्य होता है। दूसरा व्यंजन मुतहर्रिक हो जाता है तथा पहला व्यंजन, व्यंजन ही रहता है। इस प्रकार अरूज़ के अनुसार 'आत्मा' का वज़्न SIS, 'भाग्य' का SI, 'काव्य' का SI, 'सौभाग्य' का SSI और 'हार्दिक' का SIS होगा।

ऊपर लिखा गया है कि शब्द के प्रारंभ में आनेवाला आधा अक्षर प्राय: नगण्य होता है। इस विषय में जब मैंने उर्दू के एक उस्ताद से पूछा कि बहुत-से शाइर स्कूल को इस्कूल, स्थायी को इस्थायी के वज़्न में क्यों बाँधते हैं? तो उनका उत्तर था कि इसीलिए तो 'प्राय:' लिखा गया है। स्कूल के तीन उच्चारण प्रचलित हैं - स्कूल, सकूल और इस्कूल। इसलिए इसके वज़्न भी तीन हैं - SI, और SSI । यही स्थिति स्तम्भ, स्थायी, स्थानीय आदि शब्दों की है। अर्थात् बहर में प्रयुक्त होने पर जैसा जिसका उच्चारण, वैसा उसका वज़्न। लिखा तो स्कूल ही जायेगा किन्तु उच्चारण यदि सकूल है तो वज़्न ISI और इस्कूल है तो वज़्न SSI होगा।

निष्कर्ष यह है कि हर भाषा का व्याकरण और विधान अलग होता है। हिन्दी में जहाँ लिखे हुए के अनुसार मात्राएँ तय होती हैं, वहाँ उर्दू में उच्चारण के आधार पर। इसलिए एक ही शब्द हिन्दी के छंदों में अलग वज़्न में प्रयुक्त होता है तो उर्दू की विधाओं में अलग वज़्न में। अगर हम ग़ज़ल कह रहे हैं तो अरूज़ के नियमों के अनुसार चलना ही उचित है, फिर शब्द भले ही हिन्दी या संस्कृत के ही क्यों न हों। अन्यथा बहर खण्डित होने की संभावना रहेगी। इसी प्रकार हिन्दी के छंदों में हिन्दी के व्याकरण और छंदानुशासन का पालन करते हुए ही लेखन करना चाहिए। उनमें उर्दू शाइरी की तरह मात्राएँ गिराने-बढ़ाने का कोई प्रावधान नहीं है। कहा भी गया है- 'अपि माषं मषं कुर्यात् छन्दोभंगं न कारयेत्' ।

यहाँ तक तो बात केवल मात्राओं के विधान तक सीमित थी, किन्तु हिन्दी में ग़ज़ल कहते समय शब्दों के लिंग, वचन, वर्तनी और वाक्य-रचना आदि की भी समस्याएँ उठती हैं। चर्चा, धारा जैसे शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग हैं, जबकि उर्दू में इन्हें पुल्लिंग में प्रयोग किया जाता है। 'मरने के बाद होगा चर्चा तेरी गली में'। इतना ही नहीं, बिरहमन (ब्राह्मण), धोका (धोखा), भूका (भूखा), पोदा (पौधा), मंदर (मंदिर) जैसे न जाने कितने शब्द विकृत रूप में बरते जा रहे हैं। इसी प्रकार हिन्दी में भी उर्दू के अनेक शब्द वर्तनी बदलकर प्रयुक्त होते हैं। जैसे, सही, मामला, माफ़ी, फ़िज़ूल, ग़रूर, मसला, वजूद, मुहब्बत, मायने आदि। इनके शुद्ध रूप हें क्रमश: सहीह, मुआमल:, मुआफ़ी, फ़ुजूल, ग़ुरूर, मस्अल: वुजूद, महब्बत तथा मा'नी। वास्तविकता यह है कि हर भाषा की अपनी प्रकृति होती है। वह जब किसी अन्य भाषा के शब्द लेती है तो उन्हें अपनी प्रकृति के अनुसार ढालकर स्वीकार करती है। अत: इन बातों को अधिक महत्त्व न देकर यह देखना चाहिए कि ग़ज़ल बहर, क़ाफ़िया, रदीफ़ आदि की कसौटी पर खरी है या नहीं।

कुछ लोगों को अपनी अना (मैं) से बहुत मुहब्बत होती है, इस कारण वे उचित सुझाव को भी स्वीकार नहीं कर पाते। स्वाभिमानी होना अच्छी बात है। ध्यान केवल इतना रखना है कि यह स्वाभिमान कहीं अभिमान में न बदल जाये, अन्यथा अच्छी से अच्छी बहस भी निरर्थक हो जाती है। कुछ दिनों पहले फ़ेसबुक पर एक नामचीन शाइर की ग़ज़ल पढ़ने में आयी। अशआर अच्छे थे, किन्तु दो मिसरों में मुझे लिंगदोष नज़र आया। मिसरे थे - मुझे ख़ुद की तारीफ़ करना पड़ा

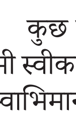

तथा मुझे उसमें आवाज भरना पड़ा। मैंने अपनी प्रतिक्रिया में लिखा कि 'तारीफ़' और 'आवाज़' शब्द स्त्रीलिंग होने से इनकी क्रियाएँ भी स्त्रीलिंग होंगी, अत: इन मिसरों में अपेक्षित सुधार वांच्छित है। उनका जवाब था, आपको अपने ज्ञान में विस्तार करने की आवश्यकता है। उन्होंने लखनऊ स्कूल और दिल्ली स्कूल की लिंक भेजी, जिसके अनुसार लखनऊ वाले 'मुझे आपसे बात करना है' को शुद्ध मानते हैं तो दिल्ली वाले 'बात करनी है' को। अर्थात् दोनों ही प्रयोग शुद्ध हैं। अन्य विद्वानों ने भी इसके पक्ष और विपक्ष में अपने मत रखे। मैंने उन्हें मेरी जानकारी में वृद्धि करने के लिए धन्यवाद देकर प्रकरण का पटाक्षेप कर दिया। किन्तु कुछ दिनों बाद जब दोबारा उनकी टाइमलाइन पर जाने का अवसर मिला तो देखा, उन्होंने मिसरे सुधार दिये हैं। किन्तु वह सारी चैटिंग डिलीट कर दी जो उनके साथ हुई थी। यहाँ मेरा सिर्फ़ इतना कहना है कि फ़ेसबुक और व्हाट्सएप ऐसे मंच हैं, जहाँ हमें हर समय कुछ न कुछ सीखने और अपनी बात कहने का अवसर मिलता है। आपको सतही प्रशंसक तो ढेरों मिल जायेंगे किन्तु यदि कुछ अच्छा सुझाव मिलता है तो उसे स्वीकार करने में अनुदारता क्यों?

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

युक्का-२०६, पैरामाउण्ट सिंफ़नी क्रॉसिंग रिपब्लिक,

ग़ाज़ियाबाद - २०१०१६ यू.पी.

चार सालिम बहरों का विवेचन

-दिल सीकरी

हिन्दी साहित्य की भाँति उर्दू अदब में भी गद्य (नस्र) और पद्य (शायरी/काव्य) विधा में साहित्य-सृजन ख़ूब हुआ है। शायरी (पद्य/काव्य) वस्तुतः रसमय और संगीतमय है जिसकी गुणवत्ता को अनुप्रास, स्वर, व्यंजन, लय, तुकबन्दी आदि के माध्यम से महसूस किया जा सकता है फलस्वरूप इसकी उम्र और लोकप्रियता अधिक तथा विशेष होती है। उर्दू अदब में काव्य(शायरी) के अनेक रूप यथा- हम्द, नअत (ना’त), मन्क़बत, सलाम, मर्सिया, नज़्म, ग़ज़ल, शे’र, क़तअ (किता), रुबाई, मसनवी और दोहा पाये जाते हैं। यद्यपि शायरी की हर क़िस्म का अपना एक वक़ार और मक़ाम है लेकिन ग़ज़ल की जो मक़बूलियत (लोकप्रियता) बरसो-बरस से है उसका कोई सानी और मुक़ाबला नहीं है। विगत 1000 सालों से भी पहले ग़ज़ल का जन्म ईरान में हुआ और वहाँ फ़ारसी ज़ुबान में इसे लिखा व कहा गया। दरअस्ल ग़ज़ल फ़ारसी से उर्दू में और उर्दू से हिंदी सहित अन्य भाषाओं में आयी। मुग़ल शासक जब भारत में आये तो फ़ारसी संस्कृति भी साथ लाये, जिसका प्रचार-प्रसार भी ख़ूब हुआ, किया गया। दिल्ली में अबुल हसन यमीनुद्दीन ख़ुसरो देहलवी(1253-1325) ने लीक (परम्परा/परिपाटी) से हटते हुए साहित्य की रचना खड़ी बोली (वह बोली जो उस वक़्त दिल्ली और उसके आस-पास बोली जाती थी) में की। ख़ुसरो ने इस बोली को हिन्दवी कहा। वे फ़ारसी के विद्वान के साथ साथ उम्दा शायर भी थे, उन्होंने ख़ूब ग़ज़लें कहीं। उन्हें पहला शायर भी माना जाता है। ग़ज़ल पहले ख़ानक़ाहों से शुरू हुई थी और ख़ानक़ाहें जो थीं वे बुज़ुर्गों, फ़क़ीरों और सूफ़ियों की थीं जो कि आमजन का मरकज़ भी थीं। बाद में बादशाहों के दरबार में आने से इसके लहजे में अरबी-फ़ारसी का असर हुआ। वर्तमान में ग़ज़ल अनेक भाषाओं में यथा- हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, तमिल-तेलुगु आदि में कही जा रही है।

किसी भी पद्यात्मक/काव्यात्मक रचना में रसमयता लयात्मकता, प्रवाहपूर्णता व छंदबद्धता आदि गुणों का होना अत्यावश्यक है। चूँकि ग़ज़ल काव्य/शायरी का एक रूप है फलस्वरूप इन गुणों का ग़ज़ल में भी होना ज़रूरी है। बिना छन्द (बहर) के ग़ज़ल की कल्पना भी करना बेमानी है। बहर-ध्वनि से बने स्वरकों (रुकुन/गण) की निश्चित संख्याओं का समुच्चय है अर्थात किसी भी बहर के प्रत्येक पद/पंक्ति/ मिसरे में गणों /स्वरकों(अरकान) की संख्या विशेष निर्धारित होती है। यानी बहर को एक साँचा और एक म्यूज़िकल मीटर भी कह सकते हैं। हिन्दी काव्य में 08 गण, यथा-यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण होते हैं जबकि उर्दू शायरी में 07 ही अरकान यथा- फ़ाइलुन, फ़ऊलुन, मुसतफ़इलुन, मुफ़ाईलुन, फ़ाइलातुन, मुतफ़ाइलुन और मुफ़ाइलतुन होते हैं।

बहरें दो प्रकार की होती हैं- (1) मुफ़रद (2) मुरक्क़ब।

मुफ़रद बहरें - वे कहलाती हैं जो एक ही बहर के सालिम रुकुन से बनायी गयी हों यानी मिसरा जितना रुकुनी उसमें एक ही शक्ल, एक ही वज़्न (मात्रभार) के उतने ही अरकान हों। यदि किसी मिसरे में दो अरकान हों तो वह बहर मुरब्बा, तीन अरकान हों तो वह बहर मुसद्दस, चार अरकान हों तो बहर मुसम्मिन तथा 04 से अधिक अरकान वाली बहरों को मुज़ाहिफ़ अथवा रुकुन की संख्या के हिसाब से उतनी रुकुनी बहर कहा जाता है।

मुफ़रद बहरों की संख्या 07 हैं।

जिस बहर में फ़ऊलुन अरकान का इस्तेमाल होता है वह, मुतक़ारिब,

जिसमें फ़ाइलुन अरकान का प्रयोग हो वो बहर मुतदारिक,

अरकान मुफ़ाईलुन वाली बहर हज़ज,

अरकान मुसतफ़इलुन अरकान वाली बहर- रिजज़,

अरकान फ़ाइलातुन अरकान वाली बहर, रमल,

अरकान मुतफ़ाइलुन वाली बहर- कामिल और

जिसमें अरकान मुफ़ाइलतुन का इस्तेमाल होता है वह बहर वाफ़र कहलाती है।

मुरक्क़ब बहरें, वो कहलाती हैं जो मुफ़रद बहरों के एक से अधिक सालिम अरकान से मिलकर बनी हों। इनकी संख्या-12 हैं। जिनके नाम क्रमशः यूँ हैं :-

1- मज़ारअ, 2- मुजतस, 3- ख़फ़ीफ़, 4- क़रीब, 5- मुनसिरह, 6- सरीअ, 7-मुक्तजिब, 8- तवील, 9- मदीद, 10- बसीत, 11- जदीद और 12- मशाकिल।

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है कि सात सालिम अरकान होते हैं। किसी भी सालिम रुकुन में किसी भी प्रकार की तब्दीली (परिवर्तन) यानी रुकुन के किसी हर्फ़ (अक्षर) अथवा हुरूफ़ (अक्षरों) को घटा-बढ़ाकर उसे नयी शक्ल देने को ज़िहाफ़ कहते हैं और इस क्रियाविधि से प्राप्त नए रुकुन को फ़रुअ तथा इसकी जमा को फ़रूआत कहते हैं। ऊपर वर्णित 19 बहरों के लिए कुल 24 ज़िहाफ़त प्रचलित(मुरव्विज) हैं किन्तु उर्दू और हिन्दी भाषाओं की शायरी के इन ज़िहाफ़त की संख्या महज 18 ही हैं। ऐसे अरकान को इस्तेमाल करके बड़ी तादाद में बहरें बनायी जा सकती हैं और बनाई भी गयीं हैं । फ़िलवक़्त तक मेरी जानकारी में 160 बहरें आयी हैं जिनमें 32 बहरें प्रचलन में हैं।

फ़िलहाल चार मुफ़रद बहरों का ज़िक्र यहाँ कर रहा हूँ। विदित रहे कि सात मुफ़रद बहरों में से एक बहर, बहरे-मुतदारिक मुसम्मिन सालिम की खोज अबुल हसन 'अख़फ़श' ने की है शेष सभी 06 बहरों की खोज ख़लील बिन अहमद ने की है।

(1) बहर-ए-मुतदारिक मुसम्मिन सालिम

अरकान

: फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन

212 212 212 212

इस बहर के नाम में मुतदारिक लफ़्ज़ शामिल है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इसके गठन में अरकान- फ़ाइलुन इस्तेमाल किया गया है। साथ ही नामकरण में सम्मिलित शब्द- मुसम्मिन ये ज़ाहिर करता है कि इसमें 04 फ़ाइलुन अरकान शामिल हैं और सालिम लफ़्ज़ ये बताता है कि इसमें कोई भी ज़िहाफ़त नहीं है अर्थात फ़रूअ प्रयोग में नहीं लिया गया है। अतः इस बहर के नामकरण से सुस्पष्ट है कि इस बहर के एक मिसरे में 04 फ़ाइलुन तथा एक शे'र में 08 फ़ाइलुन काम में लिए जाते हैं।

उपरोक्त कथन की ताईद (सम्पुष्टि/अनुसमर्थन) में इस बहर में कही गयी ग़ज़लों के इन मतलों और रचित फ़िल्मी तरानों (गीतों) के मुखड़ों का मुलाहिज़ा कीजिये-

मतलें-

ज़िन्दगी मोतबर है वही ज़िन्दगी
ख़ल्क के काम जो आ गयी ज़िन्दगी

-निसार अहमद 'राही' फतेहपुर-सीकर (राजस्थान)

दर्द दिल में मगर लब पे मुस्कान है
हौसलों की हमारे ये पहचान है

नीरज गोस्वामी, जयपुर(राजस्थान)

आँख सपनों की दुनिया संजोती रही
दिन सुलगता रहा रात रोती रही

-देवल आशीष, लखनऊ(उत्तर प्रदेश)

जाने कैसे हमारा मकाँ जल गया
हम चले थे वहाँ से बुझा के दिया

-अंसार कम्बरी,कानपुर(उत्तरप्रदेश)

हमको मन्जूर था ज़ख़्म खाते रहे
दोस्तों को मगर आज़माते रहे

-अशोक रावत, आगरा(उत्तरप्रदेश)

वो लहर से सदा चोट खाती रही
नाव डूबी नहीं डगमगाती रही

-श्याम सुंदर द्विवेदी, कानपुर(उत्तरप्रदेश)

आदमी थे अचानक ख़ुदा हो गये
देखते-देखते क्या से क्या हो गये

-डॉ. रामदरश मिश्र, नयी दिल्ली

कल तलक थीं जो फूलों भरी डालियाँ
किसने तोड़ी वो कमसिन हरी डालियाँ

-मनोज अबोध, चंपारण(बिहार)

इश्क़ में जाँ लुटाने का क्या फ़ायदा
इश्क़ धोखा है खाने से क्या फ़ायदा

-डॉ. राजेश 'ख़ुशदिल', फरीदाबाद(हरियाणा)

हर तरफ़ हर जगह बेशुमार आदमी
फिर भी तन्हाइयों का शिकार आदमी

-निदा फ़ाज़ली, ग्वालियर(मध्यप्रदेश)

फ़िल्मी तराने-

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

-कैफ़ी आज़मी, फ़िल्म-हक़ीक़त(1964)

ख़ुश रहे तू सदा ये दुआ है मेरी
बेवफ़ा ही सही दिलरुबा है मेरी

-आनन्द बक्शी, फ़िल्म-खिलौना(1970)

ज़िन्दगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र
कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं

है ये कैसी डगर चलते सब हैं मगर
कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं

-इंदीवर,फ़िल्म-सफ़र(1970)

मैं तेरे इश्क़ में मर न जाऊँ कहीं
तू मुझे आज़माने की कोशिश न कर

ख़ूबसूरत है तू तो हूँ मैं भी हसीं
मुझसे नज़रें चुराने की कोशिश न कर

-आनन्द बक्शी, फ़िल्म-लोफ़र(1973)

आपकी याद आती रही रात भर
चश्मे-नम मुस्कुराती रही रात भर

-मख़्दूम मोहियूद्दीन, फ़िल्म-गमन(1978)

(2)बहर-ए- मुतक़ारिब मुसम्मिन सालिम

अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन

122 122 122 122

इस बहर के नामकरण में मुतक़ारिब लफ़्ज़ का इस्तेमाल होने से ये स्पष्ट है कि इसमें अरकान निश्चित ही फ़ऊलुन होंगे तिस पर 04 अरकान का होना इसके मुसम्मिन होने की दलील है । चूँकि इसमें सारे अरकान बिना ज़िहाफ़त के हैं लिहाज़ा इसके नामकरण में लाज़िमी तौर पर लफ़्ज़े-सालिम का शामिल होना होगा ही।

इस बहर की पुष्टि और समर्थन में इसी बहर में कही गयी ग़ज़लों के ये मतलें और लिखे गये लोकप्रिय गीतों का अवलोकन कीजिये-

मतले-

पनपने न दो दोस्तों दिल में शरर को
सजाओ मुहब्बत के फूलों से घर को

-निसार अहमद 'राही', फतेहपुर-सीकर (राजस्थान)

कहाँ ढूँढ़ते हो वफ़ा के ज़ज़ीरे
कि दुनिया से ग़ायब हुए वो कभी के

-बनवारीलाल ' ख़ामोश', चूरू(राजस्थान)

सभी देवताओं के गण ढूँढ़ियेगा
गले ना मिलेंगे चरण ढूँढ़ियेगा

-बनवारीलाल ' ख़ामोश', चूरू(राजस्थान)

नहीं है अरे ये बग़ावत नहीं है
हमें सर झुकाने की आदत नहीं है

-नीरज गोस्वामी, जयपुर(राजस्थान)

इधर ये ज़ुबाँ कुछ बताती नहीं है
उधर आँख कुछ भी छुपाती नहीं है

-नीरज गोस्वामी, जयपुर(राजस्थान)

मुहब्बत का यूँ बोलबाला न होता
हमारा जो इसमें हवाला न होता

-डॉ. राजेश ‘ख़ुशदिल’, फ़रीदाबाद(हरियाणा)

कहाँ तक ग़मे-दिल को रुस्वा करोगे
किसी झूठ को सच कहाँ तक कहोगे

-दर्शनकपूर ‘फ़लक़’, देहरादून (उत्तराखण्ड)

न होती अगर आपकी ये नवाज़िश
तो ख़ुशियों की होती कहाँ हम पर बारिश

-के.के.सिंह ‘मयंक’, गोरखपुर (उत्तरप्रदेश)

अगर अपने हाथों में कशकोल लेंगे
तो ख़ैरात हम तुमसे अनमोल लेंगे

-के.के.सिंह ‘मयंक’, गोरखपुर (उत्तरप्रदेश)

अपाहिज व्यथा को वहन कर रहा हूँ
तुम्हारी कहन थी कहन कर रहा हूँ

दुष्यन्त कुमार, बिजनौर (उत्तरप्रदेश)

फ़िल्मी तराने-

ये कूचे ये नीलाम घर दिलकशी के
ये लुटते हुए कारवाँ ज़िंदगी के

जिन्हें नाज़ है हिन्द पे वो कहाँ है
कहाँ है कहाँ है मुहाफ़िज़ ख़ुदी के

-साहिर लुधियानवी, फ़िल्म-प्यासा (1957)

हमीं से मुहब्बत हमीं से लड़ाई
अरे मार डाला दुहाई दुहाई

-शकील बदायूँनी, फ़िल्म-लीडर (1964)

मुझे दुनिया वालों शराबी न समझो, मैं पीता नहीं हूँ पिलायी गयी है
जहाँ बेख़ुदी में क़दम लड़खड़ाएँ वही राह मुझको दिखायी गयी है

-शकील बदायूँनी, फ़िल्म-लीडर (1964)

मुबारक हो सबको समाँ ये सुहाना
मैं ख़ुश हूँ मेरे आँसुओं पे न जाना

-आनन्द बक्शी, फ़िल्म-मिलन (1967)

न तुम बेवफ़ा हो न हम बेवफ़ा हैं
मगर क्या करें अपनी राहें जुदा हैं

-राजेंद्र कृष्ण, फ़िल्म-एक कली मुस्काई (1968)

(3)बहर-ए-हज़ज मुसम्मिन सालिम

अरकान : मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन

1222 1222 1222 1222

जैसा कि पूर्व में ज़िक्र किया जा चुका है कि मुफ़ाईलुन अरकान बहरे-हज़ज का है और चार सालिम अरकान के इस्तेमाल से इस बहर का ये नाम हुआ है । ये बहुत ही मक़बूल बहर है। आइये इसमें कही गयी ग़ज़लों के मतलों और फ़िल्मी दुनिया के नग़मानिगारों ने जो जिन तरानों को इस बहर में रचा है उनका अवलोकन करें ताकि बहर के मुतल्लिक दिये गए बयान को पुख़्तगी मिले-

मतलें-

ये मंज़र देखकर हैरत में सारा गुलसिताँ तक है
गुज़र बर्क़े-तपां का सिर्फ़ मेरे आशियाँ तक है

-निसार अहमद 'राही' फतेहपुर-सीकर (राजस्थान)

निराला है जहाँ का हर चमन से गुलसिताँ अपना
है अपनी जान से प्यारा हमें हिन्दोस्ताँ अपना

-अहमद अली 'मंसूर' चूरू (राजस्थान)

नज़ाक़त है न ख़ुशबू और न कोई दिलकशी ही है
गुलों के साथ फिर भी ख़ार को रब ने जगह दी है

-नीरज गोस्वामी, जयपुर (राजस्थान)

तुझे दिल याद करता है तो नग़्में गुनगुनाता हूँ
जुदाई के पलों की मुश्किलों को यूँ घटाता हूँ

-नीरज गोस्वामी, जयपुर (राजस्थान)

उसे अबके वफ़ाओं से गुज़र जाने की जल्दी थी
मगर इस बार मुझको अपने घर जाने की जल्दी थी

-राहत इंदौरी, इंदौर (मध्यप्रदेश)

अँधेरे चन्द लोगों का अगर मक़सद नहीं होते
यहाँ के लोग अपने आप में सरहद नहीं होते

-द्विजेन्द्र 'द्विज', नूरपुर (हिमाचलप्रदेश)

बहुत पानी बरसता है तो मिट्टी बैठ जाती है
न रोया कर बहुत रोने से छाती बैठ जाती है

-मुनव्वर राना, राय बरेली (उत्तरप्रदेश)

ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा
मैं सजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा

-दुष्यन्त कुमार, बिजनौर (उत्तरप्रदेश)

मुहब्बत के शहर का आबो-दाना छोड़ देंगे क्या
जुदा होने के डर से दिल लगाना छोड़ देंगे क्या

-देवल आशीष, लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

अचानक दिलरुबा मौसम का दिल-आज़ार हो जाना
दुआ आसाँ नहीं रहना सुख़न-दुश्वार हो जाना

-'अदा' जाफ़री, बुदाऊ (उत्तरप्रदेश)

बहरे-हज़ज मुसम्मिन सालिम के फ़िल्मी गीत-

न झटको ज़ुल्फ़ से पानी ये मोती फूट जायेंगे
तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा मगर दिल टूट जायेंगे

-राजेन्द्र कृष्ण, फ़िल्म-शहनाई (1964)

भरी दुनिया में आख़िर दिल को समझाने कहाँ जाएँ
मुहब्बत हो गयी जिनको वो दीवाने कहाँ जाएँ

-शकील बदायूँनी, फ़िल्म-दो बदन (1966)

सजन रे झूठ मत बोलो ख़ुदा के पास जाना है
न हाथी है न घोड़ा है वहाँ पैदल ही जाना है

-शैलेंद्र, फ़िल्म-तीसरी क़सम (1966)

किसी पत्थर की मूरत से मुहब्बत का इरादा है
परस्तिश की तमन्ना है इबादत का इरादा है

-साहिर लुधियानवी, फ़िल्म-हमराज़ (1967)

ख़ुदा भी आसमाँ से जब ज़मीं पर देखता होगा
मेरे महबूब को किसने बनाया सोचता होगा

-राजेंद्र कृष्ण, फ़िल्म-धरती(1970)

(4) बहर-ए-कामिल मुसम्मिन सालिम

अरकान : मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन

11212 11212 11212 11212

इस बहर के रुकुन-मुतफ़ाइलुन का हमेशा सालिम रूप ही इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि इसका कोई फ़रूअ नहीं होता है । जैसे पूर्व में तीनों बहरों की बयान-ए-तफ़सील में बताया गया है उन्हीं कारणों से ये बहर भी मुसम्मिन सालिम है। इसकी पहचान और समझाइश की ग़रज़ से इस बहर में कही गयी ग़ज़लों के मतले और फ़िल्मी गीतों के मुखड़े यहाँ पर दिये जा रहे हैं, आइये आप भी मुलाहिज़ा कीजिये-

बहरे कामिल के मतले-

रहे-इश्क़ से हूँ मैं बेख़बर किसी बाख़बर की तलाश है
किसी हमसफ़र की है जुस्तजू किसी राहबर की तलाश है

-अब्दुल्ला 'आज़ाद' सीकरी, सीकर (राजस्थान)

कोई एक फूल मिसाल का भले ज़िंदगी को दिया न हो
मेरी हर क़दम रही कोशिशें मुझे रहगुज़र से गिला न हो

-वन्दना सिंह, सीकर (राजस्थान)

मेरी आरज़ू रही आरज़ू यूँ ही उम्र सारी गुज़र गयी
मैं कहाँ-कहाँ न गया मगर मेरी हर दुआ बेअसर गयी

-निसार अहमद 'राही' फ़तेहपुर-सीकर (राजस्थान)

मेरा हमक़दम मेरा हमसफ़र मेरा रहनुमा कोई और है
सभी कश्तियाँ किसी और की मेरा नाख़ुदा कोई और है

-गिरधारी सिंह गहलोत 'तुरन्त' बीकानेर (राजस्थान)

मेरे दिल की राख कुरेद मत इसे मुस्कुरा के हवा न दे
ये चराग़ फिर भी चराग़ है कहीं तेरा हाथ जला न दे

-बशीर बद्र, भोपाल (मध्यप्रदेश)

यूँ ही बेसबब न फिरा करो कोई शाम घर भी रहा करो
वो ग़ज़ल की सच्ची किताब है उसे चुपके-चुपके पढ़ा करो

-बशीर बद्र, भोपाल (मध्यप्रदेश)

कभी यूँ भी आ मेरी आँख में कि मिरी नज़र को ख़बर न हो
मुझे एक रात नवाज़ दे मगर इसके बाद सहर न हो

-बशीर बद्र, भोपाल (मध्यप्रदेश)

मेरे हमनफ़स मेरे हमनवा मुझे दोस्त बनके दग़ा न दे
मैं हूँ दर्दे-इश्क़ से जाँ-ब-लब मुझे ज़िन्दगी की दुआ न दे

-शकील बदायूँनी, बदायूँ (उत्तरप्रदेश)

मेरा क़त्ल था मेरे शहर में न गवाह था न वकील था
मेरे क़त्ल में तेरा हाथ था तेरा ज़र्द चेहरा दलील था

-अंसार अली रिज़वी 'मुज़्तर' फलादवी (उत्तरप्रदेश)

वो जो हम में तुम में क़रार था तुम्हें याद हो कि न याद हो
वो ही यानि वादा निबाह का तुम्हें याद हो न कि याद हो

-मोमिन ख़ाँ मोमिन, देहली

बहरे-कामिल में रचे गये गीत-

तुझे क्या सुनाऊँ मैं दिलरुबा तेरे सामने मेरा हाल है
तेरी इक निगाह है कि बात है मेरी ज़िंदगी का सवाल है

-मजरूह सुल्तानपुरी, फ़िल्म-आख़िरी दाँव (1958)

मुझे तुमसे कुछ भी न चाहिये मुझे मेरे हाल पे छोड़ दो
मेरा दिल अगर कोई दिल नहीं उसे मेरे सामने तोड़ दो

-शैलेन्द्र, फ़िल्म-कन्हैया (1959)

मैं ख़याल हूँ किसी और का मुझे सोचता कोई और है
सरे-आईना मेरा अक़्स है पसे-आईना कोई और है

-सलीम कौसर, फ़िल्म-अज्ञात

किसी राह में किसी मोड़ पर कहीं चल न देना तू छोड़ कर
मेरे हमसफ़र मेरे हमसफ़र मेरे हमसफ़र मेरे हमसफ़र

-आनन्द बक्शी, फ़िल्म-मेरे हमसफ़र(1970)

-ओमप्रकाश खींची
'दिल' सीकरी....

ग़ज़ल की प्रचलित 32 बहरें

-नवीन सी चतुर्वेदी

(ग़ज़ल की बह्र (बहरें) अनेकानेक हैं । उन तमाम बह्र में से जिन 32 बहरों का बहुप्रचलित बहरों के रूप में प्रख्यात ग़ज़ल काव्याचार्य दिवंगत आदरणीय श्री आर पी शर्मा 'महर्षि' जी ने अपनी पुस्तक 'ग़ज़ल-सृजन' में उल्लेख किया है उन समस्त 32 बहरों के उदाहरण 'तालिबे-इल्म' की मदद के लिए यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं । बह्र के नाम वही हैं जैसे आदरणीय महर्षि जी ने अपनी उक्त पुस्तक में लिखे हैं । उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये गये सभी अशआर ब्रज ग़ज़ल प्रवर्तक एवं बहु-भाषा कोविद नवीन सी चतुर्वेदी की ग़ज़लों से लिये गये हैं। उक्त अशआर में जिन अक्षरों को गिराया गया है उन्हें अण्डरलाइन कर दिया गया है। आशा करते हैं यह आलेख ग़ज़ल की प्रारम्भिक जानकारी के रूप में सीखने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

**मात्रा गणना में ए और इ को एक मात्रा ही गिनते हैं अत: फ़ाएलुन और फ़ाइलुन को एक समान ही समझा जाय*

1. बहरे कामिल मुसम्मन सालिम
   मुतफ़ाएलुन / मुतफ़ाएलुन / मुतफ़ाएलुन / मुतफ़ाएलुन
   11212 11212 11212 11212

ये चमन ही अपना वुजूद है इसे छोड़ने की भी सोच मत
नहीं तो बताएँगे कल को क्या यहाँ गुल न थे कि महक न थी

ये चमन ही अप / ना वुजूद है इसे छोड़ने / की भी सोच मत
न हीं तो बता / एँगे कल को क्या य हाँ गुल न थे / कि महक न थी

2. बहरे खफ़ीफ मुसद्दस मख़बून
फ़ाएलातुन मुफ़ाएलुन फ़ेलुन
2122 1212 22

प्यास को प्यार करना था केवल
एक अक्षर बदल न पाये हम

प्यास को प्या / र कर ना था / केवल

एक अक्षर / बदल न पा / ये हम

3. बहरे मज़ारिअ मुसम्मन मक्फ़ूफ़ मक्फ़ूफ़ मुख़न्नक मक़्सूर

मफ़ऊल फ़ाएलातुन मफ़ऊल फ़ाएलातुन

221 2122 221 2122

जब जामवन्त गरजा, हनुमत में जोश जागा
हमको जगाने वाला, लोरी सुना रहा है

जब जाम / वन्त गरजा / हनुमत में / जोश जागा
हमको ज / गा ने वाला / लोरी सु / ना रहा है

4. बहरे मुजतस मुसमन मख़बून महज़ूफ

मुफ़ाएलुन फ़एलातुन मुफ़ाएलुन फ़ेलुन /फ़एलुन

1212 1122 1212 22 / 112

भुला दिया है जो तूने तो कुछ मलाल नहीं
कई दिनों से मुझे भी तेरा ख़याल नहीं

भुला दिया / है जो तूने / तो कुछ मला / ल नहीं
कई दिनों / से मुझे भी / ते रा ख़या / ल नहीं

(आवश्यक्तानुसार इस बहर के अन्तिम रुक्न 'फ़ेलुन' की जगह 'फ़एलुन' भी ले लिया जाता है)

5. बहरे मज़ारिअ मुसमन अख़रब मकफूफ़ मकफूफ़ महज़ूफ़

मफ़ऊल फ़ाएलात मुफ़ाईलु फ़ाएलुन

221 2121 1221 212

तारे बे चा रे ख़ुद भी सहर के हैं मुन्तज़िर
सूरज ने उग ते-उग ते ज़माने लगा दिये

तारे बे / चारे ख़ुद भी / सहर के हैं / मुन्तज़िर

सूरज ने / उगते उगते / ज़माने ल / गा दिये

6. बहरे मुतकारिब मुसद्दस सालिम

फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन

122 122 122

कहानी बड़ी मुख़्तसर है
कोई सीप कोई गुहर है

कहानी / बड़ी मुख़्त / सर है
को ई सी / प कोई / गुहर है

7. बहरे मुतकारिब मुसमन सालिम

फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन

122 122 122 122

वो जिन की नज़र में है ख़्वाबे-तरक़्क़ी
अभी से ही बच्चों को पी. सी. दिला दें

वो जिन की / नज़र में / है ख़्वाबे / तरक़्क़ी
अभी से / ही बच्चों / को पी. सी. / दिला दें

8. बहरे मुतक़ारिब मुसम्मन मक़्सूर

फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल

122 122 122 12

इबादत की क़िश्तें चुकाते रहो
किराये पे है रूह की रौशनी

इबादत / की किश्तें / चुकाते / रहो
किराये / पे है रू / ह की रौ / शनी

9. बह्रे मुतदारिक मुसद्दस सालिम
फ़ाएलुन फ़ाएलुन फ़ाएलुन
212 212 212

चाहे जितने भी होंठों पे हो
झूठ चलता नहीं उम्रभर

चा हे जित / ने भी हो / ठों पे हो
झूठ चल / ता नहीं / उम्र भर

10. बह्रे मुतदारिक मुसम्मन अहज़ज़ु आख़िर
फ़ाएलुन फ़ाएलुन फ़ाएलुन फ़ा
212 212 212 2

अब उभर आयेगी उस की सूरत
बेकली रंग भरने लगी है

अब उभर / आ ये गी / उस की सू / रत
बेकली / रंग भर / ने लगी / है

11. बह्रे मुतदारिक मुसम्मन सालिम
फ़ाएलुन फ़ाएलुन फ़ाएलुन फ़ाएलुन
212 212 212 212

अब उजालों में भी सूझता कुछ नहीं
आप रुख़सत हुए छिन गयी रौशनी

अब उजा / लों में भी / सूझता / कुछ नहीं
आप रुख़ / सत हुए / छिन गयी / रौशनी

12. बहरे रजज़ मख़बून मरफ़ू' मुख़ल्ला
मुफ़ाएलुन फ़ाएलुन फ़ऊलुन मुफ़ाएलुन फ़ाएलुन फ़ऊलुन
1212 212 122 1212 212 22

बड़ी सयानी है यार क़िस्मत, सभी की बज़्में सजा रही है
किसी को जलवे दिखा रही है कहीं जुनूँ आज़मा रही है

बड़ी सया / नी है या / र क़िस्मत, सभी की बज़ / में सजा / रही है
किसी को जल / वे दिखा / रही है कहीं जुनूँ / आज़मा / रही है

13. बहरे रजज़ मुरब्बा सालिम
मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन
2212 2212

ये नस्ले-नौ है साहिबो
अम्बर से लायेगी नदी

ये नस ले नौ / है साहिबो
अम्बर से ला / येगी नदी

14. बहरे रजज़ मुसद्दस मख़बून
मुस्तफ़एलुन मुफ़ाएलुन
2212 1212

क्या आप भी ज़हीन थे
आ जाइए क़तार में

क्या आप भी / ज़हीन थे
आ जाइए / क़तार में

15. बहरे रजज़ मुसद्दस सालिम
मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन
2212 2212 2212

मैं वो नदी हूँ थम गया जिस का बहाव
अब क्या करूँ क़िस्मत में कंकर भी नहीं

मैं वह नदी / हूँ थम गया / जिस का बहाव
अब क्या करूँ / क़िस्मत में कं / कर भी नहीं

16. बहरे रजज़ मुसम्मन सालिम
मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन मुस्तफ़एलुन
2212 2212 2212 2212

उस पीर को परबत हुए काफ़ी ज़माना हो गया
उस पीर को फिर से नयी इक तरजुमानी चाहिए

उस पीर को / परबत हुए / काफ़ी ज़मा / ना हो गया
उस पीर को / फिर से नयी / इक तरजुमा / नी चाहिए

17. बहरे रमल मुरब्बा सालिम
फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन
2122 2122

मौत से मिल लो, नहीं तो
उम्रभर पीछा करेगी

मौत से मिल / लो नहीं तो
उम्र भर पी / छा करेगी

18. बह्‌रे रमल मुसद्दस मख़बून मुसककन
फ़ाएलातुन फ़एलातुन फ़ेलुन
2122 1122 22

सनसनीखेज़ हुआ चाहे है
तिश्नगी तेज़ हुआ चाहे है

सनसनीखे / ज़ हुआ चा / हे है
तिश्नगी ते / ज़ हुआ चा / हे है

19. बह्‌रे रमल मुसद्दस महज़ूफ़
फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन फ़ाएलुन
2122 2122 212

फ़िक्र का नामो-निशाँ तक था नहीं
क्या मज़े थे माँ तुम्हारी गोद में

फ़िक्र का ना / मो निशाँ तक / था नहीं
क्या मज़े थे / माँ तुम्हारी / गोद में

20. बह्‌रे रमल मुसद्दस सालिम
फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन
2122 2122 2122

ये अँधेरे ढूँढ़ ही लेते हैं मुझ को
इन की आँखों में ग़ज़ब की रौशनी है

ये अँधेरे / ढूँढ़ ही ले / ते हैं मुझ को
इन की आँखों / में ग़ज़ब की / रौशनी है

21. बहरे रमल मुसमन महज़ूफ़
फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन फ़ाएलुन
2122 2122 2122 212

वह्म चुक जा ते हैं तब जा कर उभरते हैं यक़ीं
इब्तिदाएँ चाहिए तो इन्तिहाएँ ढूँढ़ना

वह्म चुक जा / ते हैं तब जा / कर उभरते / हैं यक़ीं
इब्तिदाएँ / चाहिए तो / इन्तिहाएँ / ढूँढ़ना

22. बहरे रमल मुसम्मन मख़बून महज़ूफ़
फ़ाएलातुन फ़एलातुन फ़एलातुन फ़ेलुन
2122 1122 1122 22

जैसे चूमा हो तसल्ली ने हर इक चहरे को
उस के दरबार में साकार मुहब्बत देखी

जै से चूमा / हो तसल्ली / ने हर इक चह / रे को
उस के दरबा / र में साका / र मुहब्बत / देखी

23. बहरे रमल मुसम्मन मशकूल सालिम मज़ाइफ़ [दोगुन]
फ़एलात फ़ाएलातुन फ़एलात फ़ाएलातुन
1121 2122 1121 2122

वो जो शब जवाँ थी हमसे उसे माँग ला दुबारा
उसी रात की क़सम है वही गीत गा दुबारा

वो जो शब ज / वाँ थी हमसे / उ से माँग / ला दुबारा
उ सी रात / की क़सम है / व ही गीत / गा दुबारा

24. बहरे रमल मुसम्मन सालिम
फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन फ़ाएलातुन
2122 2122 2122 2122

कल अचानक नींद जो टूटी तो मैं क्या देखता हूँ
रात की शह पर कई तारे शरारत कर रहे हैं

कल अचानक / नींद जो टू / टी तो मैं क्या / देखता हूँ
रात की शह / पर कई ता / रे शरारत / कर रहे हैं

25. बहरे हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
1222 1222 122

हवा के साथ उड़कर भी मिला क्या
किसी तिनके से आलम सर हुआ क्या

हवा के सा / थ उड़ कर भी / मिला क्या
किसी तिनके / से आलम सर / हुआ क्या

26. बहरे हज़ज मुसद्दस सालिम
मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन
1222 1222 1222

ग़मों का भी मुक़द्दर होता है साहब
हर इक तकलीफ़ को आँसू नहीं मिलते

ग़मों का भी / मुक़द्दर हो / ता है साहब
हरिक तकली / फ़ को आँसू / नहीं मिलते

27. बहरे हजज़ मुसमन अख़रब मक्फ़ूफ मक्फ़ूफ मक्फ़ूफ महज़ूफ़
मफ़ऊल मुफ़ाईल मुफ़ाईल फ़ऊलुन
221 1221 1221 122

आवारा कहा जाएगा दुनिया में हर इक सम्त
सँभला जो सफ़ीना किसी लंगर से नहीं था

आवा रा / कहा जाए / गा दुनिया में / हर इक सम्त
सँभला जो / सफ़ीना कि / सी लंगर से / नहीं था

28. बहरे हज़ज मुसम्मन अख़रब मक़्फ़ूफ़ मक़्फ़ूफ़ मुख़न्नक सालिम
मफ़ऊल मुफ़ाईलुन मफ़ऊल मुफ़ाईलुन
221 1222 221 1222

हम दोनों मुसाफ़िर हैं इस रेत के दरिया के
उनवाने-ख़ुदा दे कर तन्हा न करो मुझ को

हम दो नों / मुसाफ़िर हैं / इस रेत / के दरिया के
उनवा ने / ख़ुदा दे कर / तनहा न / करो मुझ को

29. बहरे हज़ज मुसम्मन अशतर मक़्फ़ूफ़ मक़्बूज़ मुख़न्नक सालिम
फ़ाएलुन मुफ़ाईलुन फ़ाएलुन मुफ़ाईलुन
212 1222 212 1222

ख़ूब थी वो मक्कारी ख़ूब ये छलावा है
वो भी क्या तमाशा था ये भी क्या तमाशा है

ख़ूब थी / वो मक्क़री / ख़ूब ये / छलावा है

वो भी क्या / तमाशा था / ये भी क्या / तमाशा है

30. बहरे हज़ज मुसम्मन अशतर मक़्बूज़, मक़्बूज़, मक़्बूज़

फ़ाएलुन मुफ़ाएलुन मुफ़ाएलुन मुफ़ाएलुन

212 1212 1212 1212

लुट गये ख़ज़ाने और गुन्हगार कोइ नईं
दोष किस को दीजिए जवाबदार कोई नईं

लुट गये / ख़ज़ा ने औ / र गुन्हगा / र कोइ न'ईं
दोष किस / को दीजिए / जवाबदा / र कोई न'ईं

(उपरोक्त शेर में न'ईं को 'नैं' के यानि '2' के यानि 'लुन' के यानि दीर्घ / गुरू वर्ण के स्वरूप में प्रयोग में लिया गया है)

31. बहरे हज़ज मुसम्मन मक़्बूज़

मुफ़ाएलुन मुफ़ाएलुन मुफ़ाएलुन मुफ़ाएलुन

1212 1212 1212 1212

हमारी ओर देखकर यों मुस्कुराया मत करो
तुम्हें तो लुत्फ़ आ गया हमारे ग़म बहक गये

हमा री ओ / र देखकर / यों मुस्कुरा / या मत करो
तुम्हें तो लुत / फ़ आ गया / हमा रे ग़म / बहक गये

32. बहरे हज़ज मुसम्मन सालिम

मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन

1222 1222 1222 1222

मुझे पहले यों लगता था करिश्मा चाहिए मुझको
मगर अब जाके समझा हूँ क़रीना चाहिए मुझको

मुझे पहले / यों लगता था / करिश्मा चा / हिए मुझको
मगर अब जा / के समझा हूँ / क़रीना चा / हिए मुझको

नवीन सी. चतुर्वेदी
एफ़ विंग, फ्लॅट नम्बर 526,
ई-2 हायवे पार्क, ठाकुर कॉम्प्लेक्स,
कांदिवली - ईस्ट, मुम्बई - 400101
मोबाइल - 9967024593
ब्लॉग - www.navincchaturvedi.blogspot.com

कोरोना काल में साथ छोड़ने वाले साहित्यकार

-शंभू पी.सिंह

पिछले एक वर्ष के दौरान हमने बहुत कुछ खोया है। साहित्य को भी काफ़ी क्षति हुई है। एक नज़र कोरोना काल में साथ छोड़ गए पुरोधाओं पर- 'कविता की मुक्ति' से 'राम गोपाल शर्मा रुद्र' तक अनेकों आलोचना की पुस्तकों के रचयिता डॉ. नंदकिशोर नवल, हिन्दी और पंजाबी के कवि डॉ. बलबीर सिंह भसीन ने इसी काल में हमारा साथ छोड़ा। अंगिकाँचल के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कैलाश झा किंकर कोरोना काल के प्रारंभ में अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए इसके शिकार हुए और उनकी जान चली गयी।

'शहर में कहाँ मिलता है भला आदमी' कविता के रचनाकार, राष्ट्रीय स्तर के व्यंग्यकार पद्मश्री डॉ. रवींद्र राजहंस ने भी हमें अलविदा कह दिया। पटना विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के पूर्व प्राध्यापक डॉ. शैलेश्वर सती प्रसाद और बाबा नागार्जुन के पुत्र और पत्रकार, लेखक सुकान्त सोम भी इसी काल के गाल में समा गये। कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित पद्मश्री शांति जैन तो बिना किसी संकेत के शांति से निकल गयीं। परिवार के साथ होने न होने के मिटते फ़र्क़ को वह भली-भांति जानती थी, कोई होता भी तो क्या करता?, प्रश्न छोड़ किसी को पास फटकने का मौक़ा ही नहीं दिया। पचास से अधिक पुस्तकों की लेखिका बिहार की प्रसिद्ध साहित्यकार और गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा और दर्जनों पुस्तकों के लेखक और प्रख्यात आलोचक डॉ. खगेन्द्र ठाकुर भी इसी काल में चल बसे।

अपने बारे में कुछ सोचना चाहिए,
उम्र भर हम यही सोचते रह गये

कहते हुए उर्दू के मशहूर शायर सुल्तान अख़्तर ने भी हमें टाटा बॉय-बॉय कह दिया। उर्दू के ही मशहूर अफ़्सानानिगार (कथाकार) शौक़त हयात भी नहीं रहे। दिल्ली में इलाजरत थे। कोरोना के कारण उनका निधन हो गया।

इसके अतिरिक्त आलोचक और अफ़्सानानिगार शम्सुर्रहमान फ़ारुक़ी, अंजुम उस्मानी, आलोचक और शिक्षाविद शमीम हनफ़ी और उपन्यासकार मुशर्रफ आलम जौकी का नाम भी इस फ़ेहरिस्त में नाम जुड़ गया। 'पावस के दिन' काव्य संग्रह के रचयिता राजकुमार प्रेमी के गीत भी अब हमें सुनने को नहीं मिलेंगे। कवि सह अनुवादक मनोज कुमार झा, ग़ज़लकार और कथाकार कुमार नयन भी अब हमें नहीं मिलेंगे।

मुशर्रफ़ आलम ज़ौकी के जाने के बाद उनकी बेगम मशहूर अफ़्साना निगार और शाइरा तबस्सुम फ़ातिमा भी अगले दिन चल बसी। ग़ज़ल के नामी गिरामी शायर गीत के अलबेले गीतकार कुंवर बेचैन कुमार विश्वास के प्रयासों के बावजूद व्यवस्था से परास्त हो गये। 'ग़ज़ल परामर्श' और 'ग़ज़ल के बहाने' अनेकों नौजवानों को शायरी सिखाने वाले और बेहतरीन

ग़ज़लकारों की कला सौष्ठव की गुणवत्ता में निखार लाने वाले कविता के दरवेश श्री दरवेश भारती ने भी हम से हाथ छुड़ा लिया।

देश के पहले हिंदी ग़ज़लकार जिनकी कुल 25 ग़ज़लें 5 वर्षों तक देश के दो-दो विश्वविद्यालय के एम.ए.(हिंदी) के पाठ्यक्रमों में शामिल रहीं, भोपाल के ज़हीर क़ुरैशी ने भी अलविदा कह दिया। राँची के अफ़्सानानिगार एम्.ए. हक़, पटना के रियाज़ अज़ीमाबादी, सासराम के उस्ताद शायर सैफ़ सहसरामी, खगौल (दानापुर) के जुनूँ अशरफ़ी भी मौत की आग़ोश में चले गये।

देश के स्तर की बात करें तो विख्यात उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली, गीतकार राजेंद्र राजन, हिंदी बंगला के कवि लेखक रवि घोष, चित्रकार और कवि प्रभु जोशी, उर्दू हिंदी मैथिली के कवि गोविन्द राकेश भी कोरोना दंश देकर जुदा हो गये।

‘अँधेरे में डूबा हुआ है ज़माना, चराग़ो-मुहब्बत जलाना पड़ेगा,
न ये दौर तूफ़ान का थम रहा है, नहीं थम रहा है ये दौरे-तबाही,
अमन-चैन जो खो गया है, उसे ढूँढ़कर आज लाना पड़ेगा।’

कवि घनश्याम ने अलविदा कहने से पहले अपने ग़ज़ल की इन पंक्तियों के माध्यम से आज के दौर का आभास हमें पहले ही दे दिया था।

दूरदर्शन पटना को नये कलेवर में सजाने-सँवारने वाले ‘भारत स्वाभिमान’ गीत के रचनाकार और पूर्व निदेशक पुरुषोत्तम नारायण सिंह की इहलीला भी इसी काल में समाप्त हो गई। दर्जनों पुस्तकों के लेखक, आलोचक और कवि रेवती रमण भी कोरोना से उबर नहीं पाए। ‘नचिकेता, परिबंध, चाणक्य तुम लौट आओ’ सहित अनेकों पुस्तकों के रचनाकार शिवदास पाण्डेय ने भी इसी काल में हमारा साथ छोड़ दिया। कोसी के पुराने कवियों में शुमार रहे हरिशंकर श्रीवास्तव शलभ और लोकगाथा ‘महुआ घटवारीन’ से लोकप्रियता के चरम पर पहुँचे हिन्दी और अंगिका के कवि भगवान प्रलय को भी कोरोना ने नहीं बख़्शा। ‘चाँदनी रात का ज़हर’ कहानी संग्रह के रचनाकार नरेन के असमय जाने से हिन्दी के साथ-साथ मगही साहित्य को भी बहुत नुक़सान पहुँचा है। ‘देवनागरी लिपि का इतिहास’ के रचयिता ‘रामनिरंजन परिमलेंदु’ भी कोरोना की भेंट चढ़ गए। सीमाँचल के नाटककार और ‘वेणु’ पत्रिका के संपादक राजेंद्र ‘वेणु’ भी नहीं रहे। इस महामारी ने अंगिकाँचल के प्रसिद्ध आलोचक मनाज़िर आशिक़ भरगावी, ‘क़िस्सा’ पत्रिका के संपादक और कहानीकार शिव कुमार शिव, ज्योतिष चंद्र शर्मा सहित अनेकों साहित्यकारों को हमसे छीन लिया।

मैथिली पत्रिका ‘अनुप्राश’ ने अपने एक अंक में कोरोना काल में मिथिलांचल के मैथिली और हिन्दी के उन साहित्यकारों का चित्र प्रकाशित किया है, जिन्होंने इस काल में हमारा साथ छोड़ दिया। चंद्रनाथ मिश्र अमर, रामदेव झा, योगमाया देवी, रामलोचन ठाकुर, पंचानन मिश्र, हेमचंद्र झा, जयप्रकाश मंडल, डॉ. बिंदेश्वर मिश्र, स्वामी शैलेन्द्र, धर्मनाथ झा, कुमार गगन, प्रणव

नार्मदेर्य, सुधीर कुमार झा, मनोज अनुज, डॉ. मोहन मिश्र, शत्रुघ्न पासवान सहित अन्य का नाम शामिल है।

हिंदी साहित्य के लघुकथाकारों में अग्रणी डॉ. सतीशराज पुष्करणा 28 जून को दिल्ली में हमारा दिल तोड़ कर चले गये। एक व्यक्तिगत क्षति।

कोरोना काल में हमें अलविदा कहने वाले ये साहित्यिक पुरोधा केवल कोरोना बीमारी या उसके दुष्प्रभाव से ही काल-कवलित नहीं हुए हैं, अन्य कारणों से भी उनकी जानें गयीं हैं, लेकिन कहीं-न-कहीं इस महामारी की अप्रत्यक्ष भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता है। ये वो नाम है, जिनकी जानकारी आम हो पाई। हो सकता है आनेवाला कल इससे भी बड़ा आंकड़ा प्रस्तुत करे।

यादें

कुँअर बेचैन

बड़ा उदास सफ़र है, हमारे साथ रहो
बस एक तुम पे नज़र है, हमारे साथ रहो

हम आज ऐसे किसी ज़िन्दगी के मोड़ पे हैं
न कोई राह, न घर है, हमारे साथ रहो

तुम्हें ही छाँव समझकर हम आ गये हैं इधर
तुम्हारी गोद में सर है, हमारे साथ रहो

ये नाव दिल की अभी डूब ही न जाए कहीं
हर एक साँस भँवर है, हमारे साथ रहो

ज़माना जिसको मुहब्बत का नाम देता रहा
अभी अजानी डगर है, हमारे साथ रहो

इधर चराग़ धुएँ में घिरे-घिरे हैं 'कुँअर'
उधर ये रात का डर है, हमारे साथ रहो

कविता कोष से साभार

कुँअर बेचैन

गलियों-गलियों सिर्फ़ घुटन है बंजारा दम तोड़ न दे
बहरों के घर गाते-गाते इकतारा दम तोड़ न दे

ऊँचे पर्वत से उतरी है प्यास बुझाने धरती की
अंगारों पर चलते-चलते जलधारा दम तोड़ न दे

चन्दा का क्या वह तो अपनी राहें रोज़ बदलता है
अपने वचनों पर दृढ़ रहकर ध्रुवतारा दम तोड़ न दे

मुमकिन हो तो दूर ही रखना दिल की आग को आँसू से
पानी की बाँहों में आकर अंगारा दम तोड़ न दे

केवल उजियारा रहता तो नींद न मिलती आँखों को
मेरे बचपन का साथी ये अँधियारा दम तोड़ न दे

घर-घर जाकर बाँट रहा है चिट्ठी जो मुस्कानों की
देखो मेरे आँसू का ये हरकारा दम तोड़ न दे

कितनी मुश्किल से बच पाया आँधी से ये नीड़ 'कुँअर'
अब तो बिजली की बारिश हैं बेचारा दम तोड़ न दे

कविता कोष से साभार

'दरवेश' भारती

❀

बुलंदी हो बुलंदी-सी तो ये मशहूर करती है
अगर हद से ज़ियादा हो तो ये मग़रूर करती है

सुहाने ख़्वाब हों और वो भी हों ता'बीर से भरपूर
यही दौलत है वो जो नींद तक काफ़ूर करती है

नहीं है होश में फिर भी वो उठ-उठकर है चिल्लाता
है कुछ तो बात जो इस पर उसे मजबूर करती है

मेरी औक़ात से बढ़कर मुझे देना न कुछ मालिक
ज़रूरत से ज़ियादा रौशनी बेनूर करती है

इसे लेने में कोताही न हरगिज़ कीजिए साहिब
बुज़ुर्गों की दुआ ही हर बला को दूर करती है

जहाँ तक हो सके इस से बनाकर फ़ासिला रखिये
अना ही हर बशर के ख़्वाब चकनाचूर करती है

झुकी रहती हैं नज़रें उम्र भर के वास्ते 'दरवेश'
कि ये एहसानमंदी इस क़दर मशकूर करती है

*कविता के दरवेश 'दरवेश भारती'- डॉ.भावना * राहुल शिवाय (पृष्ठ 32) से साभार*

❀

दुई की बात जो दिल से निकाल देता है
उसी को वो भी वक़ारो-जलाल देता है

उसे बशर न कहें जो ज़रा-सी बात पे ही
हर एक राज़ सरे-आम उछाल देता है

जो छाँव औरों को दे ख़ुद कड़कती धूप सहे
किसी-किसी को ख़ुदा ये कमाल देता है

उरूज के लिए अपना ज़मीर खो देना
यही अमल तो बशर को ज़वाल देता है

न पास जा तेरी पहचान ही न खो जाये
'दरख़्त धूप को साये में ढाल देता है'

तमीज़ अच्छे-बुरे में न कर सका जो कभी
वही अब अच्छे-बुरे की मिसाल देता है

सुराग़ उजालों का वो पा ही लेता है 'दरवेश'
जो ख़ुद को अंधी गुफाओं में डाल देता है

*कविता के दरवेश 'दरवेश भारती'- डॉ.भावना * राहुल शिवाय (पृष्ठ 57) से साभार*

ज़हीर क़ुरैशी

सबकी आँखों में नीर छोड़ गये
जाने वाले शरीर छोड़ गये

राह भी याद रख नहीं पायी
क्या कहाँ राहगीर छोड़ गये

लग रहे हैं सही निशाने पर
वो जो व्यंगों के तीर छोड़ गये

हीर का शील भंग होते ही
राँझे अस्मत पे चीर छोड़ गये

एक रूपया दिया था दाता ने
सौ दुआएँ फ़क़ीर छोड़ गये

उस पे क़ब्ज़ा है काले नागों का
दान जो दानवीर छोड़ गये

हम विरासत न रख सके क़ायम
जो विरासत 'कबीर' छोड़ गये

कविता कोष से साभार

मुस्कुराना भी एक चुम्बक है
मुस्कुराओ अगर तुम्हें शक है

उसको छूकर कभी नहीं देखा
उससे सम्बन्ध बोलने तक है

डॉक्टर की सलाह से लेना
ये दवा भी ज़हर सी घातक है

दिन में सौ बार खनखनाती है
एक बच्चे की बंद गुल्लक है

उस से उड़ने की बात मत करना
वो जो पिंजरे में आज बंधक है

हक्का-बक्का है बेवफ़ा पत्नी
पति का घर लौटना अचानक है

'स्वाद' को पूछना है 'बन्दर' से
जिसके हाथ और मुँह में अदरक है

कविता कोष से साभार

सुल्तान अख़्तर

कभी-कभी कोई ऐसा भी दिन निकलता है
कि माहताब भी सूरज के साथ चलता है

अँधेरा हो कि उजाला चिराग़ जलता है
सराए-दिल में कोई रोज़-ओ-शब टहलता है

मैं जलते रहता हूँ जिसके लिए दिये की तरह
वो मोम बनके मेरे दिल में कब पिघलता है

ज़माना रोज़ बदलता है करवटें लेकिन
दिलों का मौसमे-शफ़्फ़ाक कब बदलता है

मैं सुनता रहता हूँ सरगोशियाँ क़दम-ब-क़दम
कोई तो है जो मेरे साथ-साथ चलता है

गुज़र सका न तिरे इंतज़ार का मौसम
कि ताक़े-दिल पे अभी तक चिराग़ जलता है

हमारे नाम से रौशन हैं रोज़ो-शब यानी
तरफ़-तरफ़ अभी अपना चिराग़ जलता है

हम ऐसे क़हर के सहरा में ख़ेमाज़न हैं जहाँ
न रात ढलती है अख़्तर न दिन निकलता है

ग़ज़लिस्तान - सुल्तान अख़्तर (सफ़्हा 37) से साभार

भरी महफ़िल में तन्हा हो गया है
वो अपने क़द से ऊँचा हो गया है

मुझे रोये ज़माना हो गया है
कि अब आँखों में दरिया हो गया है

हवाएँ सर पटकती फिर रही हैं
मुक़फ़्फ़ल हर दरीचा हो गया है

गले मिलने लगीं शाख़ों से शाख़ें
शजर का ख़्वाब पूरा हो गया है

वो हँसता भी है अब संजीदगी से
उसे ख़ुद पर भरोसा हो गया है

न गजरे हैं न गजरेवालियाँ हैं
हमारा शहर बूढ़ा हो गया है

थकन बैठी है क़दमों से लिपटकर
इरादा पुर-शिकस्ता हो गया है

किसी जानिब नज़र उठती नहीं अब
हर एक मंज़र बरहना हो गया है

लहू में जम गयी है बर्फ़ 'अख़्तर'
बदन मिट्टी का तोदा हो गया है

ग़ज़लिस्तान - सुल्तान अख़्तर (सफ़्हा 55) से साभार

घनश्याम

हमें वो ख़ुद-ब-ख़ुद आगे कभी आने नहीं देते
तरक़्क़ी के किसी पथ पर कभी जाने नहीं देते

हमारी ज़िंदगी पर हो गये हैं इस क़दर क़ाबिज़
हमें अपने मसाइल आप सुलझाने नहीं देते

उन्होंने बंद अपनी मुट्ठियों में कर लिया ऐसे
किसी को भी जिगर के ज़ख़्म दिखलाने नहीं देते

हमारी ही कमाई पर उड़ाते हैं वो गुलछर्रे
हमें लेकिन कभी भी पेटभर खाने नहीं देते

ये बारूदी हवाएँ और ये आतंक के साये
मनुज को गीत ख़ुशियों के कभी गाने नहीं देते

सही माली वही होते जो खोकर भी वजूद अपना
गुलों को ताज़गी देते हैं, मुरझाने नहीं देते

मिली है कामयाबी बस उसी को अंततोगत्वा
जो अपने हौसलों को हाथ से जाने नहीं देते

हज़ारों उँगलियाँ उठने लगीं 'घनश्याम' के आगे
जहाँ वाले किसी का प्यार भी पाने नहीं देते

जब मधुप को नज़र पँखुरी आ गयी
उसके गुंजार में ताज़गी आ गयी

हर तरफ़ अफ़रा-तफ़री है, कोहराम है
बाढ़ की ज़द में फिर झोंपड़ी आ गयी

दिल समन्दर का कितना मचलने लगा
सामने उसके कोई नदी आ गयी

साथ फोटो खिंचाने की क्या होड़ है
जबसे महफ़िल में वो फुलझड़ी आ गयी

देखिए ! कितनी जल भुन उठी राधिका
कृष्ण के लब पे जब बाँसुरी आ गयी

द्वार उम्मीद के बंद जब हो गये
याद मुझको तेरी ख़ुदकुशी आ गयी

नींद त्यागो, उठो, चलके स्वागत करो
लो ! उषा की नयी पालकी आ गयी

आप आए तो 'घनश्याम' को ये लगा
धूप हेमन्त की गुनगुनी आ गयी

शांति जैन

❀

किसी घर में तेरी यादों की महक हो तो रहूँ
दिले-तन्हा में मुहब्बत की कसक हो तो रहूँ

मालो-ज़र, सोना-ओ-चाँदी से न दरकार मुझे
दौलते-दिल पे तेरी थोड़ा-सा हक़ हो तो रहूँ

यूँ तो सूरत हैं कई अपनी भी, बेगानी भी
कहीं महबूब की हल्की-सी झलक हो तो रहूँ

वो जो आवाज़ किसी दिल में मचा दे हलचल
ऐसी आवाज़ की पुरसोज़ खनक हो तो रहूँ

ताल्लुक़ातों की ज़मीं काँच की दीवार नहीं
दिल में एहसास यही उम्र तलक हो तो रहूँ

(20.08.1995) तरन्नुम से साभार

❀

एक टुकड़ा धूप का दरिया में गिरकर सो गया
एक मोती पत्थरों के बीच जाकर खो गया

बादलों के जिस्म से उठने लगा नीला धुआँ
इक परिंदा खेत में क़तरा लहू का बो गया

अब कहाँ वो आसमाँ का आइने-सा साफ़ दिल
एक सच्चा आदमी, इंसानियत को रो गया

मंदिरों में झूलती हैं मोतियों की झालरें
और जिसको आरज़ू थी घर की, बेघर हो गया

(09.09. 1992) तरन्नुम से साभार

❀

दिल से दिल को जोड़ने वाली ज़ंजीरें अच्छी लगती हैं
दीवारों की इक्की -दुक्की तस्वीरें अच्छी लगती हैं

तन्हा चाँद के उजियारे से, सारी दुनिया रौशन होती
तारीकी में एक दिए की तन्वीरें अच्छी लगती हैं

पाँच अंगुलियों में वो बात कहाँ, जो कि एक मुट्ठी में है
पन्नों से पुस्तक में उतरी तहरीरें अच्छी लगती हैं

इंसानों की ये नादानी, बिना वजह की खींचातानी
आँगन में दो ही फूलों की जागीरें अच्छी लगती हैं

(08.07.1995) तरन्नुम से साभार

मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

❀

उस का अंदाज़ भी चेहरा भी ग़ज़ल जैसा है
वो पड़ोसी मिरा लगता भी ग़ज़ल जैसा है

देखने वालो इसे मेरी नज़र से देखो
ये मिरा चाँद-सा मुन्ना भी ग़ज़ल जैसा है

धर्म के नाम पे ये क़त्ल की साज़िश कुछ सोच
तेरे हमसाए का बच्चा भी ग़ज़ल जैसा है

हुस्न ऐसा है कि देखो तो लगे ताज-महल
इस पे वो शख़्स सँवरता भी ग़ज़ल जैसा है

पत-झड़ों से भी उभरती हैं बहारें 'आशिक़'
रंग मौसम का बदलता भी ग़ज़ल जैसा है

रेख़्ता से साभार

❀

कर्ब का समाँ है मेरे नाम
जैसे इक जहाँ है मेरे नाम

तिनके-तिनके आँधियों का ज़िक्र
कोई आशियाँ है मेरे नाम

चीख़ती मशीनें तेरे पास
शहर का धुआँ है मेरे नाम

हर वरक़ पे ज़ख़्म की तहरीर
सारी दास्ताँ है मेरे नाम

रौशनी का लफ़्ज़ तेरे पास
दर्द का बयाँ है मेरे नाम

रेख़्ता से साभार

कुमार नयन

❀

ज़मीं के ज़ख़्म का मरहम नहीं क्या
फ़लक की आँख होगी नम नहीं क्या

हर इक शय आग बनकर जल रही है
कहीं इक क़तरा-ए-शबनम नहीं क्या

पिएगी और क्या-क्या ये सियासत
लहू बच्चों का कोई कम नहीं क्या

बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं
वतन में अपने ही अब हम नहीं क्या

ख़ुशी से आज भी क्यों जी रहा हूँ
मुझे ग़म होने का कुछ ग़म नहीं क्या

लहू क्यों खौलता रहता है हरदम
सुकूँ का अब कोई मौसम नहीं क्या

कभी तन्हा नहीं मुझको समझना
मेरी ग़ज़लें मेरी हमदम नहीं क्या

क़लम लेकर उतर जाऊँ सड़क पर
अभी भी माँ क़सम वो दम नहीं क्या

कविता कोष से साभार

❀

मेरा क़िस्सा कोई दोहरा रहा है
कि अपना दुख ग़ज़ल में गा रहा है

बड़ा नादान है दिल आपका भी
जो मुझको छोड़कर पछता रहा है

कोई साया न है आवाज़ ही कुछ
मगर नज़दीक कोई आ रहा है

सिले होंठों का कैसा बोल है ये
जो मेरे दर्द को सहला रहा है

किसे तू ढूँढ़ता फिरता है आख़िर
कि ख़ुद को रोज़ खोता जा रहा है

नहीं टिकता कहीं कुछ देर भी क्यों
मेरा दिल हर जगह उकता रहा है

गुज़रना मज़हबों के शहर से है
मुसाफ़िर-मन बहुत घबरा रहा है

कविता कोष से साभार

गोविन्द राकेश

ख़ूबसूरत से नज़ारे खो गये
आसमाँ के जब सितारे खो गये

आ गया सैलाब सारे शहर में
सारे दरिया के किनारे खो गये

उनकी बातें तो नहीं पहुँची कभी
रास्ते में सब इशारे खो गये

जो सड़क पर चल पड़े घर के लिए
उनमें से कुछ बेसहारे खो गये

नफ़रतों की जब चली आँधी कहीं
कुछ हमारे कुछ तुम्हारे खो गये

बात अब ये समझ में आई है
हर तरफ़ क्यों अभी लड़ाई है

हक़ किसी और का रहे फिर भी
हाथ उनके ही अब मलाई है

चीख़ भी तो रहा नहीं कोई
ख़ामुशी में ही अब भलाई है

फ़िक्र जिनको नहीं ग़रीबों की
उनके हाथों में रहनुमाई है

शहर में ज़िंदगी बचे कैसे
गाँव में भी कहाँ कमाई है

2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें से साभार

हैरत फर्रुख़ाबादी

ज़ीस्त के भेद खोलता है कौन
मेरे अंदर ये बोलता है कौन

मेरे शे'रों में मेरे लफ़्ज़ों को
मोतियों-सा ये रोलता है कौन

मेरे शे'रों में मेरी ग़ज़लों में
अपने असरार खोलता है कौन

तल्ख़ लम्हों में लब से शीरीनी
मेरे कानों में घोलता है कौन

छीन ली किस ने मेरी तन्हाई
मेरी रातों में डोलता है कौन

कुंद हो जाता हाफ़िज़ा मेरा
उसको हर पल टटोलता है कौन

शे'र मेरे नहीं हैं ये 'हैरत'
ख़ुद समझ लो ये बोलता है कौन

लोग मुद्दत में बना पाते हैं घर
ज़लज़ले आते हैं गिर जाते हैं घर

वो मकानों के मकीं हैं ठीक है
ख़ुश नसीबों को ही मिल पाते हैं घर

मज़हबों की आड़ लेकर नफ़रतें
फैल जाती हैं तो बँट जाते हैं घर

जो हक़ीक़त में हो घर वो घर कहाँ
हमको जाना ही है सो जाते हैं घर

हर जगह रुकना मुनासिब है कहाँ
यूँ तो रस्ते में बहुत आते हैं घर

ये मकाँ था इसको घर समझा किए
कैसे-कैसे हमको बहकाते हैं घर

उम्र सारी रास्तों में कट गयी
वक़्त अब आया है अब जाते हैं घर

इक ज़रा-सा प्यार होना चाहिए
दिल मिलें तो ख़ुद लिपट जाते हैं घर

उम्र 'हैरत' दोपहर की धूप थी
शाम अब आयी है अब जाते हैं घर

धरोहर

कृष्ण बिहारी 'नूर'

नज़र मिला न सके उससे उस निगाह के बाद
वही है हाल हमारा जो हो गुनाह के बाद

मैं कैसे और किस सिम्त मोड़ता ख़ुद को
किसी की चाह न थी दिल में, तेरी चाह के बाद

ज़मीर काँप तो जाता है, आप कुछ भी कहें
वो हो गुनाह से पहले कि हो गुनाह के बाद

कटी हुई थीं तनाबें तमाम रिश्तों की
छुपाता सर मैं कहाँ तुम से रस्मो-राह के बाद

गवाह चाह रहे थे वो बेगुनाही का
ज़ुबाँ से कह न सका कुछ, 'ख़ुदा गवाह' के बाद

कविता कोष से साभार

ज़िन्दगी से बड़ी सज़ा ही नहीं
और क्या जुर्म है पता ही नहीं

इतने हिस्सों में बँट गया हूँ मैं
मेरे हिस्से में कुछ बचा ही नहीं

ज़िन्दगी! मौत तेरी मंज़िल है
दूसरा कोई रास्ता ही नहीं

सच घटे या बढ़े तो सच न रहे
झूठ की कोई इंतिहा ही नहीं

ज़िन्दगी! अब बता कहाँ जायें
ज़हर बाज़ार में मिला ही नहीं

जिसके कारण फ़साद होते हैं
उसका कोई अता-पता ही नहीं

धन के हाथों बिके हैं सब क़ानून
अब किसी जुर्म की सज़ा ही नहीं

कैसे अवतार, कैसे पैग़म्बर
ऐसा लगता है अब ख़ुदा ही नहीं

उसका मिल जाना क्या, न मिलना क्या
ख़्वाब-दर-ख़्वाब कुछ मज़ा ही नहीं

चाहे सोने के फ़्रेम में जड़ दो
आइना झूठ बोलता ही नहीं

अपनी रचनाओं में वो ज़िन्दा है
'नूर' संसार से गया ही नहीं

मनोहर शर्मा साग़र पालमपुरी

सुबह हर घर के दरीचों में चहकती चिड़ियाँ
दिन के आग़ाज़ का पैग़ाम हैं देती चिड़ियाँ

फ़स्ल पक जाने की उम्मीद पे जीती हैं सदा
सब्ज़ खेतों की मुँडेरों पे फुदकती चिड़ियाँ

अब मकानों में झरोखे नहीं हैं शीशे हैं
जिनसे टकरा के ज़मीं पर हैं तड़पती चिड़ियाँ

किसी वीरान हवेली के स्नेह में अक्सर
उसके गुमगश्ता मकीनों को हैं रोती चिड़ियाँ

जेठ में गाँव के सूखे हुए तालाब के पास
जल की इक बूँद की ख़ातिर हैं भटकती चिड़ियाँ

खेत के खेत ही चुग जाते हैं ज़ालिम कव्वे
और हर फ़स्ल पे रह जाती हैं भूखी चिड़ियाँ

सोचता हूँ मैं ये 'साग़र'! कि पनाहों के बग़ैर
ख़त्म हो जाएँगी इक दिन ये बिचारी चिड़ियाँ

अब क्या बताएँ क्या हुए चिड़ियों के घोंसले
तूफ़ाँ की नज़्र हो गए चिड़ियों के घोंसले

हर घर के ही दरीचों छतों में छुपे हैं साँप
महफ़ूज़ अब नहीं रहे चिड़ियों के घोंसले

पीपल के उस दरख़्त के कटने की देर थी
आबाद फिर न हो सके चिड़ियों के घोंसले

जब से हुए हैं सूखे से खलिहान बे-अनाज
लगते हैं कुछ उदास-से चिड़ियों के घोंसले

बढ़ता ही जा रहा है जो धरती पे दिन-ब-दिन
उस शोर-ओ-गुल में खो गये चिड़ियों के घोंसले

पतझड़ में कुछ लुटे तो कुछ उजड़े बहार में
सपनों की बात हो गये चिड़ियों के घोंसले

बनने लगे हैं जब से मकाँ कंकरीट के
तब से हैं दर-ब-दर हुए चिड़ियों के घोंसले

तारीख़ है गवाह कि फूले-फले बहुत
जो आँधियों से बच गये चिड़ियों के घोंसले

जब बज उठा शहर की किसी मिल का सायरन
'साग़र' को याद आ गये चिड़ियों के घोंसले

प्रदीप रौशन

आबाद कर गयीं उन्हें बर्बादियाँ मेरी
दुनिया के काम आएँगी नाकामियाँ मेरी

भटके हुओं को लाएँगी मंज़िल पे एक दिन
रस्ता उन्हें दिखाएँगी गुमराहियाँ मेरी

अपने तमाम लोग ने हिम्मत ही तोड़ दी
देती रही हैं हौसला दुश्वारियाँ मेरी

शाबाशियों ने मुझको तमाशा बना दिया
इज़्ज़त दिला गयीं मुझे रुस्वाइयाँ मेरी

महफ़िल में हम-ही-हम रहे इसका सिला मिला
दिन-रात ढूँढ़ती रहीं तन्हाइयाँ मेरी

आज़ाद हो सका न मैं ख़ुद अपनी ही क़ैद से
एक हद में रेंगती रहीं परछाइयाँ मेरी

बस तर्ज़े-ज़िन्दगानी ही रह जाए तुमको याद
दाना तुम्हें बनाएँगी नादानियाँ मेरी

बिखरा के ज़ुल्फ़ छत पे टहलती हुई ग़ज़ल
लिक्खी हुई नहीं, ये है उतरी हुई ग़ज़ल

नज़रों से किसने चाँद का दिल गुदगुदा दिया
छिटकी हुई है चाँदनी, बिखरी हुई ग़ज़ल

वो शहरे-अजनबी में पता पूछती हुई
आयी थी मेरे पास भटकती हुई ग़ज़ल

रिमझिम फुहार में भी बड़ी मस्त चाल से
देखी है मैंने भीग के चलती हुई ग़ज़ल

बुलबुल, बहार, फूल, चमन, रंगो-बू, सबा
इन सब से खेल-खेल के तितली हुई ग़ज़ल

सालिम बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन सालिम
अर्कान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
मात्राक्रम : 212   212   212   212

सालिम बह्र : बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन सालिम
हफ़ीज़ बनारसी के मतले

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नयी ज़िंदगी आ गयी

गुमरही शर्त है रहबरी के लिए
कुछ जुनूँ चाहिए आगही के लिए

हुस्न से दोस्ती थी बहुत दिन हुए
ज़िंदगी, ज़िंदगी थी बहुत दिन हुए

शक्ले हस्ती है बेजान तस्वीर-सी
डाल दी ग़म ने पैरों में ज़ंजीर-सी

रोज उभरते रहे रोज़ ढलते रहे
हम भी सूरज की मानिंद जलते रहे

जाम औरों की ख़ातिर उछाले गये
और हम सिर्फ़ वादों पे टाले गये

सभी मतले सफ़ीरे-शहरे-दिल से साभार

फ़ाइलुन x 4

मशहूर शाइरों के मतले

मेरी आँखों में ग़म की निशानी नहीं
पत्थरों के पियालों में पानी नहीं

दूसरों को हमारी सज़ाएँ न दे
चाँदनी रात को बद्दुआएँ न दे

किसने मुझको सदा दी बता कौन है
ऐ हवा मेरे घर में छुपा कौन है

यह कसक दिल की दिल में चुभी रह गई
ज़िन्दगी में तुम्हारी कमी रह गयी

- बशीर बद्र

ख़ारो-ख़स तो उठे, रास्ता तो चले
मैं अगर थक गया क़ाफ़िला तो चले

- कैफी आज़मी

फूल काँटे बिना तो निकलता नहीं
वो अदू से जुदा तो निकलता नहीं

हम ग़रीबों पे जितने सितम ढाएँगे
एक दिन आपके सामने आएँगे

प्यार शबनम की बूँदें जताती रहीं
नीम की पत्तियाँ तिलमिलाती रहीं

शाह रग पर वही दर्द का हाथ है
आज फिर चाँद की चौदहवीं रात है

साज़िशें हो रही हैं घनी रात में
चाँद की जान पर आ बनी रात में

- मुज़फ्फ़र हनफ़ी

संकलन - रमेश 'कँवल'

बे-झिझक आ गये, बेख़बर आ गये
आज रिन्दों में वाइज़ किधर आ गये

- शकील बदायूँनी

हर तरफ़ हर जगह बेशुमार आदमी
फिर भी तन्हाइओं का शिकार आदमी

- निदा फ़ाज़ली

संकलन - अरुण कुमार आर्य

बे-दिली क्या यूँही दिन गुज़र जाएँगे
सिर्फ़ ज़िन्दा रहे हम तो मर जाएँगे

-जौन एलिया

उँगलियाँ यूँ न सब पर उठाया करो
ख़र्च करने से पहले कमाया करो

-राहत इंदौरी

सर से चादर बदन से क़बा ले गयी
ज़िन्दगी हम फ़क़ीरों से क्या ले गयी

- बशीर बद्र

क्या हुआ हुस्न है हम-सफ़र या नहीं
इश्क़ मंज़िल ही मंज़िल है रस्ता नहीं

- ख़ुमार बाराबंकवी

संकलन - हिमकर श्याम

मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े

बहरे-मुतदारिक मुसम्मन सालिम में मशहूर फ़िल्मी गानों का मुखड़ा (फ़ाइलुन x 4)
सौजन्य - हिमकर श्याम, राँची

कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

गीतकार : कैफ़ी आज़मी
फ़िल्म : हक़ीक़त

ख़ुश रहे तू सदा, ये दुआ है मेरी
बेवफ़ा ही सही, दिलरुबा है मेरी

गीतकार : आनंद बक्शी
फ़िल्म : खिलौना

आपकी याद आती रही रात भर
चश्म-ए-नम मुस्कुराती रही रात भर

गीतकार : मख़दूम मुहिउद्दीन
फ़िल्म : गमन

गीत गाता हूँ मैं गुनगुनाता हूँ मैं
मैंने हँसने का वादा किया था कभी
इसलिये अब सदा मुस्कुराता हूँ मैं

गीतकार : देव कोहली
फ़िल्म : लाल पत्थर

बेख़ुदी में सनम, उठ गये जो क़दम
आ गये, आ गये, आ गये पास हम

गीतकार : अख़्तर रोमानी
फ़िल्म : हसीना मान जाएगी

- संकलन - ऐनुल बरेलवी सारण

छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए
ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए

फ़िल्म - सरस्वती चंद्र
गीतकार - इंदीवर
- संकलन - प्रो.सुधा सिन्हा सावी, पटना

मेरे महबूब में क्या नहीं क्या नहीं
वो तो लाखों में है इक हसीं इक हसीं

फ़िल्म - मेरे महबूब
गीतकार - शकील बदायूँनी
- संकलन कालजयी घनश्याम

तुम अगर साथ देने का वादा करो
मैं यूँही मस्त नग़्मे लुटाता रहूँ

गीतकार - साहिर लुधियानवी
फ़िल्म : हमराज़

आप यूँ ही अगर हमसे मिलते रहे
देखिए एक दिन प्यार हो जाएगा

गीतकार - एस. एच. बिहारी
फ़िल्म : एक मुसाफ़िर एक हसीना

जिस गली में तेरा घर न हो बालमा
उस गली से हमें तो गुज़रना नहीं

गीतकार - आनन्द बक्शी
फ़िल्म : कटी पतंग
- संकलन - अरुण कुमार आर्य

ज़िन्दगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र
कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं

गीतकार: इन्दीवर
फ़िल्म : सफ़र

फ़ऊलुन x 4

बहर-ए-मुतक़ारिब मुसम्मन सालिम
हफ़ीज़ बनारसी के मतले

❀

इधर भी तबाही, उधर भी तबाही
कहाँ जाएँ आख़िर मुहब्बत के राही

उसे पास से हमने देखा नहीं था
वो दरिया का धोका था, दरिया नहीं था

सफ़ीने का जो नाख़ुदा बन गया है
ख़ुदा की तरह बात करने लगा है

जफ़ा जो बहुत हैं सितमगर बहुत हैं
अभी आस्तीनों में ख़ंजर बहुत हैं

जो पर्दों में ख़ुद को छुपाये हुए हैं
क़यामत वही तो उठाये हुए हैं

बहारों का सब बांकपन लूटते हैं
चमन को ख़ुद अहले-चमन लूटते हैं

मशहूर शाइरों के मतले

कहाँ आँसुओं की ये सौग़ात होगी
नये लोग होंगे नयी बात होगी

वो शायद दिलों को धड़कने न देंगे
गुलों से महकने का हक़ छीन लेंगे

-बशीर बद्र

इधर बढ़ रही है उधर घट रही है
नदी की बला से ज़मीं कट रही है

-मुज़फ्फ़र हनफ़ी

संकलन - रमेश 'कँवल'

कोई पास आया सवेरे-सवेरे
मुझे आज़माया सवेरे-सवेरे

-सईद राही

संकलन - अरुण कुमार आर्य

जहाँ तेरा नक़्श-ए-क़दम देखते हैं
ख़याबाँ-ख़याबाँ इरम देखते हैं

-मिर्ज़ा ग़ालिब

सितारों से आगे जहाँ और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तिहाँ और भी हैं

-अल्लामा इक़बाल

फिरे राह से वो यहाँ आते-आते
अजल मर रही तू कहाँ आते-आते

-दाग़ देहलवी

दहन पर हैं उन के गुमाँ कैसे-कैसे
कलाम आते हैं दरमियाँ कैसे-कैसे

-हैदर अली आतिश

जो इस शोर से 'मीर' रोता रहेगा
तो हम-साया काहे को सोता रहेगा

-मीर तक़ी मीर

संकलन - हिमकर श्याम, राँची

मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े

बहरे-मुतक़ारिब मुसम्मन सालिम में मशहूर फ़िल्मी गानों का मुखड़ा (फ़ऊलुन x 4)
सौजन्य : हिमकर श्याम, राँची

मुहब्बत की झूठी कहानी पे रोये
बड़ी चोट खायी जवानी पे रोये

- शकील बदायूँनी
फ़िल्म : मुग़ले-आज़म

ये माना मेरी जाँ मुहब्बत सज़ा है
मज़ा इसमें इतना मगर किसलिए है

- कैफ़ी आज़मी
फ़िल्म : हँसते ज़ख़्म

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी

मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वो काग़ज़ की कश्ती, वो बारिश का पानी

- सुदर्शन फ़ाकिर
फ़िल्म : आज

वो जब याद आए बहुत याद आए
ग़म-ए-ज़िंदगी के अँधेरे में हमने
चिराग़-ए-मुहब्बत जलाये बुझाये

-असद भोपाली
फ़िल्म : पारसमणी

इशारों-इशारों में दिल लेने वाले
बता ये हुनर तूने सीखा कहाँ से

निगाहों-निगाहों में जादू चलाना
मेरी जान सीखा है तुमने जहाँ से

-एस. एच. बिहारी
फ़िल्म : कश्मीर की कली
गीतकार : एस. एच. बिहारी (शम्स-उल हुदा बिहारी)

सौजन्य : ऐनुल बरेलवी, सारण

तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ
वफ़ा कर रहा हूँ, वफ़ा चाहता हूँ

- साहिर लुधियानवी
फ़िल्म - धूल का फूल
गीतकार - साहिर लुधियानवी

संकलन - प्रो.सुधा सिन्हा सावी, पटना

तुझे पाके हमने जहाँ पा लिया है
जमीं तो जमीं आस्माँ पा लिया है

-शकील बदायूँनी
फ़िल्म - गहरा दाग़

संकलन - कालजयी घनश्याम

हमें और जीने की चाहत न होती
अगर तुम न होते, अगर तुम न होते

गुलशन बावरा
फ़िल्म : अगर तुम न होते
गीतकार : गुलशन बावरा

अकेले-अकेले कहाँ जा रहे हो
हमें साथ ले लो जहाँ जा रहे हो

हसरत जयपुरी
फ़िल्म : An evening in Paris
गीतकार : हसरत जयपुरी

अजी रूठ कर अब कहाँ जाइयेगा
जहाँ जाइयेगा हमें पाइयेगा

हसरत जयपुरी
फ़िल्म : आरज़ू
गीतकार : हसरत जयपुरी

संकलन - अरुण कुमार आर्य

ये महलों में तख़्तों ये ताजों की दुनिया
ये इन्साँ के दुश्मन समाजों की दुनिया

शाइर: साहिर लुधियानवी
फ़िल्म: प्यासा

मुझे प्यार की ज़िन्दगी देने वाले
कभी ग़म न देना ख़ुशी देने वाले

शाइर: प्रेम धवन
फ़िल्म: प्यार का सागर

जिन्हें नाज़ है हिंद पर वो कहाँ हैं
ये सदियों से बेख़ौफ़ सहमी-सी गलियाँ

शाइर: साहिर लुधियानवी
फ़िल्म: प्यासा

तुम्हें प्यार करते हैं करते रहेंगे
कि दिल बन के दिल में धड़कते रहेंगे

शाइर: हसरत जयपुरी
फ़िल्म: एप्रिल फ़ूल

सँभाला है मैंने बहुत अपने दिल को
ज़बाँ पर तेरा फिर भी नाम आ रहा है

शाइर: क़तील शिफ़ाई
फ़िल्म: नाराज़

फ़ाइलुन x4

मिसरा-ए तरह

आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नयी ज़िन्दगी आ गयी

क्या निज़ामे-चमन है ज़रा देखिये
कोई रोया, किसी को हँसी आ गयी

ग़ैर का ज़िक्र था ग़ैर की बात थी
आपकी आँख में क्यूँ नमी आ गयी

कोई इक दूसरे का शनासा नहीं
हाय किस मोड़ पर ज़िन्दगी आ गयी

या नज़ारों में वो जाज़बीयत नहीं
या हमारी नज़र में कमी आ गयी

चाँद तारे भी हैं महवे-हैरत 'हफ़ीज़'
बढ़ते-बढ़ते कहाँ बंदगी आ गयी

- हफ़ीज़ बनारसी

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 57)

फ़ाइलुन x4

मिसरा-ए तरह

रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे
हम भी सूरज की मानिंद जलते रहे

इस तरफ़ प्यास से होंट जलते रहे
उस तरफ़ जाम पर जाम चलते रहे

वो तो बैठे रहे सर झुकाए हुए
जादू उनकी निगाहों के चलते रहे

मैं उन्हें भी गले से लगाता रहा
मेरे बारे में जो ज़हर उगलते रहे

मुश्किलों ने बहुत राह रोकी, मगर
जिनको मंज़िल की धुन थी वो चलते रहे

याद के जुगनुओं से वो आलम रहा
दीप बुझते रहे, दीप जलते रहे

हम ने दामन न अपना भिगोया 'हफ़ीज़'
दिल में तूफ़ान लाखों मचलते रहे

- हफ़ीज़ बनारसी

- सफ़ीरे-शहरे-दिल (पृष्ठ 334)

हफ़ीज़ बनारसी - निराला अंदाज़

फ़ऊलुन *x4*

मिसरा-ए तरह

नज़र और कुछ दे रही है गवाही

इधर भी तबाही उधर भी तबाही
कहाँ जाएँ आख़िर मुहब्बत के राही

मेरा इश्क़ क्या है तेरी दिलनवाज़ी
तेरा हुस्न क्या है मेरी ख़ुशनिगाही

तेरी जुस्तजू में कहाँ आ गये हम
न ज़ादा, न मंज़िल, न रहबर, न राही

अभी नामुकम्मल है जश्ने-चिराग़ा
कहीं रौशनी है कहीं है सियाही

'हफ़ीज़' उनके लब पर है कुछ और लेकिन
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

- हफ़ीज़ बनारसी

- सफ़ीरे-शहरे-दिल (पृष्ठ 105)

21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें

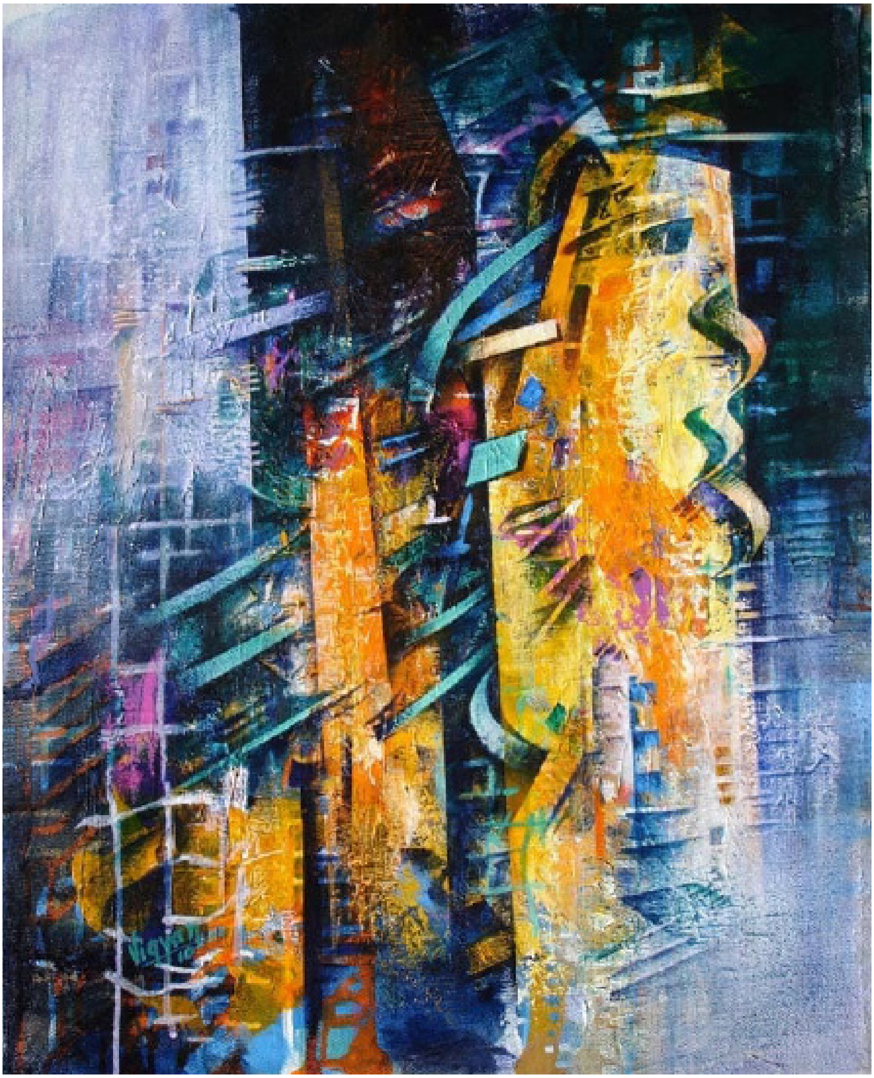

कलाकृति - विज्ञान व्रत

‘21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें’ के सुख़नवरों के जीवन साथी

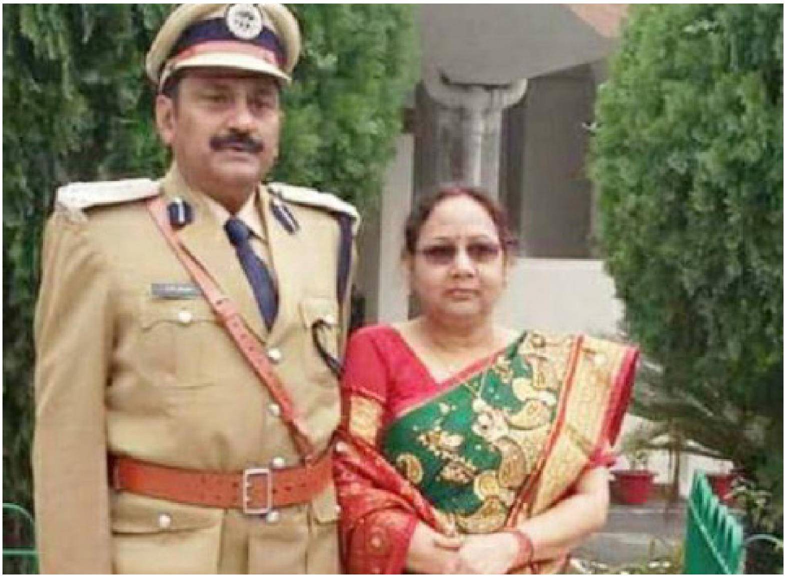

अनिल कुमार सिंह - श्रीमती इंदिरा सिंह
विवाह की तिथि : 07 मई 1982

अमित ‘अहद’ - आरती
विवाह की तिथि : 21 फ़रवरी 2007

अय्यूब ख़ान बिस्मिल - रूबी खान
विवाह की तिथि : 10 अक्टूबर 2011

अरविन्द 'अज़ान' - अंकिता शर्मा
विवाह की तिथि : 07 मई 2009

अरुण कुमार आर्य - वीणा आर्या
विवाह की तिथि : 07 मई 2009

अशोक अंजुम - श्रीमती भारती शर्मा
विवाह की तिथि : 11 फ़रवरी 2008

अशोक भण्डारी 'नादिर' - संगीता भण्डारी
विवाह की तिथि : 11 नवम्बर 1973

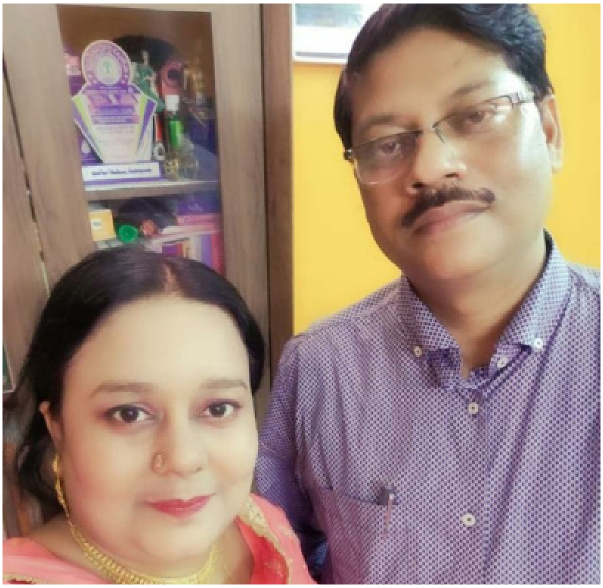

असग़र शमीम - अतिया फ़िरोज़
विवाह की तिथि : 30 अगस्त 2003

धर्मेंद्र बाबूलाल भालेकर - रेखा धर्मेंद्र भालेकर
विवाह की तिथि : 18 मई, 1992

आनन्द पाण्डेय तन्हा - श्रीमती सविता पाण्डेय
विवाह की तिथि : 08 दिसम्बर1984

आराधना प्रसाद - श्री संजय प्रसाद
विवाह की तिथि : 30 नवम्बर 1995

'ऐनुल' बरौलवी - श्रीमती रज़िया ख़ातून
विवाह की तिथि : 11 जून 1983

ओंकार सिंह विवेक - श्रीमती रेखा सैनी
विवाह की तिथि : 8 मार्च 1994

ओम प्रकाश नदीम - सुमन श्रीवास्तव
विवाह की तिथि : 28 जून 1979

कमल - रूपाली
विवाह की तिथि : 17 जुलाई 2013

घनश्याम राम - श्रीमती निर्मला देवी
विवाह की तिथि : 18 जून 1982

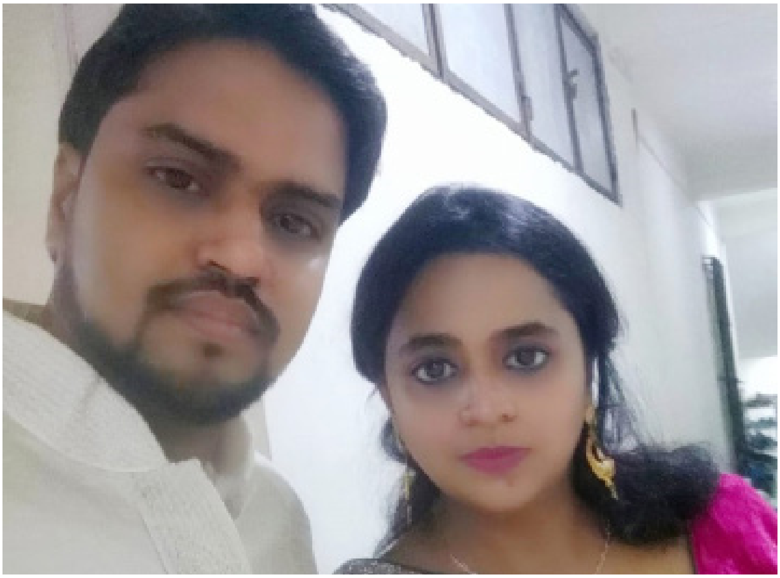

काशिफ़ अहसन - फौज़िया ज़मां
विवाह की तिथि : 06 नवम्बर 2012

कुमार पंकजेश - श्रीमती हेमलता
विवाह की तिथि : 03 जुलाई 1991

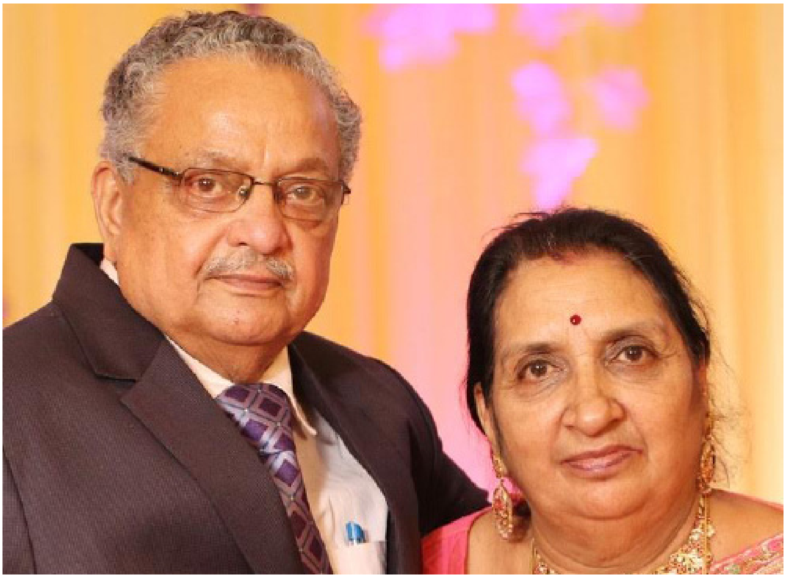

विजय कुमार अबरोल - श्रीमति रीटा अबरोल
विवाह की तिथि : 11 अक्टूबर, 1983

स्मृतिशेष श्री अनिल कुमार सिंह - डॉ. अनिता सिंह
विवाह की तिथि : 4 जून 1987

स्व. बी. के. मिश्रा - डॉ. (श्रीमती) आदर्श मिश्रा
विवाह की तिथि : 20.02.1977

श्री माधवेन्द्र प्रसाद - डॉ. आरती कुमारी
विवाह की तिथि : 18 मई 1997

इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल की बेहतरीन ग़ज़लें

हम्द

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

ऐ ख़ुदा आसरा तेरी रहमत का है
मेरे सीने में जज़्बा इबादत का है

तूने चाँद और तारों को दी रौशनी
ये करिश्मा फ़क़त तेरी क़ुदरत का है

तेरा सानी नहीं है कहीं भी कोई
मेरे दिल को यक़ीं तेरी वहदत का है

वस्फ़ तेरा बयाँ मैं करूँ किस तरह
हर जगह ज़िक्र तेरी ही अज़मत का है

तू गले की रगों से है नज़दीकतर
ऐसा नाता नहीं कोई क़ुर्बत का है

सुर्ख़रूई मिलेंगी क़यामत के दिन
तुझसे रिश्ता मेरा जब मुहब्बत का है

रोज़-ए-महशर 'अरुण' पर करम हो तेरा
दिल तलबगार तेरी इनायत का है

- अरुण कुमार आर्य

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

बता ऐ ख़ुदा ये जहाँ किसलिए है
ये सूरज ये चाँद आसमाँ किसलिए है

है ज़ाहिर में तेरी ये तख़्लीक़ सारी
तेरी ज़ात लेकिन निहाँ किसलिए है

तेरे दस्त-ए-क़ुदरत में है सारी दुनिया
तेरा जलवा हर-जा अयाँ किसलिए है

बनायी है क्यूँ तूने ये सारी दुनिया
ज़मीन-ओ-मकीन-ओ-मकाँ किसलिए है

बहारों के मौसम ये फूलों की ख़ुश्बू
महकता हुआ गुलसिताँ किसलिए है

चमकते सितारे, ये दिलकश नज़ारे
शब-ए-तार में कहकशाँ किसलिए है

ये पर्बत ये झीलें ये झरने ये जंगल
ये नदियों का आब-ए-रवाँ किसलिए है

तुझे मैंने पाया है अपने ही दिल में
तेरी जुस्तजू क्यूँ कहाँ किसलिए है

ख़ुदा का नहीं है अगर नाम लब पर
'अरुण' फिर भला ये ज़बाँ किसलिए है

- अरुण कुमार आर्य

नाम : अकमल नईम सिद्दीक़ी
जन्म तिथि : 13 अप्रैल 1974
पत्राचार का पता : निकट फ़ैज़े-आम मस्जिद, गली नंबर 5, जी सेक्टर, प्रताप नगर, जोधपुर (राज०) 342001
व्हाट्सएप नंबर : 9413844624
Email: vedandquraan@gmail.com

अकमल नईम सिद्दिक़ी - शाईस्ता
विवाह की तिथि : 28 अक्टूबर 2002

जब तेरा हाथ मेरे हाथ को छू लेता है
मुझको खण्डहर भी परिस्तान नज़र आते हैं

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

ज़िंदगी है बहुत मुख़्तसर दोस्तो
ख़र्च होती है शामो-सहर दोस्तो

ज़िक्रे-माशूक़ करते हुए बारहा
भर गयी क्यूँ तुम्हारी नज़र दोस्तो

उसका ख़ाबीदा चेहरा नज़र आ गया
खो गये सारे शम्सो-क़मर दोस्तो

साथ है वो अगर कोई परवाह नहीं
राह कितनी भी हो पुरख़तर दोस्तो

हैं सलामत जो 'अकमल' के माँ बाप फिर
अब किसे चाहिए मालो-ज़र दोस्तो

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

अदावत अँधेरों को है रौशनी से
चिराग़ों को तुम अपने रखना सँभाले

ख़ुदा पर हमें है मुकम्मल भरोसा
अदू से कहो चाहे जिसको बुला ले

अगर उसका दावा सदाक़त से पुर है
तो फिर आके वो मुझसे नज़रें मिला ले

गुलों-सी महक गर तू लहजे में चाहे
तो अपनी ज़बाँ पर ये उर्दू सजा ले

ग़म-ए-ज़िन्दगी अब तो हद हो गयी है
कहो मौत से अब तो आ के सँभाले

अगर दिल में तेरे कुदूरत नहीं है
तो आजा हमें फिर गले से लगा ले

कि जो सरबुलंदी ज़माने में चाहे
तो दर पे ख़ुदा के वो सर को झुका ले

ये क़ुरआन 'अकमल' सदा दे रहा है
मुझे थाम ले तू मुक़द्दर जगा ले

नाम	: अनिरुद्ध सिन्हा
जन्म तिथि	: 02 मई 1957
पत्राचार का पता	: गुलज़ार पोखर, मुंगेर (बिहार) 811201
मोबाइल नंबर	: 7488542351
Email	: anirudhsinhamunger@gmail.com

अनिरुद्ध सिन्हा - प्रतिमा सिन्हा
विवाह की तिथि : 27 अप्रैल 1977

रौशनी की शक्ल में तहरीर तेरी
ये जो है दिल में मेरे तस्वीर तेरी

मखमली हम दोनों की परछाइयाँ
दास्तानों से लिपटती जा रहीं

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

वक़्त के खौफ़ को यूँ सजाया गया
एक लम्हे को सदियों में सोचा गया

ख़्वाब के दरमियाँ नींद छोटी पड़ी
क़द अँधेरों का इतना बढ़ाया गया

कर्ज़ में भी रहीं ईद की हसरतें
बीवी-बच्चों सहित रोज़ा रक्खा गया

उस सियासत में कैसी छुपी जंग थी
भाई से भाई आ के ही टकरा गया

हम बड़े कब हुए इस नये दौर में
क़द हमारा भले ही घटाया गया

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

वही रोज़ खिच-खिच वही है अदावत
है मुश्किल बदलना पड़ोसी की आदत

बिखरते हुए ज़र्द पत्तों से पूछो
हुई धूप से या हवा की शरारत

अगर मुल्क आपस में लड़ते रहेंगे
कहाँ ख़त्म होगा ये दौरे-बग़ावत

चिराग़ों की लौ क्यों सिसकने लगी थी
किरण ने अँधेरों से की जो मुहब्बत

चलो शाम की सीढ़ियाँ चढ़ के देखें
हुई है सितारों की कैसी फ़ज़ीहत

नाम	: अनिल कुमार सिंह
जन्म तिथि	: 02 जनवरी 1959
पता	: ग्रा.पो - गढ़ बरूआरी, ज़िला- सुपौल, बिहार - 852110
वर्तमान	: प्रशाम्बी सरयुग विहार अपार्टमेंट, पाटलिपुत्र पटना - 800013
मोबाइल नंबर	: 9431150967, 7004782338-9
Email	: anil24garhbaruari@gmail.com

अनिल कुमार सिंह - श्रीमती इंदिरा सिंह
विवाह की तिथि : 07 मई 1982

थी ख़िज़ाओं से मारी हुई ज़िंदगी
आप आए तो खिलने लगी ज़िंदगी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मुझको मयकश न कह झूमता देखकर
पाँव लग़्ज़िश में हैं मयकदा देखकर

ख़ुद के किरदार पर गर न रक्खी नज़र
आप डर जाएँगे आइना देखकर

फ़ख़्र मंज़िल को भी हो रहा है बहुत
मेरे रहबर तेरा हौसला देखकर

घटता जाएगा ये हर क़दम से तेरे
बैठ जाना न तू फ़ासला देखकर

मंज़िलों से भला अब है कैसा गिला
आपको चलना था रास्ता देखकर

पास हिम्मत की दौलत बचाये रखो
टूट जाना न तुम ये वबा देखकर

ख़ौफ़े-महशर मेरे पास आता नहीं
मेरे रब से मेरा राब्ता देखकर

इस नवाज़िश पे तेरी मैं हैरान हूँ
मुझको अपना कहा तूने क्या देखकर

दिल भी पत्थर का अब हो गया है 'अनिल'
हादसों पर नया हादसा देखकर

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

उनके होंटों पे जब भी हँसी आ गयी
गुम अँधेरे हुए रौशनी आ गई

हमने तो पूरा क़िस्सा सुनाया नहीं
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

है तड़पने का अंदाज़ बदला हुआ
क्या तेरे दर्द में कुछ कमी आ गयी

तेरे आते ही गुलरंग मौसम हुआ
तुझको कब से ये जादूगरी आ गयी

आया गुस्ताख़ भँवरा चमन में कोई
फूल के रुख़ पे भी बरहमी आ गयी

थी समंदर से मिलने को प्यासी बहुत
तोड़ कर बाँध देखो नदी आ गयी

ऐश-ओ-इशरत से दिल भर गया ऐ 'अनिल'
मेरी फ़ितरत में अब सादगी आ गयी

इल्म का शम्स जब से चमकने लगा
दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

है ज़ुल्म-ओ-सितम की रिवायत पुरानी
हवा की दिये से अदावत पुरानी

पनपने नहीं देता पौधों को बरगद
है ताक़तवरों की ये आदत पुरानी

तबस्सुम लबों पर निगाहों में साज़िश
वो फिर करने आया सियासत पुरानी

है इन्साँ के दिल में मुहब्बत का जज़्बा
यही इक बची है अलामत पुरानी

कभी आके ले जा ये टूटा हुआ दिल
कहाँ तक सँभालूँ अमानत पुरानी

नये दुश्मनों के नये पैंतरे हैं
नहीं कारगर अब हिफ़ाज़त पुरानी

किये वार पीछे से तूने हमेशा
मैं भूलूँगा कैसे रफ़ाक़त पुरानी

दबाये गये तो उभर आयेंगे फिर
जरा याद रखना बग़ावत पुरानी

पशोपेश की तीरगी में हमेशा
दिखायेंगी राहें हिदायत पुरानी

मेरे बेटे तामीर तू कुछ नया कर
मैं कब तक दिखाऊँ इमारत पुरानी

'अनिल' अब ज़ईफ़ी में भी याद आये
जवानी के दिन और शरारत पुरानी

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

मुझे जिस दिन से तुमने अपना दीवाना बना डाला
ज़माने भर की नज़रों में ही बेगाना बना डाला

जिधर देखो उधर सावन में जैसे मय बरसती है
ज़मीं को आज क़ुदरत ने है मयख़ाना बना डाला

सिला मिलता नहीं कुछ बेवफ़ाई की लगी तोहमत
वफ़ा को नापने का कैसा पैमाना बना डाला

दिलों में जब इबादत की जगह कम पड़ गयी तो फिर
कहीं काबा कहीं लोगों ने बुतख़ाना बना डाला

गली से गाँव तक हर सम्त सन्नाटा ही पसरा है
बशर ने ख़ुद चमन को आज वीराना बना डाला

पकड़कर सब्र का दामन ख़ुदा के फ़ज़्ल से देखो
गदाओं ने फ़क़ीरी को भी शाहाना बना डाला

मज़म्मत कर रहे थे कल तलक जिनके उसूलों की
'अनिल' क्यों आज तुमने उनसे याराना बना डाला
गिरह-
ख़बर लोगों को जैसे ही लगी तर्क-ए-तअल्लुक़ की
"बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला"

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

चलो ये ख़ास नुस्ख़ा आज से ही आजमाते हैं
गले पड़ते थे जो उनको गले से हम लगाते हैं

तबस्सुम इस तरह आता है उनके रुख़ पे तो फिर हम
ये अपनी जीती बाज़ी आज उनसे हार जाते हैं

क़फ़स में रहने वाले ये परिंदे चीख़ते हैं बस
दरख़्तों पर इन्हें देखो तो कैसे सुर लगाते हैं

हुआ हो दिल अगर ज़ख़्मी तो बेहतर फ़ासला रखना
सुना है क़ुरबतों से दाग़-ए-दिल गहराते जाते हैं

बड़े हों हादसे फिर भी कभी कुछ ग़म नहीं होता
मगर नाज़ुक मसाइल भी कभी गहरे सताते हैं

दवा की और दुआ की है ज़रूरत इस पे कुछ कहिए
भला बेमौसमी ये राग हमको क्यों सुनाते हैं

नहीं सर पे हमारे अम्मा का साया रहा जबसे
उचटती नींद में हम लोरियाँ ख़ुद को सुनाते हैं

वफ़ा का तो ज़माना लद गया लेकिन अभी भी कुछ
बचे हैं लोग जो तादम वफ़ादारी निभाते हैं

बड़ी ग़मगीन है बस्ती कोई पुरसाँ नहीं दिखता
'अनिल' इमदाद का हम ही चलो बीड़ा उठाते हैं

मिसरा-ए-तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

हुई आने-जाने की बिल्कुल मनाही
दिखाये हैं कैसे ये दिन या इलाही

जो रफ़्तार-ए-दुनिया यही रह गयी तो
बहुत जल्द देखेंगे इसकी तबाही

रखो क़ैद में या रिहा हमको कर दो
तुम्हारी अदालत, तुम्हारे सिपाही

न तर्क-ए-सुख़न हो कभी भी हमारा
भले बंद कर दो मियाँ आवाजाही

हमें क़त्ल होते तो देखा सभी ने
मगर देने आया न कोई गवाही

इबारत वो जिसपे जला शहर सारा
नहीं सूख पायी थी उसकी सियाही

हमें अपनी कुछ भी ख़बर अब नहीं है
न कोई बचा जो करे ख़ैर-ख़्वाही

करो फ़िक्र रख़्त-ए-सफ़र की अभी से
है मुल्क-ए-अदम तुमको जाना ओ राही

ज़ुबाँ का तो तेरे बयाँ कुछ अलग है
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

न आसानी से जाने देगी ये दुनिया
करो फिर से साबित 'अनिल' बेगुनाही

नाम : अमित 'अहद'
जन्म तिथि : 23 जून 1981
पता : ग्रा.पो - मुजफ़्फ़राबाद जिला-सहारनपुर
उत्तर प्रदेश -247129
व्हाट्सएप नंबर : 09675150538
Email : amitahad33@gmail.com

अमित 'अहद' - आरती
विवाह की तिथि : 21 फ़रवरी 2007

साँसों में महका करती है उल्फ़त तेरी
दिल के दरपन में रहती है सूरत तेरी

❀

ये रहा बस तेरे बाद का सिलसिला
थम न पाया कभी याद का सिलसिला

पूछने हाल घर तक वो आ ही गये
जब चला रोज़ फ़रियाद का सिलसिला

चन्द लोगों तलक ही सिमट क्यों गया?
आपकी बज़्म में दाद का सिलसिला

मौत आयी मुझे तो वो कहने लगे
लो हुआ ख़त्म बर्बाद का सिलसिला

माँ तेरी रोटियाँ-साग स्वादिष्ट हैं
यूँ ही चलता रहे स्वाद का सिलसिला

जागते-जागते ही 'अहद' शब कटी
रातभर यूँ चला याद का सिलसिला!

❀

वफ़ा के सुहाने सफ़र को सुकूँ है
तुझे देखकर ही नज़र को सुकूँ है

बसाया है जब से तुझे मैंने इसमें
उसी दिन से मेरे जिगर को सुकूँ है

अगर छाँव में इसकी ठहरे मुसाफ़िर
तभी रास्ते के शजर को सुकूँ है

हुए इस पे जिस दिन से कम चलने वाले
सदाक़त की इस रहगुजर को सुकूँ है

खिले हैं खिज़ाँ में भी अब हर तरफ़ गुल
मेरी हर दुआ के असर को सुकूँ है

हुए ख़त्म जब से मज़ाहिब के झगड़े
मेरे ख़ूबसूरत नगर को सुकूँ है

वो जीवन में हरगिज़ परेशाँ न होगा
कि थोड़े में भी जिस बशर को सुकूँ है

करेगा न उससे 'अहद' बेवफ़ाई
ये ही बस मेरे हमसफ़र को सुकूँ है

नाम : अय्यूब ख़ान बिस्मिल
जन्म तिथि : 09 दिसम्बर 1974
पता : 1/215, वन विहार कॉलोनी, हाउसिंग बोर्ड, दिल्ली बायपास रोड जयपुर राजस्थान - 302002
व्हाट्सएप नंबर : 9887226434
Email : ayubkhan91273@gmail.com

अय्यूब ख़ान बिस्मिल - रूबी खान
विवाह की तिथि : 10 अक्टूबर 2011

कुछ इस तरह से जुड़ी तुझसे ज़िन्दगी मेरी
तेरी ख़ुशी से है वाबस्ता हर ख़ुशी मेरी

तू हर्फ़-हर्फ़ तसव्वुर में मेरे शामिल है
तेरे ख़याल से महकी है शाएरी मेरी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

शर्म जिसकी रिदा, सादगी पैरहन
उसको हासिल है ला-हासिली पैरहन

ख़ाक हो जाएँगे क़ीमती पैरहन
एक चादर है बस आख़िरी पैरहन

तय था आग़ाज़ से इसका अंजाम भी
धूप का था बदन चाँदनी पैरहन

इन्किसारी है बस शख़्सियत का लिबास
जिस्म ही ढँकता है ज़ाहिरी पैरहन

उसकी ज़ीनत में कुछ और इज़ाफ़ा हुआ
फूल ने पहना जब शबनमी पैरहन

उम्रभर जुस्तजू जिसकी करते रहे
आख़िरश निकला वो काग़ज़ी पैरहन

पहनकर तू जिसे आती है ख़्वाब में
तुझ पे फ़बता है वो कासनी पैरहन

तार-तार उसको कर देगी तेरी क़ज़ा
पहन ले तू भले आहनी पैरहन

ज़ीस्त का अब ये आलम है 'बिस्मिल' कि बस
फ़िक्र अपनी ग़िज़ा शाइरी पैरहन

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

न करना किसी पर भरोसा ज़ियादा
है कम नफ़'अ इसमें ख़सारा ज़ियादा

टपक जाएँगे अश्क आँखों से उसकी
अगर तुमने उसको हँसाया ज़ियादा

लहू बह न पायेगा ख़ुद्दारियों का
अगर ज़र्फ़ अपना हो गहरा ज़ियादा

अभी ज़ब्त और हौसला दिल में रखना
अभी आएगा आगे ख़तरा ज़ियादा

अमल का ये रद्द-ए-अमल ख़ूब ठहरा
अगर थोड़ा बाँटा तो पाया ज़ियादा

गुज़रते हुए लम्हे की हर सदा ने
हँसाया बहुत कम रुलाया ज़ियादा

मुसीबत में फिर कुछ मुसीबत बढ़ेगी
करोगे अगर तुम तमन्ना ज़ियादा

जकड़ लेगा आसेब मुझको कोई अब
बढ़े जा रहा है अँधेरा ज़ियादा

हक़ीक़त बहुत देर से खुल सकी ये
कि पाया बहुत कम गँवाया ज़ियादा

दिया ये जो मरघट पे रक्खा हुआ है
जला है ये ख़ुद कम जलाया ज़ियादा

ये सीखा है हमने बुज़ुर्गों से 'बिस्मिल'
कि कम बोलना और समझना ज़ियादा

नाम : अरविंद अज़ान
जन्म तिथि : 16 दिसम्बर 1982
पता : 481 कटेवा नगर, गुर्जर की थड़ी,
जयपुर-302019
व्हाट्सएप नंबर : 9928100060
Email : as.chandroday@gmail.com

अरविन्द 'अज़ान' - अंकिता शर्मा
विवाह की तिथि : 07 मई 2009

इस क़दर हम-कलाम हूँ तुम से
तुम हो राधा मैं श्याम हूँ तुम से

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

क्यों भटकती रही उम्र भर ज़िन्दगी
जाने कब आएगी राह पर ज़िन्दगी

तेरी जानिब चले तो किसी ने कहा
इस तरफ़ आइए है इधर ज़िन्दगी

अक्ल होश-ओ-नज़र ख़्वाब के साथ वो
ले न जाये मेरी छीनकर ज़िन्दगी

हर तरफ़ है निगाहों में रौशन दिए
जिस तरफ़ जाइए है उधर ज़िन्दगी

हम किधर जा रहे हैं ख़बर ही नहीं
और हमसे भी है बे-ख़बर ज़िन्दगी

आ गयी खुल के अब ये हक़ीक़त कि बस
सिर्फ़ उम्मीद का है सफ़र ज़िन्दगी

है कहीं सैकड़ों गज़ ज़मीं का महल
और कहीं एक कमरे का घर ज़िन्दगी

राब्ते अब हमारे भी कटने लगे
कर रही है दिलों पर असर ज़िन्दगी

आपकी सोच से भी बहुत दूर 'अज़ान'
बढ़ रही है सफ़र-दर-सफ़र ज़िन्दगी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

उसे आ गया है तरस बेबसी पर
कोई अब्र बरसा मेरी तिश्नगी पर

कहानी लिखूँगा मैं जब आदमी पर
न होगा कोई तब्सिरा ज़िन्दगी पर

ख़ुदा क्या ज़माना नया आ गया है
भरोसा नहीं दोस्तो, दोस्ती पर

शिकायत मुझे आपसे आपकी है
ज़रा ग़ौर कर लो मेरी सादगी पर

है नफ़रत मुझे ऐसे हर एक पल से
रखा ज़ब्त मैंने जब अपनी ख़ुशी पर

समुंदर भी हो जाएगा फिर हमारा
बनाएँगे जब एक पुल हम नदी पर

ज़मीं ज़र उगाएगी तुम देख लेना
कोई बीज बोना है इक बारगी पर

नाम	: अरुण कुमार आर्य
जन्म तिथि	: 16 मई 1955
पता	: इमली तल, पोस्ट दानापुर कैंट, ज़िला पटना 801 503
व्हाट्सएप नंबर	: 9431620560
Email	: arunkrarya@gmail.com

अरुण कुमार आर्य - वीणा आर्या
विवाह की तिथि : 07 मई 2009

साथ तेरा जीवन में बाख़ुदा ज़रूरी है
बिन तेरे मेरे दिलबर ज़िन्दगी अधूरी है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मुझको हीरा न मोती न धन चाहिए
बस तेरा प्यार ही जान-ए-मन चाहिए

इक तेरी मुस्कुराहट पे जाँ है फ़िदा
तेरे लब पे हँसी की किरण चाहिए

इस ज़मीं पे नहीं है ठिकाना मेरा
मैं परिन्दा हूँ मुझको गगन चाहिए

ज़िन्दगी मेरी ख़ुशियों से भर जाएगी
साथ तेरा मुझे गुलबदन चाहिए

दिल नहीं मेरा भरता है एक फूल से
मेरी चाहत को सारा चमन चाहिए

ख़्वाब में भी तुझे देखता मैं रहूँ
मेरी आँखों को तेरा सपन चाहिए

शेर में पुख़्तगी है तुम्हारे 'अरुण'
दिल को छू ले मेरे वो सुख़न चाहिए

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

रातें ढलती रहीं दिन भी ढलते रहे
प्यार के ख़्वाब आँखों में पलते रहे

ज़ख़्म जो भी मिले इश्क़ की राह में
चोट खाकर गिरे और सँभलते रहे

यारो! ज़ुल्म-ओ-सितम की कड़ी धूप में
मोम ही की तरह हम पिघलते रहे

बे-वफ़ाई ने ऐसा किया है असर
दिल के अरमान अश्कों में ढलते रहे

जो भी आये यहाँ प्यार की राह में
उम्रभर दोस्तो हाथ मलते रहे

प्यार का वो सिला पा सके हम नहीं
सारे अरमान दिल में मचलते रहे

साथ रहमत हमारे थी अल्लाह की
जो भी तूफ़ाँ 'अरुण' आये टलते रहे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

जो ज़ुल्फ़ो से अपनी हवा दीजिएगा
मेरे दर्द-ए-दिल की दवा दीजिएगा

तरसती हैं दर्शन को आँखें हमारी
ज़रा अपनी सूरत दिखा दीजिएगा

निकलने लगे अब तो आँखों से शोले
रक़ीबों को उनसे जला दीजिएगा

नशीली हैं किस दर्जा वो मस्त आँखें
उन्हीं साग़रों से पिला दीजिएगा

हूँ बैठा हुआ कब से आँखें बिछाये
बुलाने की कब वो सदा दीजिएगा

उजड़ ही गयी है मेरे दिल की दुनिया
उसे आके फिर से बसा दीजिएगा

'अरुण' की वो मय्यत पे आयें जो साहब
कफ़न उसके मुँह से हटा दीजिएगा

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

बना दे दोस्त दुश्मन को है वो तासीर उल्फ़त में
पिघल जाता है पत्थर भी असर है वो मुहब्बत में

मिली है तर्बियत हमको मुहब्बत की विरासत में
यक़ीं बिल्कुल नहीं रखते हैं नफ़रत की सियासत में

क़दम शोलों पे ही रखना पड़ेगा ये समझ लीजे
नहीं आसान है चलना यहाँ राह-ए-शराफ़त में

न छोड़ें हम ज़माने में कभी दामन शराफ़त का
बुराई है रज़ालत में भलाई है शराफ़त में

हमारी तर्बियत हमको है अपनी जान से प्यारी
लुटाना जानते हैं ज़िंदगानी हम शराफ़त में

दुहाई रिश्तों की देने को आते हैं कई लेकिन
वही अपना है दुनिया में जो काम आये मुसीबत में

झुका सकते नहीं गर्दन कभी हम ज़ुल्म के आगे
कटा देते हैं सर लेकिन ख़ुशी से हम मुहब्बत में

ग़रज़ से ही किसी को याद करता है यहाँ कोई
ख़ुदा भी याद आता है हमेशा बस मुसीबत में

दिखाना सबको आता है रवादारी का आईना
मगर उसको बरतना है बहुत मुश्किल हक़ीक़त में

तग़ज़्ज़ुल का हुनर आसाँ 'अरुण' इतना नहीं फिर भी
जो अहल-ए-फ़न हैं वो हैं मस्त ग़ज़लों की लताफ़त में

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

न जाने इश्क़ ने कब दिल को दीवाना बना डाला
ख़बर मुझको न थी लोगों ने अफ़्साना बना डाला

जिगर के ख़ून को मय दिल को पैमाना बना डाला
ख़ुदाया रिन्दों ने मक़तल को मयख़ाना बना डाला

असर उस जज़्ब-ए-उल्फ़त का था बेशक मेरे दिल पर
कि जिसने शम'अ तुझको मुझको परवाना बना डाला

हरम हो वो कि बुतख़ाना वो मन्दिर हो कि मस्जिद हो
जहाँ चाहा वहाँ रिन्दों ने मयख़ाना बना डाला

परस्तिश की तमन्ना में इबादत के इरादे से
ख़ुदा के नाम पर लोगों ने बुतख़ाना बना डाला

तेरी ख़ुशियों की चाहत है मिले कोई भी ग़म मुझको
इसी जज़्बा ने मुझको ग़म से बेगाना बना डाला

न कोई ज़लज़ला आया न बरसीं बिजलियाँ यारो
यहाँ इक शहर को अपनों ने वीराना बना डाला

न मुझको दीन से मतलब न दुनिया से ग़रज़ कोई
'अरुण' उल्फ़त ने तेरी मुझको मस्ताना बना डाला

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

ये क्या हो रहा है जहाँ में इलाही
जिधर देखता हूँ मची है तबाही

यहाँ प्यार करने की गर है मनाही
तो दे कोई उल्फ़त की कैसे गवाही

तेरी याद में दिल तड़पता है ऐसे
बिना पानी जैसे तड़पती है माही

ये सुनसान गलियाँ ये अंजान राहें
कहाँ जाए भटका हुआ एक राही

न मैंने ख़ता की न था जुर्म कोई
अयाँ होगी एक दिन मेरी बेगुनाही

दुखी लोग हैं मौज नेता उड़ाये
ये है लोकशाही कि है बादशाही

लो अब अपने ईमान को बेचकर भी
कई लोग करते हैं धन की उगाही

'अरुण' सच अगर बोलना ही मना हो
तो आख़िर करे क्या क़लम का सिपाही

नाम	: अशोक अंजुम
जन्म तिथि	: 15 दिसंबर, 1966
पता	: स्ट्रीट-2, चंद्र विहार कॉलोनी, (नगला डालचंद), क्वारसी बाईपास, अलीगढ़-202002(उ.प्र.)
व्हाट्सएप नंबर	: 9258779744
Email	: ashokanjumaligarh@gmail.com

अशोक अंजुम - श्रीमती भारती शर्मा
विवाह की तिथि : 11 फ़रवरी 2008

जिसे मैं सोचता था ज़िंदगी हो,
वही, बिल्कुल वही, हाँ तुम वही हो

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

❀

वक़्त जीवन में ऐसा न आये कभी
ख़त किसी के भी कोई जलाये कभी

धूल है, धुंध है, शोर ही शोर है
कोई मधुवन में बँसी बजाये कभी

मेरी मासूमियत खो गयी है कहीं
काश बचपन मेरा लौट आये कभी

जिसकी ख़ातिर मैं लिखता रहा उम्रभर
वो भी मेरी ग़ज़ल गुनगुनाये कभी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

भले सब इसे बदगुमानी कहेंगे
मगर हम तुझे दिल की रानी कहेंगे

मेरे हाल पर छोड़ दे मुझको मौला
नहीं सब तेरी मेहरबानी कहेंगे

जो दिल की ज़ुबाँ बाँच सकते नहीं हैं
वे अश्कों को आँखो का पानी कहेंगे

वही लोग महफ़िल में फिर आ जमे हैं
जो बातें कहेंगे पुरानी कहेंगे

मैं ऐसे निशाँ छोड़कर जा रहा हूँ
जहाँ वाले मेरी कहानी कहेंगे

नाम : अशोक भण्डारी 'नादिर'
जन्म तिथि : 24 अप्रैल 1947
पता : 604 , सेक्टर - 6 , पंचकुला, हरियाणा, पिन कोड - 134109
व्हाट्सएप नंबर : 9814016596
Email : ashokbhandari604@gmail.com

अशोक भण्डारी 'नादिर' - संगीता भण्डारी
विवाह की तिथि : 11 नवम्बर 1973

तबस्सुम उनके चेहरे की तो लेगी जान क्या कहिये
दुआ ये है शहीदों में जो हो पहचान क्या कहिये

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

एक मुद्दत हुई हमसफ़र ना मिला
ख़्वाब अब तक भी क्यूँ आँख भर ना मिला

दौर तो शायरी के चले रातभर
शायरी का हुनर रातभर ना मिला

जब कभी ख़ुद को तरतीब देने लगे
इश्क़ को जाने क्यूँ कोई दर ना मिला

नेक रहबर भी हो रूह भी पाक हो
मोतबर कोई ऐसा बशर ना मिला

देर तक दर्द कोई ठहरता नहीं
दर्द क्यूँ हमको ऐसा मगर ना मिला

तोड़ पाया नहीं अब तलक ग़म हमें
मैं मिला तो उसे चश्मतर ना मिला

लौ ख़ुदा से लगाकर तो देखो ज़रा
फिर न कहना मुझे कोई दर ना मिला

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नज़र में मेरा गर वो किरदार रखता
सहर हो या सहरा मेरा साथ रहता

वो तो आइना है तसव्वुर का मेरे
ख़यालों से बाहर कहाँ जा के रहता

हया आई फिर वो छुपाता कहाँ तक
समझ का सलीक़ा कहाँ काम करता

बदन लोच ज़ालिम का चहके ज्यूँ डाली
कहाँ तक वो ग़ुंचों को हुशियार रखता

कभी वो सँवरता, निखरता कभी वो
तो इज़्हारे-क़ुर्बत से कैसे वो बचता

जो हो जाएँ रुस्वा कोई ग़म नहीं है
मगर ताउमर ना कोई भेद खुलता

ग़ज़ल बन गयी हर अदा उसकी क़ातिल
कहाँ एक मिसरे में सब कुछ सँवरता

ख़ताओं से 'नादिर' भी बचता तभी तो
जो मयकश नज़र का ज़रा वार सहता

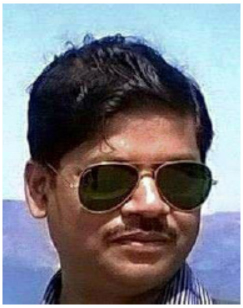

नाम : असग़र शमीम
जन्म तिथि : 01 नवम्बर 1975
पता : C/O, FIROZ ABID, 12/3 /H/1,
PATWAR BAGAN LANE
KOLKATA - 700 009 (W. B)
व्हाट्सएप नंबर : 9836224948
Email: asgar.ara@gmail.com

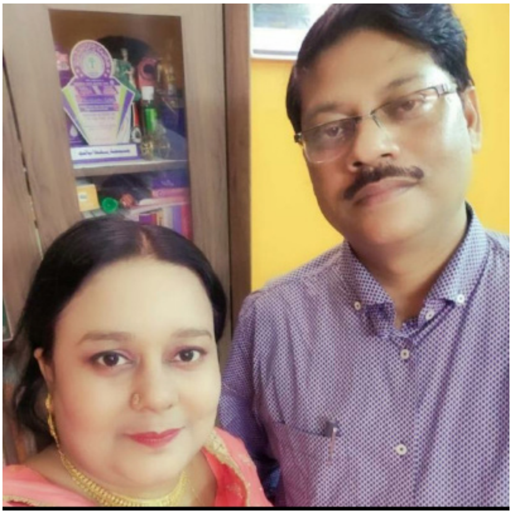

असग़र शमीम - अतिया फ़िरोज़
विवाह की तिथि : 30 अगस्त 2003

तेरे बग़ैर जीना गवारा नहीं हमें
तेरे सिवा किसी का सहारा नहीं हमें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

ऐसा वैसा बहाना नहीं चाहिए
झूठा वादा तुम्हारा नहीं चाहिए

तुमको जाना है जाओ कहीं शौक़ से
सामने मेरे आना नहीं चाहिए

ज़िन्दगी जो बची है वो कट जाए बस
उम्र में अब इज़ाफ़ा नहीं चाहिए

रात थी पुरसकूँ मैं सकूँ से रहा
जो डराये सवेरा नहीं चाहिए

जो मिला है मुझे मेरी क़िस्मत में था
दर्द-ए-दिल का मदावा नहीं चाहिए

मैंने दुश्मन को दुश्मन ही रहने दिया
दोस्तों का भरोसा नहीं चाहिए

जो मुकम्मल हो मुझको वो ता'बीर दे
ख़्वाब 'असग़र' अधूरा नहीं चाहिए

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नज़र आ रही हर तरफ़ अब सियाही
न जाने कहाँ पर हुई है तबाही

उसे ख़ुद ही मसलूब होना पड़ा था
मिली जब उसे ज़हर की वह सुराही

सहारा लिया मैंने अपनी दुआ का
खड़ी थी मेरे सामने जब तबाही

ये चेहरे बयाँ और कुछ कर रहे हैं
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

मुझे उनकी ख़ुशियों से मतलब नहीं कुछ
मुझे मिल गयी ग़म की जब बादशाही

तू सच्चा है 'असग़र' सभी जानते हैं
नहीं कोई देगा यहाँ पर गवाही

नाम	: धर्मेंद्र बाबूलाल भालेकर
प्रचलित नाम	: असीम आमगाँवी
जन्म तिथि	: 24 नवम्बर 1969
पता	: रेणुका नगर, गोंदिया रोड़, आमगाँव, जिल्हा- गोंदिया (महा.) पिन. 441902
व्हाट्सएप नंबर	: +91 8888428393
Email	: ieasypoint@gmail.com

धर्मेंद्र बाबूलाल भालेकर - रेखा धर्मेंद्र भालेकर
विवाह की तिथि : 18 मई, 1992

उसूलों पर जो हम हर पल न होते
हमारे मसअले फिर हल न होते

मुहब्बत तुम से जो हमको न होती
हमारे ख़्वाब यूँ संदल न होते

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मेरे बारे में जो सोचता रह गया
फिर उसे कुछ बताने को क्या रह गया

ज़ुल्म सहता रहा और करता भी क्या
क्या यही आज का सिलसिला रह गया

इक गवाही से टूटा है मेरा भरम
झूठ जब आइना बोलता रह गया

वो दबे पाँव गुज़रा हवा की तरह
'कौन था?' रास्ता सोचता रह गया

था भरोसा जिसे हौसलों पर ज़रा
अपने आँसू वही पोंछता रह गया

झूठ वालों को मंज़िल मिली है मगर
आइना राह तकता हुआ रह गया

ख़त जलाए कि मिट जाएँ यादें तिरी
फिर भी मेरी ज़बाँ पर पता रह गया

जाने कैसे उसे पढ़ न पाया हूँ मैं
जो पढ़ा सब धरा का धरा रह गया

लोग चेहरे पे चेहरे लगाते रहे
देख हैरान अब आइना रह गया

अर्कान- मुफ़ाईलुन x 4

किसी से अब कोई मिलने किसी के घर नहीं जाता
मेरी आँखों से गुज़रे वक़्त का मंज़र नहीं जाता

बहुत मग़रूर था इंसान ख़ुद अपनी तरक़्क़ी पर
वबा का खौफ़ है इतना कोई बाहर नहीं जाता

हवा का रुख़ जिधर भी है चराग़ों को उधर रख लो
हो जिन में हौसला उनको कोई छूकर नहीं जाता

ज़माना वाक़ई बदला हुआ लगता है अब मुझको
यहाँ इंसान अब तो चार काँधों पर नहीं जाता

तेरे दरबार में होता है हर इक फ़ैसला मौला
अदालत में तभी तो मसअला लेकर नहीं जाता

बहुत मुश्किल है दहशत और नफ़रत को बढ़ा देना
सियासत की ज़बाँ से जब तलक नश्तर नहीं जाता

अगरचे तू वफ़ादारी का दम भरता तो है लेकिन
मैं कोशिश कर रहा हूँ फिर भी मेरा डर नहीं जाता

अगर आँखें हुकूमत की सही चश्मा लगा लेतीं
तुम्हारी बात भी रहती हमारा सर नहीं जाता

नाम	: आनन्द पाण्डेय तन्हा
जन्म तिथि	: 31 अगस्त 1957
पता	: 128/800-Y-ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर - 208011
व्हाट्सएप नंबर	: 9369110036
Email	: aanandtanha@gmail.com

आनन्द पाण्डेय तन्हा - श्रीमती सविता पाण्डेय
विवाह की तिथि : 08 दिसम्बर1984

अगर वह ख़ूबसूरत है भली है
हमारी रूह भी तो संदली है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

जब समझ में नहीं आये क्या माँग लें
तब मुनासिब यही है दुआ माँग लें

जब इनामात से हम न ख़ुश हो सके
चाहते हैं ख़ुदा से ख़ुदा माँग लें

नेकदिल है अगर आपका हमसफ़र
बारहा जन्म की फिर सज़ा माँग लें

ज़िन्दगी क्यूँ जियें जानवर की तरह
कुछ हुनर, कुछ सिफ़त, कुछ अदा माँग लें

सिर्फ़ बच्चे मसर्रत के हमराह हैं
अब उन्हीं से ख़ुशी का पता माँग लें

घर से बाहर निकलकर कभी बादे-शब
ख़ूबसूरत सहर से सबा माँग लें

कौन इनकार करता कभी आपको
जो भी चाहें हज़ारों दफ़ा माँग लें

ढँक सके सर को भी पैर के साथ जो
आप मालिक से बस वो रिदा माँग लें

एड़ियाँ बिस्तरे पर रगड़नी पड़ें
इससे पहले ख़ुदा से क़ज़ा माँग लें

जिनसे मिलकर ख़ुशी का न एहसास हो
जोड़ कर हाथ उनसे क्षमा माँग लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

वही तो कहें क्यों नशा छा रहा है
निगाहों से मय कोई छलका रहा है

हमें क्या पता दिल कहाँ जा रहा है
अभी तो सफ़र में मज़ा आ रहा है

निहाँ मस्लहत है नसीहत में उसकी
ज़माना हमें जो भी समझा रहा है

दिखाने लगा है हमें आज आँखें
हमारे जिगर का जो टुकड़ा रहा है

दिखा मत अकड़ तू गरज कर समंदर
कभी तू भी तो एक दरिया रहा है

लगीं एकटक हैं निगाहें सभी की
अगर हुस्न उर्यां नज़र आ रहा है

मुहब्बत न की हमने तुमसे ख़ुदाया
यही एक ग़म अब हमें खा रहा है

ठिठक कर सुनें हैं हमें लोग अक़्सर
ग़ज़ल दिल तरन्नुम में जब गा रहा है

यक़ीनन उसे गर्दिशों ने सताया
नहीं शौक़ से कोई तन्हा रहा है

नाम	: आराधना प्रसाद
जन्म तिथि	: 23 मई 1974
पता	: के-58, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना-800020
व्हाट्सएप नंबर	: 7250606100
Email	: aradhanaapra@gmail.com

आराधना प्रसाद - श्री संजय प्रसाद
विवाह की तिथि : 30 नवम्बर 1995

ऐसी देखी न थी कभी आँखें
रह गयीं जिनको देखती आँखें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

कितना वीरान है गुलसिताँ देखिये
रेत के ढेर हैं सब मकाँ देखिये

तपती आग़ोश में गेरुआ है समाँ
कैसी सूरज की ये दास्ताँ देखिये

प्यास से हो जुदा ऐसा कोई नहीं
ये समुंदर भी प्यासा यहाँ देखिये

ये ज़मीं जल रही, आसमाँ जल रहा
आज जलता हुआ ये जहाँ देखिये

कट रहे हैं शजर पंछी ये पूछते
अब बनाएँ कहाँ आशियाँ देखिये

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

उम्रभर हम सफ़र में भटकते रहे
सख़्त दीवार पर सर पटकते रहे

दोस्त की जब ज़रूरत पड़ी है हमें
हाथ को वो हवा में झटकते रहे

बीस-बाईस नॉवल छपे थे मगर
क्यूँ ककहरे में ही वो अटकते रहे

तन्हा खोये किचन में तुम्हें सोचकर
चिनिया बादाम भुनकर चटकते रहे

क्या मुझे मिल गया क्या मेरा खो गया
नैन झुकते रहे क्यूँ मटकते रहे

थरथराती हुई लौ लड़ी देर तक
आँधियों को उजाले खटकते रहे

गाँव का झूला जब याद आया हमें
दर का छज्जा पकड़कर लटकते रहे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

चराग़े-मुहब्बत जलाने से पहले
इजाज़त तो ले लें ज़माने से पहले

वो पलकों के चिलमन उठा के गिराना
अदा याद करना भुलाने से पहले

फ़क़त प्यार से जीतना है हर इक दिल
करो ख़त्म नफ़रत बढ़ाने से पहले

क़रीब आ गयी है हमारी ये मंज़िल
ज़रा दम तो भर लें ठिकाने से पहले

यूँ शिद्दत से चाहा, किया रतजगा है
थकावट तो होगी, घर आने से पहले

ये चाहत, इबादत ओ राज़े-महब्बत
न आये क़यामत बताने से पहले

तेरे आने से हो गयी शम'अ रौशन
हुआ शोख़ मंज़र सजाने से पहले

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

हुए एक मंज़िल के हम ऐसे राही
रुहानी क़लम के हैं सच्चे सिपाही

मुख़ालिफ़ ने जब मेरे दी है गवाही
वो समझेंगे कैसे मेरी बे-गुनाही

दुआ उसके हक़ में तो बनती है लोगों
जो सरहद पे लड़ता है अदना सिपाही

तुम्हारा ये दिल कुछ जुदा कह रहा है
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

जो काग़ज़ पे लिक्खे थे जज़्बात सारे
क़लम ने ही फैलाई उस पर सियाही

कहाँ हैं बराबर, मरातिब अलग हैं
दरोग़ा-दरोग़ा, सिपाही-सिपाही

नाम : एजाज़ उल हक़
तख़ल्लुस : शिहाब
जन्म तिथि : 19 सितम्बर 1987
पता : 1/215, वन विहार कॉलोनी,
हाउसिंग बोर्ड, दिल्ली बाईपास रोड़,
जयपुर - 302002 (राजस्थान)
व्हाट्सएप नंबर : 9610231234
Email : mr.haq999@gmail.com
वैवाहिक स्थिति : अविवाहित

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

❀

इक नया ज़ाविया इक नयी रौशनी
मिल के ढूँढ़े चलो दायमी रौशनी

दीप उल्फ़त के रौशन हों हर द्वार पर
हर तरफ़ हो सदा प्यार की रौशनी

तफ़रिक़े सब मिटा दो ज़माने से अब
सब के घर में हो बस एक सी रौशनी

उनके आने से महसूस ऐसा हुआ
ज़हन-ओ-दिल को मेरे मिल गयी रौशनी

सुरमई शाम आने से पहले की है
सुर्ख़, नारंगी और कत्थई रौशनी

ज़ुल्मतों के ये बादल ज़रा चीरिये
गरचे करनी है इक दायमी रौशनी

आप ही ज़िन्दगी में थे पहली किरण
आप ही ज़ीस्त की आख़री रौशनी

क्यों चमन में सियाही के डेरे हुए
बाग़बाँ ने किसे बेच दी रौशनी

ऐ 'शिहाब' उसने हँस के कहा था कभी
तुम ही हो ज़िन्दगी, तुम ही हो रौशनी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

ये कब तक कहेंगे कि कल देखते हैं
चलो अब मसाइल का हल देखते हैं

ये जन्नत की वादी में दोज़ख़ के मंज़र
ये क्या हाल हम आजकल देखते हैं

अगर कुछ बदलना है उठना पड़ेगा
ये कहना पड़ेगा कि चल देखते हैं

अरे यार ठहरो तसल्ली तो रक्खो
अभी बाम पर हम ग़ज़ल देखते हैं

शबे-बेक़रारी के पर्दे पे अक्सर
वो माज़ी के ख़ुश-ख़ाम पल देखते हैं

जवाबों की उम्मीद लेकर यहाँ हम
सवालों के माथे पे बल देखते हैं

'शिहाब' आपकी हम ग़ज़ल में हमेशा
ज़माने का रद्दो-बदल देखते हैं

नाम	: 'ऐनुल' बरौलवी
जन्म तिथि	: 04 जुलाई 1957
पता	: क़ासिम की फुलवारी (रियल इंफोटेक कैम्पस) निकट - प्रताप ऑटोमोबाइल्स मुहल्ला - भगवान बाज़ार , थाना रोड पो० - छपरा , ज़िला - सारण (बिहार) 841301
व्हाट्सएप नंबर	: 7004356036
Email	: ainulhaque124@gmail.com

'ऐनुल' बरौलवी - श्रीमती रज़िया ख़ातून
विवाह की तिथि : 11 जून 1983

आज रब से मेरी यही है दुआ
चाँद को चाँद भी तो देखे ज़रा

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

आँसुओं से नहाई हुई ज़िन्दगी
अब कहाँ मुस्कुराई हुई ज़िन्दगी

लोग हैं ग़मज़दा इक वबा से यहाँ
आज कितनी पराई हुई ज़िन्दगी

बारहा आती-जाती नयी मुश्किलें
हर दफ़ा डगमगाई हुई ज़िन्दगी

ख़ून से आज लथपथ हुई देखिये
ज़ख़्म पर ज़ख़्म खाई हुई ज़िन्दगी

रास्ता ढूँढ़ती है, बता दो ज़रा
अपनों से ही सताई हुई ज़िन्दगी

माँगती हमसे साँसें, नहीं दे सके
टूटकर लड़खड़ाई हुई ज़िन्दगी

दूर होने लगी देखते-देखते
शान-शौक़त से आयी हुई ज़िन्दगी

आँखें नम हैं बहुत देख 'ऐनुल' ज़रा
जा रही है बचाई हुई ज़िन्दगी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुहब्बत मेरी आज ज़ाया नहीं कर
मुझे आज ख़ुद से पराया नहीं कर

न जाने ये नफ़रत जलायेगी किसको
मेरे दिल को अब तू सताया नहीं कर

मेरा आज दामन तो ख़ुशियों से भर दे
दुबारा ग़मों का ये साया नहीं कर

समंदर बसाकर के आँखों में मेरी
ज़माने में मुझको नुमाया नहीं कर

नहीं बेवफ़ाई कभी मेरे दिल में
ये इल्ज़ाम मुझपे लगाया नहीं कर

नहीं तुमसे सोना व चाँदी मैं चाहूँ
मगर आज से फिर रुलाया नहीं कर

मुझे दिल के कोने में कुछ तो जगह दे
मेरे सब्र को आज़माया नहीं कर

क़सम है मेरी आज तुझको ये 'ऐनुल'
किसी और पर दिल लुटाया नहीं कर

नाम	: ओंकार सिंह विवेक
जन्म तिथि	: 01जून1965
पता	: "आदित्य सदन" सत्याविहार फ़ेज़-2 PWD कार्यालय के सामने रामपुर (उ०प्र०) -244901
व्हाट्सएप नंबर	: 9897214710
Email	: oksrmp@gmail.com

ओंकार सिंह विवेक - श्रीमती रेखा सैनी
विवाह की तिथि : 8 मार्च 1994

प्रिया आपके नाम का, करूँ न मैं क्यों जाप
हो इस घर-परिवार की, जीवन-रेखा आप

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

दूर रंज-ओ-अलम और सदमात हैं
माँ है तो ख़ुशनुमा घर के हालात हैं

ठेस सब उसके दिल को लगाते रहे
ये न सोचा कि माँ के भी जज़्बात हैं

दुख ही दुख वो उठाती है सबके लिए
माँ के हिस्से में कब सुख के लम्हात हैं

लौट भी आ मेरे लाल परदेस से
मुंतज़िर माँ की आँखें ये दिन-रात हैं

मैं जो महफ़ूज़ हूँ हर बला से 'विवेक'
ये तो माँ की दुआओं के असरात हैं

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

नहीं चाहूँ ख़ज़ाना या कोई टकसाल मिल जाये
मैं इक मज़दूर हूँ दो वक़्त रोटी-दाल मिल जाये

इसे अपना मुक़द्दर ही समझना ऐ दिल-ए-नादाँ
तुझे इस दौर में जो कोई पुरसाँ-हाल मिल जाये

तो फिर घर को चलाने में न हो इतनी परेशानी
हमारे काम-धंधे को जो थोड़ी चाल मिल जाये

नयी तब्दीलियों ने गाँव का नक़्शा बदल डाला
वहाँ मुमकिन नहीं अब आपको चौपाल मिल जाये

विरह को देखकर इन गोपियों के दिल ये कहता है
इन्हें जितनी भी जल्दी हो मदनगोपाल मिल जाये

नाम	: ओम प्रकाश नदीम
जन्म तिथि	: 26 नवम्बर 1956
पता	: 5-D/25, वृन्दावन कॉलोनी, तेलीबाग, लखनऊ (उ. प्र.) पिन-- 226029
व्हाट्सएप नंबर	: 9456460659
Email	: omprakashnadeem@gmail.com

ओम प्रकाश नदीम - सुमन श्रीवास्तव
विवाह की तिथि : 28 जून 1979

धूप मेरे सर पे है आँचल तुम्हारे पास है
मसअला मेरा है लेकिन हल तुम्हारे पास है

मुद्दतों बाद भी लगता है वो बदला ही नहीं
वक़्त ने धोया बहुत रंग वो छूटा ही नहीं

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

तुम मिले तो मुझे हर ख़ुशी मिल गयी
ज़िंदगी को नयी रौशनी मिल गयी

आपको मुझसे मिलकर ये हासिल हुआ
आपके हुस्न को आशिक़ी मिल गयी

उस 'नहीं' में भी 'हाँ' का इशारा मिला
उस इशारे से फिर ज़िंदगी मिल गयी

फिर रहा था भटकता मैं जिसके लिए
तेरी नज़रों में वो दोस्ती मिल गयी

और सब कुछ था मेरी कहानी में बस
इक परी की कमी थी परी मिल गयी

तेरे होंठों ने लय ताल सुर दे दिये
मेरे होंठों को भी बाँसुरी मिल गयी

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

ये रिश्ता हर सफ़र हर मोड़ पर हर बार मिलता है
तुम्हारी हर कहानी में मेरा किरदार मिलता है

नयी क़लमी तिजारत का ये फल हासिल हुआ हमको
कि हर मौसम में अब हर फल सर-ए-बाज़ार मिलता है

मेरी कमज़ोर हालत का असर सब पर हुआ कैसे
मैं जिसके पास जाता हूँ वही बीमार मिलता है

कम-अज़-कम आज तो आवारगी की छुट्टी कर देते
बड़ी मुश्किल से हफ़्ते भर में इक इतवार मिलता है

हवा के रुख़ बदलने की ख़बर उड़ने से पहले ही
वो अपना रुख़ बदलने के लिए तैयार मिलता है

नाम	: कमल कटारिया 'करन'
जन्म तिथि	: 28 सितम्बर 1984
पता	: 2858/17, गली नंबर 19, साहिबजादा अजीत सिंह नगर, बठिण्डा-151001 (पंजाब)
व्हाट्सएप नंबर	: 9041315277
Email	: kamalkataria277@gmail.com

कमल - रूपाली
विवाह की तिथि : 17 जुलाई 2013

ख़ूब से भी ख़ूबतर है, ज़िन्दगी
आप हैं तो, ख़ुश-असर है ज़िन्दगी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

तर्क चाहत हुई, और क्या रह गया
अब ख़ुदा जाने क्या मसअला रह गया

ख़त्म हर दास्ताँ हो गयी, इश्क़ की
दिल का टूटा हुआ, आइना रह गया

लोग सब छोड़कर जा चुके, और मैं
इस जज़ीरे पे तन्हा खड़ा रह गया

नींद आँखों से ग़ायब-सी होने लगी
रतजगों का फ़क़त सिलसिला रह गया

मंज़िलें ला-पता, रास्ते अजनबी
और जाने कहाँ रहनुमा रह गया

रात भर ख़्वाब आँखों से बहते रहे
रात भर मैं तुम्हें सोचता रह गया

कितनी पुर-कैफ़ हैं बंदिशें प्यार की
बाद मरने के भी मैं तेरा रह गया

भर न पाया कभी, ख़्वाहिशों का कुआँ
दिल हमेशा, भटकता हुआ रह गया

रोज़ो-शब अश्कबारी का आलम ‘करन’
ज़ीस्त का अब यही मशग़ला रह गया

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

फ़लक की कोख से बिछड़े जो, बेचारों से पूछो तुम
जुदाई क्या है, उन टूटे हुए तारों से पूछो तुम

तड़प, वहशत, अक़ीदत और इबादत वो समझते हैं
मुहब्बत का सलीक़ा, इश्क़ में हारों से पूछो तुम

तबस्सुम खो गया कलियों का, भँवरे भी कहीं गुम हैं
क़यामत किसको कहते हैं, ये गुलज़ारों से पूछो तुम

कभी सजती थीं शामें, महफ़िलों के दौर चलते थे
अकेलेपन का दुख, खंडहर की दीवारों से पूछो तुम

कई रातें, तुम्हारी याद की चौखट पे गुज़री हैं
समंदर हो चुके, अश्कों के इन धारों से पूछो तुम

ख़बर ये आम है कि झूठ का सिक्का ही चलता है
कहाँ पर दफ़्न है सच, आज अख़बारों से पूछो तुम

मुझे कहते हो आवारा, बिलाशक तुम कहो लेकिन
सफ़र में लुत्फ़ कितना है, ये बंजारों से पूछो तुम

अगरचे ख़ूब है बदनाम मयख़ाना, ज़माने में
मगर मशहूर भी क्या है, ये दीं-दारों से पूछो तुम

क़सीदे ख़ूब लिखते हो, मुहब्बत के बजा लेकिन
सवाब इश्क़ो-मुहब्बत के दिल-अफ़गारों से पूछो तुम

सियासत है ‘करन’, तुम इस सियासत को ज़रा समझो
तबाही का हर इक क़िस्सा, न तलवारों से पूछो तुम

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुहब्बत ने दी, मेरे हक़ में गवाही
न साबित हुई, पर मेरी बेगुनाही

मेरे दोस्तों ने न मुझसे निबाही
खड़े देखते थे वो मेरी तबाही

सभी ग़ैर, किसको बनाऊँ भला मैं
ज़माने में अपना, ऐ मेरे इलाही

समझता नहीं दिल की हालत तू नादाँ
बहुत ख़ूब है, ये तेरी कम-निगाही

समझते रहे हम जिसे दिल का महरम
उसी ने लिखी है, हमारी तबाही

भटकते हैं दर-दर, मगर शादमाँ हैं
हमें रास आयी, न आलम-पनाही

सलीबों पे लटकी हैं लाशें हमारी
हमें ले ही डूबी, तेरी ख़ैर-ख़्वाही

न पोंछे गये, मुफ़लिसों के जो आँसू
तो किस काम आयी तेरी बादशाही

बदन की हमारे, 'करन' ख़ाक हर-सू
उसी ने उड़ायी है, जिसने भी चाही

अर्कान- मुतफ़ाइलुन x 4

मेरे पास आ, मेरी बात सुन, ज़रा देख जो मेरा हाल है
मेरे हमनशीं न यूँ दूर जा, मेरी ज़िंदगी का सवाल है

मेरी इन रगों में रवाँ तू ही, तेरा इश्क़ है, मेरी ज़ात में
मेरा चैन तू, मेरा दर्द तू, मेरा ख़्वाब, मेरा ख़याल है

मेरी आरज़ू, मेरी जुस्तजू, तू ही तू फ़क़त मेरी आबरू
मेरी जीत तू, मेरी हार तू, तू उरूज, तू ही ज़वाल है

तेरे दम से है मेरी ज़िंदगी कि मैं कुछ नहीं हूँ बिना तेरे
मुझे ठग लिया जो तिलिस्म ने, ये तेरी नज़र का कमाल है

तुझे देखना, तुझे चाहना, तुझे सोचना मेरा काम है
तू ही आइना मेरे ऐब का कि हुनर का तू ही जमाल है

तू समझ ज़रा मेरी चाहतें कि यक़ीन कर मेरे प्यार पर
तुझे ऐतिमादे-वफ़ा नहीं, मुझे सिर्फ़ इतना मलाल है

मैं तो कब से हूँ तेरा ही सनम, तुझे आज तक ये पता नहीं
कि हयात है जो मेरी 'करन', तेरे दम से ही तो बहाल है

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

ग़मे-हिज्राँ ने इन आँखों को पैमाना बना डाला
फ़क़ीराना मेरे तेवर को रिंदाना बना डाला

जहाँ बैठे, वहीं पर जाम छलकाने लगे हम भी
तमाम आलम को हमने दोस्त, मयख़ाना बना डाला

सिफ़त क्या इश्क़ की, तुमको गिनाऊँ हमनशीं मेरे
दिले-पुर-कैफ़ को पल भर में वीराना बना डाला

करम कुछ कम नहीं मुझ पर, तुम्हारी कम-निगाही के
ख़ुद अपने आप से ही, मुझको बेगाना बना डाला

मेरी दीवानगी पर, तंज़ करते हो, बजा लेकिन
मगर ये भी कहो अब, किसने दीवाना बना डाला

बसाकर तुझको इस दिल में, हज़ारों ही किये सजदे
कि इस दिल को सनम हमने तो बुत-ख़ाना बना डाला

तमन्ना भी मेरी शर्मिंदगी से हो गयी बोझल
मुहब्बत का, मेरे अश्कों को, नज़राना बना डाला

'करन' हमने छुपा रक्खे थे सब असरार उल्फ़त के
तुम्हारी बे-नियाज़ी ने ही अफ़्साना बना डाला

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

आज सहराओं में, सरख़ुशी आ गयी
फिर सबा, झूमती-नाचती आ गयी

ख़ुश्क, आँखों का दरिया रहा उम्रभर
अब जो देखा, तुम्हें तो नमी आ गयी

दर्द मद्धम हुआ, ज़ख़्म भरने लगे
हमनशीं तुझको, चारागरी आ गयी

एक अर्से से थी तीरगी चार-सू
चाँद छत पर उगा, चाँदनी आ गयी

धड़कनें, बे-तहाशा सुलगने लगीं
रात फिर बैन करती हुई आ गयी

दर्द, लज़्ज़त में तब्दील होने लगा
इश्क़ में क्या अजब, साहिरी आ गयी

उम्रभर ज़ेहन में थी उदासी बपा
जाने क्या मोजिज़ा है, ख़ुशी आ गयी

छीनकर ले गयीं चैन दिल का मेरे
तेरी आँखों को जादूगरी आ गयी

मिट गयी, बे-कसी, बे-कली, बे-बसी
दिल पे दस्तक वो राहत भरी आ गयी

बे-हुनर था मगर, इश्क़ में टूटकर
ख़ूब तुझको 'करन' शायरी आ गयी

नाम : घनश्याम राम (कालजयी घनश्याम)
जन्म तिथि : 01 जुलाई 1964
पता : A-22 Ramesh Enclave Opp Rohini Sec-21 New Delhi PIN- 110 086
व्हाट्सएप नंबर : 9810137967
Email : ramghanshyam64@gmail.com

घनश्याम राम - श्रीमती निर्मला देवी
विवाह की तिथि : 18 जून 1982

तू मिल गयी है मुझको बड़े ही नसीब से
जाने नहीं दूँगा तुझे मैं अब क़रीब से

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मुस्कुराते हुए तू अगर जाएगी
हुस्न की मल्लिका तू निखर जाएगी

हाथ में हाथ तेरा अगर आएगा
ज़िंदगी मस्तियों में गुज़र जाएगी

इश्क़ डाले अगर हुस्न पर इक नज़र
माँग दुल्हन की तारों से भर जाएगी

प्यार के बोल मीठे दो कह देखिए
दुश्मनी सबके दिल से बिसर जाएगी

पैर उनके ज़मीं पर न होंगे कभी
ज्योंहि आने की मेरी ख़बर जाएगी

नाज़ो-अंदाज़ अपना दिखाकर हमें
हर दफ़ा वादे से वो मुकर जाएगी

यूँ न 'घनश्याम' तड़पाओ मुझको सदा
ख़्वाहिशों की हवेली बिखर जाएगी

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

आज छत पर वही दिलकशी आ गयी
देखकर तो मुझे भी हँसी आ गयी

उनको देखा लगा ज़िंदगी आ गयी
चाँद के वस्ल को चाँदनी आ गयी

मैं भी हँसता रहा वो भी हँसती रही
हँसते हँसते नयन में नमी आ गयी

आँख ने आँख से क्या कहा क्या पता
पास रूठी हुई बावरी आ गयी

आह भरता रहा दिल दहकता रहा
बढ़ गयी धड़कनें बे-कली आ गयी

है क़यामत से कम ये कली भी कहाँ
फ़ुर्सतों में ख़ुदा की रची आ गयी

गीत, ठुमरी लिखूँ या ग़ज़ल मैं कहूँ
देख 'घनश्याम' को शायरी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
‘रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे’
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

राह में इश्क़ की हम मचलते रहे
ख़ूबसूरत डगर पर फिसलते रहे

आग ही आग है इश्क़ की राह में
दिल की ठंडक गयी हाथ मलते रहे

दिल जलाकर भी उनको न हम पा सके
मोम की तरह ख़ुद में पिघलते रहे

ये अदाएँ लुभाती रहीं हमको पर
मौसमों की तरह वो बदलते रहे

दूर उनसे रहे मृग की तृष्णा से हम
चाहतों के दिए बुझते-जलते रहे

रश्क था इश्क़ से जल-भुने वे सभी
ज़हर सारे के सारे उगलते रहे

क्या कमी थी मेरे प्यार में ऐ ख़ुदा
दिल पे ‘घनश्याम’ के तीर चलते रहे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

न अब हाल दिल का सुनाऊँ सभी को
जिगर चाक है क्यों दिखाऊँ सभी को

चली आँधियाँ फिर बवंडर उठा है
सलामत रखो घर बताऊँ सभी को

लगा मास्क, दूरी बना, वैक्सीन लो
दुहाई दूँ! घर-घर जगाऊँ सभी को

बुरे दिन गुज़र जाएँगे चुटकियों में
यही कह दिलासा दिलाऊँ सभी को

न टूटे कभी भाईचारा हमारा
रहें प्यार से हम, सिखाऊँ सभी को

बने दूत जो वॉरियर इस समर में
उन्हें सर झुकाओ बताऊँ सभी को

करो दूर ‘घनश्याम’ संकट मनुज का
मेरी प्रार्थना है सुनाऊँ सभी को

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

वतन के हसीं राह के हम सिपाही
ये वर्दी हमारी वफ़ा की गवाही

चले हम जिधर से उधर साफ़ मैदाँ
जिधर देखिए दुश्मनों की तबाही

कसम खाइ जब देश पर मर मिटेंगे
क़सम जान पर खेल कर भी निबाही

नशे में जवानी के मदहोश दोनों
उधर हुस्ने -दिलकश इधर कज कुलाही

कहानी मुहब्बत की कैसे बयाँ हो
क़लम वज्द में झूमती है सियाही

मज़े प्यार के यार 'घनश्याम' ले लो
करम-फ़र्मा हैं आज ज़िल्ले-इलाही

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

चपल चंचल नयन ने घर परीख़ाना बना डाला
बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला

शराबी हैं नयन उनके भरे हैं मय से दो प्याले
उन्हीं आँखों में हमने अपना मयख़ाना बना डाला

निगाहों की सुराही से निगाहों तक वो यूँ उतरा
बिना इक जाम के दिलबर ने मस्ताना बना डाला

क़रीने से सजी ज़ुल्फ़ों की लट झटके यूँ गालों पर
गुलाबी होंठों की लाली ने दीवाना बना डाला

जिसे चाहा किया सजदा ख़यालों और ख़्वाबों में
शमा को देखते ही ख़ुद को परवाना बना डाला

नशा चढ़ जाय गालों की ये डिम्पल से किसी पर भी
लबों की इस तबस्सुम को ही पैमाना बना डाला

जहाँ 'घनश्याम' पर छाया हुआ मस्ती का आलम हो
उसी मस्ती में हमने घर को बुतख़ाना बना डाला

नाम : काशिफ़ अहसन

जन्म तिथि : 01 फ़रवरी 1986

पता : Sr. Divisional Engineer (M) C&M Section, Mejia Thermal Power station DVC, Bankura, WB-722183

व्हाट्सएप नंबर : 7076312887

Email : ramghanshyam64@gmail.com

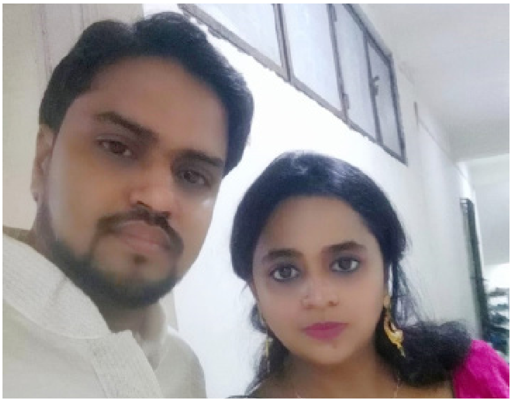

काशिफ़ अहसन - फौज़िया ज़मां

विवाह की तिथि : 06 नवम्बर 2012

तुम मेरी मुहब्बत हो, तुम मेरी अमानत हो
ये बात बता दूँ मैं, तुम मेरी ज़रूरत हो

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

आपको देखकर सोचते रह गये
प्यार के नाम पर फ़ासले रह गये

हो गये वो जुदा जो थे मुझको अज़ीज़
दिल की यादों के बस क़ाफ़िले रह गये

बीच दरिया में डूबा सफ़ीना मगर
तैरते हर तरफ़ बुलबुले रह गये

डूबने वाला दरिया में डूबा मगर
लोग साहिल पे बस देखते रह गये

नींद की परियाँ आती नहीं अब इधर
मेरी क़िस्मत में बस रतजगे रह गये

उनको सुलझाने की मैंने कोशिश तो की
फिर भी बाक़ी कई मसअले रह गये

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

मेरे लब पर कभी जब हँसी आ गयी
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

बाद मुद्दत उसे देखकर यूँ लगा
रात के बाद फिर रौशनी आ गयी

दिल को मेरे लगी खींचने यक-ब-यक
चश्मे-जानाँ को जब साहिरी आ गयी

वो न करने लगे ख़ून इंसाफ़ का
उसके हिस्से में गर मुंसिफ़ी आ गयी

इश्क़ दिल में तेरा जब से घर कर गया
मेरे अशआर में नग़मगी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

शबे-हिज्र में फिर सताये वही है
हँसाते-हँसाते रुलाये वही है

हवा भी अजब है करिश्मा ख़ुदा का
जलाए वही है, बुझाये वही है

है यकसाँ ये ख़ूबी सभी रहबरों में
कि नफ़रत के शो'ले जलाये वही है

नहीं जिसका ईमान वहदानियत पर
हर एक दर पे सर को झुकाये वही है

चले जा रहे अब तो 'अहसन' जहाँ से
ज़रा देख लो मुँह छुपाये वही है

नाम	: कुमार पंकजेश
जन्म तिथि	: 19 सितम्बर 1962
पता	: फ्लैट नं0-1, एल.आई.जी.एच, पंच शिवमंदिर के पीछे, कंकड़बाग़ कॉलोनी, पटना, पिन- 800020, बिहार
व्हाट्सएप नंबर	: 08789387721
Email	: kumarpankajesh19@gmail.com

कुमार पंकजेश - श्रीमती हेमलता
विवाह की तिथि : 03 जुलाई 1991

घर हमारा तेरी-मेरी प्रीत का विस्तार है
प्रेम-पूजा से सुवासित ये मेरा संसार है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

माँगने अब लगी है क़ज़ा ज़िंदगी
बेमुहब्बत हुई बेमज़ा ज़िंदगी

प्यार करती कभी तू झिड़कती मुझे
ख़ूब तेरी भी है ये अदा ज़िंदगी

इक मुहब्बत का ज़र ही मेरे पास था
जब वो ज़र ही नहीं तो ये क्या ज़िंदगी

इस वबा में है साँसों की बेहद कमी
दे दे मरने की मुझको दुआ ज़िंदगी

वक़्त और आदमी हो गये संगदिल
कोई उम्मीद करती भी क्या ज़िंदगी

सिर्फ़ सर को झुकाने से क्या फ़ायदा
क्या कहा मैंने तुमने सुना ज़िंदगी

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

अपनी हालत पे हमको हँसी आ गयी
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

हम तबीयत से कब सूफ़ियाना हुए
इश्क़ से कैसे ये सादगी आ गयी

बारहा तुमसे यूँ ही जो मिलते रहे
मिलते-जुलते हुए शायरी आ गयी

पहले ही से बहुत ख़ूबसूरत हो तुम
इश्क़ से तो चमक और भी आ गयी

कितनी शिद्दत से मिलते हो तुम आजकल
क्या जुदाई की अपनी घड़ी आ गयी

है तजुरबा दुखों का बहुत क़ीमती
इक अँधेरा-सा था रौशनी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

ये सच है सभी को तो इक दिन है जाना
बनेगा किसी रोज़ कोई बहाना

बहुत प्यारे लगते हैं बच्चे मुझे सब
सो मिट्टी से मेरी खिलौने बनाना

मुहल्ले में हरियाली बिल्कुल नहीं है
मेरी ख़ाक पर फूल-पौधे लगाना

परिंदे उड़ानों से थक जाएँगे जब
शजर कट गये तो कहाँ हो ठिकाना

जहाँ को बचाने की कोशिश करेंगे
चलेंगे जो हम तो चलेगा ज़माना

शहीदों के ख़ूँ पर सियासत बुरी है
अमन के कबूतर यहाँ मत उड़ाना

बड़े आप होंगे मुबारक हो सबको
मेरा भी है छोटा-सा अदबी घराना

कहीं भी अँधेरा न रह जाए यारो
मुहब्बत के दीपक यूँ मिलकर जलाना

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

गुज़र तो रही मेरे दिल पर तबाही
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

ख़मोशी उजालों की कहने लगी है
बग़ावत पे उतरी है अब ये सियाही

गुनाहों की दुनिया में आ ही गया हूँ
नहीं करनी साबित मुझे बेगुनाही

सफ़र में तो चलते ही रहना पड़ेगा
मगर नाम लेना न रुकने का राही

ज़ियादा हो तारीफ़ तो ये समझना
गिराँ पड़ने वाली है ये वाहवाही

सदाएँ रियाया की सुननी पड़ेंगी
उलट जाते हैं वरना ये तख़्त-शाही

कभी ख़ुश न होना सताइश पे अपनी
बहुत ही ये महँगी पड़े वाहवाही

अगर नफ़रतें भी हैं दिल में तुम्हारे
नहीं घर किसी को है मेरे मनाही

नशा है मुझे अपनी दौलत का यारो
मेरी प्यास, प्याले, शराबो-सुराही

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

❀

जहाँ भी देखिए इंसाँ परेशानी में रहता है
वो प्यासा तब भी रहता है वो जब पानी में रहता है

ज़रा आमाल पर अपने नज़र रखिएगा मोमिन जी
ये इंसाँ तो ज़मीरों की ही निगरानी में रहता है

ग़रीबी देखी है फिर भी ये ख़ुद्दारी सलामत है
मुक़द्दर है तेरा अच्छा फ़रावानी में रहता है

अदब और मोसिक़ी भी इक अजब-सी शय है दुनिया में
अँधेरा ज़हर का मिटता ये ताबानी में रहता है

मेरा दिल भर गया दानिशवरों की महफ़िलों से अब
अकेला दिल जो रहता है तो नादानी में रहता है

ज़रूरत से नहीं ज़्यादा सुकून आराम अच्छा है
वो अक्सर पीछे रह जाता जो आसानी में रहता है

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

❀

तेरी सुहबत ने इक नादान को दाना बना डाला
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

तेरी तस्वीर काग़ज़ की बहुत ही बेवफ़ा निकली
सो मैंने अपने सीने में ही बुतख़ाना बना डाला

मुझे क्या काम साग़र से न ही निस्बत सुराही से
निगाहों को तेरी मैंने ही मयख़ाना बना डाला

न थी मुझको कभी आदत भटकने की पहाड़ों में
जहाँ को लगता है तूने ही दीवाना बना डाला

बनाने मैं चला था इक मुहब्बत का जहाँ रंगीं
जफ़ा का रंग देखा जो तो वीराना बना डाला

नाम : केशव शरण
जन्म तिथि : 23 अगस्त 1960
पता : एस 2/564 सिकरौल,
वाराणसी-221002
व्हाट्सएप नंबर : 9415295137
Email : keshavsharan564@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

ख़ूबसूरत नशीले नयन क्या कहूँ
होश पल-भर में कर लें हरन क्या कहूँ

संगमरमर भी, शीशा भी और फूल भी
कुछ समझ में न आता बदन क्या कहूँ

शायरी की किताबों पे जैसे कवर
खिल रहा जो बदन पर वसन क्या कहूँ

चूमता है मुझे चाँद मैं चाँद को
रात देखा जो मैंने सपन क्या कहूँ

लग गयी है तो बस लग गयी है मुझे
प्रीत की एक ऐसी लगन क्या कहूँ

ज़ुल्फ़, ख़ुश्बू, दुपट्टा उड़ाता हुआ
मस्तियाँ कर रहा जो पवन क्या कहूँ

पूछता है ज़माना बड़े भेद से
किसलिए है सजाया चमन क्या कहूँ

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

❀

मौत की रात में ज़िंदगी आ गयी
था अँधेरा घना, चाँदनी आ गयी

तुम ख़ुदा हो गए जिस घड़ी से सनम
उस घड़ी से मुझे बंदगी आ गयी

मयकदे से निकलकर रखा ही क़दम
और बदनाम कोई गली आ गयी

आँख मूँदी ज़रा ध्यान के वास्ते
क्या ग़ज़ब हो गया इक परी आ गयी

दर्द की देन थी शख़्स लिखने लगा
प्यार की देन है शायरी आ गयी

दिन-ब-दिन सख़्त लहजा हुआ यार का
और मुझमें बड़ी आजिज़ी आ गयी

खेलते-कूदते मिल गये थे ज़रा
उम्र ज़्यादा न थी आशिक़ी आ गयी

याद करके ज़रा देखिए तो उसे
वो गयी ही नहीं जो ख़ुशी आ गयी

बुझ गयी प्यास अब पार जाना रहा
रास्ते में पथिक के नदी आ गयी

क्या गयी है नहीं हर क़यामत गुज़र
मत कहो अलविदा की घड़ी आ गयी

बेल मुरझा गयी थी लगाते समय
कुछ ठिकाना न था पर कली आ गयी

दूर कर ली हमीं ने समझ-बूझकर
प्यार में जब हमारे कमी आ गयी

अश्क़ मोती बने जो गिरे आँख से
और अच्छा कि खोयी हँसी आ गयी

आप क़ातिल नहीं थे हमारे अगर
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

तुम्हारी महफ़िलों में मैं रहूँ इच्छा जताते हो
अदावत जो रखें मुझसे उन्हें फिर क्यों बुलाते हो

समुंदर बूँद से रचकर डुबोया क्या नहीं मुझको
कि तिल का ताड़ करते हो मुझे उस पर चढ़ाते हो

लहर ऐसी उठाते हो क़यामत ही नज़र आती
उखड़ जाते बड़े पर्वत हवा ऐसी उड़ाते हो

खड़े इक पैर पर हम हैं जुगों से साँस को रोके
यही हमको सिखाते तुम महायोगी कहाते हो

जुटी है भीड़ प्यासों की तुम्हारे मंच के आगे
लिखा है बैनरों पर प्यार का दरिया बहाते हो

अभी से भी सँभल जाओ रहा अच्छा न जागा वो
तुम्हें क्या खा न जाता शेर को ठोकर लगाते हो

बताकर शत्रु तुमने ही दिलायी वीरगति हमको
दिलाकर वीरगति अब तुम हमें अपना बताते हो

तुम्हारी आग कैसी है तुम्हारे सख़्त-से दिल में
नहीं बुझती बुझाने के लिए दुनिया जलाते हो

दिलों को खींच लेते हो निराली जिन अदाओं से
निराली उन अदाओं से दिलों को फिर सताते हो

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

करूँ क्यों न उस रूप की वाह-वाही
सिफ़त धूप जिसने मिटा दी सियाही

कहीं भी न नामो-निशानी बची है
खिले फूल ऐसे कि विस्मृत तबाही

छुपाकर रखी ही न जाए मुहब्बत
नज़र दे रही दिल-जिगर की गवाही

डगर के ख़तर पारकर पा गया है
ख़तरनाक अभियान का लक्ष्य राही

अगर काम से आप संतुष्ट अपने
अरथहीन है ग़ैर की कमनिगाही

बड़े हो गये लोग पर खेलते हैं
किसी को बना चोर, ख़ुद बन सिपाही

उगा पात तो लाल, पीला झड़ेगा
हरा बीच में अब चढ़ा रंग काही

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

चमन हैं कई, एक में घूम आयें
न तोड़ें मगर फूल को चूम आयें

कुचाली हक़ीक़त रही प्यार की भी
ख़यालात मासूम-मासूम आयें

गया दिन मजूरे! चलो मयकदे में
चना दाल खायें, पियें, झूम आयें

नज़रबंद हम हैं इसी से तड़पते
कहाँ घूम आयें, कहाँ घूम आयें

बड़े हुस्न वाले अलग ही तरह के
बुलाये गये हैं न मालूम आयें

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

निछावर प्राण कर दूँ ऐसा दीवाना बना डाला
तुम्हारे जगमगाते रुख़ ने परवाना बना डाला

हसीनों की गली से मैं गया मंदिर नवाने सर
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

'कहाँ जाऊँ मैं अब मायूस अपने दिल को बहलाने
फ़सादी फ़ौज ने गुलशन को वीराना बना डाला

न सहरा था इलाक़ा ये न प्यासे थे कभी यूँ हम
बिना सोचे नदी पर बांध मनमाना बना डाला

यहाँ ही जैसे जमते हैं जगत के इंक़लाबी सब
लगाकर सख़्त पहरे क्या ये मयख़ाना बना डाला

हम अपने दुश्मनों के वास्ते दुश्मन अभी भी हैं
हमारे दोस्तों ने हमको बेगाना बना डाला

न जाने आशिक़ों से क्यों हुकूमत डर गयी इतना
कि उसने आशिक़ों के वास्ते थाना बना डाला

नाम : ज़ाहिद अबरोल (विजय कुमार अबरोल)
जन्म तिथि : 20 दिसम्बर 1950
पता : 'गुलरुख़', निकट डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, नंगल रोड, ऊना (हिमाचल प्रदेश)-1743032
व्हाट्सएप नंबर : +91 98166 43939
Email : abrol.zahid@gmail.com

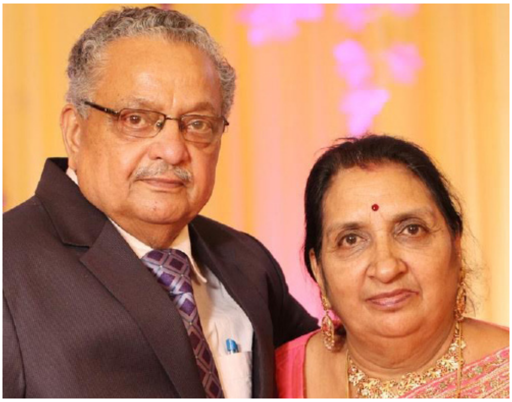

विजय कुमार अबरोल - श्रीमती रीटा अबरोल
विवाह की तिथि : 11 अक्टूबर, 1983

ख़ुद को ख़र्च कर बैठी, मेरा घर बनाने में
शम्स-ए-ख़ुशनसीबी है, मेरे आशियाने में

माँ भी है, बहन भी है, दोस्त भी है बेटी भी
जाने कितने साये हैं, एक शामियाने में

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

एक ग़ैबी-सी तलवार है कारगर
मेरे ख़ूँ का है इल्ज़ाम मेरे ही सर

पारा-पारा हुए ख़्वाब के बाल-ओ-पर
रास आया नहीं गुलरुख़ों का नगर

ऐ ज़मींज़ादिओ! आँख नीची रखो
आ रहा है कोई जंग से हार कर

दुश्मनों के सभी तंज़ तो सह लिये
जानलेवा है अपनों की हिर्सी नज़र

अपनी गोशानशीनी भी शाहों-सी है
फ़क्र की सल्तनत, मुफ़लिसाना बसर

शाइरों का तो सरमाया है बस यही
एक हमदर्द दिल, ग़ाइराना नज़र

थक गया हूँ मैं 'ज़ाहिद' कि दुश्वार है
ये ख़याली मनाज़िल का फ़र्ज़ी सफ़र

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नदी के ज़रीये समुन्दर में उतरा
जहाँ से उड़ा आब उसी घर में उतरा

ख़याल आँधियों, आबशारों से बचकर
ब-मुश्किल पनाह-ए-सुख़नवर में उतरा

ख़ुद अपने ही अंदर के डर से उभर कर
परिन्दे का अज़्म-ए-सफ़र पर में उतरा

जुनूँ कितने ही सरफिरे मजनुओं का
मिरे एक सादा-तब'अ सर में उतरा

मिरे सब्र की इन्तिहा थी यह 'ज़ाहिद'
मिरा ग़म जो क़ल्ब-ए-सितमगर में उतरा

नाम	: डॉ. अनिता सिंह
जन्म तिथि	: 16 सितम्बर 1971
पता	: C/o गोविंद सिंह, एम.वी. इंटरनेशनल होटल के पीछे, चक अहमद रामदयालु नगर, हाजीपुर ,पटना रोड, मुज़फ़्फ़रपुर 842001
व्हाट्सएप नंबर	: 7764918881
Email	: dranitasingh.1971@gmail.com

श्री अनिल कुमार सिंह - डॉ. अनिता सिंह
विवाह की तिथि : 4 जून 1987

उनके बग़ैर जीने की चाहत नहीं हमें
इसके सिवाय कोई भी आदत नहीं हमें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

नींद हो चैन की रात हो चैन की
ज़िन्दगी में कोई बात हो चैन की

दो दिलों की दरारें भी मिट जाएँगी
हो सके तो मुलाक़ात हो चैन की

कोई चिट्ठी नहीं, तो ख़बर ही मिले
कोई तो ऐसी सौग़ात हो चैन की

लहलहाए ज़मीं पर फ़सल प्रेम की
इस बरस ऐसी बरसात हो चैन की

ज़िन्दगी भर रिहाई न जिससे मिले
कोई ऐसी हवालात हो चैन की

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

ये रोटी खौफ़ की उस रात का मंज़र दिखाती है
ये हत्या भूख ने की, चीख़कर सबको बताती है

यही रोटी है कि जिसने छुड़ाया गाँव, घर-आँगन
यही रोटी है जो परदेश से घर को बुलाती है

हमारे सामने है मसअला फिर कल की रोटी का
हमारी भूख हमको मुफ़लिसी में आज़माती है

मेरे मौला मेरी हसरत नहीं थी तर निवालों की
मेरे मालिक मगर ये भूख तो सबको सताती है

ये रोटी ही हमारी आँख में रंगीनियाँ भर कर
हमारी भूख को रंगीन सपनों से सजाती है

नाम : डॉ. (श्रीमती) आदर्श मिश्रा
जन्म तिथि : 13 फ़रवरी
पता : द्वारा अर्पित मिश्रा, B-7, fl no 1102
लेक टाउन हाउसिंग सोसाइटी, कटराज,
पुणे महाराष्ट्र - 411046
व्हाट्सएप नंबर :
Email : adarsh.bkm50@gmail.com

स्व. बी. के. मिश्रा - डॉ. (श्रीमती) आदर्श मिश्रा
विवाह की तिथि : 20.02.1977

लिखती हूँ तुम्हारा नाम कहीं
इक मोजिज़ा हो जाता है

सीने से निकल कर दिल मेरा
उँगली में धड़कने लगता है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मोजिज़ा ये हुआ देखते देखते
दिल किसी का बना देखते देखते

देखते देखते मैं किसी की हुई
कोई मेरा हुआ देखते देखते

जिस पे करते रहे हम यक़ीं उम्र भर
दे गया वो दग़ा देखते देखते

उसकी हसरत मुझे मार ही डालती
रब बचा ले गया देखते देखते

ख़ूँ को स्याही बनाकर लिखा शे'र जब
वो सुख़नवर हुआ देखते देखते

मैं अधूरी बहुत थी ब शक्ले रदीफ़
मिल गया क़ाफ़िया देखते देखते

आप ही ने बनाया हमें शायरा
फ़ज़्ले-रब ये हुआ देखते देखते

रात भर नश्शा तारी रहा 'साहिबा'
ऐसा क्या कर दिया देखते देखते

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

सभी दोस्त मुझको भुलाने लगे हैं
वो सच्चाई से मुँह छुपाने लगे हैं

ज़रा सी पहाड़ी पे जब चढ़ न पाए
तो देखो परिंदे चिढ़ाने लगे है

सुना जब से मैंने भी कर ली मुहब्बत
दिये घी के दुश्मन जलाने लगे हैं

क़मर का है दीदार तीरा-शबी में
वो चेहरे से ज़ुल्फ़ें हटाने लगे हैं

सियासत उन्हीं की हुई आज बाँदी
बहुत ऊँचे जिनके घराने लगे हैं

कभी मेरी सूरत से बेज़ार थे जो
मेरे पथ में पलकें बिछाने लगे हैं

गुनह 'साहिबा' जिसने ज़ियादा किये वो
दिए मंदिरों में जलाने लगे हैं

नाम	: डॉ. आरती कुमारी
जन्म तिथि	: 25 मार्च 1977
पता	: शशि भवन, आज़ाद कॉलोनी, रोड 3 माड़ीपुर, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार-842001
व्हाट्सएप नंबर	: 8084505505
Email	: artikumari707@gmail.com

श्री माधवेन्द्र प्रसाद - डॉ. आरती कुमारी
विवाह की तिथि : 18 मई 1997

है तुझी से बहार का मौसम
मेरे दिल के क़रार का मौसम

मैं तितली की तरह हूँ फूल के जैसा है तू हमदम
मैं दिल हूँ सो तुझे धड़कन बनाकर साथ रखना है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

कहना दिल ने कभी मेरा माना नहीं
और मजबूरियाँ मेरी जाना नहीं

है नशेमन बहुत ख़ूबसूरत तो क्या
पेट भरने को तो एक दाना नहीं

हमने लोगों के मुँह से ये अक्सर सुना
अब ग़ज़ल गीत का तो ज़माना नहीं

एक पल में यहाँ एक पल में वहाँ
हम फ़क़ीरों का कोई ठिकाना नहीं

है पुराना बहुत अपना रिश्ता मगर
याद आये न इतना पुराना नहीं

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

तेरी याद में जो गुज़ारा गया है
वही वक़्त अच्छा हमारा गया है

भला और क्या अपनापन वो दिखाए
तेरा नाम लेकर पुकारा गया है

लिखा रेत पर नाम मैंने तुम्हारा
नदी में भी चेहरा निहारा गया है

तुम्हें इश्क़ का आइना मानकर के
मुक़द्दर को अपने सँवारा गया है

अजब है मुहब्बत का मैदान यारो
न जीता गया है न हारा गया है

तुम्हें मेरी हालत पता क्या चलेगी
मेरा जो गया कब तुम्हारा गया है

है मेरी भी आदत तुम्हारे ही जैसी
हर इक रंग मुझ पर तुम्हारा गया है

‘21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें’ के सुख़नवरों के जीवन साथी

श्री विकास कुमार - डॉ. कविता विकास

विवाह की तिथि : 23 जून 19877

डॉ. कृष्णकुमार ‘नाज़’- श्रीमती अनीता वर्मा

विवाह की तिथि : 12 मई 1986

ई. संजय कुमार.- श्रीमती डॉ. नूतन सिंह
विवाह की तिथि : 24 जून 1985

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम- स्मृतिशेष श्रीमती रमा गौतम
विवाह की तिथि : 06 जुलाई 1964

डॉ अनिल कुमार - डॉ. भावना
विवाह की तिथि : 27 फ़रवरी 2001

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता - शशि किरण
विवाह की तिथि : 9 नवम्बर 1973

डॉ. श्याम सखा - प्रमोद मुद्गल
विवाह की तिथि : 25 अप्रैल 1978

प्रो.(डॉ.) विपिन बिहारी स्वरूप - डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा
विवाह की तिथि : 22 नवम्बर 1971

दीपक पुरोहित - श्रीमती कल्पना पुरोहित
विवाह की तिथि : 22 फ़रवरी 1981

देव वंश दुबे - रेणु दुबे
विवाह की तिथि : 04 जून 1985

धर्मेन्द्र गुप्ता - स्मृति गुप्ता
विवाह की तिथि : 27 जनवरी 1993 (वसंत पंचमी)

श्री मनमोहन कपिला - निर्मला कपिला
विवाह की तिथि : 30 अक्टूबर 1972

श्री रोहित चतुर्वेदी - निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'
विवाह की तिथि : 25 जनवरी 1996

नीरज गोस्वामी - श्रीमती अरुणा गोस्वामी
विवाह की तिथि : 13 दिसम्बर 1975

विजय उप्पल - श्रीमती पुष्पा उप्पल
विवाह की तिथि : 19 जून 1974

प्रेम रंजन 'अनिमेष' - श्रीमती श्वेता
विवाह की तिथि : 24 मई 2001

प्रेम किरण - श्रीमती उषा वर्मा
विवाह की तिथि : 25 जून 1975

मंसूर उस्मानी - नजमा उस्मानी
विवाह की तिथि : 28 नवम्बर 1971

श्री पुरुषोत्तम भट्ट - मीना भट्ट
विवाह की तिथि : 23 जून 1980

रघुविंद्र यादव भट्ट - शील यादव
विवाह की तिथि : 27 जनवरी1995

रमेश 'कँवल' - श्रीमती मंजु प्रसाद
विवाह की तिथि : 22 जून 1978

रवि खण्डेलवाल - श्यामा खण्डेलवाल
विवाह की तिथि : 16 मार्च 1984

लोकेश कुमार सिंह - मीना सिंह
विवाह की तिथि : 24 नवम्बर 1988

विजय कुमार स्वर्णकार - माधुरी स्वर्णकार
विवाह की तिथि : 30 नवम्बर 1993

नाम	: डॉ. कविता विकास
जन्म तिथि	: 28 फ़रवरी
पता	: डी-15, सेक्टर-9, पोस्ट ऑफ़िस-कोयलानगर जिला-धनबाद, झारखंड - 826005
व्हाट्सएप नंबर	: 9431320288
Email	: Kavitavikas28@gmail.com

श्री विकास कुमार - डॉ. कविता विकास
विवाह की तिथि : 23 जून 19877

मिले तुम तो मुझको मिली हर ख़ुशी है
लगा ज़िंदगी यह सँवरने लगी है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

उससे बेहतर तो कोई नज़ारा नहीं
जिसको नज़रों से मैंने उतारा नहीं

आँखें भीगी थीं जाते हुए देखकर
फिर भी इस दिल ने उसको पुकारा नहीं

प्यार, इक़रार, महबूब सब छूटे, पर
हमने रो-रो के जीवन गुज़ारा नहीं

हम हैं बेशक जुदा पर रखें क्यूँ गिला
तन कहीं, मन कहीं, ये गवारा नहीं

रुत ने की कुछ ख़ता, कुछ तसव्वुर तेरा
आज दिल पे चला वश हमारा नहीं

ग़म नहीं ख़्वाब मेरे बिखर जो गये
ग़म है फिर ख़्वाब कोई सँवारा नहीं

ख़ुद को कविता ये समझा के ज़िन्दा रही
कौन है जो मुहब्बत में हारा नहीं

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

नित नये ख़्वाब आँखों में पलते रहे
अश्क बनकर ये हर पल निकलते रहे

ख़ाक होते रहे, फिर भी जलते रहे
इश्क़ की आग को हम मचलते रहे

मेरे दुख में जो साथी रहे थे कभी
देखकर मेरी ख़ुशियाँ वो जलते रहे

दंश गहरे मिले तब पता यह चला
आस्तीं में मिरे साँप पलते रहे

बंद कर आँख उन पर यक़ीं कर लिया
और लेकर यक़ीं में वो छलते रहे

चाहकर भी नहीं जल सके सूर्य-सा
रोज़ उभरते रहे, रोज़ ढलते रहे

टालते-टालते टल गया वक़्त ही
हम करें भी तो क्या, हाथ मलते रहे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

अजब एक हलचल हुई है बदन में
यक़ीनन था कुछ ख़ास उसकी छुअन में

न तहज़ीब ही है न आँखों में पानी
निकल जाना कतरा के अब है चलन में

सभी की ज़ुबाँ पर चढ़े जा रहे हो
तुम्हीं छाए हो शाइरों के सुख़न में

ये नाज़ुक-सी डाली, ये रंगत, ये ख़ुशबू
नहीं तुझ-सा है फूल कोई चमन में

तुम्हें ढूँढ़ती हैं निगाहें सभी की
हर इक शख़्स तन्हा है इस अंजुमन में

सजाती हूँ तुमको ख़यालों में जब भी
उजाला-सा छा जाए क्यों मेरे मन में

हैं काँटे ही काँटे मुहब्बत में 'कविता'
नहीं है मगर धार इनकी चुभन में

अर्कान- मुतफ़ाइलुन x 4

मेरे दिल में तेरी मुहब्बतों का वो फूल फिर से महक गया
लगा इस उदास-सी ज़िन्दगी का हर एक तार खनक गया

हवा में घुला हुआ मौत का बड़ा ख़ौफ़नाक है वायरस
जिसे भी जहाँ मिला क्रूरता से उसे वहीं पे लपक गया

कभी फ़ुरसतों में समाज की सभी सूरतों पे भी ग़ौर कर
कोई तंग हाल में है सुखी, कोई सुख में राह भटक गया

कभी राह ख़ुद के लिए बना, कभी औरों के लिए राह बन
ज़रा देख चाँद के वास्ते, भला कैसे सूर्य सरक गया

तेरा साथ, तेरी मुहब्बतों की हसीन यादों में हमसफ़र
मेरी पलकें भीग गयीं, कभी मेरा रोम-रोम फड़क गया

❀

करो कोशिश तो लाज़िम है सभी ज़ख़्मों का भर जाना
कभी अच्छा नहीं होता किसी रिश्ते का मर जाना

बचा ले अपनी उम्मीदों के सूरज को तू ढलने से
बुरा है ग़म के कोहरे का किसी दिल में पसर जाना

तेरे पहलू में आकर ऐ मुहब्बत मैंने देखा है
मुक़द्दर का सँवर जाना, मुक़द्दर का बिखर जाना

बहारे-दिल मेरे हमदम ठहर भी जा यहाँ दो पल
मुझे भाता नहीं तेरा हवा बनकर गुज़र जाना

छुपाए है कहाँ छुपती किसी से दिल की बेचैनी
निगाहें भाँप लेती हैं इधर आना उधर जाना

किसी दिल में नहीं आसाँ बना लेना जगह अपनी
बहुत आसान है लेकिन किसी दिल से उतर जाना

समय के साथ ख़ुद को भी बदलना सीख ले 'कविता'
जहाँ लगता नहीं मन है वहाँ क्यूँकर ठहर जाना

- डॉ. कविता विकास

❀

जिएगा क्या वो जिस को ख़ुद को मनवाना नहीं आता
जुनूँ में अपने हर हद से गुज़र जाना नहीं आता

बियाबाँ दर बियाबाँ मैं सफ़र करती हूँ ख़्वाबों में
सहर हो जाती है पर मेरा काशानः नहीं आता

घुटे हर आह दिल में ये हमें मंज़ूर है लेकिन
हमें लोगों के आगे अश्क छलकाना नहीं आता

फ़क़ीरों के लिए हर एक दुख सामान है सुख का
मज़ा आता है उनको दुख में घबराना नहीं आता

समझ हो 'नाज़ली' कितनी ही गर ख़ुद को नहीं समझे
तो ये समझो तुम्हें अल्लाह को पाना नहीं आता

- डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

नाम	: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'
जन्म तिथि	: 10 जनवरी 1961
पता	: 9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी काँठ रोड, मुरादाबाद-244105
व्हाट्सएप नंबर	: 99273 76877
Email	: kknaaz1@gmail.com

डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'- श्रीमती अनीता वर्मा
विवाह की तिथि : 12 मई 1986

दुनिया तो पढ़ती रही, बस चेहरे के भाव
जान लिया तुमने मगर, मुझमें छिपा तनाव

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

जीत किसके लिए, हार किसके लिए
ज़िंदगी भर ये तकरार किसके लिए

जो भी आया है वो जायेगा एक दिन
फिर ये इतना अहंकार किसके लिए

तोड़ डाले तअल्लुक़ के बंधन तो फिर
जन्मदिन पर ये उपहार किसके लिए

पूछते हैं दियों से अँधेरे घने
रौशनी का पुरस्कार किसके लिए

ज़िंदगी तेरा कोई नहीं है तो फिर
कर रही है तू सिंगार किसके लिए

तेरा मक़सद है मुझको डुबोना अगर
फिर ये कश्ती, ये पतवार किसके लिए

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

समंदर में रहकर भी प्यासा रहा है
यही एक मोती की अपनी कथा है

छुपाये है क्यों पीठ हर इक नज़र से
नहीं झूठ गर आइना बोलता है

है आसान बहना समय की नदी में
बहुत उसमें मुश्किल मगर तैरना है

तभी से मैं घबरा रहा हूँ कि जबसे
सुना है सभी कुछ ख़ुदा देखता है

समय और हालात जैसा बना दें
न अच्छा है कोई, न कोई बुरा है

कोई कुछ कहे, भूल जाती है सब कुछ
यक़ीनन ये दुनिया बड़ी बेवफ़ा है

है अक्स उसमें पिछले जनम का बहुत कुछ
मुझे इस जनम का जो दरपन मिला है

अँधेरों की तहरीर पढ़ ग़ौर से तू
कि आख़िर में उसके उजाला लिखा है

नाम : डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'
जन्म तिथि : 05 दिसम्बर 1954
पता : 'देवाशीष', नारायण नगर, पोस्ट भोटा, ज़िला-हमीरपुर हिमाचल प्रदेश 176041
व्हाट्सएप नंबर : 94183 04634
Email : nazli.nalini1954@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

❀

दुनिया भर का है वो एक मेरे सिवा
सबकी सुनता है वो एक मेरे सिवा

सिर्फ़ मुझ से बरतता है वो बेरुख़ी
सब से मिलता है वो एक मेरे सिवा

जाने किस-किस से हर वक़्त ही फ़ोन पर
बात करता है वो एक मेरे सिवा

मैं भले कितनी मिन्नत समाजत करूँ
सबका अपना है वो एक मेरे सिवा

'नाज़ली' अपना रब मैंने माना जिसे
रब सभी का है वो एक मेरे सिवा

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

बेघरी आयी फिर भुखमरी आ गयी
अपनी हालत पे बरबस हँसी आ गयी

आप क्या आ गये, ज़िन्दगी आ गयी
मेरे दामन में हर इक ख़ुशी आ गयी

देर तक आसमाँ पर घटाएँ रहीं
और फिर यक ब यक रौशनी आ गयी

ख़ुशनुमा चल रहा था सफ़र, दरमियाँ
दर्द की एक बिफरी नदी आ गयी

ख़ारिजुलबहर हैं और दा'वा है ये
हम को तो ख़ुद ब ख़ुद शाइरी आ गयी

वो लड़कपन के क़िस्से सुनाने लगे
सुन के बेसाख़्तः ही हँसी आ गयी

याद क्या आ गया सुब्ह दम 'नाज़ली '?
क्यूँ तिरी आँख में यूँ नमी आ गयी?

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुझे आँसुओं में डुबाकर न जाते
मिरा यूँ तमाशा बनाकर न जाते

अलग मंज़िलें थीं हमारी तो क्या था
चले जाते, नज़रें चुराकर न जाते

न यूँ दर-ब-दर करते तुम तीरगी में
दियों को सरे-शब बुझाकर न जाते

अगर जानते घर जलेगा इसी से
तो फिर हम ये दीपक जलाकर न जाते

भले 'नाज़ली' से महब्बत नहीं थी
पर ऐसे तो तोहमत लगाकर न जाते

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

बताएगी क्या, बेज़ुबाँ है सियाही
उजाला जो होता तो देता गवाही

कहाँ मुल्क में अब बची लोकशाही
जिधर देखिए बस मची है तबाही

इधर मुफ़्लिसी भूक से तोड़ती दम
उधर ऐश में झूमती बादशाही

यहाँ बेगुनाहों को मिलती हैं जेलें
ज़रूरी है बस एक झूटी गवाही

हैं वरदान इन्सानियत के लिए वो
मुहब्बत की राहों के बनते जो राही

न फूलों की ता'रीफ़ के पुल बँधे हैं
ख़ुशामद की खू से बढ़ी वाहवाही

है अफ़्सोस! कैसा चला दौर दौरा
हुआ हुक्मे-शाही, बढ़े तानाशाही

नाम	: डॉ. नूतन सिंह
जन्म तिथि	: 15 दिसम्बर 1969
पता	: टी.पी.एस. क्रिकेट एकेडमी, नियर एवार्ड नूतन नगर, जमुई-811307
व्हाट्सएप नंबर	: 9430087284
Email	: nutankumari148@g mai.com

ई. संजय कुमार.- श्रीमती डॉ. नूतन सिंह
विवाह की तिथि : 24 जून 1985

मुक़द्दर मेरा मुस्कुराया न होता
अगर ज़िन्दगी में तू आया ना होता

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

बादलों की तरह हम टहलते रहे
रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

साथिया बनके तो साथ चलते रहे
रंग लेकिन हमेशा बदलते रहे

आसमाँ पर परिंदों-सी परवाज़ हो
ख़्वाब ऐसे ही आँखो में पलते रहे

ज़ीस्त की राह में है तमाज़त बहुत
रौशनी के लिए फिर भी जलते रहे

अब जुदाई मुझे दर्द देती नहीं
साथ रहकर भी वो मुझको छलते रहे

औरतों को बदलते रहे फ़ितरतन
तन के कपड़े हों जैसे, बदलते रहे

पत्थरों को भी झेला शजर ने बहुत
चोट सहकर हमेशा ही फलते रहे

वो बचाते रहे ख़ार से अंगुली
फूल को चुटकियों से मसलते रहे

ख़्वाब में भी कहाँ ख़ुश वो 'नूतन' हुए
आह भरते रहे हाथ मलते रहे

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

गिरे हो तो उठो ख़ुद ही, उठाने कौन आयेगा
पहुँचना ख़ुद है मंज़िल पर बताने कौन आयेगा

भरोसा जिस पे करते हो पता क्या कब फिसल जाये
लगाकर आग चल देगा बुझाने कौन आयेगा

बहुत हो ख़ूबसूरत इस तरह निकलो न सज-धजकर
तुम्हें जग की निगाहों से बचाने कौन आयेगा

हुए बरहम फुलाये मुँह जो बैठे हो अकेले में
कहीं हम भी निकल जायें मनाने कौन आयेगा

सभी मतलब के साथी हैं सुना है और देखा भी
ख़ुदा को छोड़कर अपना बनाने कौन आयेगा

हमारे चेहरे और मन को जो पढ़ लेने में माहिर है
अगर वह रूठ जाये तो मनाने कौन आयेगा

हमारी बात पर जानम कभी नाराज़ मत होना
वगरना सुबह दम चाय पिलाने कौन आयेगा

किसी के हाल पर तुमको तरस आए न जब 'नूतन'
तो हाले-दिल तुम्हें अपना सुनाने कौन आयेगा

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

यक़ीनी न कर दे हमारी तबाही
कहीं जान ले ले न ये कज-निगाही

मेरी ज़ुल्फ़ के शौक़े-अंगेज़ में गुम
अमावस की रातों की सारी सियाही

सिवा तर्ज़ के और कुछ भी न बदला
अभी भी है क़ायम यहाँ बादशाही

फ़रामोश क्यूँ कर गया है ज़माना
हवसकार पाता है बस रूसियाही

ज़बाँ से तो जारी कहानी अलग है
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

कोई बिस्तरे मर्ग पर पेट ख़ाली
किसी के लिए रोज़ो-शब मुर्ग़ो-माही

जिधर तू चलेगा उधर मैं चलूँगी
ये 'नूतन' तिरी रहगुज़र की है राही

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

चले आओ हमदम गुलाबी है मौसम
बड़ा ख़ूबसूरत शराबी है मौसम

रहो पास पहलू में हरदम हमारे
बहुत ही नशीला शराबी है मौसम

महकती फ़िज़ाएँ हैं बेताब धड़कन
गुलों का है बिस्तर शबाबी है मौसम

ये ठण्डी हवाएँ ये बर्फ़ीली बारिश
मेरे वास्ते तो अज़ाबी है मौसम

तुझे बन्द कर लूँ मैं आँखों में अपनी
यक़ीनन बहुत इज़्तिराबी है मौसम

हरे कोट तन पे मुकुट धानी सर पे
ये सब मौसमों से नवाबी है मौसम

ख़िज़ाँ को चमन से भगाकर ही छोड़ा
तुम्हारी तरह इन्क़लाबी है मौसम

बदलते हो हर वक़्त अपना इरादा
यही एक तुझ में ख़राबी है मौसम

किए जा रहा है अजब-सा इशारा
उलझना न 'नूतन' शराबी है मौसम

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

हमारी झील-सी आँखों को मयख़ाना बना डाला
ये किसने मेरे चेहरे को परी-ख़ाना बना डाला

जो लैला ने बिखेरे अपने जलवे इक शबिस्ताँ में
तो मजनूँ ने चमन को अपने वीराना बना डाला

हमारी उम्र गुज़री थी जिसे अपना बनाने में
उसी ने एक पल में हमको बेगाना बना डाला

किसी की आहटें सुनकर हमारा दिल भी धड़का था
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला'

मैं उसको क्या बदल देती भला उसकी मुहब्बत का
ग़ज़ल के हुस्न की मलिका को नज़राना बना डाला

बहुत नादान था ये दिल इसे परवाह किसकी थी
मुसलसल तेरे ग़म ने पर इसे दाना बना डाला

जुनूँ की मंज़िलों से इश्क़ गुज़रा इस तरह 'नूतन'
ख़िरद की काविशों को इसने बुतख़ाना बना डाला

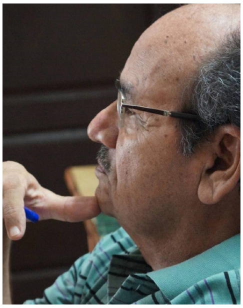

नाम	: डॉ. ब्रह्मजीत गौतम
जन्म तिथि	: 28 अक्टूबर 1940
पता	: युक्का-206 पैरामाउंट सिम्फनी, क्रासिंग रिपब्लिक ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)
व्हाट्सएप नंबर	: 976 000 7838
मोबाइल नंबर	: 942 510 2154
Email	: bjgautam2007@gmail.com

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम- स्मृतिशेष श्रीमती रमा गौतम
विवाह की तिथि : 06 जुलाई 1964

कभी-कभी न जाने क्यों ये वहम हुआ है
कि जैसे चाँदनी में तुमने मुझको छुआ है

मुस्काये आप ज्यों ही, ऊषा खिली गगन में
कलियों ने आँखें खोलीं, गुल खिल गये चमन में

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

हम मिले थे कभी सतपदी की तरह
ज़िंदगी किन्तु गुज़री बदी की तरह

छोड़कर हमको जब से गये हैं सनम
एक दिन बीतता है सदी की तरह

दर्द, ग़म या ख़ुशी कुछ ठहरता नहीं
ज़िंदगी बह रही है नदी की तरह

एक बेजा हँसी का असर देखिये
जीना पड़ता है फिर द्रोपदी की तरह

हम भी इस सरज़मीं के ही बाशिंदा हैं
क्यों रहें फिर भला सरहदी की तरह

मैं मसर्रत की चाहत करूँ किसलिए
मुझको मिलती है वह त्रासदी की तरह

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

ये मुसीबत कहाँ से नयी आ गयी
सारी दुनिया में जो मुर्दनी आ गयी

आपसी मिलना-जुलना भी मुश्किल हुआ
बेबसी, बेहिसी, बेदिली आ गयी

सत्य की पैरवी कोई कैसे करे
हर क़दम छल-कपट, काफ़िरी आ गयी

शांत मन में कभी झाँकिये तो ज़रा
यों लगेगा, उतर चाँदनी आ गयी

हमने जब भी कही अपने मन की व्यथा
लोग बोले, हमें शाइरी आ गयी

ऐसा इन आँखों में क्या दिखा आपको
आपकी आँखों में जो नमी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

तुम्हारी निगाहों से जिसने भी पी है
हक़ीक़त में तो उम्र उसने ही जी है

न जाने इसे लोग क्यों कहते फ़ानी
यही दुनिया कल थी, यही आज भी है

नहीं ज़िंदगी यह खिलौना है कोई
अमानत है उसकी कि जिसने ये दी है

शजर ने कहा, ऐ परिंदे! सँभल जा
शिकारी ने तेरी जगह देख ली है

किनारे पे ही जो लगाते हैं ग़ोते
सदा हाथ उनके लगी रेत ही है

करें 'जीत' तारीफ़ क्यों उस ग़ज़ल की
कहन बे-असर जिसके अशआर की है

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

नहीं जा रही ये वबा या इलाही
मचायी है हर ओर जिसने तबाही

करे कोई उपकार कैसे किसी पर
कुम्हारों से जब लड़ रही हो सुराही

जिन्हें था बनाया नुमाइंदा अपना
वे ही हमसे अब कर रहे हैं उगाही

हैं रहते यहाँ, गीत गाते वहाँ के
यही तो है इस मुल्क की लोकशाही

बने फ़ेसबुक की इनायत से शाइर
बिना कुछ लिखे पा रहे वाहवाही

कहाँ तक कहें ज़िन्दगी के फ़साने
लगी ख़त्म होने क़लम की सियाही

अदालत में सच 'जीत' पायेगा कैसे
सभी झूठ की दे रहे हैं गवाही

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

हमारे दिल पे क्या गुज़री है, अब ये बात क्या कहना
तुम्हारे बिन हैं बीते किस तरह दिन-रात, क्या कहना

शुरू में तो जुनूँ था इश्क़ का, हर पल बहारें थीं
चले जब पतझरों के घोर झंझावात, क्या कहना

नहीं शतरंज की बाज़ी से कम होती मुहब्बत भी
अचानक शह लगी और हो गयी फिर मात, क्या कहना

सदन में तो सियासतदाँ हैं दिखते ख़ून के प्यासे
मगर रातों में उनके आपसी सौग़ात, क्या कहना

बहन है वो, वही बेटी, बनेगी पत्नी, फिर माँ भी
बदलते एक ही किरदार के हालात, क्या कहना

वो माँ जब भेजती है जान के टुकड़े को सीमा पर
उमड़ते 'जीत' उसके दिल में जो जज़्बात, क्या कहना

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

ख़ता हमसे हुई है क्या, जो बेगाना बना डाला
जो दिल कल तक चमन था, उसको वीराना बना डाला

तुम्हें क्यों दोष दें, है दोष इन क़ातिल निगाहों का
हमें जो इक नज़र देखा तो दीवाना बना डाला

शिकायत क्यों करें, किससे करें और क्या करें या रब
कि जब हमने ही ख़ुद को उनका परवाना बना डाला

तुम्हीं मीना, तुम्हीं साग़र, तुम्हीं साक़ी-ओ-मयख़ाना
हमें सूझा न कुछ तो ख़ुद को पैमाना बना डाला

हमारे पैर ये उनकी गली से होके क्या गुज़रे
बहाना मिल गया, यारों ने अफ़्साना बना डाला

कभी ये शहर रौशन था, बहारें गीत गाती थीं
हवा ऐसी चली, हर घर को ग़मख़ाना बना डाला

नाम	: डॉ. भावना
जन्म तिथि	: 20 फ़रवरी 1976
पता	: आद्या हॉस्पिटल, सीतामढ़ी रोड, जीरोमाइल, मुजफ्फरपुर - 842004
व्हाट्सएप नंबर	: 9546333084
Email	: bhavna.201120@gmail.com

डॉ अनिल कुमार - डॉ. भावना
विवाह की तिथि : 27 फ़रवरी 2001

ग़ज़ल के साज़ पर भी सुर ज़रा मद्धम निकलता है
नहीं रूठो कभी मुझसे कि मेरा दम निकलता है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

फट गया है हृदय छलनी चाहत हुई
जब गुलों को चमन से शिकायत हुई

दर्द पेड़ों का जब आसमाँ ने सुना
बादलों की ज़मीं पर इनायत हुई

सच को कुचला गया लोग सोये रहे
झूठी बातों पे अक्सर बग़ावत हुई

वो मुनाफ़ा भला मुझको देता ही क्या
वो दिया ही नहीं जितनी लागत हुई

बेहिचक उँगलियाँ उसपे उठने लगीं
जैसे निर्धन की बेटी शराफ़त हुई

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

बहुत यादें लाता है बारिश का आना
कभी तेज बूँदें, कभी रुक-सा जाना

वो रिमझिम फुहारों की भीगी-सी मस्ती
ये सूरज की किरणों का हो आना-जाना

वो खिड़की से हाथों में बूँदें पकड़ना
वो छातों में चलना, वो छाते हटाना

वो ताशों के पत्ते, वो पत्तों का बँटना
वो अमरूद की फाँको को हँस-हँस के खाना

वो हल-बैल के साथ बारिश में चलना
वो बोरे की छतरी से ख़ुद को बचाना

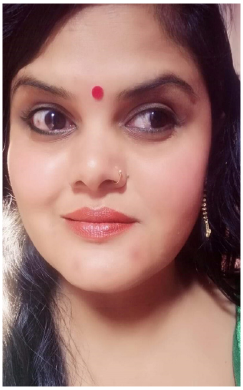

नाम	: डॉ. यासमीन मूमल
जन्म तिथि	: 05 मार्च 1985
पता	: डॉ. यासमीन पुत्री इशारत ख़ान, मकान न. 587, निकट बाबू जी की चौपाल, मोहल्ला मिसरीख़ैल कस्बा शाहजहाँपुर (मेरठ) यूपी-250104
मोबाइल नंबर	: 7409094650
Email	: Yasmeenkhan9376@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

❀

साँप का ज़हर फिर भी उतर जाएगा
डस लिया आदमी ने तो मर जाएगा

उससे मिलना तो नज़रें मिलाना नहीं
वरना नज़रों से दिल में उतर जाएगा

जब ठिकाना नहीं कोई मंज़िल नहीं
चाँद तारों को लेकर किधर जाएगा

उसके जैसा न दुनिया में होगा कोई
तेरी चाहत से जब वो सँवर जाएगा

ज़िंदगी वक़्फ़ जिसने तेरे नाम की
छोड़कर कैसे तेरा वो दर जाएगा

लुट गया राहे-उल्फ़त में कोई अगर
तो ख़ुदा जाने वो कैसे घर जाएगा

'यास्मीं' उसपे क़ुर्बान हो जायेगी
जो बुलन्दी पे जाकर ठहर जाएगा

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
‘आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी’
पर कही गयी ग़ज़लें

मुझमें ऐसी भी क्या कुछ कमी आ गयी
तेरे लहजे में जो बेरुख़ी आ गयी

हाले-दिल, दिल से वो पूछते ही नहीं
उनकी ऐसी अदा पे हँसी आ गयी

दे रही हैं गवाही ये आँखें तिरी
इनमें उल्फ़त की इक रौशनी आ गयी

हम न कर ही सके शिकवा-ए-ग़म कभी
‘आपकी आँख में क्यूँ नमी आ गयी’

इश्क़ में जबसे हम मुब्तिला हो गये
धीरे-धीरे हमें शायरी आ गयी

दूर ही से सही देखकर आपको
यूँ लगा ज़िंदगी में ख़ुशी आ गयी

बेवफ़ाई का चर्चा जहाँ भी हुआ
याद हमको सनम आपकी आ गयी

वो भी क्या दिन थे जब सब मुझे देखकर
दिल से कहते थे लो ‘यास्मीं’ आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुहब्बत की बस्ती नयी इक बसा लूँ
तुझे दिल के मंदिर में लाकर बिठा लूँ

इन्हीं के सहारे ही दिल में उतरना
बिछा लूँ, बिछा लूँ, मैं पलकें बिछा लूँ

बयाँ हाल दिल का कभी फिर करूँगी
अभी तेरी नज़रों के मैं तीर खा लूँ

फ़रिश्ता यक़ीनन कहेगा ज़माना
किया अपना वादा अगर मैं निभा लूँ

अभी दूर ठहरो नये आने वालों
जो पहले मिले उन ग़मों को भुला लूँ

बिगड़ने का मिल जाएगा सबको मौक़ा
अगर आईनों को नगर से हटा लूँ

इजाज़त कि ऐ काश उनकी मिले तो
मैं यादों को हमराह अपने सुला लूँ

यही दिल की हसरत है मिल जाये मौक़ा
लबों पर निशाने-मुहब्बत बना लूँ

जो ख़ुशबू चमन में सभी के लिए है
बता ‘यास्मीं’ उसको कैसे घटा लूँ

नाम	: डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'
जन्म तिथि	: 17 अप्रैल 1949
पता	: टॉवर बी 5 , फ़्लैट न 302, निर्मल छाया सोसाइटी, वी आई पी रोड, जीरकपुर-140603 पंजाब
व्हाट्सएप नंबर	: 9811169069
Email	: vinjisha55@yahoo.co.in

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता - शशि किरण
विवाह की तिथि : 9 नवम्बर 1973

रेत का दरिया था लेकिन इश्क़ से जलथल हुआ
मैं तुम्हारी क़ुर्बतों से ही सदा संदल हुआ

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

ज़िंदगी है इसे तू न अख़बार कर
अपने किरदार को यूँ न बेकार कर

नाख़ुदा देख मत, अब नदी पार कर
अपनी इन बाज़ुओं को ही पतवार कर

कब अहिंसा की भाषा वो पढ़ पाये हैं
उनके धर तक पहुँच और हुंकार कर

गर मुहब्बत में उनका तलबगार है
उनसे खुल कर मुहब्बत का इज़हार कर

सारी दुनिया बदलना तो मुमकिन नहीं
एक सपना किसी का तो साकार कर

यूँ दबे पाँव आँखों में उसकी समा
ख़्वाहिशों को न अपनी यूँ बाज़ार कर

पुरसकूँ आशियाना 'शलभ' चाहिए
उनकी ज़ुल्फ़ों में ख़ुद को गिरफ़्तार कर

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुहब्बत में हासिल गुहर देख लेना
ज़रा दिल में जलता शरर देख लेना

तुझे बेख़बर कब ख़बर ही हुई है
हुआ कैसे ख़ूने-जिगर देख लेना

हमेशा रहूँगा तेरा मोतबर मैं
तेरे साथ हूँ हमसफ़र देख लेना

तेरी आदतों में कहीं तो निहाँ मैं
मुझे भी कहीं मुख़्तसर देख लेना

पुराने दिनों की अगर होवे जुम्बिश
ख़ुदी से मुझे बेख़बर देख लेना

हुकूमत के जुम्ले गुलाबी-गुलाबी
है उन्माद में हर बशर देख लेना

तेरी आँख में ही तो रहता 'शलभ' है
ज़रा आइने में नज़र देख लेना

नाम : डॉ. श्याम सखा 'श्याम'
जन्म तिथि : 28 अगस्त 1948, (1 अप्रैल 1948 स्कूल रिकॉर्ड में)
पता : 703 GHS 88, sect. 20, पंचकूला-1341113 (हरियाणा)
मोबाइल नंबर : 9416359019
Email : shyamskha1973@gmail.com
Blog : gazalkbahane.blogspot.com

डॉ. श्याम सखा - प्रमोद मुद्गल
विवाह की तिथि : 25 अप्रैल 1978

मेरे घर में घूमता रहता है दिन भर एक चाँद
चाँद भी हो, रात भी हो, ये ज़रूरी तो नहीं

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

घूमना है बुरा तितलियों की तरह
घर भी बैठा करो लड़कियों की तरह

दिल में उतरी थी वो बिजलियों की तरह
जब गयी तो गयी, आँधियों की तरह

उनकी बातें लगीं झिड़कियों की तरह
ज़ख़्म मेरे खुले खिड़कियों की तरह

आ लिखें, फिर से ख़त, एक दूजे को हम
बालपन में लिखीं तख़्तियों की तरह

देखकर, आपको धड़कनें हैं हुई
कूदती, फाँदती हिरनियों की तरह

जल गये मेरे अरमाँ सभी के सभी
फूँक डाली गयीं झुग्गियों की तरह

छोड़कर चल दिये वो हमें दोस्तो
आम की चूस लीं गुठलियों की तरह

बात अपनी कहो कुछ मेरी भी सुनो
शोख़ चंचल खिली लड़कियों की तरह

ज़िन्दगी फिर रही है तड़पती हुई
जाल में फँस गयी मछलियों की तरह

प्यार करना ही है गर तुम्हें तो करो
मीरा, राधा या फिर गोपियों की तरह

काश हो जाते हम नामवर दोस्तो
मिट गयी प्यार में हस्तियों की तरह

चाहते आप ही बस नहीं हैं हमें
घूमता है जहाँ फिरकियों की तरह

आज मायूस है क्यों वो, कल तक जो थी
खेलती कूदती हिरनियों की तरह

माफ़ कर दें इन्हें आप भी 'श्याम' जी
आपकी अपनी ही ग़लतियों की तरह

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुझे देके थपकी सुलाने लगी है
हवा देखिये मुस्कराने लगी है

समन्दर मिला आसमाँ से उफनकर
नदी आज फिर खिलखिलाने लगी है

लिपटते जो देखा अली को कली से
नवेली-सी दुल्हन लजाने लगी है

उबलने लगा झील का सर्द पानी
जवानी दिवानी नहाने लगी है

न कोई रहा है न कोई रहेगा
घड़ी हर घड़ी ये जताने लगी है

कभी दूर जाकर कभी पास आकर
मुहब्बत ग़ज़ल गुनगुनाने लगी है

महकती बहकती हवा कह रही है
मिलन यामिनी पास आने लगी है

हुई बंद धड़कन रुकी साँस मेरी
मुझे याद तेरी जो आने लगी है

ग़ज़ल गीत सुनकर 'सखा' जी तुम्हारे
ज़माने पे मस्ती-सी छाने लगी है

नाम	: डॉ. सीमा विजयवर्गीय
जन्म तिथि	: 3 नवम्बर
पता	: 2/84, स्कीम दस-बी, अलवर (राजस्थान) - 301001
मोबाइल नंबर	: 70737-13013
Email	: seemavijay000@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मेरी ग़ज़लों में बस प्रेम ही प्रेम है
इसके हर्फ़ों में बस प्रेम ही प्रेम है

उसने जन्नत बसा दी है मेरे लिए
इन फ़िज़ाओं में बस प्रेम ही प्रेम है

वो नज़र चाहे राधा कि मीरा की हो
इनकी नज़रों में बस प्रेम ही प्रेम है

अपनी दुनिया रचाती है माँ प्रेम से
उसकी अँखियों में बस प्रेम ही प्रेम है

याद रक्खेंगी सदियाँ सुनो ताज को
इसकी ईंटों में बस प्रेम ही प्रेम है

वो खिलाती रही राम को प्यार से
जूठे बेरों में बस प्रेम ही प्रेम है

प्रेम पूजा है सुन प्रेम है बन्दगी
इन अज़ानों में बस प्रेम ही प्रेम है

नाम : डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा
जन्म तिथि : 16 फ़रवरी
पता : कुमुद एन्क्लेव बी-1, कृष्णा निकेतन स्कूल के पास, बुद्धा कॉलोनी, पटना-800001
व्हाट्सएप नंबर : 8409940929
Email : sudhasinha958@gmail.com

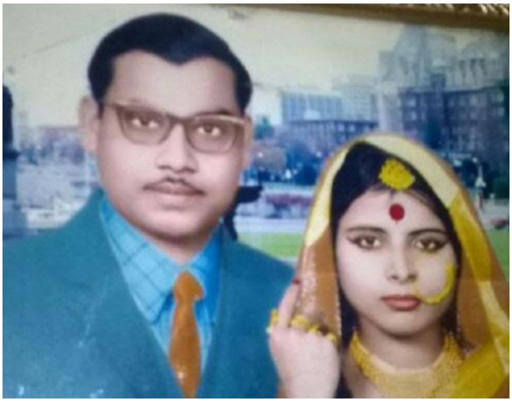

प्रो.(डॉ.) विपिन बिहारी स्वरूप - डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा
विवाह की तिथि : 22 नवम्बर 1971

जब से तुम हो मेरे हमसफ़र
झूमते हैं ये शामो-सहर

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

प्यार है आपको तो जता दीजिये
आइए अपने घर का पता दीजिये

आप चुपचाप रहिए नहीं जाने-मन
दिल में जो कुछ भी है सब बता दीजिये

आपको घर की क़िल्लत अगर हो कभी
मेरे दिल में महल इक बना दीजिए

चार दिन का है जीवन ये सच मानकर
प्रेम में सबको हँसना सिखा दीजिये

ज़िन्दगी आपके बिन न कट पाएगी
ख़ुद समझिए, 'सुधा' को बता दीजिये

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

मेरे होंटों पे माना हँसी आ गयी
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

धीरे-धीरे सितमगर हुई धूप भी
फूलों पर जब रिदा शबनमी आ गयी

बढ़ गयी जब विरह वेदना की तपिश
दिलकशी में किसी की कमी आ गयी

आशिक़ी के नशे में वो डूबा रहा
देखते-देखते शाइरी आ गयी

गेसुओं को हटाया जो रुख़सार से
तीरगी चीरकर रौशनी आ गयी

डूबकर आपके इश्क़ में सच कहूँ
अब मुझे भी 'सुधा' बन्दगी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

रोज उभरते रहे रोज ढलते रहे
ख़ुशनसीबी थी तुम साथ चलते रहे

दुश्मनों ने चढ़ाई किया जब कभी
उनके मंसूबे मिट्टी में मिलते रहे

हर घड़ी तुमको नाराज़गी क्यों रही
ज़िन्दगी में सदा तुम उबलते रहे

मौज-मस्ती में दुनिया हुई ख़ुश बहुत
जाम हाथों से मेरे फिसलते रहे

हमको महफ़ूज़ रखने को घर में 'सुधा'
गोला बारूद सैनिक उगलते रहे

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

लबालब है लब पर वफ़ा की सुराही
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

चलेगी नहीं अब तुम्हारी हुकूमत
बहुत तुमने लूटी यहाँ वाह-वाही

ग़लत करने वालो बचोगे कहाँ तुम
तुम्हें तय है लगनी घृणा की सियाही

किसी ने बनाया कहाँ मुझको अपना
मेरी धड़कनें रह गयीं बिन वियाही

'सुधा' इन दिनों उन ख़यालों में है गुम
जो ढाती हैं ख़ुद पर ही अक्सर तबाही

नाम	: दीपक पुरोहित
जन्म तिथि	: 4 जनवरी , 1954
पता	: 5 , महावीर मार्ग, सी स्कीम, जयपुर - 302 001
मोबाइल नंबर	: +91-93149 44440
Email	: yesdeepu@yahoo.com

दीपक पुरोहित - श्रीमती कल्पना पुरोहित
विवाह की तिथि : 22 फ़रवरी 1981

दिलचस्प है रह-ए-ज़ीस्त भी, पुर-कैफ़ है ये सफ़र बहुत
फिर-फिर मसाफ़त ये मिले, यही हमसफ़र भी नसीब हो

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

लाख आईने में वो सँवरता रहा
अपने किरदार में तो बिगड़ता रहा

मेरे एहसास ही ख़ुद सज़ा हो गये
दर्द-ए-आलम से दिल ये तड़पता रहा

हाल-ए-मज़लूम ज़ालिम से कह दे कोई
आख़िरी साँस तक दिल तड़पता रहा

दिल की नादानियों का बयाँ क्या करें
ख़ुद मचलता रहा ख़ुद बहलता रहा

हूँ ग़रीब-उल-वतन वाँ जबीं को मेरी
माँ का दिल चूमने को तरसता रहा

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

करे रद्द मुन्सिफ़ जो सच की गवाही
तो क्या बादशाही है ये बादशाही

मनाही मनाही मनाही मनाही
याँ मुन्सिफ़ को इन्साफ़ की है मनाही

ये सदियों से ओढ़े-बिछाये ग़रीबी
कोई कर सकेगा मुदावा तो क्या ही

जो चाहो तो लौटा लो बेशक इसी दम
ये वो ज़ीस्त है जो नहीं मैंने चाही

ये मायूस बेआस दिन-रात मेरे
सुपैद-ओ-सियाही सुपैद-ओ-सियाही

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

सबको आती है मुझ पर हँसी, आ गयी
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

आना-जाना अलामत मरासिम की है
मिलने-जुलने में फिर क्यों कमी आ गयी

दिल पे छायी रही तीरगी हिज्र की
आये वो ख़ुश-क़दम रौशनी आ गयी

फिर मुहब्बत ने ली आख़िरी साँस जब
उनके बरताव में बरहमी आ गयी

टूटकर याद अब्बा को मैंने किया
रूह तक बेतहाशा नमी आ गयी

नाम : देव वंश दुबे
जन्म तिथि : 11 फ़रवरी 1961
पता : किसान राइस मिल के पीछे, कृष्ण नगर, नमना कला, अम्बिकापुर-497001, छत्तीसगढ़
व्हाट्सएप नंबर : 7879076271
Email : deobanshdubey@gmail. Com

देव वंश दुबे - रेणु दुबे
विवाह की तिथि : 04 जून 1985

आप अगर मेहरबाँ नहीं होते
हम जहाँ हैं वहाँ नहीं होते

आपने दिल मेरा यूँ शाद किया
जैसे ख़ुशबू ने मुझे याद किया

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

ज़िंदगी की हक़ीक़त भुला दीजिए
अपने ख़्वाबों को फिर से हवा दीजिए

रूह की आरज़ू में तक़ल्लुफ़ न हो
बात दिल को जँचे तो रिज़ा दीजिए

जुर्म पर मौन रहना, बड़ा जुर्म है
हर ज़बाँ को ये बातें बता दीजिए

मौत को तो दवा की ज़रूरत नहीं
ज़िंदगी को यक़ीनन दवा दीजिए

रौशनी की ज़रूरत भले हो न हो
राह में कोई दीपक जला दीजिए

जब उदासी रहे 'देव' दिल में भरी
ज़िंदगी पर उसे मशवरा दीजिए

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

चिराग़ो-महब्बत की क्या रौशनी है
अँधेरे के घर भी ख़ुशी भेज दी है

न कुछ भी बिगाड़ा गया धूप से जब
हवा की नमी ज़िन्दगी बन गयी है

न जाने सुकूँ कब मयस्सर हो इसको
कि ये ज़िन्दगी इतनी उलझी हुई है

उजाले की गहराई में झाँक देखो
वहाँ रौशनी की ज़ियादा कमी है

ख़ुदी से अलग मैं कहाँ रह सकूँगा
निशानी यही ज़िंदगी की बची है

झुलसने लगा है चमन जैसे सारा
हवा 'देव' कैसी करम की चली है

नाम	: धर्मेन्द्र गुप्ता साहिल
जन्म तिथि	: 7 जुलाई 1964
पता	: के 3/10 ए. माँ शीतला भवन, गायघाट, वाराणसी -221001
व्हाट्सएप नंबर	: 8935065229
Email	: dharmendraguptsahil@gmail.com

धर्मेन्द्र गुप्ता - स्मृति गुप्ता
विवाह की तिथि : 27 जनवरी 1993 (वसंत पंचमी)

उसके चेहरे पे सादगी है बहुत
आइना कम वो देखता होगा

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

पाँव बेशक हैं जलते कड़ी धूप में
चलने वाले हैं चलते कड़ी धूप में

छाँव के हम न मोहताज होते कभी
जो शुरू से ही चलते कड़ी धूप में

छाँव के हमसफ़र तो हैं मिलते बहुत
लोग कम साथ चलते कड़ी धूप में

मोम हैं जो पिघल के वो रह जाते हैं
कब है पत्थर पिघलते कड़ी धूप में

कोई मजबूरी अपनी जो होती नहीं
क्यों भला हम निकलते कड़ी धूप में

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

दर्द में याद यूँ आपकी आ गयी
अब्र से ज्यों छिटक चाँदनी आ गयी

ख़ैर हो राज़े-उल्फ़त की यारब मेरे
हाथ उनके मेरी डायरी आ गयी

मैं जिधर भी चला, जिस डगर पर चला
पीछे-पीछे मेरी बेबसी आ गयी

वो जो गुज़रे तो गलियाँ भी रौशन हुईं
मेरे घर में भी कुछ रौशनी आ गयी

उसके चेहरे की पाकीज़गी देखकर
आशिक़ी की जगह बन्दगी आ गयी

जब से आये हैं वो ज़िन्दगी में मेरी
ज़िन्दगी में मेरी ज़िन्दगी आ गयी

ज़ख़्म मुझको लगे, दर्द मुझको हुआ
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'

उनकी यादों की ख़ुशबू, कुछ ऐसे उड़ी
शायरी में मेरी ताज़गी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

ये मंदिर ये मस्जिद के झगड़े मिटायें
चलो मिलके हम पाठशाला बनायें

वहीं होगा मंदिर, वहीं होगी मस्जिद
जहाँ हाथ जोड़ें, जहाँ सर झुकायें

झमेले में मन्दिर औ'मस्जिद के पड़के
न इन्सानियत को लहू हम रुलायें

ज़रूरत न मंदिर न मस्जिद की होगी
ख़ुदा को अगर अपने दिल में बसायें

ज़माने की चाल और चलन देखकर हम
हँसें ख़ूब या ख़ूब आँसू बहायें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मेरे दोस्तों ने दी ऐसी गवाही
ख़ता बन गयी है मेरी बेगुनाही

सभी झुग्गियाँ कल यहाँ से हटेंगी
सभी लोग सुन लें ये फ़रमाने-शाही

उतरने लगी चाँदनी मेरी छत पर
उभरने लगी मेरे दिल में सियाही

मज़ा अब सफ़र का भी मिलता नहीं है
न हैं अब वो राहें न हैं अब वो राही

किसे मैं ख़रीदूँ, किसे छोड़ दूँ मैं
मुझे तो हर इक चीज़ लगती है चाही

करेगा भी क्या लाके कंकड़ ये कौवा
कि पानी से ख़ाली है जब ये सुराही

ग़ज़लगोई का क्या यही इक है मक़सद
मिले महफ़िलों में फ़क़त वाह-वाही

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

ख़ुशी का घर था जिसको तुमने ग़मख़ाना बना डाला
मेरे दिल के चमन को तुमने वीराना बना डाला

उजाड़ी बस्तियाँ, तोड़े हैं पर्वत, पेड़ भी काटे
तरक़्क़ी का यही हमने तो पैमाना बना डाला

शिकायत थी कोई तुमको तो तन्हाई में कह लेते
ज़रा सी बात का महफ़िल में अफ़्साना बना डाला

तेरी मुस्कान ने मुझको किया है ख़ूब मतवाला
तेरी आँखों की गहराई ने दीवाना बना डाला

भटकता फिर रहा हूँ मैं तुम्हारे प्यार के वन में
किसी पागल को तुमने और दीवाना बना डाला

नया इसमें नहीं कुछ भी, ये होता आया सदियों से
कि इक शम्मा ने कितनों को ही परवाना बना डाला

मेरे जज़्बात बिखरे थे मेरे अल्फ़ाज़ बिखरे थे
तुम्हारा प्यार पाकर इनसे इक गाना बना डाला

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

गुज़ारा साथ जो हमने ज़माना याद आता है
तेरा हँसना मेरा तुझको हँसाना याद आता है

जिसे मैं कह नहीं पाया, जिसे तुम सुन नहीं पाये
लबों पर वो ख़मोशी का फ़साना याद आता है

सुहानी धूप में सर्दी की कुछ गाते हुए, छत पर
अदा से तेरा बालों को सुखाना याद आता है

मेरी आँखों के आगे से किताबों को हटा देना
पढ़ाई के समय तेरा सताना याद आता है

तेरी मासूमियत बच्चों के जैसी याद आती है
मनाना मुझको फिर ख़ुद रूठ जाना याद आता है

नाम : निर्मला कपिला
जन्म तिथि : 25 नवम्बर 1949
पता : 558/ A-1, शिवालिक एवेन्यू,
नया नंगल जिला रोपड़ पंजाब-140126
व्हाट्सएप नंबर : 9463491917
Email : nirmla.kapila@gmail.com

श्री मनमोहन कपिला - निर्मला कपिला
विवाह की तिथि : 30 अक्टूबर 1972

हर ख़ुशी उस से मुहब्बत में मिली अच्छी लगी
सात जन्मों की लगी जो हथकड़ी अच्छी लगी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

सच की तह तक ज़रा पहले जाया करो
यूँ न राई के परबत बनाया करो

देखकर बादलों को न तोड़ो घड़े
सब्र अपना ज़रा आज़माया करो

रश्क करने लगे देख सूरज जिसे
यूँ सितारों से दामन सजाया करो

चार दिन ज़िन्दगी के ख़ुशी से कटें
दूरियों से न इनको यूँ ज़ाया करो

मयकदा सौत का घर न मुझको लगे
रात घर में कभी गर बिताया करो

तल्ख़ियाँ रोज़ अच्छी नहीं जाने मन
प्यार से भी गले तो लगाया करो

चुपके-चुपके न आँसू बहा 'निर्मला'
चोट खाकर ज़रा मुस्कुराया करो

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

कभी हिज्र देकर रुला तो न दोगे
मुहब्बत को मेरी सज़ा तो न दोगे

ज़मीं दिल की बंजर बना तो न दोगे
कहीं ख़ार दिल में उगा तो न दोगे

न आगे निकल जाऊँ तुम से कहीं मैं
तो रस्ते में काँटे बिछा तो न दोगे

हुआ सात जन्मों का बंधन ये पूरा
कहीं आठवाँ फिर बढ़ा तो न दोगे

हुई वावरी प्यार में जाने मन मैं
लगूँ झूमने तुम हटा तो न दोगे

तब्बसुम लबों पर सजा कर हो आये
मेरी प्यास ज़्यादा बढ़ा तो न दोगे

रूहानी मुहब्बत को इल्ज़ाम देकर
मुहब्बत का रुतबा घटा तो न दोगे

उन्हें दुश्मनी है दिए से मेरे जो
हवाओं को मेरा पता तो न दोगे

न ज़ख़्मों पे मरहम लगाओ भले ही
यक़ीं है कि तुम बद्दुआ तो न दोगे

बिठाया है पलकों में तुमको छुपाकर
समझकर के काजल बहा तो न दोगे

मुक़ाबिल में तेरे जो 'निर्मल' उड़े तो
उड़ानों पे पहरा लगा तो न दोगे

नाम : निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'
जन्म तिथि : 11 जनवरी 1970
पता : 4/206, रॉयल ग्रीन्स अपार्टमेंट,
सिरसी रोड ,जयपुर (राज.) - 302012
व्हाट्सएप नंबर : 9983912042
Email : nirupamac11@gmail. Com

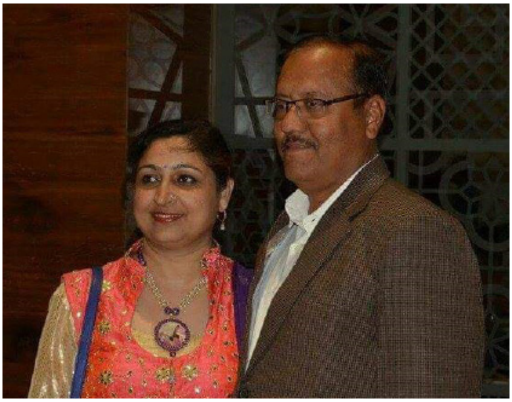

श्री रोहित चतुर्वेदी - निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'
विवाह की तिथि : 25 जनवरी 1996

मेरी हर साँस में तुम हो मेरा विश्वास हो तुम ही
भले हों दूरियाँ कितनी मेरा एहसास हो तुम ही

जैसा है जो भी है सबसे आला है
ग़ैर नहीं वो अपना ही घरवाला है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

रुख़ बदलती हवा पुर-ख़तर देखिये
कितना मायूस है हर बशर देखिये

मुद्द'आ हर तरफ़ गर्म है ख़ौफ़ का
ज़िन्दगी में क़ज़ा का सफ़र देखिये

ग़म से बेहाल अपनों की चीख़ें भी अब
अनसुनी करते अपनों का डर देखिये

त्रासदी में भी वोटों का हो फ़ायदा
हैं मुख़ालिफ़ जो उनकी नज़र देखिये

देखिये अब उक़ाबों की बीनाइयाँ
ज़िंदा लाशों पे उनका असर देखिये

हर ज़रूरत की क़ीमत बढ़ा दी गयी
नफ़'अ-ओ-ज़िन्दगी का हुनर देखिये

जिस पे ख़ुद से ज़ियादा भरोसा किया
उसकी पल-पल बदलती नज़र देखिये

चाहिये हर किसी को बुलन्दी यहाँ
इस नये दौर का ये समर देखिये

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

ये कैसी है आफ़त ये क्या हो रहा है
किसी की है इल्लत कोई ढो रहा है

है बुनियाद किसने हिला दहर की दी
कि इंसाँ के संग-संग शफ़क़ रो रहा है

अजब-सी वबा है ये क़हर-ए-कोरोना
क़राबत के ज़रिये मरज़ बो रहा है

न जाने चढ़ा ज़हर क्यों है ज़फर का
कि इन्सान अपनी सिफ़त खो रहा है

सभी क़ैद हैं यूँ दरख़्तों में ख़ुद के
बियाबाँ में जैसे शहर सो रहा है

मुदावा-ओ-हिक़मत यही है कि इंसाँ
वुज़ू कर रहा है ख़िरद धो रहा है

नज़र देखती है ये अतराफ़ 'रूपम'
कि हरसू परेशाँ बशर रो रहा है

नाम	: नीरज गोस्वामी
जन्म तिथि	: 14 अगस्त 1950
पता	: बी- 44 प्रभु मार्ग, तिलक नगर, जयपुर-302004 राजस्थान
व्हाट्सएप नंबर	: 986 021 1911
Email	: neeraj1950@gmail.com
ब्लॉग	: http://ngoswami.blogspot.in

नीरज गोस्वामी - श्रीमती अरुणा गोस्वामी
विवाह की तिथि : 13 दिसम्बर 1975

शायरी मेरी तुम्हारे ज़िक्र से
मोगरे की यार डाली हो गयी

चाय की जब तेरे साथ लीं चुस्कियाँ
ग़म हवा हो गये छा गयीं मस्तियाँ

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मुश्किलों की यही है बड़ी मुश्किलें
आप जब चाहे कम हो तभी यह बढ़ें

अब कोई दूसरा रास्ता ही नहीं
याद तुझको करें और ज़िन्दा रहें

बस इसी सोच से झूठ क़ायम रहा
बोलकर सच भला हम बुरे क्यों बनें

डालियों पे फुदकने से जो मिल गयी
उस ख़ुशी के लिए क्यों फ़लक पर उड़ें

ज़िन्दगी ख़ूबसूरत बने इस तरह
हम कहें तुम सुनो तुम कहो हम सुनें

हम दरिंदे नहीं गर हैं इंसान तो
आइना देखने से बता क्यों डरें

आके हौले से छू ले वो होंठों से गर
तो सुरीली मुरलिया से 'नीरज' बजें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नहीं है अरे ये बग़ावत नहीं है
मुझे सर झुकाने की आदत नहीं है

छुपाए हुए हैं वही लोग ख़ंजर
जो कहते किसी से अदावत नहीं है

करूँ क्या परों का अगर मुझको इनसे
फ़लक नापने की इजाज़त नहीं है

इसी का नया नाम जमहूरियत है
यहाँ सर किसी का सलामत नहीं है

तुम्हारे दिए ज़ख़्म गर मैं भुला दूँ
अमानत में क्या यह ख़यानत नहीं है

अकेले नहीं तुम मियाँ इस जहाँ में
किसे ज़िन्दगी से शिकायत नहीं है

घटाओं का 'नीरज' भला क्या करोगे
अगर भीग जाने की चाहत नहीं है

नाम	: प्यासा अंजुम (विजय उप्पल)
जन्म तिथि	: 29 सितम्बर 1949
पता	: 44 - रेशम घर कॉलोनी, जम्मू - 180001(जे.के.यू.टी)
मोबाइल नंबर	: 9419101315 / 7889872796
Email	: pyaasaanjum@gmail.com

विजय उप्पल - श्रीमती पुष्पा उप्पल
विवाह की तिथि : 19 जून 1974

कैसे बताऊँ तुझको अंजुम फ़लक पे जितने
तूने ज़िन्दगी में आकर रंग भर दिए हैं इतने

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

कल की अख़बार से ये शिक़ायत रही
आपके नाम की गुम इबारत रही

कल हुई जो सियासी थी मुठभेड़ में
आपकी किस तरह की सियासत रही

आपके साथ सरकारी अमला भी था
किस तरह की कहाँ पर हिदायत रही

किन सवालों का देना पड़ा था जवाब
मज़हबी किस तरह की सदारत रही

कितने वादों की बाँटी गयी भीक थी
कैसी-कैसी कहाँ पर ज़ियारत रही

किस जगह कौन ऐलान करना पड़ा
और कितनी कहो उसकी क़ीमत रही

कितने 'अंजुम' जगे आपके नाम पर
बुझती किन किनकी तब बोलो क़िस्मत रही

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

मौत से लड़ के जब ज़िन्दगी आ गयी
पैदा होते ही घर में ख़ुशी आ गयी

है चला आ रहा खेल दिन-रात का
तीरग़ी जाते ही रौशनी आ गयी

गुलसिताँ में नये गुल खिले देखकर
हर किसी चेहरे पर ताज़गी आ गयी

हर नये मरहलों से गुज़रते हुए
उम्र के साथ संजीदगी आ गयी

जब अदाएँ गयीं वो न नख़रे रहे
हुस्न के ढलते ही सादगी आ गयी

रास्ते में जहाँ घर ख़ुदा का मिला
सज़दे में सर झुका बन्दगी आ गयी

शब को 'अंजुम' थे जब टिमटिमाने लगे
चाँद के साथ में चाँदनी आ गयी

देखकर एक पागल तड़पता हुआ
आपकी आँखों में क्यों नमी आ गयी

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

क़ज़ा से भी निपटने का क़रीना जानते हैं हम
पिला दो ज़हर चाहे अब ये पीना जानते हैं हम

हमारे हक़ का जो भी है बिना माँगे हमें दे दो
हमें जीना सिखाओ मत कि जीना जानते हैं हम

कमाकर खानी है कैसे हमारा जानता है दिल
बहाना है कहाँ पर ख़ूँ, पसीना जानते हैं हम

सिखाओ मत हमें आकर अमीरों ढंग से अपने
सीए जाते हैं कैसे ज़ख़्म, सीना जानते हैं हम

हमें मालूम है हमने बिताई जनवरी कैसे
बिताना जून का कैसे महीना जानते हैं हम

हमें अपने हुनर पर है भरोसा फ़िक्र मत करना
कहाँ है संग जड़ना या नगीना जानते हैं हम

मिनारों के चिराग़ों में लहू मुफ़्लिस का है जलता
किसी ने किसका 'अंजुम' नूर छीना जानते हैं हम

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

सदा सच की देने जो निकले गवाही
कहीं ले न डूबे हमें बेगुनाही

सदा नेकियाँ ही किये जा रहे हैं
कभी हमने चाही नहीं वाहवाही

हर इक दर ख़ुदा के किया रोज़ सज़दा
सदा ही सभी की ख़ुशी हमने चाही

वतन के लिए तो अभी लिख रहे हैं
ज़रूरत पड़ी तो बनेंगे सिपाही

नहीं चाहिए हमको ऐसी तरक़्क़ी
चले साथ लेके जो अपने तबाही

वो रक्खे किसी हाल में ख़ुश ही रक्खे
ख़ुदा से कहाँ माँगी है बादशाही

यहक्याकमहै'अंजुम'कारुतबामिलाहै
अँधेरों का चाहे बनाया है राही

ज़ुबाँ से बयाँ वो करें चाहे जो कुछ
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मेरे शहर की जब से बदली हवा है
बशर से बशर तब से लड़ने लगा है

अजब खेल खेला, सियासत ने देखो
ख़ता है किसी की, किसी को सज़ा है

कहे झूठ जो भी मिले उसको गद्दी
कहा जिसने सच वो ही सूली चढ़ा है

उसूलों पे चलते हुए जिसको देखा
हुआ शहर सारा उसी से ख़फ़ा है

बचाता रहा जो था घर हर किसी का
मगर दंगों में घर उसी का जला है

यही सोच के नेक इन्साँ परेशाँ
भलाई का मिलता, बुरा क्यों सिला है

नहीं साथ इसके, चले चाहे कोई
अँधेरों से 'अंजुम' अकेले लड़ा है

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

तुम्हारे इश्क़ ने मुझको है दीवाना बना डाला
तुम्हारी मस्त आँखों ने है मस्ताना बना डाला

जले तू आग में अपनी जलूँ मैं आग में तेरी
शमा तुझको, मुझे उल्फ़त ने परवाना बना डाला

पता बिल्कुल न चल पाया हुई दीवानगी तारी
मुझे इस बेख़ुदी ने ख़ुद से बेगाना बना डाला

हमारे इश्क़ का परवान चढ़ना था अभी बाक़ी
ज़रा-सी बात का लोगों ने अफ़्साना बना डाला

बहुत अच्छे-भले थे इस गली में आने से पहले
गली तेरी के लोगों ने था अनजाना बना डाला

दिलों का लेना-देना जब हुआ नज़रों के रस्ते से
तभी दोनों दिलों ने ख़ुद को नज़राना बना डाला

जुड़ा है नाम 'अंजुम' का तुम्हारे नाम के जो साथ
मुझे इस शहर ने अब जाना-पहचाना बना डाला

अभी तो ख़्वाब का क़िस्सा सुनाया दोस्तों को था
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

नाम	: प्रेम रंजन 'अनिमेष'
जन्म तिथि	: 18 अप्रैल 1968
पता	: एस 3/226, रिज़र्व बैंक अधिकारी आवास, गोकुलधाम, गोरेगाँव (पूर्व), मुंबई 400063
मोबाइल नंबर	: 09930453711
Email	: premranjananimesh@gmail.com

प्रेम रंजन 'अनिमेष' - श्रीमती श्वेता
विवाह की तिथि : 24 मई 2001

शोर में संगीत जैसे तुम
प्राण मन के मीत जैसे तुम

है दुआ मिलते रहो 'अनिमेष'
हर जनम में प्रीत जैसे तुम

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

आदमी के लिए आदमी अब कहाँ
ज़िंदगी रह गयी ज़िंदगी अब कहाँ

जब भी जलते उगलते हैं आग और धुआँ
इन चराग़ों में है रौशनी अब कहाँ

भोर में भी भरी है ये कैसी उमस
खिलते फूलों में भी ताज़गी अब कहाँ

कितनी जल्दी ये बच्चे बड़े हो गये
इनकी वो दूधिया-सी हँसी अब कहाँ

होंठों पर होंठ रखकर यही सोचता
याँ धड़कती थी जो अनकही अब कहाँ

झूठ ने बुन रखा था अँधेरा घना
सच जो झलका तो फिर तीरगी अब कहाँ

बेख़ुदी के लिए होना ख़ुद लाज़िमी
हर तरफ़ बस ख़ुदा है ख़ुदी अब कहाँ

राज से ऐसे वनवास ही था भला
राम से पूछो मत जानकी अब कहाँ

आँखें थीं जो भरी प्यास होंठों पे भी
सामने जब नदी तिश्नगी अब कहाँ

अबकी दुनिया में 'अनिमेष' सब कुछ मगर
ज़िंदगी ढूँढ़ती ज़िंदगी अब कहाँ

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

भूले भटके कहीं से ख़ुशी आ गयी
ज़िंदगी में ज़रा ज़िंदगी आ गयी

हर नये दुख की अगवानी की इस तरह
जैसे आँगन में दुल्हन नयी आ गयी

भोर की किरणों ने चूमा जब नींद में
ओस भीगे गुलों को हँसी आ गयी

जिस नदी को पुकारा लबों ने मेरे
वो लिये अपनी ही तिश्नगी आ गयी

बंद कर दीं किसी ने सभी खिड़कियाँ
मेरे बिस्तर पे जो चाँदनी आ गयी

जैसे बिजली किसी छोटे क़स्बे में शाम
कोई उम्मीद आयी गयी आ गयी

जिनको चुनती उन्हीं से छली जाये रोज़
रास जनता को क्यों बेबसी आ गयी

इतने दिन तो रहा अब ये दुख जा रहा
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

जब भी सोचा सफ़र अब तो पूरा हुआ
राह कोई क़दम चूमती आ गयी

शाम ढलने को बारिश के आसार भी
आसरा बन वो भूली गली आ गयी

पहली-पहली वफ़ा तुमको ढूँढ़ूँ कहाँ
आ भी जाओ कि साँस आख़िरी आ गयी

मौत को देख ऐसे किलकता है कौन
आ गयी, आ गयी, आ गयी, आ गयी

जब भी छेड़ी ग़ज़ल उसने 'अनिमेष' की
दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

जिन्हें ज़िंदगी से शिकायत नहीं है
उन्हें ज़िंदगी से मुहब्बत नहीं है

जो दिल में मुहब्बत मुरव्वत नहीं है
किसी काम की ये इबादत नहीं है

ख़ुदा की तरह ही वो है हर जगह ही
कहाँ कुछ भी जिसमें सियासत नहीं है

हुकूमत है बेहतर जो हो भी अगर तो
लगे सबको ये ही हुकूमत नहीं है

समय डाकिया एक अर्से से गुमसुम
किसी ने किसी को लिखा ख़त नहीं है

हैं महफ़ूज़ सब सरहदें हर तरफ़ से
बस इंसान की ही हिफ़ाज़त नहीं है

बड़ा होने की होड़ में होता बूढ़ा
ये बचपन क्या जिसमें शरारत नहीं है

तरसते हैं खाने-पहनने को कितने
कहूँ किससे सर पर मेरे छत नहीं है

हमें भी है मालूम इतनी हक़ीक़त
कि जन्नत में भी अब तो जन्नत नहीं है

यही राम भी कहते होंगे सिया से
सियासत में सचमुच कोई सत नहीं है

नहीं कुछ कहीं पर ग़नीमत थी फिर भी
ग़नीमत में भी अब ग़नीमत नहीं है

भरे हैं सवालों से सर आज कितने
मगर कोई करता हिमाक़त नहीं है

तो किस काम का दिल तुम्हारा सुख़नवर
अगर धड़कनों में बग़ावत नहीं है

बता दे कोई बात इतनी-सी 'अनिमेष'
सही जो कहीं क्यों सलामत नहीं है

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

कुशल सब बताती है बेटी बियाही
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

इधर भी तबाही उधर भी तबाही
है क्या रंग लायी तेरी बादशाही

चढ़ाया है आँखों पे जो धूप-चश्मा
छुपेगी न इससे तेरी कमनिगाही

यूँ ही रख दिये होंठ होंठों पर उसके
न मैंने कहा कुछ न उसने सुना ही

फ़लक से कोई देखता है ज़मीं पर
रुके रास्ते क्यों थमी आवाजाही

खिले रहने दो फूल कोई न तोड़ो
कहाँ ख़ुशबुओं के लिए है मनाही

अकेले में आँसू सहेजें क्यों अक्सर
मिली महफ़िलों में जिन्हें वाह-वाही

ऐ मिट्टी हमें याद है क़र्ज़ तेरा
मगर कोई ऐसे करे ना उगाही

बुलाती रहें मंज़िलें कितनी 'अनिमेष'
रहा तय यही हमको रहना है राही

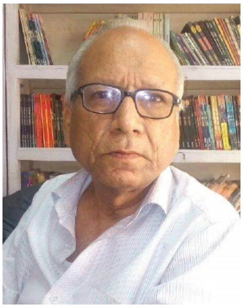

नाम	: प्रेम किरण
जन्म तिथि	: 15 जनवरी 1953
पता	: कमला कुंज, पुराने सिटी कोर्ट के सामने, गुलज़ारबाग़, पटना-800007
व्हाट्सएप नंबर	: 933 431 7153
Email	: premkiran2010@gmail.com

प्रेम किरण - श्रीमती उषा वर्मा
विवाह की तिथि : 25 जून 1975

इस नाव का पतवार भी माँझी भी तुम्हीं हो
तुम साथ न देते तो किनारा नहीं आता

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

क्यों है चेहरे का अब रंग फ़क़ दोस्तो
मैंने पूछा है पिछला सबक़ दोस्तो

मैं बिखरता गया बस बिखरता गया
दास्ताँ है वरक़ दर वरक़ दोस्तो

ये ज़मीं भी नहीं वो फ़लक भी नहीं
मैं किसी का नहीं मुस्तहक़ दोस्तो

मुझको भी चैन से साँस लेने तो दो
इस ज़मीं पर है मेरा भी हक़ दोस्तो

बज़्मे-इम्काँ में ऐसी सदी आएगी
रात देखेगी ख़्वाबे-शफ़क़ दोस्तो

बात निकली सुलगती हुई रात की
सुब्ह का हो गया रंग फ़क़ दोस्तो

किस पे साबित सदाक़त का इल्ज़ाम हो
कौन है दार का मुस्तहक़ दोस्तो

ज़िन्दगी एक पल की मगर ज़िन्दगी
बिजलियों ने दिया ये सबक़ दोस्तो

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

न मैं बोलता हूँ न घर बोलता है
सुकूते-शबे-ग़म मगर बोलता है

सजेंगे घरौंदे न गुड़िया हँसेंगी
जलाया गया है जो घर बोलता है

किसी से उमीदे-वफ़ा तुम न रखना
समर बोलता है शजर बोलता है

यहाँ भी कभी कोई तहज़ीब होगी
नदी बोलती है भँवर बोलता है

समझता है जो भी ज़बाने-ख़मोशी
उसी आदमी से खंडर बोलता है

सदा मुंजमिद हो गयी उँगलियों की
मगर हर सदी में हुनर बोलता है

कली अपने अंजाम से बेख़बर है
किरन फूल वक़्ते-सहर बोलता है

नाम	: मंसूर उस्मानी
जन्म तिथि	: 01 मार्च 1954 (1952)
पता	: नजमा हाउस, बरादारी नि-मज़ार शरीफ़, मुरादाबाद - 244001
व्हाट्सएप नंबर	: 9897189671
Email	: mansoorusmani@yahoo.co.in

मंसूर उस्मानी - नजमा उस्मानी
विवाह की तिथि : 28 नवम्बर 1971

हालात क्या ये तेरे बिछड़ने से हो गये
लगता है जैसे हम किसी मेले में खो गये

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

चाहे दिल ही जले रौशनी के लिए
हम-सफ़र चाहिए ज़िन्दगी के लिए

आशिक़ी-वाशिक़ी, मयकशी-वैकशी
अब ज़रूरी नहीं शायरी के लिए

दुश्मनी के लिए सोचना है ग़लत
देर तक सोचिये दोस्ती के लिए

दिल सुलगता रहा एक दिये की तरह
लब तरसते रहे एक हँसी के लिए

जिस सदी में वफ़ा का चलन ही नहीं
हम बनाये गये उस सदी के लिए

(हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं पुण्यतिथि (योमे-वफ़ात) के अवसर पर 16 जून, 2021 को ज़ूम क्लाउड पर आयोजित ऑनलाइन मुशायरा में पढ़ी गयी ग़ज़ल)

नाम : मीना भट्ट
जन्म तिथि : 30 अप्रैल 1953
पता : 1308, कृष्णा हाइट्स, ग्वारी घाट रोड, जबलपुर
व्हाट्सएप नंबर : 9424669722
Email : meenabhatt185470@gmail .com

श्री पुरुषोत्तम भट्ट - मीना भट्ट
विवाह की तिथि : 23 जून 1980

उसने नज़र, नज़र से, मिलायी ज़रा-ज़रा
उल्फ़त की आग दिल में, लगायी ज़रा-ज़रा

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

अब कोई भी नहीं रहनुमा रह गया
आसरा बस तेरा अब ख़ुदा रह गया

ग़ैर का हो गया देखते-देखते
मैं दुआ में जिसे, माँगता रह गया

अब गुणा-भाग मुझको तो आता नहीं
क्या पता मेरे हिस्से में क्या रह गया

जिस्म में रूह में आप शामिल हुए
पास मेरे न कुछ भी मेरा रह गया

कुछ हुआ ही नहीं फ़ैसला इश्क़ में
अब तो रोना महज़ मशग़ला रह गया

नींद आती नहीं रंजो-ग़म में हमें
हमको हासिल फ़क़त रतजगा रह गया

मेरी तक़दीर में अब सितारे कहाँ
रौशनी को फ़क़त ये दिया रह गया

नाम : रघुविंद्र यादव
जन्म तिथि : 27 सितम्बर 1966
पता : प्रकृति भवन, नीरपुर, नारनौल (हरियाणा) 123001
व्हाट्सएप नंबर : 9416320999
Email : ryeditor@gmail.com

रघुविंद्र यादव भट्ट - शील यादव
विवाह की तिथि : 27 जनवरी1995

शीतल जैसे चाँदनी, उजली जैसे धूप
गोरी नाज़ुक फूल-सी, खिला-खिला है रूप

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

हारकर हौसला, जीतता कौन है?
कश्तियाँ पूछतीं, नाख़ुदा मौन है

हुक्म से कर दिए, लोग सब दरबदर
मर रहे भूख से, जानता कौन है?

चीख़ते सब रहे, खेत खलिहान पर
क़र्ज़ पर सेठ के, आज क्यों मौन है?

एक दर बन्द है, दूसरा है खुला
फ़ैसला तुम करो, अब ख़ुदा कौन है?

छंद में क्या लिखूँ, मशविरा दे रहे
सत्य के नाम पर, सब तरफ़ मौन है

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अगर अब छुपाते रहोगे तबाही
सलामत रहेगी नहीं बादशाही

इरादे बताते रहे पाक लेकिन
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

ख़बरची दिखाते नहीं हैं हक़ीक़त
हुकूमत से शायद हुई है मनाही

अदालत ने झूठी दलीलें सुनी फिर
बिकाऊ हुई है क़लम की सियाही

गुनाहों पे पर्दा पड़ेगा कहाँ तक
कभी तो सुनेगा हमारी इलाही

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

लहू में हमारे तिजारत नहीं है
तभी तो दिलों में हिक़ारत नहीं है

पसीना बहाकर थके हैं जमूरे
मदारी को कोई हरारत नहीं है

सताओ किसी को मगर याद रखना
कि स्थायी किसी की सदारत नहीं है

डराने लगी है हुकूमत सभी को
सियासत के जैसी शरारत नहीं है

सजा तय करेगी अदालत ख़ुदा की
वहाँ पर तुम्हारी वजारत नहीं है

नाम : रमेश 'कँवल'
जन्म तिथि : 25 अगस्त 1953
पता : 6, मंगलम विहार कॉलोनी,
आरा गार्डन्स रोड, जगदेव पथ,
पटना - 800014
व्हाट्सएप नंबर : 878 976 1287
Email : rameshkanwal78@gmail.com

रमेश 'कँवल' - श्रीमती मंजु प्रसाद
विवाह की तिथि : 22 जून 1978

तुमसे ही ख़ुशियाँ मेरी, तुम सुख के आधार
स्वस्थ रहें दोनों सदा, बना रहे यह प्यार

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है
धूप के फ़र्श पर बैठा दिलदार है

भोर का तारा चलने को तैयार है
हर हथेली पे सूरज का उपहार है

चाँदनी रात है, चाँद है झील में
मेरे बिस्तर पे तारों का अम्बार है

तख़्त है नाव पर, छेद हैं नाव में
जलमहल में सजा मेरा दरबार है

धूल धरती पे, छाये गगन पे घटा
आदमी के लिए उसका घर-बार है

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब अमेज़न पे मस्ती का बाज़ार है

आज माहौल पर सोचिये कुछ 'कँवल'
शहर ज़हरीली वादी में लाचार है

अर्कान- मुतफ़ाइलुन x 4

कभी साथ उनको रखा करो कभी बात उनकी किया करो
ये हुआ है क्या कि मिले नहीं उन्हें एक पल न जुदा करो

ये करोना काल की दिक़्क़तें हसीं ज़िन्दा रहने की चाहतें
जो सहूलियत हैं सभी गिराँ उन्हीं आफ़तों में जिया करो

बड़ा लालची ये समाज है इसे कोई शर्म न लाज है
ये है गिद्ध से भी बुरा बहुत इसे लाश ताज़ा दिया करो

कभी हाथ हमसे मिलाओ मत सुनो मास्क रुख़ से हटाओ मत
रखो एहतियात से क़ुर्बतें ज़रा फ़ासिले से मिला करो

ये दुआ है रब से हो मेहरबाँ रहे चैन से ये हसीं जहाँ
ये गुज़ारिशें हैं मेरी 'कँवल' सभी वैक्सीन लिया करो

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
‘रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे’
पर कही गयी ग़ज़लें

ज़हर की शाख़ पर ख़्वाब फलते रहे
वो दरीचे पे दिल के टहलते रहे

हमसफ़र बनके तुम साथ चलते रहे
देखकर ये जहाँ वाले जलते रहे

हौसलों के दिये रख हथेली पे हम
डगमगाए थे फिर भी सँभलते रहे

बन के सूरज रहे, हार मानी नहीं
रोज़ उभरते रहे, रोज़ ढलते रहे

रूह को चैन फिर भी नहीं मिल सका
जिस्म की हम रिदाएँ बदलते रहे

तय नहीं कर सके क्या करें क्या नहीं
फ़ैसले हुक्मरानों के टलते रहे

अब सड़क पर ही आईन बनने लगे
सांसद देश के हाथ मलते रहे

मुफ़लिसों को ‘कँवल’ घर नहीं मिल सका
दर-ब-दर वो ठिकाने बदलते रहे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
‘नज़र और कुछ दे रही है गवाही’
पर कही गयी ग़ज़लें

करोना ने जमकर मचायी तबाही
इलाही, इलाही, इलाही, इलाही

सभी को है फ़ुर्सत मिलन पे मनाही
है बेचैन मन बंद है आवाजाही

मिली महफ़िलों में उसे वाह-वाही
तरन्नुम की मलिका से जिसने निबाही

लबों पर तबस्सुम की कलियाँ सजी हैं
दिलों में मसर्रत की है बादशाही

चमकता है सर पर सफ़ेदी का सूरज
मेरे बालों पर अब नहीं है सियाही

शबे-वस्ल होंटों पे है ‘जाने दो’ पर
‘नज़र और कुछ दे रही है गवाही’

गुनाहों की मस्ती में हलचल मची है
ये ड्रग क्या पता लाए कितनी तबाही

बड़े लोग झुकते हैं मिलने की ख़ातिर
भरे है गिलासों को जैसे सुराही

‘कँवल’ इन दिनों फ़िक्रे दहकाँ में गुम हैं
दलालों में है ख़ौफ़े-ज़िल्ले-इलाही

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

ज़िन्दगी में मेरी ताज़गी आ गयी
दूर अँधेरा हुआ, रौशनी आ गयी

जब कोरोना की सुईं भली आ गयी
देश में फिर नयी ज़िन्दगी आ गयी

माह मौसम कलेंडर बदलते रहे
जब दिसम्बर गया जनवरी आ गयी

आप दाख़िल हुए ज़िन्दगी में मेरी
हर तरफ़ सहने-दिल में ख़ुशी आ गयी

ज़िद की चादर, अना की रिदा ओढ़कर
ठण्ड में भीड़ की बेबसी आ गयी

पेड़ काटे, पहाड़ों का सौदा किया
क़ुदरती क़हर पर बरहमी आ गयी

चाँद से गुफ़्तगू प्यार की हो सके
सोच कर बाग़ में चाँदनी आ गयी

ख़ुशबुओं के चमन फिर सँवरने लगे
सहने-गुलशन में फिर ताज़गी आ गयी

रात दिन चैन से मेरे कटने लगे
ज़िन्दगी में 'कँवल' वो ख़ुशी आ गयी

अर्कान- मतफ़ाइलुन x 4

वो जो घर था, तुम से ही था वो घर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
तुम्हें ढूँढ़ती रही हर नज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

जो बढ़ीं कभी ये उदासियाँ, तुम्हें देखते ही पलट गयीं
थे तुम्हीं से ख़ुश मिरे बामो-दर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

जो क़बा थी दिल पे निखर गयी, जो रिदा थी तन पे सँवर गयी
तुम्हीं थे ख़ुमारे-दिलो-नज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हीं ज़िन्दगी की चढ़ाव थे तुम्हीं ज़िन्दगी के पड़ाव थे
था तुम्हारा जल्वा ही कारगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मुझे लग़्ज़िशों पे गुमान था, मेरी ज़द में सारा जहान था
मेरे साथ थे तुम्हीं हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

न फिजाओं में है चमक-दमक न हवाओं में कोई ताज़गी
था वक़ार तुमसे ही जल्वागर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वही ज़हर में सना आसमाँ, वही इस ज़मीन की मुश्किलें
तुम्हीं इक थे राहते-दिल मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें मैं अगर न मना सका कि जो रूठने पे ही आए तुम
मुझे याद है मेरा ख़ौफ़-डर तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हीं दिल के चैन क़रार थे, कि तुम्हीं तो जाने-बहार थे
'अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो'

कभी झेंप जाते थे उस घड़ी, जो लगा के चेहरे पे टकटकी
तुम्हें देखता था मैं आँख भर तुम्हें याद हो कि न याद हो

मिरी इल्तिजा वो गुज़ारिशें वो 'कँवल' की अदना-सी ख़्वाहिशें
चले मस्तियों के डगर-डगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

नाम	: रवि खण्डेलवाल
जन्म तिथि	: 14 सितम्बर 1951 अनंत चतुर्दशी
पता	: 207, वेंकटेश नगर एरोड्रम रोड, इन्दौर (म.प्र.) 452005
व्हाट्सएप नंबर	: 07697900225
Email	: ravikhandelwal14sep@gmail.com

रवि खण्डेलवाल - श्यामा खण्डेलवाल
विवाह की तिथि : 16 मार्च 1984

स्वर्ण मुद्राओं से क़ीमती आप हैं
क्या कहें आप से ज़िंदगी आप हैं

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

हाथ को हाथ देता दिखाई नहीं
कैसे कह दूँ अँधेरा बुराई नहीं

आँख ने आज फिर से है आँसू जना
आप देते भला क्यों बधाई नहीं

क्या नहीं जानते रोग से मुक्ति को
आप विष पी रहे हैं, दवाई नहीं

झूठ कहता नहीं, झूठ ही झूठ है
बात में उनकी कोई सच्चाई नहीं

जो रचाई -बसाई गयी हर तरफ़
आपकी है, ख़ुदा की ख़ुदाई नहीं

तीन क़ानून में, क्या बुराई बता
जानता है कृषक कुछ भलाई नहीं

आप किंचित न हल्के में लेना 'रवि'
बात पर्वत- सी है कोई राई नहीं

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

शे'र में शे'र की, बानगी आ गयी
लोग कहने लगे शायरी आ गयी

अब तो दिन में भी तारे हैं दिखने लगे
उफ़, न जाने ये कैसी सदी आ गयी

बैर, नफ़रत का बाज़ार बढ़ने लगा
प्यार की एकदम से कमी आ गयी

जब शिखर से हैं शेयर लुढ़कने लगे
राह में सामने ख़ुदकुशी आ गयी

बात तो थी ख़ुशी की कही आपसे
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'

लोग हैरान हैं इस तिजारत से अब
प्रेम में कैसे गाला, गली आ गयी

हर किसी में बुरी आदतें दिख रहीं
पास 'रवि' के कहाँ से भली आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

बिना बात की लड़ रहे हम लड़ाई
कहीं कोई मुद्दा तो हो मेरे भाई

हक़ीक़त को समझो हक़ीक़त को जानो
हक़ीक़त के पीछे छिपी है सचाई

नहीं क्या किताबों में है ढाई आखर
सिखाती है नफ़रत क्या हमको पढ़ाई

बुराई अगर आप देखेंगे मुझमें
दिखेगी सदा ही बुराई-बुराई

रहें जम के अपनी ज़मीं पर ही वरना
कुआँ है इधर और उस ओर खाई

रखें आप आदत से महफ़ूज़ ख़ुद को
कहीं का न रखती लगाई-बुझाई

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

बचाने को अपनी सदा बादशाही
हुकूमत ने ख़ुद ही मचाई तबाही

मुनादी हुई है कि अब राज पथ से
न गुज़रे किसी हाल भी आम राही

खुली छूट है राम भक्तों को यारो
किसी बात की भी नहीं है मनाही

खड़ा जो रहा सुख की ख़िदमत में यारो
मिली उसको राहत, की जब वाहवाही

ज़ुबाँ आपकी कह रही दास्ताँ कुछ
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

कहूँ किस बिना पर 'रवि' दिन को दिन मैं
कि जब मुख पे सूरज के छितरी सियाही

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

पुराने पड़ गये खण्डहर ज़रा क्या खाँस लेते हैं
सिसकते हैं दरो-दीवार जब भी साँस लेते हैं

यूँ करते हैं सभी उपयोग, मैटल और पी वी सी
मगर पहुँचाने को मरघट अभी भी, बाँस लेते हैं

अनेकों व्याधियों बीमारियों से तब ग्रसित होते
नसों से जब हमारा ख़ून, मच्छर डाँस लेते हैं

बड़े शातिर मछेरे हैं न पूछो इनकी फ़ितरत का
बड़ी हो या कि छोटी हो ये मछली फाँस लेते हैं

सदी के जानवर इंसान की ही वेषभूषा में
लगाने होंठ से इंसान का ही माँस लेते हैं

बड़े ही नेक दिल इंसान हैं ये, क्या बताएँ 'रवि'
किसी को ठाँसने से पहले ख़ुद को ठाँस लेते हैं

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

अचानक वक़्त ने अपनों को बेगाना बना डाला
ज़माने भर के दस्तूरों ने अंजाना बना डाला

सलीक़ा बैठने, उठने का ना आया तो क्या आया
लियाक़त को पढ़े होने का पैमाना बना डाला

जहाँ ख़ाली पड़ी देखी ज़मीं हाँ उस ज़मीं पर ही
तमंचा धारियों ने फट से बुतख़ाना बना डाला

जहाँ पर बैठकर ग़म हल्का होता है वहीं पर हाँ
नुमाइंदों ने संसद को ही मयख़ाना बना डाला

सदा मैं गीत लिखता था ग़ज़ल बस यूँ ही कह बैठा
बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

लगाकर 'रवि' गले तब तक रखा जब तक रहा मतलब
मुकम्मल मिल गयी मंज़िल तो बेगाना बना डाला

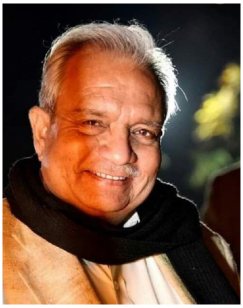

नाम : लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'
जन्म तिथि : 6 अप्रैल 1957
पता : सी-140 ,अशोक पथ, श्यामनगर,
जयपुर-19 (राजस्थान)
व्हाट्सएप नंबर : 941 407 7820
Email : lokeshsahil@yahoo.com

लोकेश कुमार सिंह - मीना सिंह
विवाह की तिथि : 24 नवम्बर 1988

क्या बताऊँ तुम्हें कि क्या हो तुम
मेरे हर ज़ख़्म की दवा हो तुम

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

हर क़दम पर दिये तूने ग़म ज़िन्दगी
फिर भी लगती है हमको तू कम ज़िन्दगी

ख़्वाब को ज़ख़्म ख़ुशबू को मातम दिये
अब तो कर ले ज़रा-सा करम ज़िन्दगी

ख़ुदकुशी कब की कर लेते हम तो मगर
हमने रक्खा है तेरा भरम ज़िन्दगी

जैसे बच्चों को पाले बिना बाप-माँ
यूँ उठाये हैं तेरे सितम ज़िन्दगी

हूँ मैं उनमें नहीं और होंगे कोई
वो जो भरते हैं तेरी चिलम ज़िन्दगी

आदमी क्या फ़रिश्ते भी पिसते रहे
किसके हिस्से में आया रहम ज़िन्दगी

सर झुकाता है जा के हरम में वही
जिसने देखा न कोई सनम ज़िन्दगी

छोड़के तुझको जाऊँगा तब देखना
मौत की आँख भी होगी नम ज़िन्दगी

तेरे वादे पे अब भी भरोसा है पर
कब करेगी मुझे मोहतरम ज़िन्दगी

तू है बहती नदी मैं हूँ 'साहिल' सिफ़त
आ कभी तो चलें साथ हम ज़िन्दगी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

जो मुहब्बत कोई बाहमी आ गयी
तो रिवायत वही दायमी आ गयी

सामने रूप की लक्ष्मी आ गयी
आड़े आदत मगर संयमी आ गयी

याद तेरी बियाबाँ में आयी है यूँ
जैसे बच्ची कोई ऊधमी आ गयी

राग मौसम ने छेड़ा है फिर से वही
याद फिर से वो धुन सरगमी आ गयी

दूज का चाँद हमने निहारा न था
उससे पहले मगर अष्टमी आ गयी

इन ठहाकों का तुम ही कहो क्या करें
हर ख़ुशी जब लिये इक ग़मी आ गयी

है बदस्तूर उनके बिना सब मगर
ज़िन्दगी में कहीं कुछ कमी आ गयी

ज़िक्र होने लगा जब मेरी मात का
आपकी बात भी लाज़मी आ गयी

चन्दनों ने कहा आस्तीनों से फिर
दूध ले आओ लो पंचमी आ गयी

बात तो चल रही है ख़ुशी की अभी
"आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी"

कोई 'साहिल' उधर सोच में पड़ गया
बूँद कैसे इधर शबनमी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

जहाँ वोट की हो रही है उगाही
भला उसको कैसे कहें लोकशाही

हर इक सू अँधेरा है दिल में हमारे
उजालों से बरसी है ऐसी सियाही

किसे तुम पिलाओ है मर्ज़ी तुम्हारी
तुम्हारे ही ख़ुम हैं तुम्हारी सुराही

फ़क़त वो ही जुमले, फ़क़त वो ही वादे
कभी तो करो यार तुम कार्यवाही

ज़माने की आँखों में जाले पड़े हैं
तुम्हारी नज़र ने मचा दी तबाही

ये क्या रास्ता है ये कैसा सफ़र है
चले हैं किधर लड़खड़ाते ये राही

कोई जाके पूछे कभी जुगनुओं से
सितारों की सिमटी है क्यों बादशाही

ज़ुबाँ और कुछ कह रही है तुम्हारी
"नज़र और कुछ दे रही है गवाही"

सफ़ीना वो 'साहिल' पे पहुँचा है ऐसे
हर इक मौज करने लगी वाह-वाही

अर्कान- फ़ाइलातुन मफ़ाइलुन फ़ेलुन

सिलसिला इब्तिदा से जारी है
मौत जीती, हयात हारी है

जितने आये हैं सब जमूरे हैं
वो ही सबसे बड़ा मदारी है

आइना देखने की ताब नहीं
शर्मसारी-सी शर्मसारी है

चाँद में दाग़ है ज़माने से
किसने इसकी नज़र उतारी है

दिन तो हँसते-हँसाते बीत गया
आँसुओं अब तुम्हारी बारी है

उम्र गुज़री तो हो गया ताईद
हम सुनारी तो वो लुहारी है

हिचकियों का भरम तो टूट गया
अब तो पलकों की ज़िम्मेदारी है

साँस लेता है ज़िंदा रहने को
आदमी कितना कारोबारी है

एक भी अश्क नहीं पलकों पर
"उनकी यादों का जश्न जारी है"

फिर किसी मौज ने कहा 'साहिल'
नाव काग़ज़ की क्यों उतारी है

अर्कान- फ़ऊल फ़ेलनु x 4

कहीं भला-सा जता रही है कहीं बुरा भी बता रही है
कहाँ-कहाँ से मेरी कहानी मुझे ये दुनिया सुना रही है

अजीब शै है हमारी शोहरत अजीब है फ़लसफ़ा भी इसका
कभी जो कर ली थी इक कमाई उसी को अब तक भुना रही है

घड़ी कोई भी नहीं है चलती मगर घुमाती है ये समय को
युगों-युगों से यही घड़ी तो जहाँ में सबको चला रही है

अभी हमारे बदन ने अपनी अना को पूरा नहीं है खोया
अभी हमारी ही रूह हमको ज़रा सँभलना सिखा रही है

बनेगा कैसे ये मुल्क अपना कहाँ तिरंगा ही फिर रहेगा
यहाँ सियासत ही रंग कोई सभी के मन पर चढ़ा रही है

किसी को कोई भी दोष क्या दें करें किसी का गिला भी कैसे
हमें हमारी ही ज़िन्दगी तो हँसा-हँसाकर रुला रही है

फ़क़त ये 'साहिल' ही जानता है नदी के बहते सुराग़ सारे
कहाँ से नदिया ये आ रही है' किधर को नदिया ये जा रही है

नाम : विजय कुमार स्वर्णकार

जन्म तिथि : 01सितम्बर 1969

पता : फ्लैट न. 45 कादंबरी अपार्टमेंट्स, सेक्टर 9, रोहिणी, दिल्ली 110085

व्हाट्सएप नंबर : 9958556141

Email : vkswarn.123@gmail.com

विजय कुमार स्वर्णकार - माधुरी स्वर्णकार
विवाह की तिथि : 30 नवम्बर 1993

ये दिन सावन के पाते हैं जो तेरी बात में जादू
न वो बादल में जादू है न वो बरसात में जादू

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

क्या पता कब ये दलदल हमें मार दे
सत्ह पर टिक सके जो वही भार दे

अंत में बातियों ने वो जौहर किया
सोच में था तमस इन पे क्या वार दे

आदमी-आदमी को नहीं जानता
कोई काग़ज़ का टुकड़ा मददगार दे

मौत को हक़ नहीं जल्दबाज़ी करे
आदमी को अगर ज़िन्दगी मार दे

फूल हूँ मैं, न दे कोई ख़ुशबू मगर
कम से कम रंग ही कुछ चमकदार दे

प्रश्न इतने कठिन पूछने हैं अगर
ज़ेहन भी दे हमें और दो-चार दे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

किसे दोष दें घर के सपने अधूरे
तमाम अपने नक़्शे हैं आधे-अधूरे

कोई हद तो होगी, न होने की आख़िर
अधूरे हो, लेकिन हो कितने अधूरे

'अधूरे हैं' सुनते ही उसने ये पूछा
'हो हम-से अधूरे कि ख़ुद-से अधूरे?'

इसी गोल घेरे में क्यों फिर रहे हो
हैं साथी अधूरे न रस्ते अधूरे

ग़लतफ़हमियों की हुई मेहरबानी
जो पूरे इरादे थे निकले अधूरे

नाम	: शुचि 'भवि'
जन्म तिथि	: 24 नवम्बर 1971
पता	: बी-512, सड़क-4, स्मृति नगर, भिलाई नगर - 490020 (छ. ग.)
मोबाइल नंबर	: 9826803394
Email	: shuchileekha@gmail.com

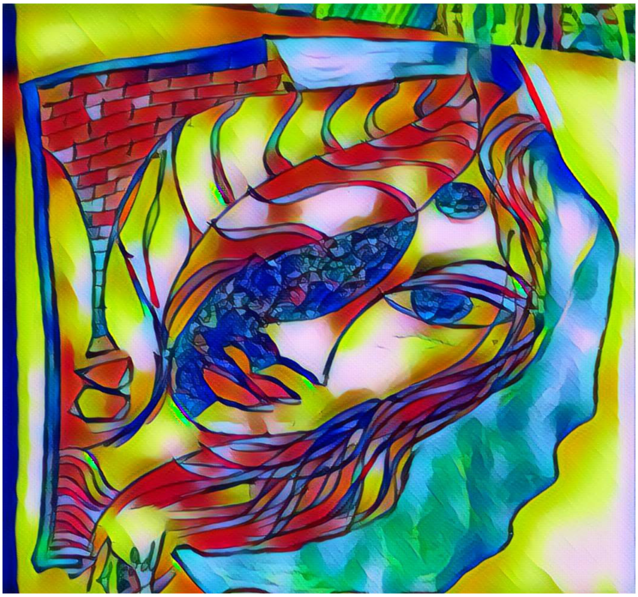

कलाकृति - सिद्धेश्वर

श्री पवन कुमार - शुचि 'भवि'
विवाह की तिथि : 31 अक्टूबर 1996

चले थे बाण नज़रों के, लगा इल्ज़ाम तीरों पे
मेरी क़ातिल मुहब्बत है, सज़ा क्यों हुस्न को दे दी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

❀

सबकी क़िस्मत में क्या आज हैं बेटियाँ
मूल बेटे हैं तो ब्याज हैं बेटियाँ

सबने रौंदा इन्हें मनमुताबिक़ मगर
बन के उभरी वो अमवाज हैं बेटियाँ

गूँगा जिनको किया धर्म के नाम पर
आज उसकी ही मेराज हैं बेटियाँ

मुल्क आज़ाद है क़ैद इनको मगर
चाहती अब भी सौराज हैं बेटियाँ

जिनको काँधे न चढ़ने दिया बाप ने
उसके सर का बनी ताज हैं बेटियाँ

'भवि' की कोशिश यही अब न हो मुल्क में
बात ऐसी कि मोहताज हैं बेटियाँ

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

ख़त में जब गुफ़्तगू वो दिली आ गयी
कुछ झरोखों से फिर रौशनी आ गयी

बाद मुद्दत पुकारा था जिसने मुझे
साथ उसके मेरी ज़िंदगी आ गयी

सोचते ही रहे तुमसे हम क्या कहें
सोचते-सोचते ही हँसी आ गयी

लफ़्ज़ मिलते नहीं बात होती नहीं
जाने कैसे हमें शाइरी आ गयी

मतलबी दुनिया में मतलबी वो भी थे
'भवि' की आँखों में भी लो नमी आ गयी

ज़िंदगी में ये कैसी रुली आ गयी
दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

सुब्ह उगते रहे शाम ढलते रहे
क़ाफ़िले ज़िंदगी के यूँ चलते रहे

ज़िंदगी का सफ़र इस तरह तय किया
वक़्त पड़ने पर ख़ुद को बदलते रहे

प्रश्न ख़ुद से किया ख़ुद ही उत्तर दिया
इस तरह ख़ुद को हम देखो छलते रहे

चाँदनी उसकी मैं वो मेरा चाँद है
देखकर हमको सारे ही जलते रहे

जिनकी ख़ामोशी को 'भवि' ने अपनाया था
उसके जज़्बात वो ही कुचलते रहे

उनकी बाहों में यूँ हम पिघलते रहे
रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

भला दिल से अपने लड़ोगे तो कब तक
सभी दर्द हँस के सहोगे तो कब तक

अभी ज़ख़्म ताज़ा है ख़ूने-जिगर का
ज़रा तुम बताना भरोगे तो कबतक

सभी कुछ तो छोड़ा जिसे तुमने चाहा
मिरे साँचे में तुम ढलोगे तो कबतक

है माज़ी की अपनी अलग ही कहानी
उसे साथ लेकर फिरोगे तो कबतक

चुनावी थे बेशक तुम्हारे सभी रंग
ये बोलो कि ख़ुद को रंगोगे तो कबतक

वो पूछे है रहकर मेरे दिल के अंदर
बशर ये बताना बिकोगे तो कबतक

क़यामत से पहले ख़ुशी उसकी सोचो
है 'भवि' जो तुम्हारी छलोगे तो कबतक

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नज़र और कुछ दे रही है गवाही
किया इश्क़ फिर क्या बची बेगुनाही

करोना बड़ा आज क़ातिल बना है
बिना मास्क निकलो कड़ी है मनाही

समय से पके फल जो होंगे वो मीठे
थका क्यों सफ़र में चला चल ओ राही

सुनो बात सबकी मगर दिल की करना
बदलती यहाँ रंग देखो सियाही

सितारो नहीं चाँद तुमसे ये प्यारा
मगर लूटता सबसे ही वाहवाही

किया सजदा 'भवि' ने उसी का हमेशा
सदा कर्मों से जिसने पूजा इलाही

‘21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें’ के सुख़नवरों के जीवन साथी

इं. शुभचन्द्र सिन्हा - डॉ. रेणु सिन्हा
विवाह की तिथि : 17 जुलाई 1981

संजीव प्रभाकर - श्रीमती हेतल खख्खर प्रभाकर
विवाह की तिथि : 16 जुलाई 2007

सतीश शुक्ला 'रक़ीब' - अनुराधा
विवाह की तिथि : 17 जून 1994

सुभाष पाठक - श्रीमती नीलम पाठक
विवाह की तिथि : 05 दिसम्बर 2012

हरिवंश प्रभात - श्रीमती शोभा प्रभात
विवाह की तिथि : 28 मई 1973

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय - अभिलाषा तिवारी
विवाह की तिथि : 09 मार्च 2003

अनुराग 'सुरूर' - सोनिया मेहता
विवाह की तिथि : 26 अप्रैल 2001

श्री अरविन्द असर - श्रीमती श्वेता सोनकर
विवाह की तिथि : 22 जून 2004

इक़बाल दानिश - इशरत प्रवीण
विवाह की तिथि : 22 जून 2004

डॉ. अब्दुल क़ादिर - सना अफ़ज़ल
विवाह की तिथि : 18 सितंबर, 2010

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति - दीपा प्रजापति
विवाह की तिथि : 26 दिसम्बर 1984

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह - सुशीला राव
विवाह की तिथि : 29 मई, 1963

नवीन सी चतुर्वेदी - रेखा नवीन चतुर्वेदी
विवाह की तिथि : 4 मई 1990

प्रेम कुमार शर्मा - श्रीमती शारदा शर्मा
विवाह की तिथि : 22 फ़रवरी 1976

श्री नरेन्द्र कुमार सिन्हा - श्रीमती पूनम सिन्हा श्रेयसी
विवाह की तिथि : 1 मई 1993

ई.अनिल कुमार - राजकान्ता राज
विवाह की तिथि : 23 जून 1987

राजेन्द्र तिवारी - श्रीमती स्वर्णलता
विवाह की तिथि : 06 मई 1987

मोहम्मद शकील ख़ाँ - नसरीन बानो
विवाह की तिथि : 13 मार्च 1995

शरद रंजन 'शरद' - श्रीमती सुधा सिंह
विवाह की तिथि : 10 मार्च 1992

सिद्धेश्वर - वीणा देवी
विवाह की तिथि : 6 मार्च 1992

सुनील कुमार -श्रीमती नीलम कुमारी
विवाह की तिथि : 6 जुलाई 1988

के. पी. अनमोल - श्रीमती अनामिका
विवाह की तिथि : 8 अप्रैल 2015

कैलाश चन्द्र शर्मा - श्रीमती निर्मला शर्मा
विवाह की तिथि : 11 दिसम्बर 1975

ओमप्रकाश खींची 'दिल' सीकरी - श्रीमती चन्द्रकान्ता खींची 'चाँदसा'
विवाह की तिथि : 03 जुलाई 1972

नाम	: इं. शुभचन्द्र सिन्हा
जन्म तिथि	: 27 मार्च 1950
पता	: विन्सम पार्क, फेज-1, सगुना मोड़, दानापुर, पटना-801503
मोबाइल नंबर	: 9430559673,
व्हाट्सएप नंबर	: 7208631557
Email	: shubhchandrasinha@gmail.com

इं. शुभचन्द्र सिन्हा - डॉ. रेणु सिन्हा
विवाह की तिथि : 17 जुलाई 1981

समय काल करता नहीं, कोई कभी प्रभाव
प्रेम छीजता मन नहीं, जीवित रहता भाव

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

गुफ़्तगू ख़ामुशी ही कराती रही
आँख ही बात दिल की बताती रही

घर जलाने कोई और आया कहाँ
आग ख़्वाहिश हमेशा लगाती रही

हसरतें बन गयीं बन्दगी का सबब
बात चाहत मगर ये छुपाती रही

दर्द पाबंद है आह भी बेज़ुबाँ
चोट दिल पर वफ़ा रोज़ खाती रही

ठोकरों में पला चाहतों का सिला
ज़िन्दगी हर घड़ी डगमगाती रही

दर्द अपना लिया उसने जो भी दिया
पीठ पर वो छुरी आज़माती रही

क्या गिला गर नहीं हमसफ़र मिल सका
ज़िन्दगी साथ ख़ुद का निभाती रही

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

राज सब खोलती बेकली आ गयी
बात निकली गली-दर-गली आ गयी

होंठ सी कर जिये तो रहे बावफ़ा
लब खुले तो वफ़ा में कमी आ गयी

तीरगी का निशाँ ख़ुद-ब-ख़ुद मिट गया
मुट्ठियाँ भींच जब रौशनी आ गयी

दर्द का सिलसिला ख़त्म होता नहीं
साथ तोहफ़ा लिये ज़िन्दगी आ गयी

दर्द कोई न पहचान पाता कभी
मेरे होंठों पे फिर बाँसुरी आ गयी

ख़्वाब आँखों में तैरे, ढलक सब गये
बस मुसलसल दुआ को हँसी आ गयी

ख़ैरियत ही तो बस उसने पूछी थी 'शुभ'
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

ख़्वाब जो साँस दर साँस जलते रहे
हादसे भी नये साथ पलते रहे

राह के ठोकरों की सज़ा सख़्त थी
छोड़ अपने पराये निकलते रहे

देखकर हम सितारे कई टूटते
टूटते ख़्वाब से बस बहलते रहे

इश्क़ तो ज़ीस्त के मायने भी कहे
बात इक आँच से कह पिघलते रहे

वाक़िया ख़ाक होना ख़बर में रहा
हम उड़ायी गयी ख़ाक मलते रहे

सीखते हम शऊरे-वफ़ा रुक गये
ना-शनासी बता लोग चलते रहे

आग दिल में लगी तो जला ली ज़ुबाँ
होंठ पर लफ़्ज़ यूँ ही उबलते रहे

शौक़ था गर्दिशों से मिलायें नज़र
ख़्वाब उस की गली में मचलते रहे

लोग हैराँ रहें इस सज़ा पर भले
रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

न हो प्यास तो कैसे टूटे सुराही
रही जाम पर उनकी बरहम निगाही

मुहब्बत में दी बेहिसी ने गवाही
न साबित हुई आपकी बेगुनाही

मुझे चाँदनी की ज़रूरत नहीं है
वफ़ासाज़ है रात की ये सियाही

नदी से न बातें करो तिश्नगी की
किनारे भी दें डूबने की गवाही

दुआ ज़िन्दगी की मिली दोस्तों से
मुझे मार देती तेरी कमनिगाही

सँवरकर नहीं देखता शक्ल कोई
अगर जानता आइना वाह-वाही

कसक-सी उठे ये किसी नाम से क्यों
न जाने गयी टूट कैसे मनाही

नशे में भुलायी न जाये कभी भी
ख़याले-बदन, रात की बादशाही

चलो हसरतों से रखें दूरियाँ हम
करायी इसी ने दिलों की तबाही

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

हँसी लब पर मगर दिल में छुपा तूफ़ान रखता है
ज़माने से अलग अपनी ज़रा पहचान रखता है

ख़फ़ा क्यों हो गयी उसकी अहद-शिकनी बता उससे
सुना फिर पत्थरों की गुफ़्तगू पर कान रखता है

गँवाया चेहरा अपना इस जहाँ की भीड़ में जब से
तभी से आइने में शक्ले-बद इन्सान रखता है

भला सोचे किसी की तो हमेशा बेग़रज़ सब हो
अयादत में यहाँ अब कौन ये ईमान रखता है

लगाया था गले से दुश्मने-जानी को जब हँसकर
तभी से दोस्त की मासूमियत पर ध्यान रखता है

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

ज़रा-सी तिश्नगी को हम ने पैमाना बना डाला
तलब ग़म की बढ़ा ली और मयख़ाना बना डाला

हमारी जुस्तजू की थी नहीं मंज़िल कभी कोई
बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

अधूरी-सी किसी तहरीर-सी थी ज़िन्दगी अपनी
जिसे तश्हीरे-दिलकश हम ने फ़रज़ाना बना डाला

सिखाया ठोकरों ने पत्थरों के साथ जी लेना
सजा कर ग़म- अलम बंजर को काशाना बना डाला

न रस्ता ही न हमराही न मंज़िल का पता कोई
न निकली राह तो शादाब वीराना बना डाला

उठाये नाज़ हम ने इश्क़ में सब बेसबब ख़ुश हो
तुम्हारी आरज़ू ने हाले-दीवाना बना डाला

तराविश आँख से ख़ूँ की करे जलकर शमा रौशन
सजा कर ज़ख़्म शामे-बज़्म नूराना बना डाला

नाम	: संजीव प्रभाकर
जन्म तिथि	: 03 फ़रवरी1980 (धरनीपट्टी, समस्तीपुर, बिहार)
पता	: एस -4, सुरभि, सेक्टर -29, गाँधीनगर-382030 (गुजरात)
व्हाट्सएप नंबर	: 9082136889
Email	: sanjeevprabhakar2010@gmail.com

संजीव प्रभाकर - श्रीमती हेतल खख्खर प्रभाकर
विवाह की तिथि : 16 जुलाई 2007

दुआ हमारे प्यार की हुई क़ुबूल उस जगह
जहाँ-जहाँ मिले थे हम खिले हैं फूल उस जगह

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

बाख़बर हो जताना मगर बेख़बर
दिल चुराने का है एक अच्छा हुनर

वक़्त शायद लगेगा यही सोच कर
मुन्तज़िर मैं तुम्हारा रहा उम्र भर

रोज ख़्वाब-ओ-ख़यालों में आते रहे
राह तकता रहा मैं हर इक मोड़ पर

मै खड़ा का खड़ा रह गया उस जगह
पर वहाँ से न गुज़री तेरी रहगुज़र

छाँव मेरा ही साया बना था वहाँ
दूर तक और कोई नहीं था शजर

कुछ ने दरिया कहा कुछ ने मोती कहा
दर्द का आँसुओं पर हुआ यूँ असर

एक अफ़वाह से आइना भर गया
अक्स आता भी तुमको कहाँ से नज़र

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुझे भूल जाने की आदत बहुत है
वग़रना तुम्हारी हिमाक़त बहुत है

हकीमों के चक्कर में बीमार था मैं
दवा जब से छोड़ी है राहत बहुत है

यहाँ क़ायदों पे ही चलना पड़ेगा
सुना जब से है तब से दहशत बहुत है

बहुत पाप करने लगा यक-ब-यक वो
करेगा भी क्या जिसको दौलत बहुत है

महज़ कुछ दिनों तक ही टिक पाएगा वो
शराफ़त से जीने में मेहनत बहुत है

ग़रीबी-अमीरी में खाई रहेगी
यहाँ हर जगह पर सियासत बहुत है

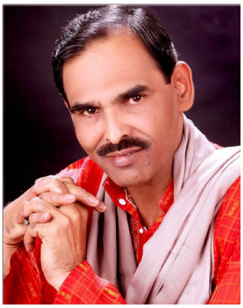

नाम	: सतीश शुक्ला 'रक़ीब'
जन्म तिथि	: 04 अप्रैल 1961 (लखनऊ , उत्तर प्रदेश , भारत)
पता	: बी - 204, एक्सेल हाउस, 13 वाँ रास्ता, जुहू स्कीम, जुहू, मुंबई-400049
व्हाट्सएप नंबर	: 098921 65892
मोबाइल	: 099675 14139
Email	: sckshukla@rediffmail.com sckshukla@gmail.com

सतीश शुक्ला 'रक़ीब' - अनुराधा
विवाह की तिथि : 17 जून 1994

ना-नुकुर, हीले-हवाले भी हुए पहले मगर
फिर भी होनी को कहें क्या, गाँठ तुमसे जुड़ गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

फिर से शहनाइयाँ, शामियाने में हैं
दो बड़ी कुर्सियाँ, शामियाने में हैं

रस्मे-जयमाल, फूलों की बरसात और
गूँजती तालियाँ, शामियाने में हैं

साथ सखियों के मिलकर सताती हैं जो
चुलबुली भाभियाँ, शामियाने में हैं

सालियाँ लाएँगी, नेग दो, वर्ना ख़ुद
ढूँढ़ लो, जूतियाँ, शामियाने में हैं

प्यार की फब्तियाँ, प्यार की गालियाँ
रात भर मस्तियाँ, शामियाने में हैं

वक़्त-ए-रुख़सत है अब जा रही है दुल्हन
हर तरफ़ सिसकियाँ, शामियाने में हैं

ये छुड़ाता है घर, गाँव, सखियाँ 'रक़ीब'
बस यही ख़ामियाँ शामियाने में हैं

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

तिरे सर से तेरी बला जाए जब तक
छले जा-छले जा, छला जाए जब तक

गला तेरा अच्छाई घोंटेगी इक दिन
बुराई में पल तू पला जाए जब तक

मुहब्बत की राहों में चलना है बेहतर
चला जा चला जा, चला जाए जब तक

शबे-वस्ल है, ऐ मुहब्बत के सूरज
जले जा, जले जा जला जाए जब तक

फ़क़ीरों ने दी हैं दुआएँ ठहरकर
शजर तू फले जा, फला जाए जब तक

ख़ुलूसो-मुहब्बत के पैकर में ऐ दिल
ढले जा ढले जा, ढला जाए जब तक

'रक़ीब' आतिशे-ग़म बना देगी कुन्दन
गले जाओ पल-पल, गला जाए जब तक

नाम	: सागर सियालकोटी
जन्म तिथि	: 18 जनवरी 1952
पता	: 1077, फ़ेज़ 1 अर्बन एस्टेट, डुगरी रोड, लुधियाना 141013
व्हाट्सएप नंबर	: 987 686 5957
Email	: sagarsiyalkoti@gmail.com

कलाकृति - सिद्धेश्वर

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

लोग कुछ मुझको यूँ आज़मा तो चले
इस तरह प्यार का सिलसिला तो चले

पुरख़तर रास्ते और ये मंज़िलें
साथ मेरे कोई आशना तो चले

बंदगी सब मज़ाहिब का हक़ भी रहे
है ज़रूरी मगर क़ायदा तो चले

दो किनारे कभी मिल न पाए मगर
इक दुआ दरमियाँ रास्ता तो चले

शायरी तो मशक़्क़त है दिन-रात की
चोट दिल पे लगे आबला तो चले

कुछ निशाँ दश्त में छोड़कर चल दिया
मैं रहूँ या मरूँ फ़लसफ़ा तो चले

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

राह चलते हुए तीरगी आ गयी
शब ढली हर तरफ़ रौशनी आ गयी

देखकर हुस्न को दिल जवाँ हो गया
आसमानों से जैसे परी आ गयी

आँख अपनों से बरसों छुपाता रहा
मेरे किरदार में क्या कमी आ गयी

अश्क अपने छुपाकर मैं रोया बहुत
ख़त जलाया ही था रौशनी आ गयी

कर के वादा निभाया नहीं उसने जब
दिल में 'सागर' मेरे फिर ग़मी आ गयी

कब हुआ क्यों हुआ ये पता तो चले
'आपकी आँख में जो नमी आ गयी'

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

ग़ज़ल से ग़ज़ल इश्क़ करने लगी है
ज़माने तेरे साथ चलने लगी है

समंदर से गहरा है आँखों का पानी
मुहब्बत में तर ख़ुद को करने लगी है

मुहब्बत की दुश्मन है दुनिया ये सारी
ग़ज़ल आग में फिर से जलने लगी है

वो बदनाम राहें, वो बदनाम बस्ती
कि दामन को छलनी यूँ करने लगी है

चलो अब ग़ज़ल से मुलाक़ात कर लें
जो 'सागर' के दिल में मचलने लगी है

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

नज़र आ रही थी तबाही-तबाही
परिंदे जो चुप थे सफ़र में थे राही

चलो रास्ते से वो पत्थर हटा दें
न झेले कोई भी सफ़र में तराही

लगाया नहीं मास्क था, डर से भागा
खड़ा मिल गया चौक में जो सिपाही

अगर ना-सबूरी मुहब्बत में होगी
ग़मों को लिखेगी ये काली स्याही

अदावत भले ही न हो तेरे दिल में
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

अदालत सबूतों पे मबनी है 'सागर'
वो साबित नहीं कर सका बेगुनाही

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

सफ़र कैसा है ये जिसकी मसाफ़त कम नहीं होती
है सर पे आसमाँ लेकिन तमाज़त कम नहीं होती

सियासत करने वालों का कोई मज़हब नहीं होता
लगाकर आग भी इनकी सियासत कम नहीं होती

सितम से बाज़ आओ ताजदारो, रहनुमाओ तुम
दबाकर आग मुट्ठी में बग़ावत कम नहीं होती

किसी से पूछ लेना मुफ़लिसी कितनी भयानक है
मरे दिन-रात वो लेकिन ज़रूरत कम नहीं होती

रहे 'सागर' जुदा लेकिन वो रिश्ते में तो भाई है
कभी काँटों की फूलों से मुहब्बत कम नहीं होती

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

ज़माने के अज़ाबो-ग़म ने यूँ दाना बना डाला
शिकायत क्या करूँ अपनों ने बेगाना बना डाला

तुम्हारी याद आयी तो उठाया जाम हाथों में
छलकते आँसुओं को हमने पैमाना बना डाला

मुहब्बत जुर्म है तो फिर इसे तस्लीम करता हूँ
इबादत ने पतंगे को भी दीवाना बना डाला

रहा माज़ी से बरसों तक मेरा रिश्ता मगर क्या था
कि मुस्तक़बिल ने मेरे दिल को वीराना बना डाला

गिरह का शेर
मैं उसको क्या मिला तन्हा पसे-पर्दा अँधेरे में
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'
मक़्ता
फ़क़त इंसान बनकर ही सभी बस्ती में रहते थे
सियासत ने यहाँ 'सागर' को मौलाना बना डाला

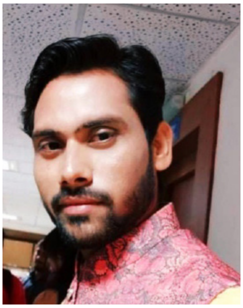

नाम : सुभाष पाठक 'ज़िया'
जन्म तिथि : 15 सितम्बर 1990
पता : ग्राम व पोस्ट समोहा तहसील करेरा ज़िला शिवपुरी मध्यप्रदेश-473660
व्हाट्सएप नंबर : 8878355676
Email : subhashpathak817@gmail.com

सुभाष पाठक - श्रीमती नीलम पाठक
विवाह की तिथि : 05 दिसम्बर 2012

तुम्हीं मेरे रुख़ पे तुम्हीं शायरी में
तुम्हीं से ज़िया है मेरी ज़िंदगी में

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

लुत्फ़ सारा मुहब्बत का जाता रहा
मैं उसे वो मुझे आज़माता रहा

अपना ग़म तो वो हँसकर उठाता रहा
मेरा ख़ुश रहना उसको सताता रहा

टुकड़े-टुकड़े बिखर तो गया आइना
सच दिखाया था सच ही दिखाता रहा

दुश्मनी थी अँधेरों से उसकी मगर
रातभर दिल हमारा जलाता रहा

छू न पायी हँसी होंठ उसके कभी
उम्रभर जो सभी को हँसाता रहा

जीत में भी मज़ा जीत का था कहाँ
हारने वाला जब मुस्कुराता रहा

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

फ़लक से सितारों की बरसात होगी
नयी सुब्ह ख़ुशियों की सौग़ात होगी

सभी के लबों पर तबस्सुम सजेगा
ग़मों के अँधेरे तेरी मात होगी

रहेगी न दूरी कहीं पर भी कोई
तुम्हारी-हमारी मुलाक़ात होगी

नये हौसलों से सफ़र हम करेंगे
नयी मंज़िलों की नयी बात होगी

'ज़िया' से मुलाक़ात में फ़ायदा है
उजालों से भरपूर हर रात होगी

नाम : सोनिया वर्मा
जन्म तिथि : 20 अक्टूबर
पता : एम. आई . जी - 528,
वीर सावरकर नगर, हीरापुर,
रायपुर (छ.ग.) -492099
व्हाट्सएप नंबर : 8357803400
Email : verma sonia783@gmail.com

कलाकृति - सिद्धेश्वर

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

गर बुरी आदतों का पतन चाहिए
सब छुपी आदतों का दमन चाहिए

आज बीमार को यह जतन चाहिए
प्यार से हो भरी इक छुअन चाहिए

ख़्वाब तो हम सभी देखते हैं यहाँ
पूर्ण करने की इनको लगन चाहिए

रोज़ मिलता नहीं वक़्त सबको यहाँ
कुछ नया कर सकें अध्ययन चाहिए

चाह ऊँची रखें हम सदा ही यहाँ
लक्ष्य पाने को बस इक चयन चाहिए

भेद जग से मिटें चाहते हो अगर
तो पुराने-नये का मिलन चाहिए

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

मैं सूरत देखकर उसकी जो घबराई तो क्या होगा
पसीने से सरापा तर मैं हो आई तो क्या होगा

सदा ख़्वाबों में ही मैंने उसे देखा, उसे चाहा
कभी मेरी नज़र उससे जो टकराई तो क्या होगा

इसी इक सोच में डूबी रहा करती हूँ मैं यारों
मिली गर कोशिशों के बाद तन्हाई तो क्या होगा

जो माँगे जान वो मेरी तो मैं हँसते हुए दे दूँ
मगर समझा न वो उल्फ़त की गहराई तो क्या होगा

वो मेरी रूह में शामिल अभी भी है मगर सोचो
मुहब्बत में मिली मुझको जो रुस्वाई तो क्या होगा

नाम	: हरिवंश प्रभात
जन्म तिथि	: 05 सितम्बर 1949
पता	: न्यू एरिया, हमीदगंज, मेदिनीनगर, पलामू, झारखंड-822101
व्हाट्सएप नंबर	: 9308015371
Email	: harivanshprabhat@gmail.com

हरिवंश प्रभात - श्रीमती शोभा प्रभात
विवाह की तिथि : 28 मई 1973

शाम की दुल्हन की 'शोभा' है या उषा की लाली
मन मुराद है तू 'प्रभात' की! तेरी छटा निराली

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

जन्मदिन पर हसीं पैरहन देखिए
मस्तियों से खिला गुलबदन देखिए

उनकी दौलत न सूरत न तन देखिए
देखना है अगर उनका मन देखिए

आपको घर से बाहर है जाना अगर
पहले मौसम का कैसा है मन देखिए

खौफ़ दहशत की फैली हवा हर तरफ़
साँस लेने से पहले पवन देखिए

आप कितना उठे ख़ुद में और ग़ैर में
और कितना हुआ है पतन देखिए

देशभक्ति के हैं दिल में जज़्बे अगर
अपना किस राह पर है वतन देखिए

सीख देते हैं जो गीता-क़ुरआन की
उनका कैसा है पहले चलन देखिए

मुख़्तसर बात 'प्रभात' इतनी-सी है
कैसे नेता के हैं ज़हनो-मन देखिए

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

जिन्हें रौशनी की ज़रूरत हो आये
अँधेरे में हमने हैं दीपक जलाये

अँधेरे का कोई कफ़न अब न ओढ़े
नया ऐसा सूरज कोई तो उगाये

ऐ काँटों पे जीवन बसर करनेवाले
जरा मुस्कुराओ सुदिन आज आये

सितारों-सा खेलो, बहारों-सा झूमो
यहाँ अब न कोई भी आँसू बहाये

ये घबरायी सूनी-सी बिरहन की आँखें
वो साजन को चुपके ही चुपके बुलाये

वही तेरा सच्चा है 'प्रभात' साथी
जो दुःख के समय में तेरे साथ आये

नाम : हिमकर श्याम

जन्म तिथि : 16 जनवरी, 1973

पता : B-1, शांति इंक्लेव, रोड नम्बर-4A
कुसुम विहार, निकट चिरंजीवी पब्लिक
स्कूल, मोराबादी,
राँची, झारखण्ड -834008

व्हाट्सएप नंबर : 9430358234

Email : himkarshyam@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

सामने आप मेरे रहा कीजिए
मुझको मुझसे न ऐसे जुदा कीजिए

है अगर इश्क़ तो इब्तिदा कीजिए
बात दिल की हमेशा सुना कीजिए

क्या है मेरी ख़ता, आप क्यूँ हैं ख़फ़ा
जो शिकायत है मुझसे कहा कीजिए

कब बदल जाए नीयत किसी की यहाँ
हर किसी से न हँस के मिला कीजिए

मैंने एहसास दिल का बयाँ कर दिया
यूँ न हैरत से मुझको तका कीजिए

क्या ज़रूरी है सब से जफ़ा ही करें
दोस्तों से कभी तो वफ़ा कीजिए

बात कैसे बढ़े, आप खुलते नहीं
कुछ कहा कीजिए, कुछ सुना कीजिए

हाल अच्छा नहीं, जी भी ना-साज़ है
अब दवा भेजिए या दुआ कीजिए

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

बेबसी, बेरुख़ी, बेकली आ गयी
जाने किस मोड़ पर ज़िंदगी आ गयी

नाम पर रौशनी के छलावा हुआ
मेरे हिस्से में फिर तीरगी आ गयी

जो समझते थे उनसे बड़ा कौन है
सर झुकाने लगे, बंदगी आ गयी

हम चराग़ों को महफ़ूज़ रखते मगर
फिर कहीं से हवा सिरफ़िरी आ गयी

शहर बीमार है, गाँव लाचार है
चार जानिब से मुश्किल घड़ी आ गयी

दर्द छेड़ा है जिसने वही पूछता
'आप की आँख में क्यों नमी आ गयी'

वो न रोए हँसे, दिल भी पत्थर हुआ
आदमी हैं मगर बे-हिसी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

भला क्या, बुरा क्या नहीं वास्ता कुछ
समझ में न आता ज़माना नया कुछ

अजब कश्मकश में फँसी ज़िंदगानी
कोई अब दिखाये हमें रास्ता कुछ

शिकायत रही है मुझे आदिलों से
मेरे हक़ में करते नहीं फ़ैसला कुछ

हुए ज़ख़्म ज़ाहिर नहीं कुछ छुपा है
मेरे दर्द की अब करो तुम दवा कुछ

यक़ीं क्या करें हम सियासी ज़बाँ का
कहाँ मुफ़लिसों का हुआ है भला कुछ

मुक़द्दर के आगे है इंसान बेबस
नहीं ज़ोर इस पर किसी का चला कुछ

अगर हाँ कहो तो मैं सब कुछ लुटा दूँ
न माँगा है रब से तुम्हारे सिवा कुछ

ज़माना है कैसा ज़रा सोच 'हिमकर'
किसी का किसी से नहीं राब्ता कुछ

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

मिटेगी किसी रोज़ ग़म की सियाही
रहेगा मगर याद दौर-ए-तबाही

ये कैसा है मंज़र, सभी ग़मज़दा हैं
हैं वीरान सड़कें, नहीं कोई राही

सँभाले सँभलते नहीं अब ये आँसू
यही इल्तिजा है रहम कर इलाही

न आएँगे वापस जो बिछड़े हैं हमसे
न पहुँचेगी उन तक हमारी सदा ही

कभी कोई इल्ज़ाम उन पर न आया
ख़ता पर भी उनको मिली वाह-वाही

ज़बाँ कर रही है बयाँ दास्ताँ कुछ
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

सहे जा रहे ज़ख़्म चुपचाप 'हिमकर'
यहाँ आह भरने की भी है मनाही

नाम	: ज्ञान प्रकाश पाण्डेय
जन्म तिथि	: 9 फ़रवरी 1979
पता	: 96, टी.एन.बी रोड, शुकचर(घोषपाड़) 24 परगना (उत्तर) शोदपुर, कोलकाता-700115 (पश्चिम बंगाल)
व्हाट्सएप नंबर	: 9681307939
Email	: gyanprakashpandey45@gmail.com

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय - अभिलाषा तिवारी
विवाह की तिथि : 09 मार्च 2003

मेरे घर की हर शय उजली-उजली है
मेरे घर में चाँद का टुकड़ा रहता है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

पास रहना अजी! फिर तो बेकार है
बीच अपने अगर कोई दीवार है

प्यासा लब वो परिंदा जिये किस तरह
साहिलों में वो दरिया गिरफ़्तार है

ज़ख़्म के ही ख़बर ये सुनाती रही
ज़िन्दगी आइना या कि तलवार है

बर्ग शाख़ों से यूँ ही बिछड़ते नहीं
इन में कोई न कोई गुनहगार है

लाख कोशिश की पर दरमियाँ ही रही
ये अना है कि पत्थर की दीवार है

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

ये रहबर! ये मंज़िल! ये रस्ते! ये राही!
इलाही! इलाही! इलाही! इलाही!

अजब मैकदा ये अजब मयकशी ये
न मीना न साग़र सुराही-उराही

ज़मीरे-बशर को हुआ क्या कि हर सू
सियाही! सियाही! सियाही! सियाही!

न तारे न चंदा न तितली न ख़ुशबू
बचायेगी दुनिया को अब बस दुआ ही

जहाँ तक नज़र जा रही है वहाँ तक
तबाही! तबाही! तबाही! तबाही!

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

ज़िना है हवस है जवानी है भइया
मुहब्बत की ये ही कहानी है भइया

भला डूबकर लोग मरने लगे क्यों
यहाँ घुटने तक ही तो पानी है भइया

ग़रीबों की बस्ती में तशरीफ़ लाये
बड़ी आप की मेहरबानी है भइया

जहाँ देखिये ख़्वाब ही बिक रहे हैं
बड़ी आज-कल शादमानी है भइया

शजर तो घने हैं प' साये कहाँ हैं
यहाँ किसकी अब हुक्मरानी है भइया

नाम : अनुराग "सुरुर" (अनुराग मेहता)
जन्म तिथि : 05 जुलाई 1974
पता : 2/1487, माँ भगवती पार्क, बुद्धि विहार
दिल्ली रोड, मुरादाबाद (उ0प्र0)
व्हाट्सएप नंबर : 8273100881
Email : mehtapressmbd@gmail.com

अनुराग 'सुरूर' - सोनिया मेहता
विवाह की तिथि : 26 अप्रैल 2001

जाम पीते हैं उन निगाहों से
मयकशी छोड़ दें किधर जायें

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

ईद की ख़ुशनुमा लो घड़ी आ गयी
याद तेरी मेरे ज़ेहन पर छा गयी

आप मेरे हैं मुझको नहीं इल्म था
तिश्नगी आपकी अब नज़र आ गयी

वक़्त मिलने का है आज लग जा गले
साल भर क्यों तकें ईद फिर आ गयी

रोज़ ख़्वाबों में मिलते रहे हम से जो
आज मिलने की उनसे ख़बर आ गयी

मुब्तिला आपके ख़्वाब में यूँ हुए
रात जाती रही और सहर आ गयी

साथ चलते रहे, दिल मचलता रहा
वक़्त क्यूँकर गया, क्यों डगर आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

जनाज़ा किसी का उठा जा रहा है
मुसाफ़िर सफ़र पे चला जा रहा है

न ग़म को इजाज़त न ज़ख़्मों की आदत
ये प्याला सुकूँ का पिया जा रहा है

मुहब्बत न चाहत, बड़ी मौज में हूँ
सफ़र ज़िन्दगी का कटा जा रहा है

तिरा ख़्वाब रूठा कि रिश्ता भी टूटा
कलेजा मगर क्यों जला जा रहा है

तमाशा बना छोड़ती है मुहब्बत
मगर जिसको देखो मरा जा रहा है

नाम	: अरविन्द असर
जन्म तिथि	: 10 अगस्त 1970
पता	: D-2/10 रेडियो कालोनी, किंग्स्वे कैम्प, दिल्ली-110009
व्हाट्सएप नंबर	: 9871329522
Email	: arvindasar@gmail.com

श्री अरविन्द असर - श्रीमती श्वेता सोनकर
विवाह की तिथि : 22 जून 2004

धन-दौलत, सुख-चैन सब, प्यार और उपहार
मेरी ख़ातिर तुम प्रिये हो सारा संसार

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

याद मुझको मेरी बेबसी आ गयी
बात रोने की थी पर हँसी आ गयी

रफ़्ता-रफ़्ता मुझे इश्क़ उससे हुआ
रफ़्ता-रफ़्ता मुझे शायरी आ गयी

अब कोई भी ख़फ़ा मुझसे होता नहीं
जबसे लफ़्ज़ों की जादूगरी आ गयी

इश्क़ बढ़ता गया उम्र के साथ-साथ
हाँ दिखावे में बेशक कमी आ गयी

उन झरोखों की क़ीमत पता तब चली
उन झरोखों से जब रौशनी आ गयी

दास्ताँ मैंने अपनी सुनायी मगर
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'

बन्दगी सीख पाए नहीं अब तलक
मयकदे में गये मयकशी आ गयी

जाने वाला था मैं इस जहाँ से मगर
आपको देखकर ज़िन्दगी आ गयी

पास मेरे वो आए 'असर' तो लगा
पास प्यासे के जैसे नदी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

अदालत में चलती है झूठी गवाही
वहाँ काम आती नहीं बेगुनाही

अभी आने वाले हैं ज़िल्लेइलाही
अभी बंद है इस जगह आवाजाही

वो धुन का है पक्का लगन का है सच्चा
चला जा रहा है अकेले जो राही

ज़रा-सा ही है वो जरासीम लेकिन
मचा दी है जिसने जहाँ में तबाही

जो ख़ूँ बन के बहती है सबकी रगों में
कभी ख़त्म होती नहीं वो सियाही

तुम्हारी ज़बाँ और कुछ कह रही है
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

वज़ीर, ऊँट, हाथी तो रहते हैं पीछे
कि मरता है पहले हमेशा सिपाही

ये देखा है मैंने है फ्रिज जिन घरों में
घड़ा भी नहीं है, नहीं है सुराही

'असर' मेरे दिल में भी चाहत बसी है
कि ग़ज़लों को मेरी मिले वाहवाही

नाम : इक़बाल दानिश
जन्म तिथि : 15 अक्टूबर, 1972
पता : ग्राम-पोस्ट -तेलारी, थाना चेनारी जिला रोहतास- 821108
व्हाट्सएप नंबर : 7545857606

इक़बाल दानिश - इशरत प्रवीण
विवाह की तिथि : 22 जून 2004

सफ़ह-ए-हस्ती पे तेरी सादगी तहरीर है
तेरे चेहरे पर मेरे दिल की ख़ुशी तहरीर है

ऐ सरापा हुस्न तू है इक अछूती-सी ग़ज़ल
क्या कहूँ तेरी अदा में शायरी तहरीर है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

हुस्न में जब कभी सादगी आ गयी
मनचलों को कहाँ आशिक़ी आ गयी

इक अछूती ग़ज़ल जब हुई रू-ब-रू
इक सलीक़े में तब शायरी आ गयी

प्यार का इक दिया उस ने रौशन किया
इश्क़ की हर तरफ़ रौशनी आ गयी

गुलशन-ए-दिल पे छायी थी पज़मुर्दगी
कुछ तबीयत में अब ताज़गी आ गयी

मुझ से बिछड़ा है अश्कों की बरसात में
ख़ुद-ब-ख़ुद आँख में कुछ नमी आ गयी

जाम आँखों से छलके तो दिल हिल उठा
दर-मिज़ाजों में उफ़ बेख़ुदी आ गयी

फूल झड़ते हैं 'दानिश' करे बात जब
अब तकल्लुम में कुछ दिलकशी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

जहाँ ख़ौफ़-ओ-दहशत की छायी सियाही
वहाँ पर भटकता है रस्ते से राही

यहाँ आदमी है घिरा मसअलों में
मेरे मौला कैसे ये आयी तबाही

मेरी बात मुंसिफ़ भी सुनता नहीं अब
भला कैसे साबित करूँ बेगुनाही

बयाँ झूट कर दो अदालत में लेकिन
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

ख़ुलुसो-मुहब्बत का नज़राना देकर
दिलों पे सभी के करो बादशाही

ज़रा तुम पड़ोसी की ले लो ख़बर अब
ख़ुशी से जो खाते हो तुम मुर्ग़ो-माही

जो अहले-जहाँ को जगाता था 'दानिश'
कहाँ सो गया है क़लम का सिपाही

नाम	: डॉ. अब्दुल क़ादिर
जन्म तिथि	: 1 सितम्बर,1978
पता	: बी-28/5 ए सनशाइन अपार्टमेंट प्रथम तल फ्लैट नं.202 ठोकर नं. 7 शाहीन बाग़, जामिया नगर , नयी दिल्ली 110025
मोबाइल नंबर	: 989 102 5825
ई-मेल	: ridaqludba@yahoo.ca

डॉ. अब्दुल क़ादिर - सना अफ़ज़ल
विवाह की तिथि : 18 सितंबर, 2010

तेरी चाहत व तेरे प्यार के दिन
हैं यही बस मेरे क़रार के दिन

शुक्रिया मेरे हमसफ़र तुझ से
मुस्तक़िल हो गये बहार के दिन

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

आह फिर रात तारों भरी आ गयी
यानी फिर जागने की घड़ी आ गयी

आ गया फिर कोई याद भूला हुआ
याद फिर से मुझे वो गली आ गयी

दुश्मनों से पशेमान होना पड़ा
खुल के जब सामने दोस्ती आ गयी

वादा कर तो लिया कल मिलेंगे मगर
वादा-ए-यार पर फिर हँसी आ गयी

आदमी तो जहाँ में बहुत बढ़ गये
आदमीयत में लेकिन कमी आ गयी

कर रहा था बयाँ अपनी रूदाद-ए-ग़म
उनकी आँखों में कैसे नमी आ गयी

एक हुस्न-ए-मुजस्सम की तफ़सीर से
मेरे अशआर में ज़िन्दगी आ गयी

इस से पहले कि क़ातिल को मिलती सज़ा
उसके हक़ में कोई पैरवी आ गयी

उसने जाते हुए मुड़ के देखा मगर
क्या करें सामने बे-बसी आ गयी

आमद-ए-मुस्तफ़ा क्या बयाँ कीजिए
'दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी'

मिल गया क़ादिर ईनाम-ए-बज़्म-ए-हफ़ीज़
आप जैसों को भी शायरी आ गयी

अर्कान- फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन/या फ़इलुन

आसमाँ सर पे उठाए हुए हैं
जब से हम उनको भुलाए हुए हैं

जिस से मतलब था वही आया नहीं
जिन से मतलब नहीं आए हुए हैं

क्या करें शिकवा-ए-अग़यार यहाँ
हम तो अपनों के सताए हुए हैं

कौन मेहमान था दिल में मेरे
किसको मेहमान बनाए हुए हैं

क्या कोई देखे हमारी जानिब
सब तुम्हें देखने आए हुए हैं

दिल पे इक बार-ए-गिराँ हैं वो लोग
जिन से हम हाथ मिलाए हुए हैं

ये वही दिल है वो टूटा हुआ दिल
आप पहले जहाँ आए हुए हैं

वो नहीं लौट के आने वाला
एक उम्मीद लगाए हुए हैं

आप भी ख़ूब हैं 'अब्दुल क़ादिर'
जिस तरफ़ देखिए छाए हुए हैं

नाम : डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति
जन्म तिथि : 18 जून 1959
पता : प्रजापति भवन , मेन रोड , राउरकेला ओड़िशा-769001
मोबाइल नंबर : 9437044680
ई-मेल : krishnaprajapati2007@gmail.com

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति - दीपा प्रजापति
विवाह की तिथि : 26 दिसम्बर 1984

तुम अगर दो साथ मशहूरे-जहाँ हो जाऊँगा
मैं मुहब्बत की ज़मीं पर आसमाँ हो जाऊँगा

बहुत ढूँढ़ा मगर तुझ-सा कहाँ कोई ज़माने में
बड़ी मुद्दत लगी होगी तेरी सूरत बनाने में

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
मेरे घर एक नन्ही परी आ गयी

उनके आने की मुझको मिली जब ख़बर
मेरे अंदर नयी ज़िंदगी आ गयी

कल तलक मिलने-जुलने का दस्तूर था
आज लोगों में इसकी कमी आ गयी

देख लीं आज अपनों की हमदर्दियाँ
मैं जो रोया तो उनको हँसी आ गयी

थम गये पाँव, दिल को सुकूँ मिल गया
चलते-चलते जो उनकी गली आ गयी

ख़ूँ जलाते रहे, मश्क़ करते रहे
धीरे-धीरे हमें शायरी आ गयी

वो 'कुमार' आज आये तो ऐसा लगा
अपने सागर से मिलने नदी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

जिधर देखता हूँ उधर है तबाही
कहाँ जाए बंदा बता दे इलाही

हुज़ूर आप कुछ कह रहे हैं ज़बाँ से
"नज़र और कुछ दे रही है गवाही"

ग़लत लोगों का साफ़ रहता है दामन
शरीफ़ों पे ही फेंकते हैं सियाही

बहुत रो रहे हैं जो करते हैं मेहनत
बहुत ख़ुश हैं जो कर रहे हैं उगाही

सरे-आम चोरों का है बोलबाला
न जाने कहाँ सो रहे हैं सिपाही

ये उसका करम है ये उसकी नवाज़िश
कभी रूखी-सूखी, कभी मुर्ग़ो-माही

पसन्द उसको करने लगे अब तो शायर
ग़लत शेर पर जो करे वाहवाही

'कुमार' अपने बारे में कुछ सोचिए अब
वो रहबर बने हैं जो कल तक थे राही

नाम	: डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
जन्म तिथि	: 22 जुलाई, 1940
पता	: O / 50 डॉक्टर्स कॉलोनी ,कंकडबाग पटना 800020
मोबाइल नंबर	: 886 304 5716
ई-मेल	: mnsingh1940@gmail.com

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह - सुशीला राव
विवाह की तिथि : 29 मई, 1963

आप जब मिल गये ज़िन्दगी मिल गयी
साथ जब हम चले हर ख़ुशी मिल गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
‘आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी’
पर कही गयी ग़ज़लें

तीरगी मिट गयी, रौशनी आ गयी
आप आये नयी ज़िन्दगी आ गयी

साँस भी चल पड़ी आँख भी खुल गयी
मेरे सिरहाने जब चाँदनी आ गयी

खेल तो खेल है खेलने के लिए
हार बैठे तो क्यों बरहमी आ गयी

चाक का काम है गढ़ दे चेहरा नया
शक्ल बदली हसीं ज़िन्दगी आ गयी

आँधियाँ रौंद डालें नहीं बाग़ को
बाग़ को देखने मालिनी आ गयी

कौन-से बाग़ में आप हो क्या पता
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कामिनी आ गयी

शहर की पेड़ से हो गयी दोस्ती
फूल-फल से सजी बाल्कनी आ गयी

‘मेहता’ जी पौध को रोपने बाग़ में
आये जब, साथ में शालिनी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
‘नज़र और कुछ दे रही है गवाही’
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नहीं कर सकेगा प्रदूषण तबाही
शजर हैं हमारे हितैषी सिपाही

शजर की बदौलत नगर है सुरक्षित
शजर हैं तो है मौज में बादशाही

प्रदूषित हवा का असर भी बुरा है
भरी ज़हर से है सेहत की सुराही

खड़ा हर तरफ़ ज़हर का है हिमालय
उसे ढाहने में ही है वाहवाही

अदालत में चुप-चाप ‘मेहता’ खड़ा है
‘नज़र और कुछ दे रही है गवाही’

नाम : ज़फ़र महमूद
जन्म तिथि : 24 जून 1964
पता : द्वारा- डॉ. अख़्तर मसूद डी-43/116 , बाज़ार सदानंद, वाराणसी यू.पी.
मोबाइल नंबर : 00919235890173 रियाज़ सऊदी अरबिया 00966508017263

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

गुल खिले तितलियों को हँसी आ गयी
सहने-गुलशन में फिर ज़िन्दगी आ गयी

पहली बारिश की ख़ुशबू से महकी ज़मीं
फिर चमन में नयी ताज़गी आ गयी

चाँद चमका तो दिल के दरीचे खुले
चुपके-चुपके से फिर चाँदनी आ गयी

हुस्न जलवानुमा जब हुआ बज़्म में
'दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी'

हुस्न और इश्क़ दोनों ही जब साथ हों
मौत की फिर समझिये घड़ी आ गयी

इस फ़साने की तफ़सीर मत पूछिये
क्या कहें आँख में क्यूँ नमी आ गयी

क्या बताऊँ 'ज़फ़र' उनके जाने के बाद
यूँ लगा ज़िन्दगी में कमी आ गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

हम मुहब्बत की राहों में चलते रहे
और तुम हर क़दम ज़हर उगलते रहे

जिन चिराग़ों में जीने का था हौसला
दोश पर आँधियों के वो जलते रहे

ख़ूबसूरत बहुत थे गुलाबों के लब
ख़ूब दिल तितलियों के मचलते रहे

ख़ुशबुओं को चुराकर हवा ले गयी
बेख़बर बाग़बाँ हाथ मलते रहे

अपनी मुट्ठी में सूरज तड़पता रहा
और हम लोग अँधेरों में चलते रहे

ज़िन्दगी के लिए बिकने बाज़ार में
रोज़ कपड़े बदलकर निकलते रहे

क्या सुनाएँ तुम्हें क़िस्सा-ए-सुबहो-शाम
रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

बेघरी हम मुसाफ़िर का साथी रही
उम्र भर हम 'ज़फ़र' घर बदलते रहे

नाम : नसर आलम नसर
जन्म तिथि : 6 जून 1975
पता : शाही संगी मस्जिद के पास
फुलवारी शरीफ़, पटना
मोबाइल नंबर : 930 445 9648

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

आप के आते ही ताज़गी आ गयी
दिल जवाँ हो गया नग़मगी आ गयी

क्या मेरे प्यार में कुछ कमी आ गयी
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'

आप तो पहले ऐसे नहीं थे जनाब
आपके दिल में क्यों सादगी आ गयी

लोग कहते हैं अब शायरे-बा-अदब
शायरी में मेरी पुख़्तगी आ गयी

कल तलक अंधी नगरी का राही था मैं
रहबरी मिलते ही रौशनी आ गयी

चार दिन की ख़ुशी पाके ऐसा लगा
जैसे ये ज़िंदगी दाइमी आ गयी

इस वबा ने 'नसर' ऐसा झटका दिया
याद रब आ गया बंदगी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

मुसीबत बनी है तेरी कम-निगाही
करम की नज़र कर दे मुझ पर इलाही

नज़र तूने मोड़ी तो हम जान लेंगे
कि अब अपने सर है मुकम्मल तबाही

ग़ज़ल अब हुई है मुकम्मल हमारी
हुआ जब से उल्फ़त में दिल खानक़ाही

मुहब्बत से दिल काँपता है हमारा
सुना है मुहब्बत में है बस तबाही

ज़बाँ और कुछ कह रही है तुम्हारी
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

नहीं पहले जैसा मिज़ाज अदलिया का
'नसर' कैसे साबित करूँ बे-गुनाही

नाम : नवीन सी चतुर्वेदी
जन्म तिथि : 27 अक्टूबर,1968
पता : F विंग,फ्लैट नं.526, E-2 हाईवे पार्क, ठाकुर काम्प्लेक्स ,कांदिवली ईस्ट , मुंबई 400101
मोबाइल नंबर : 996 702 4593
ई-मेल : navincchaturvedi @gmail.com

नवीन सी चतुर्वेदी - रेखा नवीन चतुर्वेदी
विवाह की तिथि : 4 मई 1990

ज़िंदगी जीने की हसरत में उभार आता है
आप होते हैं तभी दिल को क़रार आता है

आप होते हैं तो घर लगता है घर के जैसा
आप होते हैं तो हर शय पे निखार आता है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
‘आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी’
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

जैसे ही हाथों में ज़िन्दगी आ गयी
एक पल को लगा उर्वशी आ गयी

ख़ैर-मक़दम ख़ुशी का न कर पाये हम
पीछे-पीछे लगी बेबसी आ गयी

हमने पलकें बिछायी थीं जिसके लिए
वो परी आयी, पर, परकटी आ गयी

आपका आज आने का प्रोग्राम है
जाने कल ही से क्यों बेकली आ गयी

दिल में तो कोई नापाक हसरत न थी
जाने क्यों मग़ज़ में गन्दगी आ गयी

दौड़ में जीते हम तो हमें देखकर
मील के पत्थरों को हँसी आ गयी

कोरे काग़ज़ की तक़दीर तो देखिए
टुक सियाही से क्या रौशनी आ गयी

आप तो सूखी नदियों के सरताज हैं
‘आपकी आँखों में क्यों नमी आ गयी’

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

उठानी थी हम को सलाहों की गठरी
मगर ढो रहे हैं गुनाहों की गठरी

कबीर आप जैसे जुलाहों की गठरी
कहाँ खो गयी ख़ैर-ख़्वाहों की गठरी

मुक़द्दर में लिक्खे थे ज़ख़्मों के तोहफ़े
सो ढोनी पड़ी हमको फ़ाहों की गठरी

उदासी को सब पर भरोसा नहीं है
सो हमको थमा दी है आहों की गठरी

हमारे लिए तो मुहब्बत का मतलब
मुरव्वत से भीनी निगाहों की गठरी

तुम्हारा हृदय है भगोड़ों के जैसा
हमारा हृदय है पनाहों की गठरी

ये हल्की है गुल-फूल से भी यक़ीनन
उठाकर तो देखो निबाहों की गठरी

हमारे ही सपने हैं पलकों के पीछे
अमाँ खोलिये तो गवाहों की गठरी

‘नवीन’ एक और ज़ाविये के मुताबिक़
लगे है ख़ला! ख़ानक़ाहों की गठरी

गिरह का शेर

समय की अदालत में वे भी हैं मुन्सिफ़
‘चुराते हैं जो बादशाहों की गठरी’

(मिसरा तरह इस दासानुदास के कुटुम-कबीले के पूर्वज मुहतरम ग़ुलाम मुसहफ़ी हमदानी साहब की ग़ज़ल से लिया गया है)

नाम : प्रेम कुमार शर्मा

जन्म तिथि : 15 दिसम्बर 1952

पता : 93, मानसागर कॉलोनी, प्रताप नगर, सेक्टर 7, सांगानेर, जयपुर-302033

मोबाइल नंबर : 935 258 9810

ई-मेल : prempaharpurisharma@gmail.com

प्रेम कुमार शर्मा - श्रीमती शारदा शर्मा

विवाह की तिथि : 22 फ़रवरी 1976

तुम समीर की छुअन हो, सुबह-सुबह की धूप
देतीं तुम मन-सुमन को, सुरभित रूप अनूप

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

याद जब उनकी नाराज़गी आ गयी
ज़िंदगी भी रही, मौत भी आ गयी

मेरा घर ढूँढ़ती-ढूँढ़ती आ गयी
आ गयी ज़िंदगी, ज़िंदगी आ गयी

तेरे बीमारे-ग़म को हँसी आ गयी
क्या तुझे पूरी चारागरी आ गयी

उनकी शोख़ी शरारत वही है मगर
उम्र के साथ संजीदगी आ गयी

यूँ लगा धूप निकली हो बरसात में
जब उन्हें रोते-रोते हँसी आ गयी

एक बोसे पे तूफ़ाँ खड़ा कर दिया
क्या ख़ज़ाने में कोई कमी आ गयी

वो भी बेताब है, मैं भी बेचैन हूँ
लग रहा है मिलन की घड़ी आ गयी

हम ग़मों को ख़ुशी में बदलने लगे
अब हमें ऐसी कारीगरी आ गयी

क्या भरोसा नहीं प्यार पर आपको
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'

'प्रेम' दोज़ख़ की तकलीफ़ हल्की लगी
काम मेरे मेरी मुफ़लिसी आ गयी

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

इधर आ रहे हैं वो लेकर सुराही
उधर शैख़ जी कर रहे हैं मनाही

न कोई वकील और न कोई गवाही
मेरे काम आयी मेरी बेगुनाही

इलाक़े पे मंडरा रही है तबाही
जो था चोर वो बन गया है सिपाही

मैं हीरे को कौड़ी से कैसे बदल लूँ
कहाँ ये फ़क़ीरी कहाँ बादशाही

चलो मानता हूँ जो तुम कह रहे हो
मगर रोज़ वो उस तरफ़ आवाजाही

कहाँ आसमाँ है कहाँ ये ज़मीं है
तेरी ख़्वाहिशें और मेरी ख़ानक़ाही

मुझे लग रही तानाशाही से बदतर
मेरे रहनुमा, ये तेरी लोकशाही

कभी दिन में छ: बार होता था मिलना
मगर अब वो मिलते तिमाही-छमाही

ज़ुबाँ आपकी और कुछ कह रही है
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

जो है मुझ पे तो शौक़ से उसको ले जा
मगर मेरे बस की नहीं है उगाही

नाम : पूनम सिन्हा श्रेयसी

जन्म तिथि : 5 सितम्बर

पता : पटना स्काइज अपार्टमेंट, विवेकानन्द पार्क रोड, रोड न०-1, न्यू पाटलीपुत्र कोलोनी, पटना-800013, बिहार

मोबाइल नंबर : 8340484896

ई-मेल : punamsinhashreyasi@gmail.com

श्री नरेन्द्र कुमार सिन्हा - श्रीमती पूनम सिन्हा श्रेयसी
विवाह की तिथि : 1 मई 1993

हुआ इश्क़ तुमसे मगर धीरे-धीरे
जहाँ को हुई है ख़बर धीरे-धीरे

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

रोज़ मिलते रहे, दिल मचलते रहे
मिल गयी जब नज़र, दिल बहलते रहे

बात ही बात में, बढ़ चली बात जब
देखिए किस तरह, ख़्बाव पलते रहे

कुछ कहें कुछ सुने, ये हुआ सिलसिला
इश्क़ हँसता रहा, लोग जलते रहे

वक़्त दर वक़्त कहता, सँभल जा ज़रा
बेवफ़ा वो हुए, हाथ मलते रहे

मेहरबाँ रब हुआ जब भी 'पूनम' कभी
चाँदनी रात में हम टहलते रहे

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मुहब्बत मिरी दे रही है गवाही
हुई है अभी तक ग़ज़ब की तबाही

तिरे हुस्न पे मैं फ़िदा हो गया हूँ
नशे से भरी जैसे तू इक सुराही

अदाएँ ये तेरी कहूँ तो कहूँ क्या
लगे है मुझे तो ये फ़ज़्ले-इलाही

इशारा तिरा मिल जो जाए ज़रा-सा
हो क़िस्मत हमारी करूँ वाह वाही

तिरे वास्ते क्यों लड़ा मैं जो ख़ुद से
मुहब्बत में हारा हुआ इक सिपाही

नाम	: राजकान्ता राज
जन्म तिथि	: 8 जून 1968
पता	: राजनिलय,हाऊस न0-26,मानस मार्ग, शिवपुरी,पटना (बिहार)-800023.
मोबाइल नंबर	: 9308245361
ई-मेल	: anilrajkanta@gmail.com

ई.अनिल कुमार - राजकान्ता राज
विवाह की तिथि : 23 जून 1987

लबों पे तबस्सुम के ज़ेवर सजाये
क़सम सात फेरों की मैंने निबाही

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

मेरी ख़ुशियों में माना कमी आ गयी
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

आपसे मैं जो बिछड़ी तो ऐसा लगा
हर ख़ुशी को बहाने नदी आ गयी

ढूँढ़ती थीं बहुत तुम को कातर नज़र
मिल गये तो लबों पर हँसी आ गयी

कर्म करते नहीं चाहते सिर्फ़ फल
देख लो आज कैसी घड़ी आ गयी

राम के लम्स से तर गयी इक शिला
ज्ञान गीता का था बंदगी आ गयी

(हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं पुण्यतिथि (योमे-वफ़ात) के अवसर पर 16 जून, 2021 को ज़ूम क्लाउड पर आयोजित ऑनलाइन मुशायरा में पढ़ी गयी ग़ज़ल)

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

इश्क़ के बाग में शूल पलते रहे
प्यार के फूल को नित मसलते रहे

शोहरतें कामयाबी से मिलती रहीं
दुश्मनों के नगर देख जलते रहे

जो मिटाने चले ख़ुद ही वो मिट गये
नेक राहों पे हम रोज़ चलते रहे

ढोंगी ठगने लगे देश दुनिया के धन
झूठ कुर्सी पे सब की मचलते रहे

मुस्कुराती हुई ज़िन्दगी हँस पड़ी
'राज' के साथ साजन भी चलते रहे

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

मुहब्बत में जब दी नज़र ने गवाही
वफ़ा की डगर पर चला दिल का राही

परेशान हैं लोग दुबके हैं डर से
नगर में हर इक सू मची है तबाही

वतन के लिए मर मिटे वीर कितने
मगन मस्त सरहद पे फिर भी सिपाही

लबों पर तबस्सुम का ज़ेवर सजाये
क़सम सात फेरों की हमने निबाही

मुहब्बत भरी ज़िन्दगी कट रही है
सुहाने सफ़र पर चली 'राज' शाही

नाम	: राजेन्द्र तिवारी
जन्म तिथि	: 02 मार्च 1960
पता	: 'तपोवन' 124/38-बी, गोविन्द नगर कानपुर-208006
मोबाइल नंबर	: 8381828988
ई-मेल	: rajendratiwari121@gmail.com

राजेन्द्र तिवारी - श्रीमती स्वर्णलता
विवाह की तिथि : 06 मई 1987

वो हमारी ज़िन्दगी में इस तरह शामिल रहा
जैसे ख़ुश्बू गुल में, सीने में धड़कता दिल रहा

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

हँसते-हँसते ही बरसात-सी आ गयी
आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी

उनसे आँखें मिलीं हो गयी बात भी
इस मुलाक़ात पर फिर हँसी आ गयी

जागती आँख का ख़्वाब सच हो गया
मुझसे मिलने मेरी ज़िन्दगी आ गयी

याद की छाँव ओढ़े हुए धूप में
रास सहरा को तश्नालबी आ गयी

सबकी आँखों में इक आम चेहरा था वो
जाने क्यों बस तबीयत मेरी आ गयी

मोजिज़ा ये मुहब्बत में मुमकिन हुआ
प्यासे सहरा में दरिया-दिली आ गयी

शेर कहकर मिला और 'राजेन्द्र' क्या
कुछ ख़ुशी मिल गयी, ताज़गी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

ये माना मेरी कोई हस्ती नहीं है
मगर ज़िन्दगी इतनी सस्ती नहीं है

यहाँ बात तहज़ीब से कीजियेगा
मेरा घर है मुर्दों की बस्ती नहीं है

ख़िताबों की ख़ातिर उसूलों का सौदा
ग़ुलामी है ग़ैरतपरस्ती नहीं है

अगर फ़र्क़ है सतह में और तह में
तो फिर कामयाबी बरसती नहीं है

उन्हें रास क्या आये लफ़्ज़ों की सोहबत
जहाँ दिल नहीं दिल में मस्ती नहीं है

नाम	: विजय वाजिद
जन्म तिथि	: 14 सितम्बर 1968
पता	: गली नंबर 6, ईशर नगर, ब्लाक-सी बैक साइड GNE कॉलेज, लुधियाना 141006
मोबाइल नंबर	: 946 335 4684
ई-मेल	: vijayvajid68@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

मुझमें भी, तुझमें भी तो कमी आ गयी
यूँ नहीं फ़र्श पर दोस्ती आ गयी

हर अँधेरा मिटा रौशनी आ गयी
जब ख़यालों में कुछ पुख़्तगी आ गयी

पहले तो फैलती तिश्नगी आ गयी
पीछे-पीछे कोई फिर नदी आ गयी

ग़ैर क्या-क्या कहेंगे मेरे हाल पर
गर तुझे भी जो मुझ पर हँसी आ गयी

बात दुनिया के ग़म की चली थी मगर
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'

मौत से बच गये ज़िन्दगी से घिरे
एक आफ़त गयी, दूसरी आ गयी

नाम	: कुमारी स्मृति कुमकुम
जन्म तिथि	: 29 मार्च
पता	: क़ाज़ी बाग़ ,पोस्ट गुलज़ारबाग़, आलमगंज, पटना सिटी
मोबाइल नंबर	: 765 485 8853

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

हर तरफ़ दहशतों में कमी आ गयी
दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी

दर्द झेला बहुत हमने गत साल में
साल आया नया फिर ख़ुशी आ गयी

मौत के दरमियाँ फ़ासले कम हुए
ज़िंदगी के लिए ज़िंदगी आ गयी

आज हालात बिगड़े हुए हैं सनम
कुछ मुहब्बत में ऐसी नमी आ गयी

बेमुरव्वत जहाँ में मुहब्बत तिरी
रात अमावस में ज्यूँ चाँदनी आ गयी

जाम छलके नहीं बेबसी देखिए
रास 'कुमकुम' को अब ख़ुदसरी आ गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

नज़र और कुछ दे रही है गवाही
बिछड़कर मिला ना वो नयनों का राही

सितमगर हुआ है ज़माना दिलों का
लुटाया है दिल और आयी तबाही

नहीं फिर मिला वो पहाड़ों के रस्ते
मिला प्यार से था मुझे जो सिपाही

तड़प ये दिलों की कहाँ कोई जाने
दुआ दे रही है ये नूरे-इलाही

फ़रेबी जहाँ, मतलबी यार सारे
कि फंदे से लटकी गले की सुराही

कभी गुल खिले थे, बहारों में यारो
तड़पती है 'कुमकुम' मिली क्यों सियाही?

नाम : मोहम्मद शकील ख़ाँ

कलमी नाम : शकील सासरामी

जन्म तिथि : 5 जुलाई 1966

पता : रहमान मस्जिद के निकट, मुहल्ला समनपूरा राजाबाज़ार, बेली रोड पीलर नम्बर 49, पटना पिनकोड 800014

मोबाइल नंबर : 9835642267

मोहम्मद शकील ख़ाँ - नसरीन बानो
विवाह की तिथि : 13 मार्च 1995

वो ख़मोशी की बहुत शौक़ीन है
किस क़दर अच्छी मेरी नसरीन है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

थी ज़रूरत जो घर की वही आ गयी
घर में बेटी मेरे चाँद-सी आ गयी

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नयी ज़िन्दगी आ गयी

हो गया नज़्म मेरी तवज्जो का फिर
फिर ख़बर देखिये क़ैद की आ गयी

देख कर आपको मेरे दिल ने कहा
आप आए ख़ुशी दोहरी आ गयी

दावते-हुस्न में फिर इज़ाफ़ा हुआ
फिर किताबे-ग़ज़ल दीदनी आ गयी

आप आए जो सैरे-चमन को ज़रा
लाला-रुख़ पे नयी ताज़गी आ गयी

हो गया हल मेरा मसअला शुक्रिया
काम मेरे तेरी दोस्ती आ गयी

रुख़ जो बदला किसी ने तो ऐसा लगा
रह में दीवार इक आहनी आ गयी

मैंने देखा जो बकरी चराते हुए
बाख़ुदा मुझको यादे-नबी आ गयी

बात होती नहीं अदलो-इंसाफ़ की
मेरे मौला ये कैसी सदी आ गयी

याद आयी जो पिछले पहर आपकी
एक ताज़ा ग़ज़ल दौड़ती आ गयी

शे'रगोई बहुत ही बड़ी चीज़ है
ये न कहना कभी शाइरी आ गयी

क्या है ता'बीर इसकी बताये कोई
मेरे ख़्वाबों में कल जलपरी आ गयी

फिर मुहब्बत का पैग़ाम उसने दिया
राजभाषा की फिर डायरी आ गयी

नाम : शरद रंजन 'शरद'
जन्म तिथि : 19 अप्रैल 1958
पता : 'जिजीविषा', राम-रमा कुंज, विवेक विहार, हनुमान नगर, पटना - 800020
व्हाट्सएप नंबर : 7319880575
ई-मेल : sharadranjansharad@gmail.com

शरद रंजन 'शरद' - सुधा सिंह
विवाह की तिथि : 10 मार्च 1992

ज़िन्दगी तेरी सदा रखता हूँ
दिल में हर पल ये दुआ रखता हूँ

हमसफ़र है वो 'शरद' सच की तरह
साथ सपनों को सजा रखता हूँ

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

फिर से चिट्ठी वही सुबह की आ गयी
दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी

डाकिया बनके सूरज वहाँ भी गया
मौत का ख़त मिला ज़िंदगी आ गयी

है ये बच्चे का दिल कब बुरा मानता
रोते-रोते हमेशा हँसी आ गयी

इतनी नफ़रत रही फिर भी मिलते कहीं
याद छूटी हुई दोस्ती आ गयी

फिर भी उम्मीद है ज्यों अँधेरे में लौ
क्या हुआ जो घड़ी आख़िरी आ गयी

ख़ुद के भीतर ही देखा कहाँ खोट है
जब भी कोशिश में कोई कमी आ गयी

दुख छुपाया बहुत पर पता चल गया
ख़ुश्क आँखों में थोड़ी नमी आ गयी

दर को मंदिर बना सबसे मिलता रहा
धीरे-धीरे 'शरद' बंदगी आ गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

ठोकरें खा गिरे उठ के चलते रहे
रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

गोद माँ की मिली और मिट्टी की भी
खेलते उनमें सपनों से पलते रहे

बस उजाला दिखा उसको हम कब दिखे
आग में जिसकी चुपचाप जलते रहे

काँच के शहर में मोम-सा दिल रखा
ख़ुद जमे और ख़ुद ही पिघलते रहे

पा के सब कुछ जहाँ में रहा ख़ालीपन
छूटता सब गया हाथ मलते रहे

कुछ न चाहा किसी से तो किस बात पर
यूँ ही बच्चों के जैसे मचलते रहे

लाद कर मन की गठरी चले उम्रभर
वक़्त की मुट्ठियों से फिसलते रहे

ख़ाक में तो 'शरद' मिलना है एक दिन
सोचकर नंगे पाँवों ही चलते रहे

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

भला जो भी उसका तो होगा भला ही
है देखा कहाँ बस पढ़ा और सुना ही

वो कुछ कह रहा है मैं कुछ सुन रहा हूँ
नज़र और कुछ दे रही है गवाही

उजाले हुए क़ैद उनके घरों में
हमारे तो हिस्से हमेशा सियाही

मेरी आँखों में बन के आँसू रहा वो
सदा भी कहाँ दी न मुझको दिखा ही

इबारत तरक़्क़ी की लिखते गये पर
लिखा जो भी हाथों से अपने मिटा ही

क़यामत की रातें बढ़ी आ रही हैं
न सूरज को ढँक ले कहीं ये सियाही

बिना जुर्म के सब सज़ाएँ तो काटीं
लिखे मौत शायद मेरी बेगुनाही

वो सुख है कहाँ सब जिसे ढूँढ़ते हैं
ख़ुद अपने को खोये गँवाये बिना ही

है जाना 'शरद' मंज़िलों से भी आगे
कोई भी हो सूरत कहाँ रुकता राही

नाम : फ़रीदा अंजुम
जन्म तिथि : 25 मई 1995
पता : तारणी प्रसाद लेन, छोटी मस्जिद के पास
पटना सिटी -800008
मोबाइल : 773 903 2672
ई-मेल : faridaanjum00000@gmail.com

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

सियासत फ़क़त अब है राहे-तबाही
कि ज़ोरो-जफ़ा पर है बुनियाद-ए-शाही

जियूँ या मरूँ क्या ग़रज़ इससे तुझको
मिरा हाल ख़ुद जानता है इलाही

सफ़र पर चले हो तो इतना समझ लो
कि मंज़िल पे पहुँचेगा बा-अज़्म राही

असासा तो सब बिक चुका है कभी के
मुक़द्दर में लिक्खी है घर की तबाही

ज़बाँ तर्जुमानी करे कुछ भी लेकिन
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

तिरा नाम लेकर ही जीती हूँ अब तक
तड़पती हूँ जैसे कि बे-आब-माही

हक़ीक़त यही है कि इंसान 'अंजुम'
मुहब्बत की करते हैं सब ख़ैरख़्वाही

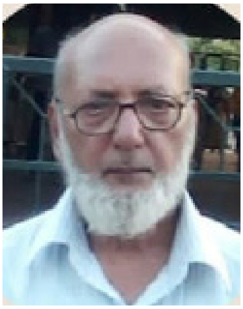

नाम : सईद रहमानी

जन्म तिथि : 25 जून,1936

पता : प्रधान संपादक,अदबी महाज़ दीवान बाज़ार, कटक ओड़िसा 753001

व्हाट्सएप नंबर : 797 843 9220

ई-मेल : sayeedrahmani@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

दोस्ती में ये कैसी कमी आ गयी
दरमियाँ अपने क्यों दुश्मनी आ गयी

मेरे जाने की उसको ख़बर जब मिली
उसकी आँखों में देखो नमी आ गयी

उनके चेहरे से जिस दम नक़ाब उठ गया
हर तरफ़ रौशनी-रौशनी आ गयी

वह फिसलकर गिरा कैच में जिस घड़ी
यक-ब-यक मेरे लब पर हँसी आ गयी

मुश्किलों के शिकंजे में घिर कर उसे
अपने मालिक की फिर बंदगी आ गयी

मौसमे-गुल के आते ही हर-सू सईद
सारे फूलों पे फिर ताज़गी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

उमीदों की खेती को मिलता नहीं जल
बरसता नहीं है इधर आ के बादल

अदावत की बर्फ़ीली वादी में जाकर
चलो बाँट आयें मुहब्बत के कम्बल

कड़ी धूप में छाँव देता है हरदम
मुझे अपनी माँ की दुआओं का आँचल

जो करता है बलवान होने का दावा
वही मेरी नज़रों में सबसे है निर्बल

मैं धीरज के अंतिम चरण पर खड़ा हूँ
हुआ जब से कोशिश का हर पेड़ निष्फल

विरह वेदना में वो गाँव की गोरी
बहाती है आँसू में नैनों से काजल

जिसे तुम समझते हो अनमोल सोना
वो मेरी नज़र में है बेकार पीतल

'सईद' अब उजालों का हर शहर मुझको
नज़र आ रहा है अँधेरों का जंगल

अर्कान- मफ़ाईलुन x 4

तुम्हारे हुस्न ने लोगों को दीवाना बना डाला
कि जलती शम'अ ने मुझको भी परवाना बना डाला

ज़रा क्या उसने देखा ग़ौर से मेरी तरफ़ इक दिन
बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

सजी थी मयकशों की जिस जगह महफ़िल क़रीने से
उसे मिलकर सभी ने अपना मयख़ाना बना डाला

ख़ुमार आलूद आँखों का नशा चढ़ने लगा जिस दम
उन्हें भी मयकशों ने अपना पैमाना बना डाला

ये माना लोग बन जाते हैं पागल इश्क़ के हाथों
किसी की आशिक़ी ने उसको फ़रज़ाना बना डाला

वज़ारत हाथ आते ही 'सईद' उसने बड़ी जल्दी
जो छोटी झोंपड़ी थी उसको काशाना बना डाला

नाम	: सिद्धेश्वर
जन्म तिथि	: 20 जून 1959
पता	: 'सिद्धेश सदन' अवसर प्रकाशन (किड्स कार्मल स्कूल के बायें) पोस्ट बीएससी, द्वारिकापुरी, रोड नं. 2 हनुमान नगर, कंकरबाग़ पटना
व्हाट्सएप नंबर	: 92 347 60 365
ई-मेल	: sidheshwarpoet.art@gmail.com

सिद्धेश्वर - वीणा देवी
विवाह की तिथि : 6 मार्च 1992

इस ज़िन्दगी को प्यार से हमने सँवारा है
ता-उम्र साथ देने का वादा हमारा है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

दूर अँधेरा हुआ, रौशनी आ गयी
मौत को मात दे, ज़िन्दगी आ गयी

लाल अंगार रखकर हथेली पे हम
जब चले राह में हर ख़ुशी आ गयी

एक दिन मिल ही जाना है मिट्टी में जब
किसलिए आप में बरहमी आ गयी

दिल की करतूत यादों के दफ़्तर में थी
हँसते-हँसते नयन में नमी आ गयी

रब से शिकवा गिला बेसबब है, न कर
सोच इंसाँ में कितनी कमी आ गयी

ये बताये कोई आज 'सिद्धेश' को
दिल में नफ़रत की कैसे नदी आ गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

नज़र और कुछ दे रही है गवाही
कसक दिल की होटों पे लाना मनाही

जला आशियाना मेरा मेरे आगे
मुहब्बत की क़िस्मत में है बस तबाही

सिखाया हमें आँधियों ने सँवरना
कि काँटों से भी हमने हँसकर निबाही

तलाशे-गुहर में है खोयी मुहब्बत
अभी दूर है लज़्ज़तों की सुराही

ग़ज़ल-गीत को अपनी साँसों में भरकर
परेशाँ बहुत है क़लम का सिपाही

न 'सिद्धेश' को कुछ भी शिकवा-शिकायत
है बेख़ौफ़ इस पर है फ़ज़्ले-इलाही

नाम : सुनील कुमार
जन्म तिथि : 21 जनवरी 1964
पता : बी -11, इन्द्रपुरी पथ,सरिस्ताबाद रोड, पटना 8000 01
व्हाट्सएप नंबर : 943 100 3980
ई-मेल : sunil21011964@gmail.com

सुनील कुमार -श्रीमती नीलम कुमारी
विवाह की तिथि :

मैं तो अधूरा था जीवन में तुमने की भरपाई है
छूकर एहसासों से दिल की अंगनइया महकाई है

आँखों में इक़रार का काजल लब पे तबस्सुम, शर्म-हया
मेरे नाम की मेहँदी तुमने अपने हाथ रचाई है

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

इश्क़ कर देख ली बेबसी आ गयी
ग़म के साये में सारी ख़ुशी आ गयी

पत्थरों को सुनाई है देता कहाँ
हाँ, समझ में हमें बेरुख़ी आ गयी

आपने बदला तेवर जो ख़म ठोंककर
नरमियाँ रुख़ हठीले में भी आ गयी

उस नज़र की ज़ुबाँ जब मैं पढ़ने लगा
साफ़ सब कुछ कही-अनकही आ गयी

हौले-हौले मचलता था दीवाना-दिल
रूठते उनके क्यूँ बेकली आ गयी

यूँ परत-दर-परत खुल रही साज़िशें
कुछ दबी कुछ खुली मुख़बिरी आ गयी

हो गया दिल के दर्पण से जब सामना
सामने ख़ुद ही अपनी कमी आ गयी

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

मुहब्बत जो की तो वफ़ा से निबाही
है फ़ितरत मेरी मैं हूँ उल्फ़त का राही

तेरे हुस्न का जल्वा आतिश-फ़िशाँ है
कई गीत-गज़लों में हमने सराही

दबा दिल में था जो बयाँ हो रहा है
गुनहगार ख़ुद दे रहा है गवाही

कहाँ जाऊँ मैं रंज-ओ-ग़म अपने लेकर
बुरा हो ग़मे-इश्क़ का या इलाही

मयस्सर ज़ुबाँ है मगर आप चुप हैं
है नीची नज़र आपकी उज़्र-ख़्वाही

अजी बोलिए भी ज़रा खुल के कहिए
कि सच बोलने की नहीं है मनाही

नाम : सुरेंद्र नाज़ बदायूँनी
जन्म तिथि : 15 फ़रवरी 1974
पता : 99-पक्का बाग, जनपद बदायूँ, (उ. प्र.) - 24 3601 भारत
व्हाट्सएप नंबर : 8077 2750 66
मोबाइल नंबर : 7830 2956 50

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा-ए-तरह
'आपकी आँख में क्यों नमी आ गयी'
पर कही गयी ग़ज़लें

❀

वो महीना वो दिन वो घड़ी आ गयी
तुम न आये मगर जनवरी आ गयी

रूप-रंगत वही है हर एक फूल में
ख़ुशबुओं में मगर कुछ कमी आ गयी

उसके काँधे पे क्या मैंने सर रख लिया
ख़्वाब भी आ गये, नींद भी आ गयी

कोई तो घर की दीवार कमज़ोर है
वरना बुनियाद में क्यों कमी आ गयी

कश्तियाँ साहिलों को तरसने लगीं
नाख़ुदाओं में जब से ख़ुदी आ गयी

कुछ तो धुँधला मिरा आइना हो गया
कुछ नज़र में भी मेरी कमी आ गयी

गुफ़्तगू से तेरी फ़ायदा ये हुआ
मेरे अल्फ़ाज़ में चाशनी आ गयी

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

❀

कोई जिसमें खिड़की कोई दर नहीं है
वो कुछ और ही है मगर घर नहीं है

मिरे पेड़ का मुझको साया बहुत है
नहीं हो अगर फल मयस्सर नहीं है

यहाँ एक-दूजे के क़ातिल सभी हैं
किसी हाथ में कोई ख़ंजर नहीं है

अभी उग भी सकती है फ़स्ले-मुहब्बत
है प्यासी ज़मीं दिल की, बंजर नहीं है

कहाँ रक्खें दस्तार अम्न-ओ-अमाँ की
बदन तो बहुत हैं कोई सर नहीं है

तमन्ना-ए-परवाज़ तो है हमें भी
मगर पंछियों-सा मुक़द्दर नहीं है

नये दौर के सब किसान अब नये हैं
किसी गाँव में कोई हलधर नहीं है

चले आइये 'नाज़' ये मैकदा है
किसी को किसी से यहाँ डर नहीं है

नाम : ओसैद रहमान
जन्म तिथि : 14 अक्टूबर 1995
पता : B-28/5A, Sunshine Apartment, 1st Floor, Flat No. 202, Shaheen Bagh, AFE-2, Jamia Nagar, New Delhi - 110025
व्हाट्सएप नंबर : 9971490955
ई-मेल : osaid.rahman@gmail.com

अर्कान- फ़ाइलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे'
पर कही गयी ग़ज़लें

हादसे सब मेरे सर से टलते रहे
जब तलक माँ के दामन में पलते रहे

हौसला सुर्ख़रू हो गया और याँ
मलने वाले फ़क़त हाथ मलते रहे

वो अड़े ही रहे अपनी हर बात पर
उनकी हर बात पर हम पिघलते रहे

चंद काग़ज़ के टुकड़ों की ख़्वाहिश में हम
रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे

इक निगाहे-करम के लिए उनकी हम
एक बच्चे की तरह मचलते रहे

अक़्लो-दिल अपनी-अपनी जगह ठीक थे
दिल फिसलता रहा, हम सँभलते रहे

जाने वाला चला भी गया पर यहाँ
याद के सौ दिए दिल में जलते रहे

एक वो ख़ुश रहें, हम ये ख़्वाहिश लिए
सुबह से शाम तक ग़म में ढलते रहे

ऐ 'ओसैद' उनसे उम्मीद ही क्यूँ रखी
मौसमों की तरह जो बदलते रहे

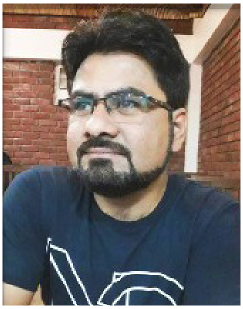

नाम	: के. पी. अनमोल
जन्म तिथि	: 19 सितंबर 1989
पता	: 321/4 सोलानीपुरम, रुड़की (उत्तराखण्ड)- 247667
व्हाट्सएप नंबर	: 8006623499
ई-मेल	: kpanmol.rke15@gmail.com

के. पी. अनमोल - श्रीमती अनामिका
विवाह की तिथि : 8 अप्रैल 2015

छत पर बैठे-बैठे तुझसे जी भर बतियाने के बाद
खिल उठता हूँ जैसे पत्ते बारिश थम जाने के बाद

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

तुम्हें जिस भरोसे का सर काटना था
हमें उसके दम पे सफ़र काटना था

सफ़र ज़िंदगी का था मुश्किल बहुत ही
था मुश्किल बहुत ही मगर काटना था

क़फ़स से, निशाने से क्या लेना देना
उन्हें बस परिंदे का पर काटना था

निगाहों में जिसकी बला का था जादू
हमें उस बला का असर काटना था

मनाते भी दिल को तो कैसे मनाते
बिना तेरे पूरा पहर काटना था

सहन, नीड़, पक्षी सभी थे रुआँसे
उधर उनकी ज़िद थी शजर काटना था

मकड़जाल दुनिया की इन बंदिशों का
समझ पाये कब, किस क़दर काटना था

भला क्यूँ न यादों को 'अनमोल' करते
यहाँ वक़्त जब मुख़्तसर काटना था

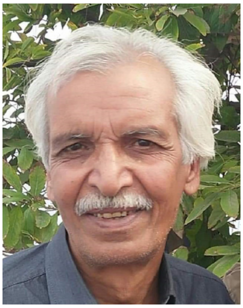

नाम	: कैलाश मनहर (कैलाश चन्द्र शर्मा)
जन्म तिथि	: 02 अप्रैल 1954
पता	: स्वामी मुहल्ला, मनोहरपुर, जयपुर राजस्थान -303104
व्हाट्सएप नंबर	: 9460757408
ई-मेल	: manhar.kailash@gmail.com

कैलाश चन्द्र शर्मा - श्रीमती निर्मला शर्मा
विवाह की तिथि : 11 दिसम्बर 1975

तुम ही मेरे मन बसी, तुम से ही है प्यार
तुम से ही तो बन सका, मेरा घर-परिवार

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

उदासी को ओढ़ा उदासी को पहना
हमें रास आया उदासी में रहना

उदासी ने बख़्शी है नज़रों में क़ुव्वत
उदासी है सहरा में नद्दी का बहना

भँवर में उतरने का मन और तटों-सा
थपेड़ों पे लहरों के कट-कट के ढहना

मैं ख़ुद में ही खोया हुआ हूँ मुझे अब
न सुनना तुम्हारी न कुछ तुम से कहना

न सुलझा सकेगा कोई ये पहेली
उदासी कभी पहने ख़ुशियों का गहना

अर्कान- फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

उठ रहे हैं गाँव से डेरे मगर
गीत बंजारों ने फिर टेरे मगर

है बहुत गर्मी इधर माहौल में
तेरी यादें साथ हैं मेरे मगर

हैं बहुत गहरे अँधेरे राहों में
पर चमकते दो नयन तेरे मगर

भाग जाऊँ मैं कहीं वीराने में
बँध रहे हैं बाँहों के घेरे मगर

रिस रहे हैं पाँवों के छाले मेरे
काटता हूँ गलियों के फेरे मगर

नाम	: ओमप्रकाश खींची 'दिल' सीकरी
जन्म तिथि	: 27 फ़रवरी 1955
पता	: 'बसेरा', बसन्त विहार कॉलोनी, वार्ड नम्बर-47, सीकर - 332001
व्हाट्सएप नंबर	: 09413071338
ई-मेल	: Omprakashkhinchiskr@gmail.com

ओमप्रकाश खींची 'दिल' सीकरी - श्रीमती चन्द्रकान्ता खींची 'चाँदसा'
विवाह की तिथि : 03 जुलाई 1972

मृगनयनी, गजगामिनी, केशर-वर्णी नार
'दिल' की धड़कन 'चाँदसा', है मम प्राणाधार

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

उबूरी है सब कुछ जहाँ आरज़ी है
ख़ुदा के सिवा क्या यहाँ दायमी है

बड़ी ख़ूबसूरत ये महफ़िल सजी है
चले आओ तुम भी, तुम्हारी कमी है

तुम्हारी मुझे जबसे सोहबत मिली है
ग़ज़ल-गीत तब से मेरी ज़िंदगी है

यक़ीनन ग़लतफ़हमी मुल्हिद की है ये
कि दुनिया का ख़ालिक़ कोई आदमी है

हर इक शय में उसको ख़ुदा ही दिखेगा
तबीयत में उसके अगर आशिक़ी है

अदावत है इनकी तो सदियों पुरानी
कहाँ ज़हनो-दिल में ऐ यारो बनी है

फ़क़त मसअला है तुम्हारी नज़र का
अगर नज़रें बदलीं तो हर जा ख़ुशी है

न तोड़ो कली को अरे शाख़ से तुम
अभी तो ये यौवन की जानिब बढ़ी है

उलझती है अक्सर ये हक़ के दिये से
हवा ये यक़ीनन ऐ 'दिल' सरफ़िरी है

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

ग़रीबी, बिमारी, अशिक्षा, सियाही
बढ़े रोज़, है क्या यही लोकशाही

नज़र आ रही है हमें तो तबाही
ख़िलाफ़े-हुकूमत जो दी है गवाही

जहाँ तो है फ़ानी उसे जीतना क्या
चलो जीत दिल, लूट लें वाहवाही

हर इक अदना नेता भी दावा करे है
वही ख़ादिमे-मुल्क, सच्चा सिपाही

उगा है युगों की सियाही मिटाकर
जो शम्स-ए-वतन अब न डूबे इलाही

कहे लब जो खुलकर कहाँ सच है वो 'दिल'
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

‘21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें’ के सुख़नवरों के जीवन साथी

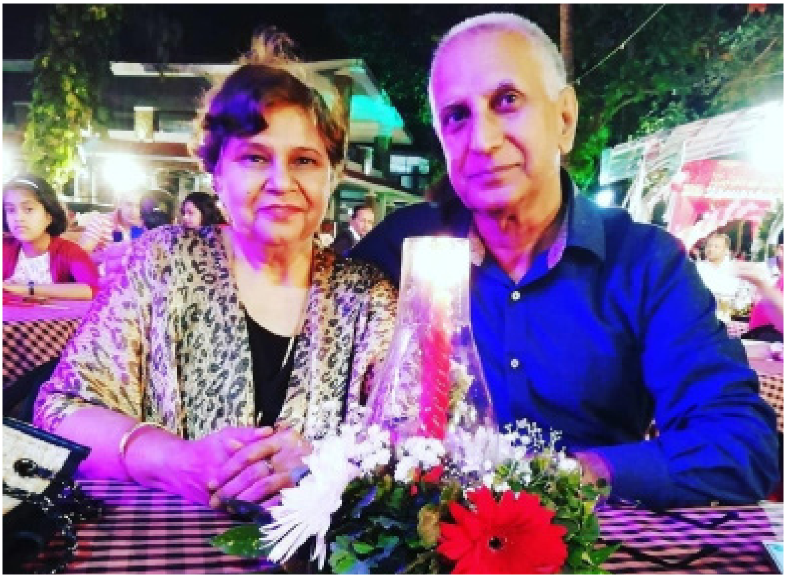

राजेश कुमारी राज -वीरेंद्र सिंह

चैतन्य चंदन - अनूपा केसरी
विवाह की तिथि : 12 जुलाई 2013

डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ - मो असरार आलम सैफ़ी
विवाह की तिथि : 21 अक्टूबर 1992

प्रणय कुमार सिन्हा - प्रो. माया सिन्हा
विवाह की तिथि : 20 मई 1977

विज्ञान व्रत - श्रीमती अशोक विज्ञान
विवाह की तिथि : 30 अप्रैल 1968

डॉ. कृष्ण कुमार बेदिल - उर्मिला रस्तोगी
विवाह की तिथि : 26 जून 1964

राजेश जैन 'राही' - अनिता जैन
विवाह की तिथि : 16 जुलाई, 1991

ताराचन्द 'नादान'-सरला शर्मा
विवाह की तिथि : 23 नवम्बर,1987

नाम	: राजेश कुमारी राज
जन्म तिथि	: 10 जून 1956
पता	: H 2, AFI BUILDINGS, MARINE LINES, MUMBAI 400020
व्हाट्सएप नंबर	: 832 675 5713 / 812 653 9706
ई-मेल	: rajeshvirendra@gmail.com

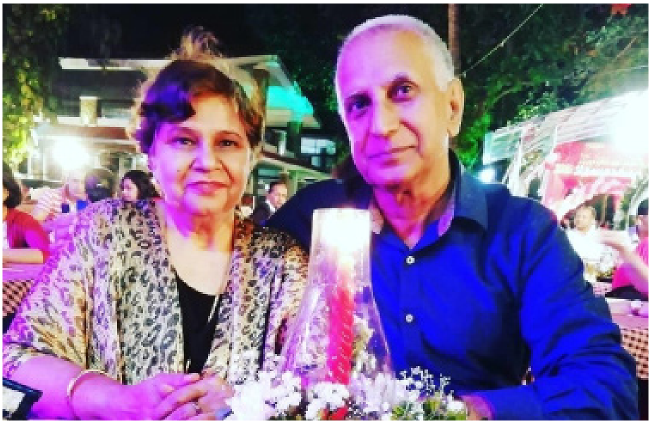

राजेश कुमारी राज -वीरेंद्र सिंह

आइना ये देखकर तेरा सँवर जाती हूँ मैं
डूबकर तेरी इन आँखों में निखर जाती हूँ मैं

अर्कान- फ़ऊलुनx 4

बहारों के दिलकश ये साए न होते
अगर ज़िंदगी में तुम आए न होते

हुकूमत यहाँ सिर्फ़ ख़ारों की चलती
गुलों ने बग़ीचे सजाए न होते

परिंदे चहकते न दिल के शजर पर
नशेमन वफ़ा ने बनाए न होते

मुहब्बत का मतलब समझ ही न आता
दिए आशिक़ी के जलाए न होते

सबा ने जिया ने गले से लगाकर
इन आँखों के आँसू सुखाए न होते

कभी नाज़ अपने उठाता न कोई
कभी रूठने पर मनाए न होते

चले आते नज़दीक ज़ेर-ओ-जबर सब
ग़मों के लिए भी पराए न होते

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

चला जा रहा तू किधर बोल राही?
है सन्नाटा हर सू सियाही-सियाही

रुकी आवा-जाही थमी ज़िन्दगी है
वबा ने मचायी है जबसे तबाही

खड़े ऐसे में भी ये खेतों में हलधर
उधर सरहदों पर डटे हैं सिपाही

गुनाहों की यारो हुई पार कश्ती
किनारे पे अटकी मगर बे-गुनाही

तेरी तिश्नगी पर हँसे आज पनघट
वो मिट्टी के करवे वो टूटी सुराही

यहाँ दाम दस्तार के भी लगे हैं
बचेगी कहाँ ये तेरी कज-कुलाही

तुम्हारी अदालत तुम्हारा है मुंसिफ़
कहाँ अब चलेगी हमारी गवाही

दबाई सियासत ने बक्से में अर्ज़ी
न वो पास करती न करती मना ही

नाम : प्रशांत कुमार मिश्र
उपनाम : साहिल मिश्र
जन्म तिथि : 4 फ़रवरी 1981
पता : 'बसेरा', बसन्त विहार कॉलोनी, वार्ड नम्बर-47, सीकर - 332001
व्हाट्सएप नंबर : 9519100101 / 9415034400
ई-मेल : saahiladventure@gmail.com
saahiladventure@yahoo.co.in

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

ख़ता गर मेरी आशनाई न होती
जहाँ में मेरी जगहँसाई न होती

ये अश्कों की बारिश, ये तन्हाई, आहें
बिना तेरे दौलत ये आई न होती

बड़ा होता अपने भी घर का ये आँगन
जो दीवार तुमने उठाई न होती

सजी मेरे लब पे भी होती हँसी तब
अगर तुमने की बेवफ़ाई न होती

उठाकर यूँ सर कैसे चल पाते 'साहिल'
जो इज़्ज़त की दौलत कमाई न होती

अर्कान- मुफ़ाईलुनx 4

तुम्हारे इश्क़ ने यूँ मुझको शाहाना बना डाला
किसी ने फूस के ज्यों घर को काशाना बना डाला

नयी फ़रियाद ले आतीं मेरी साँसें, मेरी धड़कन
इन्होंने गोया मेरे दिल को ही थाना बना डाला

बला का ख़म लिये छायीं तेरे रुख़ पर तेरी ज़ुल्फ़ें
इसी क़ातिल अदा ने मुझको दीवाना बना डाला

तुम्हीं जब एक बाशिंदा थे मेरी दिल की बस्ती में
बताओ किसने मेरे दिल को वीराना बना डाला

ग़ज़ब की है तिलिस्मी चीज़ यारो ये मुहब्बत जो
मुझे भी आदमी से ज़िंदा-बुतख़ाना बना डाला

बड़ा नादान था यारों मैं उसके इश्क़ से पहले
मगर धोखे ने उसके मुझको फ़रज़ाना बना डाला

ये उनके हुस्न का जादू नहीं तो और क्या 'साहिल'
जो मुझ जैसे मलंग आदम को परवाना बना डाला

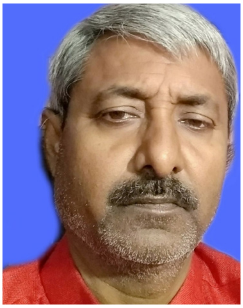

नाम	: सुधीर कुमार प्रोग्रामर
जन्म तिथि	: 1 अक्टूबर 1961
पता	: अंगलोक पार्वती मिल, सुल्तानगंज भागलपुर 813 213
व्हाट्सएप नंबर	: 933 492 2674
ई-मेल	: skp11061@rediffmail.com

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नहीं चाँद फिर तो बहारों में होते
अगर सारे तारे क़तारों में होते

बिठाते बिछौना बिछाकर तो साहब
मुहब्बत के अंकुर दरारों में होते

बिखरते नहीं टूटकर जो सितारे
तो सूरज के क़िस्से शरारों में होते

किये आज तक जो निभा देते वादे
तो कुर्बान बस इक इशारों में होते

बहुत तेज़ तैराक से यह सुना है
बड़ी भूल अक्सर किनारों में होते

अजी लोग आपस में मिलते नहीं तो
तबाही हमेशा अरारों में होते

नाम	: चैतन्य चंदन
जन्म तिथि	: 28 फ़रवरी 1980
पता	: पुत्र- स्व. घनश्याम प्रसाद, बड़ी कोठी, लल्लू बाबू का कूचा, पटना सिटी- 800009
व्हाट्सएप नंबर	: 9654764282
ई-मेल	: luckychaitanya@gmail.com

चैतन्य चंदन - अनूपा केसरी
विवाह की तिथि : 12 जुलाई 2013

कितने क़िस्से हैं ज़िंदगानी के
एक अदना से जिस्मे-फ़ानी के

तेरे आँखों के सागर से बस प्रेम ही प्रेम छलकता है
बस एक बूँद रस पाने को, यह चातक रोज़ तरसता है

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

वतन की फ़िज़ा में मची है तबाही
कहाँ फ़िक्र करते हैं ज़िल्ले-इलाही

सचाई अजी कैसे निकले कफ़न से
बिकी आज अख़बार की भी सियाही

सियासी सड़ांधों से घुटने लगा दम
भला कौन इसकी करेगा उड़ाही

यहाँ मुंसिफ़ों की नज़र है सियासी
करूँ कैसे साबित मैं अब बेगुनाही

गयी नौकरी तो भी ग़म क्या है 'चंदन'
उठा लूँगा करछी, भगोना, कड़ाही

नाम : डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
जन्म तिथि : 4 अक्टूबर 1962
पता : द्वारा अरुण कुमार, रूपसपुर नहरपर, बेली रोड, पटना - 801503
व्हाट्सएप नंबर : 957 681 5977
ई-मेल : annpurnashrivastava1@gmail.com

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

यक़ीं कैसे कर लूँ तेरी बेगुनाही
नज़र और कुछ दे रही है गवाही!

सफ़र ज़िन्दगी का कटे है मज़े में
अगर साथ हो कोई दिलदार राही!

रहे रात-दिन आप से दूर जब हम
वफ़ा आप ने हम से कैसी निबाही

बहुत तीर लफ़्ज़ों के दिल में चुभे हैं
चलो अब तो हो जाए फ़ज़्ले-इलाही

न तुम हम से मिलते, मुलाक़ात होती
ग़ज़ल कैसे होती ग़ज़ल बाद शाही

नाम : देवेंद्र गौतम
जन्म तिथि : 8 जनवरी 1955
पता : ई-202, सेवियर ग्रीन आर्च, टेक्नोजोन 4, जीएच 10 आम्रपाली ड्रीम वैली. एकमूर्ति, बुद्धा क्रासिंग, ग्रेटर नोएडा-201309, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 8340338337
व्हाट्सएप नंबर : 8527149133
ई-मेल : devendragautam20@gmail.com

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें

अर्कान- फ़ऊलुन x 4

तबाही... तबाही... तबाही... तबाही
ये किस मोड़ पर आ गए हम इलाही!

मिटाई गयी कैसे हर्फ़े-हक़ीकत
कहाँ सो रहे थे क़लम के सिपाही

कभी बादशाही के अंदर फ़क़ीरी
फ़क़ीरी के अंदर कभी बादशाही

पता मंज़िलों की बताता है हमको
न रहबर दिखाता है अब रास्ता ही

यक़ीं कौन करता है किसकी ज़बाँ पर
भला कौन देता है किसकी गवाही

न फूलों की ख़ुशबू बची है सलामत
न गुलशन में बाक़ी है ताज़ा हवा ही

निगाहे-करम की ज़रूरत किसे है
बुलंदी पे लायी तेरी कम-निगाही

कड़ी धूप में भी चला जा रहा है
वो अनजान रस्तों का अनजान राही

नाम	: डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ
जन्म तिथि	: 5 जनवरी 1978
पता	: डॉ. शमा इंटरनेशनल अकादमी रहमत कॉलोनी, ईशा नगर फुलवारी शरीफ़, पटना
व्हाट्सएप नंबर	: 938 689 4918
ई-मेल	: annpurnashrivastava1@gmail.com

डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ - मो असरार आलम सैफ़ी
विवाह की तिथि : 21 अक्टूबर 1992

मेरे मरने की आरज़ू तुम हो
और जीने की जुस्तजू तुम हो

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

भला इससे बढ़कर हो क्या बेपनाही
कि हक़ बात होंटों पे लाना मनाही

तिरी है हुकूमत, तिरी बादशाही
करम अपने बंदों पे कर दे इलाही

परेशान हद दर्जा हैं तेरे बंदे
बहुत हो चुकी माल-ओ-जाँ की तबाही

हो गर वैक्सीन, मास्क, दो गज़ की दूरी
तो ज़ालिम कोरोना की हो बाइ-बाइ

हर इक सम्त हो नाम हिन्दोस्ताँ का
बदल जाए भी रौशनी से सियाही

ज़बाँ आपकी कुछ अलग कह रही है
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

बहुत सख़्त नाज़ाँ हुआ तुमसे मिलना
निगाहों पे पहरे, गली में सिपाही

नाम	: प्रणय कुमार सिन्हा
जन्म तिथि	: 10 जुलाई 1954
पता	: मकान नंबर 41, रोड नंबर 12 इन्द्रपुरी, पटना 800024
मोबाइल	: 99 3 49 730 14
ई-मेल	: pranaykumarsinh10437@gmail.com

प्रणय कुमार सिन्हा - प्रो. माया सिन्हा
विवाह की तिथि : 20 मई 1977

प्यार उसका तो मेरी जागीर है
उसका मैं राँझा वो मेरी हीर है

❀

मिसरा -ए- तरह
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'
पर कही गयी ग़ज़लें
अर्कान- फ़ऊलुन x 4

नज़र और कुछ दे रही है गवाही
मगर दिल के अंदर मची है तबाही

उदासी है तारी मगर वो भी दिन थे
लबालब ख़ुशी से थी दिल की सुराही

दग़ा दे गया वो जो रहता है दिल में
लुटी दिल की बस्ती, मिटा दिल का राही

नहीं रास आयी वफ़ा की कहानी
न तय कर सके वो मेरी बेगुनाही

किसे फ़िक्र है मेरे बर्बादे-दिल की
न देगा कोई उस सितम की गवाही

न राहत कोई उनकी चाहत में यारो
ख़ुशी को मिली है, ग़मों की सियाही

सालिम बहर : बहर ए-हज़ज मुसम्मन सालिम में

ग़ज़लें

अर्कान : मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन

मात्रा क्रम ISSS ISSS ISSS ISSS

हफ़ीज़ बनारसी के मतले

ख़यालो-ख़्वाब से अब और दिल बहला नहीं सकते
फरेबे-शौक़ बस रुख़सत हम आगे जा नहीं सकते

हदीसे-तल्ख़ी-ए-अय्याम से तकलीफ़ होती है
सहर वालों को ज़िक्रे-शाम से तकलीफ़ होती है

जिगर का ख़ून देकर बादा-ए-गुलफ़ाम लेते हैं
हज़ारों जाम देते हैं अगर एक जाम लेते हैं

वफ़ूरे-शौक़ में हाथों से गिरकर टूट जाते हैं
लबों तक आते-आते कितने साग़र टूट जाते हैं

न अरमाने- जुनूँ निकला न उन ज़ुल्फ़ों के ख़म निकले
हर इक आईना-ख़ाने से परेशाँ हाल हम निकले

फ़क़त अल्फ़ाज़ की रंगीं क़बा अच्छी नहीं लगती
कहानी हो अगर बे-माजरा अच्छी नहीं लगती

मशहूर शायरों के मतले

यही इक वहम है, जो और कुछ जीने की हसरत है
कहीं पर है कोई ऐसा जिसे मेरी ज़रूरत है
शहरयार

सुनो ख़ुश-बख़्त लोगो! लम्हा-ए-नायाब आया है
ज़मीं पर पैरहन पहने बिना महताब आया है
शहरयार

उसी दिन घर नहीं आता कि जब आने को कहता है
मगर क्या रूठना उससे वो अपनी धुन में रहता है
परवीन शाकिर

हँसी मासूम-सी बच्चों की कॉपी में इबारत-सी
हिरण की पीठ पर बैठे परिंदे की शरारत-सी
बशीर बद्र

अँधेरे रास्तों में यूँ तिरी आँखें चमकती हैं
ख़ुदा की बरकतें जैसे पहाड़ों पर उतरती हैं
बशीर बद्र

हमारा दिल सवेरे का सुनहरा जाम हो जाये
चराग़ों की तरह आँखें जलें जब शाम हो जाये
बशीर बद्र

उदासी का ये पत्थर आँसुओं से नम नहीं होता
हज़ारों जुगनुओं से भी अँधेरा कम नहीं होता
बशीर बद्र

इबादत रात-दिन एक शख़्स की ऐसे नहीं की थी
खुला हम पे मुहब्बत आज से पहले नहीं की थी
शहरयार

हैं मौसम रंग के कितने गँवाये मैं नहीं गिनता
हुए कितने दिन उस कूचे से आये मैं नहीं गिनता
जॉन एलिया

जुनूँ के दम से आख़िर मर्तबा कैसा मिला मुझको
अभी फ़रहाद-ओ-क़ैस आए थे कहने मरहबा मुझको
इरफ़ान सत्तार

कहे देता हूँ गो है तो नहीं ये बात कहने की
तिरी ख़्वाहिश नहीं दिल में ज़ियादा देर रहने की
इरफ़ान सत्तार

मुसलसल झिलमिलाता है कि अब होने ही वाला है
इस आईने पे चेहरे का ग़ज़ब होने ही वाला है
मुज़फ़्फ़र हनफ़ी

उसे ग़म है कि बेटी के लिए लड़का नहीं मिलता
इधर हम हैं कि घर क्या फ़ोन पर बेटा नहीं मिलता
मुज़फ़्फ़र हनफ़ी

वो हटते थे किनारे से न दरिया पार करते थे
मगर हर बुलबुले हर मौज से तकरार करते थे
मुज़फ़्फ़र हनफ़ी

मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े

न झटको ज़ुल्फ़ से पानी ये मोती फूट जायेंगे
तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा मगर दिल टूट जायेंगे
राजेन्द्र कृष्ण, फ़िल्म-शहनाई(1964)

भरी दुनिया में आख़िर दिल को समझाने कहाँ जायें
मुहब्बत हो गयी जिनको वो दीवाने कहाँ जायें
शकील बदायूँनी, फ़िल्म-दो बदन(1966)

सजन रे झूठ मत बोलो ख़ुदा के पास जाना है
न हाथी है न घोड़ा है वहाँ पैदल ही जाना है
शैलेंद्र, फ़िल्म-तीसरी क़सम(1966)

किसी पत्थर की मूरत से मुहब्बत का इरादा है
परस्तिश की तमन्ना है इबादत का इरादा है
साहिर लुधियानवी, फ़िल्म-हमराज़(1967)

ख़ुदा भी आसमाँ से जब ज़मीं पर देखता होगा
मेरे महबूब को किसने बनाया सोचता होगा
राजेंद्र कृष्ण, फ़िल्म-धरती(1970)

मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा मिल गया होता
अगर तूफ़ाँ तूफ़ान नहीं आता किनारा मिल गया होता
आनंद बक्शी, फ़िल्म-आप आए बहार आई

यहाँ बदला वफ़ा का बेवफ़ाई के सिवा क्या है
मुहब्बत कर के भी देखा, मुहब्बत में भी धोखा है
शायर - तनवीर नक़वी, फ़िल्म जुगनू (1947)

बहारो! फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है
हवाओ! रागिनी गाओ मेरा महबूब आया है
शायर - हसरत जयपुरी, फ़िल्म - सूरज (1966)

21 वीं सदी के 21 वें साल की
बेहतरीन ग़ज़लें

ईश वंदना

ये दिल ढूँढ़े तुझे हर पल कहाँ भगवन छुपा है तू
तेरे दर्शन की मुझको प्यास है किस जा बसा है तू

कोई मन्दिर में ढूँढ़े तुझको कोई ढूँढ़े मस्जिद में
रमा कण-कण में है लेकिन न जाने क्यूँ छुपा है तू

बनाये चाँद, सूरज, तारे, धरती और गगन तूने
बड़ा संसार में कोई नहीं सबसे बड़ा है तू

जगत का तू ही पालनहार और दाता भी तू ही है
हर इक प्राणी का इस जग में सखा है तू पिता है तू

कृपा तेरी सभी मानव, पखेरू और पशु पर है
पराया कोई भी जग में नहीं सबका सगा है तू

तेरा साया है जिसके सर पे हरगिज़ मिट नहीं सकता
जगत में जिसका कोई भी नहीं उसका सखा है तू

महकते फूल, बहते झरने, नदियाँ और ये झीलें
'अरुण' कहते हैं लोगों से बड़ा है तू भला है तू

-अरुण कुमार आर्य

माँ

बड़ा कितना भी हो जाऊँ मगर बच्चा समझती है
मेरी माँ अब भी मुझको चाँद का टुकड़ा समझती है

न वो सोना न वो चाँदी न वो हीरा समझती है
कि माँ बच्चों को ही बस क़ीमती गहना समझती है

अलग कर ही नहीं सकती है बच्चों को वो जीते जी
वो बच्चों को तो अपने जिस्म का हिस्सा समझती है

हैं रिश्ते और भी दुनिया में कहने के लिए लेकिन
ये दुनिया माँ के रिश्ते को ही बस सच्चा समझती है

ज़रा भी आँच बच्चे पर कभी आने नहीं देती
ये माँ दुर्गा भी बनती है अगर ख़तरा समझती है

हुनर ये माँ को ही बख़्शा है क़ुदरत ने ज़माने में
वही बिन बोले ही बच्चे की हर भाषा समझती है

ज़माने से किसी सम्मान की चाहत नहीं मुझको
मेरी माँ जब मुझे गुर्बत में भी राजा समझती है

-अरविन्द असर

न जाने किस लिए कुछ लोग दुनिया छोड़ देते हैं
वो मरने के लिए अपनों को तन्हा छोड़ देते हैं

है तुम से और तुम्हारी ज़ात से नफ़रत ही कुछ ऐसी
जहाँ से तुम गुज़रते हो वो रस्ता छोड़ देते हैं

अँधेरे से नहीं डरते मगर है डर उजालों से
वो रातों में खुला दरवाज़ा अपना छोड़ देते हैं

उन्हें हर दिन नये लोगों से मिलना ख़ूब लगता है
पुराने जो भी रिश्ते हैं वो रिश्ता छोड़ देते हैं

नये दिन में नया क़िस्सा सुनाने के लिए 'असग़र'
वो रातों में हर इक क़िस्सा अधूरा छोड़ देते हैं

-असग़र शमीम, कोलकाता

हमारा ज़र्फ़ है वरना ज़बाँ हम खोल सकते हैं
ज़बाँ हम भी तो रखते हैं कि हम भी बोल सकते हैं

फ़क़त अल्फ़ाज़ से अपने बदल माहौल सकते हैं
अभी कुछ लोग हैं घर में जो उर्दू बोल सकते हैं

नयी मंज़िल नज़र आ जाए इतना ही ज़रूरी है
परिंदे फिर से अपने इन परों को खोल सकते हैं

तुम्हारे हुस्न के आगे किसी का बस नहीं चलता
अगर ईमान कच्चे हों तो ईमाँ डोल सकते हैं

सियासतदाँ हों, वाइज़ हों या फिर हों क़ौम के रहबर
मुहब्बत के लहू में भी ये नफ़रत घोल सकते हैं

ज़रूरी है कि सबने झूठ बोला हम भी बोलेंगे
ख़ुदा के वास्ते इक सच तो हम भी बोल सकते हैं

मज़ाहिब के तसादुम ने किये वो किश्तों ख़ूँ बरपा
क़दम इब्लीस के भी अब तो 'अकमल' डोल सकते हैं

-अकमल नईम सिद्दिक़ी

दुखों की बस्तियाँ आबाद थीं जब जगहँसाई तक
चुकाया कर्ज़ हमने ज़िंदगी का पाई-पाई तक

बुढ़ापे में हमें यूँ क़ैद कर रक्खा है बच्चों ने
हमारे घर की चौखट से हमारी चारपाई तक

हसीं चेहरे बढ़ा दें हुस्न रिश्तों के भले लेकिन
नहीं पहचानते मुश्किल में अपने भाई-भाई तक

तुम्हारा नाम रातों में जो हम लिखते हैं काग़ज़ पर
अँधेरों में चमकती है क़लम की रौशनाई तक

हमारे बीच माना रंजिशों के सिलसिले हैं कुछ
ज़रूरी तो नहीं क़ायम रहें वो आशनाई तक

-अनिरुद्ध सिन्हा

अगर दिल से कहूँ ये दौर ही मनहूस लगता है
न जाने क्यों मुझे हर आदमी मायूस लगता है

ग़रीबी आँख में अपनी बड़े सपने नहीं रखती
ग़रीबों को मकाँ का बल्ब भी फ़ानूस लगता है

हमेशा भाँप लेता है हक़ीक़त मेरे चेहरे की
मुझे तो आजकल ये आइना जासूस लगता है

बढ़ाता है धरम के नाम पर जो नफ़रतें दिल में
मुझे वो आदमी दुनिया में दक़ियानूस लगता है

हवा, बारिश का उनको ख़ौफ़ रहता है हमेशा ही
कि जिनके छप्परों पे कम बहुत ही फूस लगता है

'अहद' उसको ख़ुदा ने यूँ तो बख़्शी है बहुत दौलत
मगर वो शख़्स नीयत से बहुत कंजूस लगता है

-अमित 'अहद'

मुसलसल रातभर आँखों से रिसता है लहू शायद
बहुत से ज़ख़्म हैं ज़ख़्मों से रिसता है लहू शायद

किसी वहशी दरिन्दे ने मसल दी है कोई गुड़िया
ख़बर ऐसी थी अख़बारों से रिसता है लहू शायद

परिन्दे लौटकर आये नहीं हैं आज पेड़ों पर
और उनके हिज्र में शाख़ों से रिसता है लहू शायद

ख़याल आता है अक्सर देखकर बेकल कोई तितली
किसी गुलशन में भी फूलों से रिसता है लहू शायद

यहाँ तुम जश्न अपनी ताजपोशी का मनाते हो
वहाँ मज़दूर के हाथों से रिसता है लहू शायद

मेरे बर्बादी-ए-दिल पर मेरे सब दोस्त भी ख़ुश हैं
मगर सबकी गरेबानों से रिसता है लहू शायद

- अरविन्द अज़ान

कमाल-ए-ज़ब्त की होगी बयाँ तफ़सीर काग़ज़ पर
रक़म कर दूँगा ऐसी दिलनशीं तहरीर काग़ज़ पर

मुसव्विर ने लहू अपना निचोड़ा है बहुत इसमें
तकल्लुम कर रही है अब तेरी तस्वीर काग़ज़ पर

वो जिसने उम्रभर देखा नहीं है जंग का मैदाँ
बहुत ख़ुश है बनाकर वो भी इक शमशीर काग़ज़ पर

बहुत मुश्किल है तुझको मैं ज़माने से छुपा पाऊँ
मेरे अशआर करते हैं तेरी तशहीर काग़ज़ पर

अभी कितने महाज़ों पर वतन को जंग लड़नी है
ये लीडर कर रहे हैं देखिए तक़रीर काग़ज़ पर

सर आँखों पर मेरे अशआर रखते हैं दीवाने लोग
जुनूँ की मिल रही है मुझको ये तौक़ीर काग़ज़ पर

तसलसुल जारी है शेर-ओ-सुख़न का आजकल बिस्मिल
नज़र आयी है ख़्वाबों की मुझे ताबीर काग़ज़ पर

-अयूब ख़ान बिस्मिल

ये क़ुदरत का हसीं बर्तन ग़िलाज़त से न भर जाये
सँभल जाओ! कि आलम का न शीराज़ा बिखर जाये

नहीं रुकता है रक्से-ए-वक़्त लेकिन मौत आने पर
न जाने कब किसी के वास्ते दुनिया ठहर जाये

हमें सूरज न दो, नन्हा-सा रौशन इक दिया दे दो
ग़मों का घुप अँधेरा है जहाँ तक भी नज़र जाये

दुआ करते हैं ये इक टोकरी में रख के सब अण्डे
बिला दिक़्क़त, बिला नुक़्सान यह तूफ़ाँ गुज़र जाये

मिले जो फ़ाइदा इनको, किसी की जान भी ले लें
और उसके बा'द बोलें 'काश! यह दुनिया सँवर जाये'

- ज़ाहिद अबरोल

तुम्हारे कारख़ानों में, हमारा ख़ून जलता है
उगाते हैं अनाजों को, तुम्हारा पेट पलता है

करेंगे फ़ैसला इक दिन, तुम्हारे भी गुनाहों का
नहीं सिक्का किसी के नाम का हर दौर चलता है

अमानत देश ने तुमको, हिफ़ाज़त के लिए दी थी
वही तुम बेच देते हो, धनिक जिस पर मचलता है

कि उम्मीदें सदा अपनों ने तोड़ी हैं ज़माने में
भरोसा हो अधिक जिस पर, वही इंसान छलता है

विरासत हम शहीदों की, हमें फ़ौलाद हैं कहते
नहीं उस मोम के पुतले, तपन से जो पिघलता है

- रघुविन्द्र यादव

हवा-पानी की साज़िश से रही यूँ बेख़बर मिट्टी
लगी हैं दीमकें जबसे हुआ सारा शजर मिट्टी

यहाँ मिट्टी वहाँ मिट्टी, जिधर देखो उधर मिट्टी
ये कैसी धुंध छायी है लगे है कुल शहर मिट्टी!

मैं अपने खेत गिरवी रखके जबसे शहर में आया
मेरी आँखों में चुभती ही रही सारी उमर मिट्टी!

मिले ऐसे कि जैसे अजनबी से कोई मिलता है
बड़ी हसरत से आये थे, हुआ सारा सफ़र मिट्टी!

ज़रूरी है कि ख़ुलते भी रहें खिड़की-ओ-दरवाज़े
वगरना हो न जाए एक दिन ये तेरा घर मिट्टी!

ज़रा-सा बीज था कल तक वो अब आकाश छूता है
बना दे बूँद को सागर रखे क्या-क्या हुनर मिट्टी!

हुआ था हादसा यूँ तो भरे बाज़ार 'अंजुम' जी
कोई कुछ क्यों नहीं कहता हुआ क्या हर बशर मिट्टी!

हुआ जब ख़त्म साँसों का सफ़र तब रूह ये बोली
चलो चलते हैं अंजुम अब यहाँ की छोड़कर मिट्टी!

-अशोक अंजुम

फटी गंजी, फटी पनही मगर ये शान तो देखो
लिये कंधे पे हल जाते हुए दहक़ान तो देखो

फ़क़त दो जून की रोटी, लँगोटी और इक छप्पर
समुंदर के हृदय में बूँद-सा अरमान तो देखो

निराती, गोड़ती, हँसती, चहकती, कोल बालाएँ
दहकते टेसू के फूलों-सी ये मुस्कान तो देखो

न लफ़्जों में बयाँ करने की है तौफ़ीक़ क्या बोलूँ
अनाजों से भरे स्वर्णिम सुघर खलिहान तो देखो

नमक, रोटी का दो टुकड़ा, प्याज, अमचुर, हरी मिर्ची
हमारे अन्नदाताओं के दस्तरख़ान तो देखो

- ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

ग़ज़ल में मुस्कुराहट व्यंग गुलकारी ही होती है
ख़ुशामद, चापलूसी और मक्कारी ही होती है

कली का ख़ून हो जाता है क़ब्रों की सजावट को
वज़ारत तो सियासत है ये बीमारी ही होती है

दिखावे को सजावट के लिए चाँदी की अलमारी
अरे इनमें तो हाँ अल्फ़ाज़े-दरबारी ही होती है

अमीरे-शहर के खाते में है अपना भी अब खाता
बनाएँ शीशे को हीरा वफ़ादारी ही होती है

यहाँ जमहूरियत है, झूठ को सच्चा बना देंगे
ये संसद है वज़ीरों में ये बीमारी ही होती है

बहुत मुद्दे हैं इस क़ानून में ये सोचना होगा
सियासत ही सियासत हो, वो ग़द्दारी ही होती है

किसानों से इलेक्शन का न बाँधो आज रिश्ता तुम
सुना था गाँव की मिट्टी में ख़ुद्दारी ही होती है

-अशोक भण्डारी नादिर

कभी मेरा ग़मों से रिश्ता-नाता तोड़ देता है
कभी वो महफ़िलों में मुझको तन्हा छोड़ देता है

अगर इक बार बातें प्यार से कोई करे उससे
घड़ा नफ़रत का झट से वह उसी पर फोड़ देता है

शिकायत है ज़माने से सभी अपने को अपनों से
मुसीबत हो अगर कोई बहाना जोड़ देता है

अजब है चाल कैसे मैं करूँ विश्वास दुनिया पर
बहुत मग़रूर है जानम भरोसा छोड़ देता है

भला है या बुरा है 'कांता' वो दोस्त है मेरा
मुहब्बत का हसीं तोहफ़ा सदा बेजोड़ देता है

- राजकांता राज, पटना

हुई तेरी इनायत जब, मिला तेरा करम मुझको
तभी से लग रहा है दिल, तेरा दैरो-हरम मुझको

निहाँ है क़ल्ब में तू ही, चलो माना भरम मुझको
परीशाँ कर नहीं सकते कभी ज़ुल्मो-सितम मुझको

तुम्हारे हाथ की अब भी वही मिट्टी हूँ कूज़ागर
मिला दो चाहे मिट्टी में, बना दो या सनम मुझको

पिघल जाता है दर्दे-दिल, बहें जब आँख से आँसू
बुरा क्या है अगर रोऊँ, मिलें जब रंजो-ग़म मुझको

तुम्हारे इस जहाँ में भूख, लाचारी, सितम क्यूँ हैं
तुम्हारी यह निज़ामत अब नहीं होती हज़म मुझको

उतरती ज़ेहन में हैं जब तुम्हारे नूर की ग़ज़लें
हँसी मेरी उड़ाते जो, कहें अब मोहतरम मुझको

बता सच-सच मुझे ज़ाहिद ख़ुदा तुझको मिला है क्या
सिखाने आ गया है जो इबादत के नियम मुझको

यही है इल्तिजा तुझसे कि जब किरदार पूरा हो
फ़ना करना हुबाबों की तरह तू एकदम मुझको

-आनंद पाण्डेय तन्हा

मेरे वो प्यार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो
मेरे इज़हार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

मेरे सुख-दुख का साथी है, बहुत परवाह करता है
मेरे घर-बार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

सफ़र में साथ रहता है, निभाता फ़र्ज़ हर अपना
मेरे अधिकार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

निपुण हर काम में वो है, सरल व्यवहार वाला है
मेरे दरबार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

नज़र वो क्यूँ चुराता है, पता मुझको नहीं कुछ भी
सभी किरदार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

लिपटता रोज़ है मुझसे, मेरे ख़्वाबों में आता है
गले के हार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

मेरी हर बात में शामिल, मेरी चाहत वही तो है
मेरे स्वीकार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

मेरी साँसों में रहता है, मेरी धड़कन वही 'ऐनुल'
मेरे दीदार में तो है, मगर मेरा नहीं है वो

-'ऐनुल' बरौलवी

मेरे हमदम तुझे मेरी ख़ुशी और ग़म से क्या मतलब
तू ऐसा तीर है जिसको किसी मरहम से क्या मतलब

दिखाता है मुझे तू किसलिए ये सबकी तस्वीरें
मुझे बस तुमसे मतलब है, किसी अल्बम से क्या मतलब

बिखरते हैं जो रातों को, हरे पत्तों पे कुछ मोती
उड़ाती है सहर उनको, उसे शबनम से क्या मतलब

तुम्हारे चाहने वाले हैं लाखों लोग दुनिया में
तुम्हें बस उनसे मतलब है, तुम्हें अब हमसे क्या मतलब

मुझे क्या फ़र्क़ पड़ता है दिसंबर बीत जाने से
उदासी मेरी फ़ितरत है, इसे मौसम से क्या मतलब

न सुर है साधना जिनको, न सुर आराधना जिनकी
जिन्हें है शोर से मतलब, उन्हें सरगम से क्या मतलब

-आराधना प्रसाद

बहाते हो लहू इंसान का हो किस ज़मीं के तुम
यक़ीं आता नहीं मुझको हो बाशिंदा यहीं के तुम

तुम्हारी हर अदा लगती है बेहद अजनबी मुझको
बताओ किस जगह के हो, कहाँ के सरज़मीं के तुम

यहाँ इज़हार करते हो तुम अपनी शानो-शौक़त का
हो आख़िर शाह के प्यादा कि शहज़ादा नशीं के तुम

हमेशा झूठ और मकरो-रिया से काम लेते हो
रहोगे तुम न दुनिया के न हरगिज़ अपने दीं के तुम

हमेशा डसते रहते हो हमारे जिस्मे-नाज़ुक को
बने हो किसलिए इक साँप आख़िर आस्तीं के तुम

तुम्हारी बात से 'अहसन' को चुभते हैं बहुत काँटे
यही लगता है रिश्तेदार हो सहरानशीं के तुम

-काशिफ़ अहसन

❀

गुरुद्वारे, सनमख़ाने, कलीसा-ओ-हरम उसके
ब-सद-अंदाज़ में जपते हैं देखो नाम हम उसके

अना उसकी, ग़ुरूर उसका, जफ़ा उसकी, सितम उसके
और इक हम हैं उठाये जाते हैं दुनिया में ग़म उसके

वो अँगड़ाई, वो इतराना, वो शर्माना, हँसे जाना
अभी तक याद आते हैं तमाशे सुब्ह दम उसके

हो जिस में हौसला पैहम, तलब मंज़िल की हो हर दम
बताओ कौन रोकेगा ज़माने में क़दम उसके

मुहिब्बाने-वतन हैं हम ज़रा तारीख़ तो देखो
वतन का जो हुआ है हम रहे हैं दम-ब-दम उसके

न जाने रूह की परवाज़ अब जाकर कहाँ ठहरे
'नहीं जुज़ अर्श जागा राह में लेने को दम उसके'

हमें माना मिटाना चाहता है वो मगर इस में
कहीं पड़ जायें न कम देखिये सातों जनम उसके

वो जो कल उस से मिलने को गया था आके ये बोला
तेरे माज़ी की यादों से भरे हैं एलबम उसके

चला था क़ाफ़िला इक राहे-हक़ में मुद्दतों पहले
बड़े बेचैन करते हैं हमें रंज-ओ-अलम उसके

हमें क्या है भला अब वास्ता उस से जो ये सोचें
कोई होगा जो सुलझाएगा अब ज़ुल्फ़ों के ख़म उस के

'शिहाब' अब मीर की राहों पे रखते हो क़दम तुम भी
ज़माने में बड़े दीवाने हैं अहले-क़लम उसके

- एजाज़ उल हक़ 'शिहाब'

हुए हालात हैं बदतर दिल-ए-ग़मगीं बताऊँ क्या
बताओ तुम कि इस मंदी में खाऊँ क्या बचाऊँ क्या

ग़रीबों से न पूछो भाव आटा, दाल, सब्ज़ी का
तड़पते भूख से बच्चे, खिलाऊँ क्या, पढ़ाऊँ क्या

बढ़ी है बेक़रारी, खो गया चैन-ओ-अमन मेरा
खुली आँखों में जन्नत के हसीं सपने सजाऊँ क्या

लहू को सोखकर भी जब मेरी खेती रही बंजर
लटक जाऊँ मैं सूली पर या ख़ुद को ही जलाऊँ क्या?

नदी जब क़हर ढाने पर हो घर को ढूँढ़ लेती है
जो बारम्बार टूटा उस घरौंदे को बनाऊँ क्या

सुलगता दिल, बरसती आँख, पेशानी पे बल मेरे
जहाँ ग़म घर बना बैठा, वहाँ ख़ुशियाँ मनाऊँ क्या

मिलीं 'घनश्याम' हरदम ठोकरें हर एक शै से जब
हरम या दैर हो तुम ही कहो मैं सर झुकाऊँ क्या

-कालजयी 'घनश्याम'

न कोई तीर है पंछी न कोई जाल रक्खा है
ज़रा-सा पुण्य पाने को ये दाना डाल रक्खा है

तुम अपनी बात छेड़ो और तुम्हारी थाह पा लेंगे
हमें पुरखों ने हर दर्शन से मालामाल रक्खा है

अँधेरो! जब गगन में सूर्य चमकेगा तो क्या होगा
तुम्हें दर्पण दिखाने को ये दीपक बाल रक्खा है

तुम्हारी नर्मियाँ मौजूद हैं आँगन के फूलों में
तुम्हारी गर्मियों से गर्म घर में शाल रक्खा है

दुआ देती हुई लगती हैं ये फूलों की मुस्कानें
जिये वो सौ बरस जिसने हमें ख़ुशहाल रक्खा है

-विजय कुमार स्वर्णकार

तुम्हारे मन में दरिया लाँघने का भाव दिखता है
यही इक भाव ही मुझको तुम्हारी नाव दिखता है

तुम्हें छूनी है इक दिन कामयाबी की नयी मंज़िल
तुम्हारी कोशिशों में इक अजब-सा चाव दिखता है

यक़ीं तो है मगर मुझको ज़रा इक बात बतलाओ
तुम्हारी तारीफ़ों में किसलिए घेराव दिखता है

कभी चलते हुए जब तुम ख़यालों में समाते हो
अचानक सँकरी गलियों में ग़ज़ब फैलाव दिखता है

बहुत बेचैन करती है सड़न की बू मेरे मन को
किसी की सोच के भीतर अगर ठहराव दिखता है

बदन पर चोट की तफ़तीश करने वालो! बतलाओ
कि मन पर चोट लगने पर भी कोई घाव दिखता है

नया लुक देख के 'अनमोल' का हैरान क्या होना
समय के साथ तो हर चीज़ में बदलाव दिखता है

-के.पी. 'अनमोल'

वफ़ा की बात पर उसको बड़ा धक्का लगा होगा
तुम्हारा छोड़ जाना जब उसे पक्का लगा होगा

नहीं कुछ साथ जाएगा हज़ारों कोशिशें कर लो
यहाँ हर चीज़ का बेशक बड़ा थक्का लगा होगा

वो हैरत में बहुत था पाएताने को किधर रक्खे
कहीं मंदिर, कहीं गिरजा, कहीं मक्का लगा होगा

उसे हर बात का है इल्म उसको सब तजारिब हैं
तुम्हें वो आदतन हर बार भौचक्का लगा होगा

किसी भी बात पर आकर सड़क पर बैठ जाता है
उसे आसान बेशक रोकना चक्का लगा होगा

-संजीव प्रभाकर

❀

मेरी आशिक़ मिज़ाजी के भले चर्चे हज़ारों हैं
मगर तू भी न कम जो हुस्न के जल्वे हज़ारों हैं

मुहब्बत क्या है समझाया मगर समझे न वो नादाँ
हज़ारों कोशिशें भी कीं सहे नखरे हज़ारों हैं

खड़े हैं बुत बने कब से क़ज़ा आयी न तुम आये
जुदाई के पलों ने उफ़ सितम ढाए हज़ारों हैं

तुम्हारे नाज़ो-नखरे और अदा मक़्बूल सब हमको
मगर ताबीर हो ख़्वाबों की जो देखे हज़ारों हैं

खुलो कुछ तुम खुलें कुछ हम दिखेंगीं साफ़ तस्वीरें
हमारे दरमियाँ पोशीदा जो पर्दे हज़ारों हैं

तग़ाफ़ुल को तुम्हारे दरगुज़र हमने किया सालों
मगर ख़लवत के आलम में किये शिकवे हज़ारों हैं

जला डाले सभी लम्हे गुज़िश्ता ज़ीस्ते-उल्फ़त के
उगे ख़ाके-ख़तों में माज़ी के पौधे हज़ारों हैं

हमारा प्यार मरकज़ बन गया शातिर निगाहों का
बहुत मुश्किल है अब मिलना लगे पहरे हज़ारों हैं

मुहब्बत के शग़ल में बस तड़प और बेक़रारी है
सुकूँ को मात देते 'साहिबा' मोहरे हज़ारों हैं

-डॉ. आदर्श मिश्रा 'साहिबा'

सँभलकर राह में चलना वही पत्थर सिखाता है
हमारे पाँव के आगे जो ठोकर बनके आता है

नहीं दीवार के ज़ख़्मों का कुछ एहसास इंसाँ को
जो कीलें गाड़ने के बाद तस्वीरें लगाता है

मैं जैसे वाचनालय में रखा अख़बार हूँ कोई
जो पढ़ता है, वो बेतरतीब अक्सर छोड़ जाता है

मुसव्विर प्यास की हद से गुज़रता है कोई जब भी
तभी तस्वीर काग़ज़ पर समंदर की बनाता है

ये सच है सीढ़ियाँ शोहरत की चढ़ जाने के बाद इंसाँ
सहारा देने वाले ही को अक्सर भूल जाता है

न ऐसे शख़्स को चौखट से ख़ाली हाथ लौटाओ
जो इक रोटी के बदले सौ दुआएँ देके जाता है

बहुत मुश्किल है 'नाज़' अहसान का बदला चुका पाना
दिये को ख़ुद धुआँ उसका अकेला छोड़ जाता है

-डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़', मुरादाबाद

हमारी ख़ुशनसीबी के सितारे हैं उदासी में
न जाने चाँद कब निकले, नज़ारे हैं उदासी में

कई ऐसे हैं जो तन्हाइयों में शाद रहते हैं
मगर इक हम हैं, अपनों के सहारे हैं उदासी में

उजाले छा रहे हैं हर तरफ़ इस ख़ौफ़ से शायद
अँधेरे हर तरफ़ सारे-के-सारे हैं उदासी में

मेरे दिल के समुंदर में कहाँ अब मौज उठती है
तसव्वुर में मुहब्बत के किनारे हैं उदासी में

परिंदे क़ैद में सय्याद की आये हैं जिस दिन से
चमन की शोख़ियाँ, दिलकश नज़ारे हैं उदासी में

- देववंश दुबे

जहाँ में इज़्ज़तो-शोहरत किसे अच्छी नहीं लगती
बड़ी दौलत है, ये दौलत किसे अच्छी नहीं लगती

सुहाना हो अगर मौसम तो घर पर भी लगे अच्छा
भरी बरसात में फ़ुर्सत किसे अच्छी नहीं लगती

पसीना सूखने से पहले ख़ाली जेब भर जाये
जो ऐसा हो तो फिर उजरत किसे अच्छी नहीं लगती

शरीफ़ों की नज़र ग़ैरों की जानिब देखती कब है
अगर अपनी हो तो औरत किसे अच्छी नहीं लगती

बुरे हर शख़्स की फ़ितरत बुरी होती है दुनिया में
भले इन्सान की नीयत किसे अच्छी नहीं लगती

बड़ी मुश्किल से मिलती है किसी को भी ज़माने में
अगर मिल जाये तो राहत किसे अच्छी नहीं लगती

हमारे दिल को भाती है तो इसमें क्या तअज्जुब है
'कुमार' उनकी भली सूरत किसे अच्छी नहीं लगती

- डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति

कभी कहतीं, कभी सुनतीं, तेरी आँखें मेरी आँखें
हुआ है इश्क़ ये कहतीं, तेरी आँखें मेरी आँखें

बढ़ी दीवानगी ऐसी कि मत पूछो अजी हमसे
कभी रोतीं, कभी हँसतीं, तेरी आँखें मेरी आँखें

नहीं अब चैन ही दिन को नहीं आराम रातों को
कभी सोतीं, कभी जगतीं, तेरी आँखें मेरी आँखें

बड़ी लम्बी जुदाई की घड़ी है ये कटे कैसे
कभी बुझतीं, कभी जलतीं, तेरी आँखें मेरी आँखें

चलो कह दें जमाने से हुए हैं एक अब हम तो
ये सब कहते नहीं डरतीं, तेरी आँखें मेरी आँखें

-पूनम सिन्हा श्रेयसी

❀

जिसे पढ़ने को जाना है उसे नौकर बनाती है
हर इक छोटू के बचपन को ग़रीबी लील जाती है

नदी के द्वार पर जाकर बसेरा मत बना लेना
बचाती है ये जीवन को तो सब कुछ भी डुबाती है

कहाँ हैं खींचकर लायी लकीरें अपने हाथों की
ये क़िस्मत आदमी से बेवजह क्या-क्या कराती है

दुखों के बादलों में भी सुखों की बूँद छोटी-सी
हवा जब ख़ुश्क होती है तो बारिश को बुलाती है

हमारी नम हुईं आँखें तो वे ग़मगीन हो बैठे
इसी कारण बुझी-सी ज़िन्दगी फिर झिलमिलाती है

हमारी हरकतों पर इस सदी का हाल है ऐसा
कभी आँसू बहाती है कभी वह तमतमाती है

-डॉ. भावना

❀

वो अपनापन वो भोलापन वो जज़्बा ही बदल डाला
बदलती इन हवाओं ने वो रिश्ता ही बदल डाला

न जाने कौन-सा रस्ता दिखाना चाहता है वो
कि जो रस्ता चुना मैंने वो रस्ता ही बदल डाला

करूँ भी क्या शिकायत मैं बँधी हूँ डोर से उसकी
मेरे अरमान थे जिसमें वो क़िस्सा ही बदल डाला

न जाने क्यों मुझे पल-पल बदलता जा रहा है वो
मेरी पहचान थी जिससे वो चेहरा ही बदल डाला

चलो अच्छा हुआ उसकी यही मंशा रही होगी
जो उसने फेरकर मंतर वो नक़्शा ही बदल डाला

पिताजी जिस जगह पर साधना करते थे शब्दों की
नयी पीढ़ी ने जाने क्यों वो कमरा ही बदल डाला

-डॉ. सीमा विजयवर्गीय

शजर को तुम बचाती हो बड़ी अच्छी क़वायद है
नगर को तुम सजाती हो बड़ी अच्छी क़वायद है

शजर की शाख़ पे बैठी बुढ़ापे में जवानी का
फ़साना तुम सुनाती हो बड़ी अच्छी क़वायद है

हमारी हर मुसीबत में बहुत परवाह करती हो
निवाला तुम खिलाती हो बड़ी अच्छी क़वायद है

शजर की ओट से छिपके शजर को काटते हैं जो
निशाँ उन पर लगाती हो बड़ी अच्छी क़वायद है

हवाओं को सही करके प्रदूषण कम जो करती हो
नगर को तुम जिलाती हो बड़ी अच्छी क़वायद है

सभी के साथ मिलकर काम जो करते हैं 'मेहता' जी
इन्हें भी तुम सुहाती हो बड़ी अच्छी क़वायद है

-डॉ. मेहता नगेन्द्र

तसव्वुर के ही दम पे जो समर की बात करते हैं
मुक़द्दर-ओ-मुक़द्दर के असर की बात करते हैं

तअज्जुब है कि नाबीना नज़र की बात करते हैं
जहाँ में लोग नाक़ाबिल हुनर की बात करते हैं

फ़क़त बातें ही बातें कर रहे हैं बन्द कमरों में
क़दम बाहर नहीं रखते सफ़र की बात करते हैं

अगर चाहे तो मुमकिन है बशर ख़ुर्शीद ले आये
मगर काहिल फ़क़त उजली सहर की बात करते हैं

जला लेते दिया इक तो अँधेरा दूर हो जाता
मगर सब ग़ैर के दम पर क़मर की बात करते हैं

न जाना ठीक से उसको किया ना राब्ता क़ायम
महज़ साहिल पे बैठे हैं लहर की बात करते हैं

रगों में जिसकी जाँबाज़ी, डरेंगे ना किसी से भी
शुजाअत के ग़नी कब 'दिल' ख़तर की बात करते हैं

-दिल सीकरी

वफ़ा का जाम ख़ुद ही क्यों पिये रहते हो अक्सर तुम
ज़रूरत जब पड़े मुँह को सिले रहते हो अक्सर तुम

गुज़ारो ज़िन्दगी बेफ़िक्र इतना चाहती हूँ मैं
बलाएँ क्यों ज़माने की लिये रहते हो अक्सर तुम

ख़ता अपनी फ़क़त ये है तुम्हें जी भरके चाहा है
मुहब्बत की सज़ा फिर भी दिये रहते हो अक्सर तुम

ज़ुबाँ खोलो कहो कुछ तो न ऐसे चुप रहो हमदम
गुलाबी इन लबों को क्यों सिये रहते हो अक्सर तुम

बताओ तो ज़रा इतना भला वो कौन है आख़िर
जिसे बस देख लेने से खिले रहते हो अक्सर तुम

तरसती है मुहब्बत आज भी इज़हार को अपने
क्यों उँगली कान में अपने दिये रहते हो अक्सर तुम

जिन्हें तुम सोच कहते हो बदल डालो इन्हें अब तो
फटे से इन लिबासों को सिये रहते हो अक्सर तुम

नहीं है फ़ासला अच्छा, वफ़ादारों से इतना भी
किनारा हमसे क्यों ऐसे किये रहते हो अक्सर तुम

करे भी 'यास्मीं' इज़हारे-उल्फ़त किस तरह बोलो
नज़र आते हो जब बादा पिये रहते हो अक्सर तुम

- डॉ.यासमीन मूमल

❀

जुनूँ की रौशनाई से कहानी इक नयी लिक्खें
हम अपनी ज़िंदगानी से कहानी इक नयी लिक्खें

मुहब्बत के गुलाबों को सजाएँ उसके दामन पर
गुलों की शादमानी से कहानी इक नयी लिक्खें

समुन्दर की तो पुर्सिश में कभी नदियाँ नहीं थकतीं
हम उनकी इस रवानी से कहानी इक नयी लिक्खें

कभी देखें छटा जब डूबते सूरज की संध्या को
शुआ-ए-आसमानी से कहानी इक नयी लिक्खें

धरा की चुप्पियों से तो मिलन होता है सूरज का
खिली फिर रातरानी से कहानी इक नयी लिक्खें

घटाएँ माँगती हैं मुँह-दिखाई बादलों से जब
तो मीठी गुड़ की धानी से कहानी इक नयी लिक्खें

उन्हीं केसर के बाग़ों से सटे फिर चश्मे-शाही पर
मुहब्बत ज़ाफ़रानी से कहानी इक नयी लिक्खें

जहाँ ख़िलवत के जंगल हैं जहाँ निस्सीम झरने हैं
उन्हीं की पासबानी से कहानी इक नयी लिक्खें

मरुस्थल में ग़ज़ालों का भरम पागल 'शलभ' को है
ख़ुदा की निगहबानी से कहानी इक नयी लिक्खें

-डॉ. विनोद प्रकाश गुप्त 'शलभ'

कभी पत्थर कभी काँटे कभी ये रातरानी है
यही तो ज़िन्दगानी है, यही तो ज़िन्दगानी है

ज़मीं जब से बनी यारो तभी से है वजूद इसका
नये अन्दाज़ दिखलाती मुहब्बत की कहानी है

ख़ुशी से रह रहे थे हम मिले तुझसे नहीं जब तक
तुझे मिलकर हुआ ये दिल ग़मों की राजधानी है

मुझे लूटा है अपनों ने तुझे भी खा गये अपने
यही तेरी कहानी है, यही मेरी कहानी है

रही है दूर ये दिल्ली, रहेगी दूर ये दिल्ली
रखैली थी रखैली है ये दिल्ली राजधानी है

छुपाने से कभी भी छिप नहीं पायी ज़माने से,
उजागर हो ही जाती है मुहब्ब्त वो कहानी है

सदा सच बोलना दुश्मन बना लेना कमी जो है
तुम्हें बतला दूँ मैं यारो ये आदत ख़ानदानी है

रहे डरते 'सखा' ताउम्र कुछ करने से पहले हम
हुए हैं मस्त कितने जब से छोड़ी सावधानी है

-डॉ. श्याम सखा श्याम

बताओ तुम कब आयेगा हमारे साथ का मौसम
हमारे प्यार का मौसम, भरे जज़्बात का मौसम

सुनो मजबूरियों से कह दो हमको यूँ न तरसाएँ
चला जाये न हमसे रूठकर बरसात का मौसम

ज़रा-सी बात पे हमदम ख़फ़ा क्यूँकर तू होता है
न दे ऐसे मेरे दिल को नये सदमात का मौसम

मुझे मालूम है तुम रोओगे मुझको भुला करके
तुम्हारे लब पे होगा दर्द के नग़मात का मौसम

तुम्हें तो हक़ दिए सारे मेरे हमदम मुहब्बत में
कभी तुम दरमियाँ लाना नहीं आफ़ात का मौसम

-डॉ. आरती कुमारी

हर इक बीमार को उपचार की नेमत नहीं मिलती
अगर उपचार मिल भी जाय तो राहत नहीं मिलती

कहीं बच्चे पिता के प्यार, माँ के दूध को तरसें
कहीं माँ-बाप को औलाद से इज़्ज़त नहीं मिलती

तरक़्क़ी आ भी जायगी तो कितने रोज़ ठहरेगी
यहाँ मेहनत-मशक़्क़त को सही क़ीमत नहीं मिलती

न जाने कब का ये सारा ज़माना मिट चुका होता
अगर इन्सान को इन्सान से इज़्ज़त नहीं मिलती

वफ़ा के आशियाने में सभी के सर सलामत हैं
भले इस आशियाने की ज़मीं को छत नहीं मिलती

अगर मौक़ा मिले तो हाथ से जाने नहीं देना
मुहब्बत में रक़ीबों को बहुत मोहलत नहीं मिलती

तेरा ग़म यूँ है जैसे ख़ुद को चूँटी काटते हैं हम
हमें इन मुरकियों से अब बहुत हरकत नहीं मिलती

- नवीन सी चतुर्वेदी

किसी की याद में जीना तड़पना और मर जाना
ये कैसा इश्क़ है ऐ ज़ीस्त तुझसे यूँ गुज़र जाना

किसी का रात-दिन रहना तेरे ख़्वाबो-ख़यालों में
जताता है तेरे पैकर में ख़ुद उसका उतर जाना

मिलेंगे कारवाँ में बारहा कुछ लोग ऐसे भी
जो हैं इस बात से बेफ़िक्र उनको है किधर जाना

सियासी हुक्मरानों की हर इक हरकत से है ज़ाहिर
है मक़सद सिर्फ़ इनका फ़ायदे की रहगुज़र जाना

निगाहों की तिजोरी में संजोये हैं हसीं लम्हे
नहीं मुमकिन किसी की इस ख़ज़ाने पर नज़र जाना

बड़ी ज़रखेज़ है तेरी बसीरत और ये सीरत
बज़ाहिर है तेरे इस नूर से तेरा निखर जाना

बचाकर ही तुम्हें रखनी पड़ेगी दोस्त बीनाई
वगरना छीन लेंगी साज़िशें तुमसे ये नज़राना

छिपाकर चश्मे-पुरनम जो बताये आँख में तिनका
उसे आया नहीं 'रूपम' अभी हद से गुज़र जाना

- निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'

तमन्ना सरफ़रोशी की ले सरहद पर खड़ी होती
वतन पर गर फ़िदा होती तो क़िस्मत की धनी होती

ग़रीबी चीख़ती रोती रही क़ानून अंधा था
ख़ुदाया तू नहीं होता तो कैसे पैरवी होती

तुम्हारी हार, मेरी जीत, ऐसा हो नहीं सकता
ये मेरे वास्ते मेरी समझ लो ख़ुदकुशी होती

अधूरी ख़्वाहिशों के दर्द क्यों सहती यहाँ इतने
न रिश्तों को निभाने की अगर पाबंदगी होती

वफ़ाओं की सलीबों पर न मरते रोज ही आशिक़
अगर दुनिया मुहब्बत के सलीक़े जानती होती

नदी जज़्बात की मैं थी किनारों का वो पत्थर था
पकड़ता हाथ वो मेरा अकेली क्यों बही होती

न होते फ़र्ज़ के बोझे न अपने ख़्वाब ही मरते
न बेजा से सवालों की तरह ये ज़िंदगी होती

मुलाक़ातों के अपने सिलसिले चलते ही रहते फिर
मैं बादल बन बरस जाता जहाँ पर तू नदी होती

बनिस्पत आपके ही हर ख़ुशी हासिल हुई मुझको
न मिलता आप-सा रहबर तो 'निर्मल' मर गयी होती

-निर्मला कपिला

मिटाने को इजारा हुस्न का तरकीब ये की है
गुलाबों संग देखो ख़ार को रब ने जगह दी है

किसी की याद चुपके से चली आती है जब दिल में
कभी घुँघरू से बजते हैं कभी तलवार चलती है

वही करते हैं दावा आग नफ़रत की बुझाने का
कि जिनके हाथ में जलती हुई माचिस की तीली है

फ़क़त इतना कहा जिससे मेरी जाँ आइना देखो
वही कमबख़्त सुनकर मुझसे देखो रूठी फिरती है

बहुत ज़ालिम है धोकेबाज़ है हरदम सताती है
मगर फिर भी सभी को सबसे प्यारी ज़िंदगानी है

मैं जब भी बात करता हूँ ज़माने में मुहब्बत की
सभी कहते मुझे हँसकर 'अमाँ, क्या तुमने पी ली है?'

हटो करने दो अपने मन की भी इन नौजवानों को
ये इनका दौर है इनका समय है इनकी बारी है

घुटन, तड़पन, उदासी, अश्क, रुस्वाई, अकेलापन
बग़ैर इसके अधूरी इश्क़ की हर इक कहानी है

कभी बच्चों को मिलकर खिलखिलाते नाचते देखा
लगा तब ज़िन्दगी ये हमने क्या से क्या बना ली है

उतर आते हैं बादल याद के आँखों में यूँ 'नीरज'
ज़मीं जो कल तलक सूखी थी अब वो भीगी-भीगी है

-नीरज गोस्वामी

ये किसने चलती-फिरती सड़कों को सुनसान कर डाला
बसी जो बस्तियाँ थीं उनको भी वीरान कर डाला

सुख़नवर कौन है इन नन्ही चिड़ियों से बड़ा बोलो
जिन्होंने भूख को भी, हूक को भी तान कर डाला

चमन ये कितने रंगों ख़ुशबुओं से भर गया दिल का
तुम्हारे प्यार ने तो मुझको हिन्दुस्तान कर डाला

हूँ तपता धूप में दिन की तड़पता सर्द रातों को
जुदाई ने तुम्हारी मुझको रेगिस्तान कर डाला

है कितना नेकदिल जो सोचता है सबके बारे में
कि अश्कों को भी पलकों से ज़मीं पर छान कर डाला

वही था एक जिसकी जुस्तजू में ज़िंदगी गुज़री
मिला वो तो नहीं पर उसकी धुन में क्या न कर डाला

जगाते चूमकर पलकें सवेरे किरणों के पंछी
कि जबसे मैंने इन आँखों को रौशनदान कर डाला

मिली तालीम जितनी दूर दुनिया से हुए उतने
बहुत कुछ जानने ने और भी अनजान कर डाला

तरक़्क़ी के हज़ारों साल में आदम के जायों ने
जो गुर जीने के उनको मौत का सामान कर डाला

बुतों के शहर में ये बेहिसी का कैसा आलम है
कि जीते लोगों ने मुर्दों को भी हैरान कर डाला

कभी तारीख़ के पन्ने पलटकर देख कितनी बार
खिले गुलशन को इस वहशत ने क़ब्रिस्तान कर डाला

नहीं जब ज़िंदगी की मुश्किलें कम हो सकीं 'अनिमेष'
तो कुछ हमदर्दों ने फिर मौत को आसान कर डाला

- प्रेम रंजन 'अनिमेष'

सभी ख़ुशहाल हों क्या रास्ता है ही नहीं कोई
वो क्यों सोचेंगे उनका फ़ायदा है ही नहीं कोई

सियासत जानती सब है मगर जनता से कहती है
बुराई उनमें है, हम में बुरा है ही नहीं कोई

कोरोना ने हक़ीक़त खोल दी, इन नाख़ुदाओं की
ख़ुदा बनते थे सब, जैसे ख़ुदा है ही नहीं कोई

मुहब्बत दिल की बीमारी नहीं है, जाँ-निसारी है
इसी बाइस मुहब्बत की दवा है ही नहीं कोई

दुखाकर दिल वो सॉरी भी अगर कह दे तो अच्छा है
नहीं तो प्यार में कैसी ख़ता, है ही नहीं कोई

वो कहता है चलो दुनिया का मेला घूमकर देखें
मैं कहता हूँ कि मेले में मज़ा है ही नहीं कोई

फ़क़त जुमला नहीं ये इश्क़ की बुनियाद है प्यारे
जहाँ में आप जैसा दूसरा है ही नहीं कोई

-राजेंद्र तिवारी

मुहब्बत भी निभाई है अदावत भी निभाते हैं
न वो हमको भुलाते हैं न हम उनको भुलाते हैं

ग़मों की आँधियों में हम हमेशा मुँह चिढ़ाते हैं
मुसीबत सामने होती है और हँसते-हँसाते हैं

हमारे साथ होते हैं हमारे ज़ाहिरो-बातिन
जहाँ जाते हैं कोई अक्स अपना छोड़ आते हैं

बड़े अरमान से हमने कभी जो घर बनाया था
उसी के बामो-दर अब नींद आँखों की चुराते हैं

कभी दामन झटकते थे जिन्हें हम देखकर अक्सर
वो जुगनू अब अँधेरे में हमें रस्ता दिखाते हैं

ग़ज़ब के हैं ज़हानत में हमारे दौर के बच्चे
हमें मुश्किल जो लगता है वो पल में कर दिखाते हैं

- प्रेम किरण

❀

फ़क़त मेरी नहीं है बात, ये जज़्बात सबके हैं
है किसकी ख़ैरियत सख़्त आजकल हालात सबके हैं

कोई हक़ माँगता तो कहते जो बैठे भरे-पूरे
न कुछ देने की गुंजाइश, मगर हम साथ सबके हैं

इसी मिट्टी से है सबका निवाला, बेरुख़ी फिर क्यों
न उनके साथ अब कोई मगर देहात सबके हैं

हमेशा तीरगी में हम उजाले उस तरफ़ हरदम
तरक़्क़ी ने कहाँ सोचा कि ये दिन-रात सबके हैं

फटी हैं एड़ियाँ, लथपथ बदन, माँ फिर भी बा-उम्मीद
है दामन चाक जिसके साथ सुख सौग़ात सबके हैं

मैं कोई पेड़ था पिछले जनम में जो हरा अब तक
बचे हैं डालियों पर जितने भी वो पात सबके हैं

क़यामत का समा है पर फ़िज़ा ये कह रही अब भी
बढ़े हैं जो मदद के वास्ते वे हाथ सबके हैं

यही है वक़्त मिलकर सब भले कुछ कर के जब देखें
अँधेरा हर तरफ़ है और बुरे हालात सबके हैं

अदब के साथ रखता इनको महफ़िल में अदीबों के
सभी के दर्द-दुख इनमें हैं ये नग़मात सबके हैं

'शरद' के इस सफ़र में क्या है, बस इंसानियत का साथ
चला ये सोचकर सड़कें न हों, फ़ुटपाथ सबके हैं

-शरद रंजन 'शरद'

बड़ी नाज़ुक, बड़ी शीरीं, नहीं कोई जदल सी हो
मेरी ये ज़ीस्त तुझपे ही लिखी कोई ग़ज़ल सी हो

मुरब्बा हो, मुसद्दस हो, न हो बेशक मुसम्मन ही
न मुतक़ारिब, न मुतदारिक, वो बस बहरे-रमल सी हो

गया था कल जो सरहद पर न आया आज तक घर जब
भला माँ की कहो फिर पीर कैसे ना जबल सी हो

ख़ुशी देखी सभी ने ही था जन्मा बेटा जब उसने
जो जन्मे बेटी वो अबके ख़ुशी उनकी डबल सी हो

कमाओ कितनी भी दौलत, ख़ज़ाने लाख भर लो तुम
जहाँ हो प्यार आपस में वहाँ कुटिया महल सी हो

करे जब गुफ़्तगू उनसे रहे जब साथ 'भवि' उनके
न मोबाइल न मेहमानों की कोई भी ख़लल सी हो

-शुचि 'भवि'

दबा ली दाँत से उँगली कि ऐसा हो गया कैसे
हमारी जान का दुश्मन हमारा हो गया कैसे

ज़माना सोचता है चाँद कितना ख़ूबसूरत है
मगर मैं सोचता हूँ चाँद मैला हो गया कैसे

अब इसका ज़िक्र भी करने लगा है रूह को ज़ख़्मी
मुहब्बत का ये नाज़ुक़ फूल काँटा हो गया कैसे

सितम ये कुछ नहीं है ज़हर उसने दे दिया मुझको
सितम ये है कि पूछा जिस्म नीला हो गया कैसे

तुझे मैं अपना समझा था तुझे मेरा ही रहना था
ज़रा बतला दिले-नादाँ तू उसका हो गया कैसे

हवा गर मिल न पाये कुछ नहीं फिर तेल बाती भी
दिया ये जानकर दुश्मन हवा का हो गया कैसे

- सुभाष पाठक ज़िया

❀

ज़रा भी हौसला होता तो तूफ़ाँ से गुज़र जाते
यक़ीनन आप कश्ती से सरे-साहिल उतर जाते

मुहब्बत पाक थी, नापाक हो जाती तो क्या होता
किसी के क़ुर्ब में रहकर अगर हद से गुज़र जाते

मुक़द्दर साथ देता तो मज़ा जीने का आ जाता
ख़ुशी हर इक इधर आ जाती सारे ग़म उधर जाते

कुदूरत आ गयी थी दो दिलों के दरमियाँ वरना
मुहब्बत के फ़साने में बहुत से रंग भर जाते

करम-फ़रमाई उनकी जाग उट्ठी मेहरबानी है
ख़ुदा ने ख़ैर की वरना कई जिस्मों से सर जाते

कभी जीने नहीं देते ये हरगिज़ चैन से हमको
अगर हम लम्हा भर को भी जहाँ वालों से डर जाते

हबीबे-बावफ़ा ने ज़िन्दगी बख़्शी मुहब्बत को
'रक़ीब'-ए-बेनवा वरना तिरे जज़्बात मर जाते

-सतीश शुक्ल रक़ीब

❀

सभी की कुछ न कुछ पहचान भी होना ज़रूरी है
कहानी है तो फिर उनवान भी होना ज़रूरी है

बहुत से तजरबे इंसान को लाज़िम हैं दुनिया में
बहुत-सी बातों से अंजान भी होना ज़रूरी है

हमारी मुफ़लिसी हमको इजाज़त तो नहीं देती
मगर मेहमान का सम्मान भी होना ज़रूरी है

मुझे डर है अँधेरों का कहीं आदी न हो जाऊँ
मकाँ में कोई रौशनदान भी होना ज़रूरी है

अगर बे-इल्म हो तो डिग्रियाँ टुकड़े हैं काग़ज़ के
अगर हैं डिग्रियाँ तो ज्ञान भी होना ज़रूरी है

अदाएँ भूल बैठे हैं हम अपने सर झुकाने की
किसी का थोड़ा-सा एहसान भी होना ज़रूरी है

हमारे नाम से हमको पुकारा जाए महफ़िल में
हमारी इतनी तो पहचान भी होना ज़रूरी है

-सुरेन्द्र नाज़

नहीं रखते हैं जो आधार कुछ अच्छे उसूलों पर
बनाते हैं वो अपने घोंसले जाकर बबूलों पर

लिबास अपना कभी वो साफ़- सुथरा रख नहीं सकते
बदन गंदा करेंगे गिरके जो रस्ते की धूलों पर

समझ लो उनको तुम नाकामियाँ ही झेलने वाले
गँवाते हैं समय अपना जो दिन भर रहके झूलों पर

कभी फूलों भरा गुलज़ार उनको भा नहीं सकता
जिन्हें काँटे पसंद आए वो क्या रीझेंगे फूलों पर

कभी भी राम की भक्ति उन्हें हरगिज़ न भायेगी
रखे ईमान है अपना जो रावण के उसूलों पर

गिरायेगी ज़मीं पर वो तुम्हें उस पर अगर बैठे
नहीं बुनियाद जिस खटिया की है मज़बूत चूलों पर

हमेशा जो ग़लत हर काम करने के ही आदी हैं
नहीं 'प्रभात' देंगे ध्यान वैसे लोग भूलों पर

-हरिवंश प्रभात

रवानी गर नहीं हो तो नदी अच्छी नहीं लगती
कोई फ़ितरत बदलती चीज़ भी अच्छी नहीं लगती

छलकते बाप के आँसू, सिसकती रात भर अम्मा
बुढ़ापे में किसी की बेबसी अच्छी नहीं लगती

कहीं पे जश्न का आलम, कहीं पे मुफ़लिसी तारी
चराग़ों के तले ये तीरगी अच्छी नहीं लगती

खिलौनों की जगह हाथों में बच्चों के कटोरे हैं
किसी मासूम आँखों में नमी अच्छी नहीं लगती

कभी जो साथ रहते थे, हुए हैं दूर वो मुझसे
मुझे यूँ दोस्तों की बेरुख़ी अच्छी नहीं लगती

तुम्हारी याद में अक्सर मैं ख़ुद को भूल जाता हूँ
ज़माने को मेरी ये बे-ख़ुदी अच्छी नहीं लगती

जहाँ इंसानियत के नाम पर कुछ भी नहीं बाक़ी
वहाँ तहज़ीब की बेचारगी अच्छी नहीं लगती

- हिमकर श्याम

बहरे-हज़ज मुसम्मिन सालिम

बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

मिसरा-ए-तरह वाली ग़ज़ल -हफ़ीज़ बनारसी

लहू की मय बनायी, दिल का पैमाना बना डाला
जिगरदारों ने मक़तल को भी मयख़ाना बना डाला

हमारे जज़्बा-ए-तामीर की कुछ दाद दो यारो
कि हमने बिजलियों को शम'अ-ए-काशाना बना डाला

सितम ढाते हो लेकिन लुत्फ़ का एहसास होता है
इसी अंदाज़ ने दुनिया को दीवाना बना डाला

भरी महफ़िल में हम ने बात कर ली थी उन आँखों से
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

मेरे ज़ौक़े-परस्तिश की करिश्मा-साज़ियाँ देखो
कभी काबा, कभी काबा को बुतख़ाना बना डाला

शिकायत बिजलियों से है न शिकवा बादे-सरसर से
चमन को ख़ुद चमन वालों ने वीराना बना डाला

चलो अच्छा हुआ दुनिया 'हफ़ीज़' अब दूर है हम से
मुहब्बत ने हमें दुनिया से बेगाना बना डाला

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 17)

बढ़ा के तल्ख़ियाँ दिल में जो अंजाना बना डाला
सियासत की वबा ने हमको बेगाना बना डाला

अदाओं से किसी ने जब से दीवाना बना डाला
उसी चहरे का दिल में मैंने बुतख़ाना बना डाला

तेरा मग़रूर होना भी मेरी जाँ है मेरे दम पर
तेरी चाहत ने दुनिया से ही बेगाना बना डाला

नशे में चूर होना भी मेरा तेरी अलामत है
तस्सवुर ने तेरे इस दिल में मयख़ाना बना डाला

बुझाया है हमीं ने यूँ ये दीपक बेक़रारी का
जला के प्यार की लौ ख़ुद को परवाना बना डाला

-अनुराग सुरूर

अगर देखो तो इक शीशे को पैमाना बना डाला
जुनून-ए-इश्क़ ने मुझको भी दीवाना बना डाला

मैं अपनी जान दे देता तुझे सदक़ा मुहब्बत का
मिज़ाज अपना मगर मैंने फ़क़ीराना बना डाला

ख़ुद अपने हुस्न का जादू ही तेरे सर पे रक्साँ है
जहाँ पर तूने चाहा एक मयख़ाना बना डाला

तुम्हारे बाद हाल-ए-दिल पे हैराँ हूँ मैं मुद्दत से
कि इक ख़ुशहाल-सी बस्ती को वीराना बना डाला

मेरी नज़दीक तू बस एक पत्थर की ही मूरत है
ज़माने ने तुझे अपना ख़ुदा माना, बना डाला

तेरे हुस्न-ए-चराग़ाँ की अदाओं ने सितम बरपा
किसी शब भर के जुगनू को ही परवाना बना डाला

ये राज़े-दिल जो ख़ल्वत में कहा तुमसे, मगर तुमने
ज़रा-सी बात को दुनिया में अफ़्साना बना डाला

-अरविन्द अज़ान

वो जैसा चाहते थे, मुझको मनमाना बना डाला
नज़र कुछ देर डाली और दीवाना बना डाला

ये उजड़े बाल, जर्जर तन, फटे कपड़े, उड़ी रंगत
किसी के इश्क़ में तुमने ये क्या बाना बना डाला

वो पिछले वक़्त की सब सोहबतें पल में भुला डालीं
ज़रा-सी बात पर तुमने तो बेगाना बना डाला

चलो अच्छा हुआ आया किसी के काम तो आख़िर
हमारा दर्द सुनकर आपने गाना बना डाला

ज़मीं के दर्द का एहसास ही उनको नहीं कोई
ज़मीं को खोदकर लोगों ने तहख़ाना बना डाला

भुलाकर दीन दुनिया हम पुजारी बन गये तेरे
तेरी मूरत बिठाई और बुतख़ाना बना डाला

कई ख़ेमे बना डाले कई फ़िरक़े बना डाले
सियासत ने भरी बस्ती को वीराना बना डाला

बस इतनी बात है, मुझको मिले थे रास्ते में वो
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

'असर' तब मज़हबी दंगल हुए कुछ कम ज़माने में
कि जब दैरो-हरम के पास मयख़ाना बना डाला

-अरविन्द असर

❀

भला क्यूँ उस ने दोज़ख़ अपना काशाना बना डाला
जो ख़ास अपने थे उन सबको भी बेगाना बना डाला

जहाँ गूँजे कभी नग़मे, वहीं नौहे हैं, मातम है
मिरा हँसता हुआ घर रब ने ग़मख़ाना बना डाला

यूँ फैली झूटी अफ़्वाहें कि जैसे आग जंगल की
ज़रा-सी बात का लोगों ने अफ़्साना बना डाला

हमें जब देखिए अशआर उनके गुनगुनाते हैं
हमें तो शाइरी ने उनकी दीवाना बना डाला

मिरे एहसास को छूकर वो साअत 'नाज़ली' गुज़री
तो उसके लम्स ने मुझको फ़क़ीराना बना डाला

-डॉ.नलिनी विभा नाज़ली, हिमाचल

❀

हमें मख़्मूर उन आँखों ने मस्ताना बना डाला
हुई लग़्ज़िश जो क़दमों की तो अफ़्साना बना डाला

तबस्सुम ज़ेर-ए-लब उनका, मुहब्बत की नज़र मुझ पर
बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

मैं हूँ मशकूर मेरी मुख़्लिसी और सादगी का यूँ
मिले धोके मुझे इतने कि फ़रज़ाना बना डाला

जमाल-ओ-हुस्न अख़लाक़-ओ-सलीक़ा और क़रीना सब
तुम्हें देकर ख़ुदा ने हमको दीवाना बना डाला

ज़माने को अज़ल से आशिक़ों से बरहमी-सी है
हमें देखा जो हम-आग़ोश, अफ़्साना बना डाला

-दीपक पुरोहित

मुझे बेफ़िक्र तरबीयत ने मस्ताना बना डाला
मेरे बर्ताव ने यारों को दीवाना बना डाला

वो हँस के कल तलक करते थे हमसे गुफ़्तगू अक्सर
तग़ाफ़ुल करके अब हमको ही बेगाना बना डाला

बताकर राज़ की बातें, कहा रक्खो इन्हें दिल में
लबों को सिल के मेरे दिल को तहख़ाना बना डाला

शहीदों ने हसीं, ख़ुश-रंग सौंपा था वतन हमको
जिसे आमाले-बद से हमने वीराना बना डाला

न कोई चेहरा था जिनका, न थी पहचान भी कोई
खिलाकर खेल उन दस्तों में, दस्ताना बना डाला

हुआ ज्यों ही हमारा ज़िक्र उसने कर लिया पर्दा
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

दिया रिन्दों ने मयनोशी को दर्जा-ए-इबादत 'दिल'
ग़रज़ इतनी कि मयख़ाने को बुतख़ाना बना डाला

-दिल सीकरी

अदाओं ने तुम्हारी मुझको दीवाना बना डाला
बस इतनी बात को यारों ने अफ़्साना बना डाला

हुआ ऐलाने-सरकारी बिकेगी मय न जब यारो
हसीनों ने झट अपनी आँख मयख़ाना बना डाला

हमेशा से सखा हैं मुफ़लिसों के श्याम जी अपने
कि पल भर में सुदामा को अमीराना बना डाला

हुनर इन शायरों का देखिये तो आप साहिब जी
जरा-सी एक अँगड़ाई को इतराना बना डाला

किया राधा की यादों ने परीशाँ जब 'सखा' उसको
कि छलिया श्याम ने मथुरा को बरसाना बना डाला

-डॉ. श्याम सखा श्याम

नगर-क़स्बे को जब हाकिम ने वीराना बना डाला
जिगर वालों ने हर कूचे में मयख़ाना बना डाला

किसी का चल रहा जादू इशारों ही इशारों में
किसी की दीद ने इस बुत को मस्ताना बना डाला

बहुत बेचैनियाँ भर दीं किसी ने मेरे जीवन में
किसी ने तो मुझे मजनूँ-सा दीवाना बना डाला

तेरी आँखो में है कैसा नशा दिलबर तू बतला दे
कि तेरी मद-भरी पलकों को पैमाना बना डाला

बड़ी मुश्किल से उस बेजान को अपना बनाया था
मगर पल भर में उसने मुझको बेगाना बना डाला

अनेकों जन्म की चाहत थी मर-मिटने की दिलबर पर
नज़र की शमअ ने फिर उसको परवाना बना डाला

'सुधा' ने उन से तो की थी गुज़ारिश बस इशारों में
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

-डॉ. सुधा सिन्हा 'सावी'

❀

जब उसने ज़ीस्त का अंदाज़ शाहाना बना डाला
तो हमने भी मिज़ाज अपना फ़क़ीराना बना डाला

कहीं मस्जिद, कहीं दुनिया ने बुतख़ाना बना डाला
हमें जब कुछ न सूझा हमने मयख़ाना बना डाला

लगीं पाबंदियाँ जब मयकदे जाने पे तो हमने
चमन को मयकदा, कलियों को पैमाना बना डाला

ये तेरा हुस्न है, जादूगरी है या मुहब्बत है
बना फिरता था जो दाना वो दीवाना बना डाला

बने जब फूल तुम, तुमने मुझे बुलबुल बनाया था
बने जब शम'अ, तुमने मुझको परवाना बना डाला

हमें तो ज़िंदगी अपनी तेरे क़दमों पे रखनी थी
बनाना था इसे नज़राना, शुकराना बना डाला

भला कब तक उठाते नाज़ो-नखरे हम बहारों के
सो अपनी ज़िंदगी को हमने वीराना बना डाला

निगाहें उनसे मिलते ही बस आँखों में चमक आयी
'बस इतनी बात का लोगों ने अफ़साना बना डाला'

कभी जिस 'प्रेम' की बातों का दीवाना ज़माना था
उसे भी आपकी बातों ने दीवाना बना डाला

-प्रेम पहाड़पुरी

ख़ुदा की फ़िक्र ने ख़ुद से ही बेगाना बना डाला
जहाँ आबाद था उसको भी वीराना बना डाला

था मेरे पास क्या आँखों की बूँदों के सिवा आख़िर
उन्हें मैंने परिंदों के लिए दाना बना डाला

वो जो हर रोज़ करती एक दिन कर कैसे इतराते
कभी जो घर में रह घर के लिए खाना बना डाला

नहीं था जब जहाँ होगा कोई शायर, कोई आशिक़
कि जिसने टूटे दिल की ख़ाक को छाना, बना डाला

मेरा ये मानना है आदमी उस दिन बना इंसाँ
जब अपने फ़न से उसने रोने को गाना बना डाला

मुहब्बत लेके सपने रख गयी पलकों में बस पानी
ये तो हम हैं उसे नज़रों का नज़राना बना डाला

किलक पहली अगर बेटी की हो तो और भी मीठी
किसी नन्ही परी ने घर परीख़ाना बना डाला

ज़रा-सी ज़िंदगी में किसलिए इतना परायापन
किया हमने ये कि अपना जिसे माना बना डाला

कहाँ दो गज़ ज़मीं भी उम्रभर में मिल सकी हमको
किसी ने मक़बरे पर ताज शाहाना बना डाला

इरादा था हमारा दार कैसा है नया देखें
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला'

वही शायर असल में जी लगे जिसका फ़क़ीरी में
कई ने सोचकर सज धज फ़क़ीराना बना डाला

अभी आता हूँ कोई बोलकर ऐसे गया 'अनिमेष'
कहन के ढंग ने जाने को भी आना बना डाला

-प्रेम रंजन 'अनिमेष'

✿

तुम्हारी आँख ने कितनों को दीवाना बना डाला
चराग़-ए-इश्क़ का लोगों को परवाना बना डाला

जिसे देखो शराबे-दीद में है ग़र्क़ मुद्दत से
तुम्हारी आँख को लोगों ने मयख़ाना बना डाला

ज़रा-सा हँस के क्या देखा किसी ने मेरे चश्मे को
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

नज़र को रहगुज़ारे-शौक़ जाना उम्र भर हम ने
तेरी यादों का अपने दिल को काशाना बना डला

ज़रा-सी क्या हुई अनबन हमारी कल पड़ोसी से
सियासत ने हमारे गाँव को थाना बना डाला

तरक़्क़ी अहदे-नौ की देखिये कुछ कम नहीं है ये
बमों की बारिशों ने घर को वीराना बना डाला

इसी को तो महब्बत की सभी मेराज कहते हैं
दिले-हस्सास को आशिक़ ने नज़राना बना डाला

-शकील सासरामी

✿

तिरी आवारगी ने आज अफ़्साना बना डाला
किसी की चाह ने अपने को बेगाना बना डाला

बहुत चुपचाप थीं जब रंजो-ग़म की कश्तियाँ मेरी
सुनाकर शायरी महफ़िल को रिंदाना बना डाला

हुआ ग़म में अकेला प्रेम की ख़ातिर मुहब्बत तो
लगी लत मयकशी की याद मयख़ाना बना डाला

निगाहें हैं कहीं पर और कहीं चलता निशाना है
नज़ाकत पर फ़िदा इस दिल को दीवाना बना डाला

हुनर ने उनकी यूँ तो ख़ूब तारीफ़ें बटोरी हैं
मिलाकर उनसे आँखें उनको मस्ताना बना डाला

-राजकांता राज

यूँ ढाई आखरों ने हमको दीवाना बना डाला
बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

जो कहते प्यार वो सारे ज़माने की अमानत है
जहाँ थी दुश्मनी भी उसने याराना बना डाला

वही पत्थर है जिसको फिर से ज़र्रों की ज़रूरत है
ख़ुदा को बेदख़ल कर किसने बुतख़ाना बना डाला

उतारा चाँद माँ करती थी जिसमें लोरियाँ गाकर
कटोरा दूध का वो तुमने पैमाना बना डाला

निकलने का पहुँचने का कहाँ अंतर सफ़र में है
चले यकसाँ कभी जाना कभी आना बना डाला

उसी को फ़िक्र होगी सबके दुख में साथ देने की
कि जिसने ख़ुद को अपने दुख से बेगाना बना डाला

वो आये थे अँधेरा लाँघकर इक सुबह को छूने
ये कैसी आग है हर इक को दीवाना बना डाला

ये दुनिया इतनी सारी मुश्किलों के बीच भी महफ़ूज़
मगर किसने इसे आबाद वीराना बना डाला

फ़क़ीरी में है शायर घूमता फिरता ग़ज़ल कहता
'शरद' फ़ाक़ाकशी ने और मस्ताना बना डाला

-शरद रंजन 'शरद'

हमारी रूह को भी उसने तहख़ाना बना डाला
सलीक़ेदार दिल को आज दीवाना बना डाला

हुआ करती थी अमनो-चैन की खेती जहाँ पहले
सियासत ने उसी धरती को वीराना बना डाला

बनी थी मुफ़लिसी में ज़िन्दगी मेरी जहन्नुम-सी
सनम तेरी मुहब्बत ने लो शाहाना बना डाला

भला कर लें भला होगा, बुरा कर लें बुरा होगा
बस ऐसी सोच ने इंसान को दाना बना डाला

बड़ी शिद्दत से की थी बात इन आँखों ने आँखों से
हुआ जो लम्स थोड़ा-सा तो अफ़्साना बना डाला

मिलेंगे यूँ तो मोती देखिएगा हर समुन्दर में
किसी को वक़्त ने 'भवि' आज दुर्दाना बना डाला
गिरह
कि मिलना यूँ ज़मीं का आसमाँ से है किताबी ही
बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

-शुचि 'भवि'

मिला ख़ुद से ख़ुदी को हमने पैमाना बना डाला
ख़ुदी में खो गया ख़ुद से भी बेगाना बना डाला

कभी हँसते, कभी रोते, कभी ख़ामोश रहते हैं
बस इतनी बात पर यारों ने दीवाना बना डाला

मेरे भीतर जला करती है यारो इक शमा निशि दिन
हमारे ऐब हमने मिस्ले-परवाना बना डाला

नशे की लत लगी ऐसी सदा रहता नशे में हूँ
नशे में चूर ख़ुद को आज मयख़ाना बना डाला

न सुनते हैं किसी की हम न कुछ कहते किसी से हम
बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला

-पूनम सिन्हा श्रेयसी

हूजूमे-यास ने ऐसा सियहख़ाना बना डाला
घनी आबादियों में एक वीराना बना डाला

तमाशा देख हैराँ हूँ, हक़ीक़त से भी ग़ाफ़िल हूँ
ज़रा-सी बात थी लोगों ने अफ़्साना बना डाला

ख़याले-यार ने मुझको कभी तन्हा नहीं छोड़ा
जुदाई का हर इक लम्हा जुदागाना बना डाला

निगाहें मस्त साक़ी की, सुरूरो-कैफ़ है बेहद
तबीयत को मेरी भी उसने रिंदाना बना डाला

बुलाता कोई मतवाला, समझता कोई सौदाई
मेरी दीवानगी ने देख, क्या-क्या न बना डाला

लगी हर गाम पर ठोकर, सफ़र में पेचो-ख़म इतने
मुसीबत ने मुझे मंज़िल से बेगाना बना डाला

न है अंदाज़ शाहाना, बची 'हिमकर' न ख़ुद्दारी
मुहब्बत ने तेरा लहजा फ़क़ीराना बना डाला

-हिमकर श्याम

हज़ल

नमक, मिर्ची, खटाई डालकर गाना बना डाला
उन्हें खाना बनाना आता है, खाना बना डाला

घराणी रोज़ धमकी देती है 'मैके चली जाऊँ'
मियादी काम को भी कारे-रोज़ाना बना डाला

मुए कोरोना तेरी माँ की .... इज़्ज़त को ख़ुदा रक्खे
अबे तूने तो कुल दुन्या को ही थाना बना डाला

ये किस ठण्डी-छुरी के इश्क़ में डूबे हुए हो तुम
मुई बर्फ़ानी ने तुमको भी बर्फ़ाना बना डाला

मियाँ इमरान की बीबी-ओ-शोफ़र को हुआ कोविड
'बस इतनी बात का यारों ने अफ़्साना बना डाला'

-नवीन सी चतुर्वेदी

बहरे-कामिल मुसम्मन सालिम में ग़ज़लें

सालिम बहर - बहरे-कामिल मुसम्मन सालिम
हफ़ीज़ बनारसी के मतले

वो फ़ुसूने-जल्वा-ए-यक नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
वो सुपुर्दगी-ए-दिलो-जिगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई बर्क़ थी कि चमक गयी, कोई शो'ला था कि लपक गया
मेरे शौक़े-दीद को क्या मिला जो नक़ाबे-हुस्न सरक गया

मेरा दिल जिसे न उठा सके तू मुझे वो बारे-गिराँ न दे
जिसे शीशागर की निगाह दी उसे पत्थरों का जहाँ न दे

कहीं संगो-ख़िश्त की हैं बारिशें कहीं रहमतों का नज़ूल है
ये निज़ाम कोई निज़ाम है, ये असूल कोई असूल है

वहाँ ख़ुशबुओं के नगर बसे वहाँ रंगो-नूर बिखर गया
वो जहाँ-जहाँ हुआ जल्वागर वो जिधर-जिधर से गुज़र गया

कहाँ सर छुपाए कोई यहाँ दरे-मयकदा भी बचा नहीं
हुई पत्थरों की वो बारिशें कोई आइना भी बचा नहीं

मशहूर शाइरों के मतले

मुतफ़ाइलुन x 4

यूँ ही बेसबब न फिरा करो, कोई शाम घर भी रहा करो
वो ग़ज़ल की सच्ची किताब है उसे चुपके-चुपके पढ़ा करो
-बशीर बद्र

कोई फूल धूप की पत्तियों में हरे रिबन से बंधा हुआ
वो ग़ज़ल का लहजा नया-नया न कहा हुआ न सुना हुआ
-बशीर बद्र

अभी इस तरफ़ न निगाह कर मैं ग़ज़ल की पलकें सवार लूँ
मेरा लफ़्ज़-लफ़्ज़ है आइना तुझे आइने में उतार लूँ
-बशीर बद्र

कभी यूँ भी आ मेरी आँख में कि मेरी नज़र को ख़बर न हो
मुझे एक रात नवाज़ दे मगर इसके बाद सहर न हो
-बशीर बद्र

सरे-राह कुछ भी कहा नहीं कभी उसके घर मैं गया नहीं
मैं जनम-जनम से उसी का हूँ उसे आज तक ये पता नहीं
-बशीर बद्र

यूँ ही बेयक़ीं यूँ ही बेनिशाँ, मेरी आधी उम्र गुज़र गयी
कहीं हो न जाऊँ मैं रायगाँ, मेरी आधी उम्र गुज़र गयी
-इरफ़ान सत्तार

मेरे हमनफ़स मेरे हमनवा मुझे दोस्त बनके दग़ा न दे
मैं हूँ दर्दे-इश्क़ से जाँ-ब-लब मुझे ज़िन्दगी की दुआ न दे
-शकील बदायूँनी, बदायूँ (उत्तर प्रदेश)

मेरा क़त्ल था मेरे शहर में न गवाह था न वकील था
मेरे क़त्ल में तेरा हाथ था तेरा ज़र्द चेहरा दलील था
-अंसार अली रिज़वी 'मुज़्तर' फलादवी (उत्तर प्रदेश)

वो जो हम में तुम में क़रार था तुम्हें याद हो कि न याद हो
वो ही यानी वादा निबाह का तुम्हें याद हो न कि याद हो
-मोमिन ख़ाँ मोमिन, देहली

मशहूर फ़िल्मों के गानों के मुखड़े

बहरे कामिल में रचे गए गीत-

तुझे क्या सुनाऊँ मैं दिलरुबा तेरे सामने मेरा हाल है
तेरी इक निगाह की बात है मेरी ज़िंदगी का सवाल है
मजरूह सुल्तानपुरी, फ़िल्म-आख़िरी दाँव (1958)

मुझे तुमसे कुछ भी न चाहिये मुझे मेरे हाल पे छोड़ दो
मेरा दिल अगर कोई दिल नहीं उसे मेरे सामने तोड़ दो
शैलेन्द्र, फ़िल्म-कन्हैया(1959)

मैं ख़याल हूँ किसी और का मुझे सोचता कोई और है
सरे-आईना मेरा अक़्स है पसे-आईना कोई और है
सलीम कौसर, फ़िल्म-अज्ञात

किसी राह में किसी मोड़ पर कहीं चल न देना तू छोड़कर
मेरे हमसफ़र, मेरे हमसफ़र, मेरे हमसफ़र, मेरे हमसफ़र
आनन्द बक्शी, फ़िल्म-मेरे हमसफ़र(1970)

संकलन - ओमप्रकाश खींची 'दिल' सीकरी

21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें

बहरे-कामिल मुसम्मन सालिम में ग़ज़लें

हम्द

तू छुपा है सबकी निगाह से कोई तुझसे फिर भी छुपा नहीं
तू सभी के दिल के क़रीब है कोई शख़्स तुझसे जुदा नहीं

तू हर एक ज़र्रे से है अयाँ तेरा हर मुक़ाम पे है निशाँ
तेरे दम से ही ये जहान है कोई और तेरे सिवा नहीं

है तेरा ही नूर फ़िज़ाओं में, है तेरी ही ख़ुशबू हवाओं में
है तेरा वजूद तो हर जगह तेरा जब कि कोई पता नहीं

सभी शय पे तेरा ही है करम कोई कैसे इसको भुला भी दे
ये ज़बाँ नहीं किसी काम की तेरा नाम जिसने लिया नहीं

किया जिसने जुर्म जहान में वो न बच सकेगा अज़ाब से
है वो कौन लोग मेरे ख़ुदा तेरे डोर से जो बंधा नहीं

वो नहीं रुकेगा क़दम कभी जो उठा ख़ुदा ही के नाम पर
जो चला है ईमाँ की राह पर वो कभी किसी से डरा नहीं

ये 'अरुण' के दिल का यक़ीन है जिसे तोड़ सकता नहीं कोई
तेरे आगे उसने झुकाया सर जो किसी के आगे झुका नहीं

-अरुण कुमार आर्य

मैं उठाये अपनी ही लाश को खड़ा मुंतज़िर सरे-राह हूँ
मुझे भी दिखाओ अदालतें मैं भी हादसे का गवाह हूँ

मुझे सच से कोई गुरेज़ क्या मेरा और होगा बिगाड़ क्या
करूँ आशियाँ की मैं फ़िक्र क्यूँ मैं तो जिस्म-जाँ से तबाह हूँ

मैं तो हूँ अज़ल से रवाँ-दवाँ, मेरा ये बहाव है दायमी
ये है बूँद जितना हूँ सामने, जो छिपा हूँ उतना अथाह हूँ

सरे-ख़ुल्द मेरा मुक़ाम था, न मैं ख़्वाहिशों का ग़ुलाम था
मेरे सर पे सेहरा-ए-ख़ल्क़ है मैं वो बेहतरीन गुनाह हूँ

मेरा दर्जा आलातरीन है, बड़ा ख़ास हूँ मैं जहान में
मेरे दम से नस्लों की ज़िंदगी, मैं ही पीढ़ियों की पनाह हूँ

मैं तजल्लियों में पला बढ़ा, मुझे क्या डरायेंगी ज़ुल्मतें
जो शुहूद जलवा-ए-नूर है सरे-तूर मैं वो निगाह हूँ

जो समंदरों से निकल गयी कभी कोह काट गुज़र गयी
है जो मंज़िलों की पहुँच 'अनिल' वही सख़्त-सख़्त मैं राह हूँ

-अनिल कुमार सिंह

न थका कभी न बुझा कभी न ख़फ़ा हुआ न जुदा हुआ
वो चिराग़ था कि लहू मेरा जो हवा में भी था जला हुआ

जो कहा गया वो न झूठ था यही सोच-सोच के दोस्तो
न तो पत्थरों से मिला कभी न मैं आइने से ख़फ़ा हुआ

मेरे ख़्वाब का ये कमाल था कभी राह में कभी रेत पर
कहीं धूप बन के सफ़र में था कभी धूल बन के हवा हुआ

यूँ क़रीब आके न दूर जा मेरे सब्र को न तू आज़मा
मैं तेरी निगाह के पास हूँ तेरी नफ़रतों से भरा हुआ

ये नसीब है कि है बेबसी कई रंजो-ग़म है लिये हुए
यूँ ही फिर रहा है जो दर-बदर इन्हीं मुश्किलों से घिरा हुआ

-अनिरुद्ध सिन्हा

मेरी जाँ नशे में नहीं हूँ मैं तेरे हुस्न का ये सुरूर है
तुझे देखकर न समझ सका तू परी है या कोई हूर है

तेरा प्यार है मेरी ज़िन्दगी मेरे पास आ मेरी दिलनशीं
तू ही मेरे दिल का क़रार है तू ही मेरी आँखों का नूर है

मुझे तुझसे कोई गिला नहीं मुझे मौत दे तू या ज़िन्दगी
जो तेरी रज़ा वो मेरी रज़ा मेरी जान तेरे हुज़ूर है

किसी और की ये ख़ता नहीं किसी और से मैं ख़फ़ा नहीं
किसी संग दिल से वफ़ा किया ये मेरे ही दिल का क़ुसूर है

कहीं दिन 'अरुण' कहीं रात है ये ख़ुलूसो-इश्क़ की बात है
कोई दूर हो के भी पास है कोई पास हो के भी दूर है

-अरुण कुमार आर्य

चलो आज सबको बता दिया ग़मे-यार ने हमें क्या दिया
तेरे ग़म की लौ ने जला दिया मेरा दिल जो था वो हुआ दिया

सरे-बज़्म उनसे नज़र मिली सरे-बज़्म दिल हुआ आशना
मेरी धड़कनों को ये क्या हुआ कोई ज़लज़ला ही मचा दिया

तेरे वस्ल की रही आरज़ू तेरे लम्स की रही जुस्तुजू
मेरी आरज़ू मेरी जुस्तुजू ने दिया तो कैसा सिला दिया

ये अँधेरे रास्ते हिज्र के ये घटा ये बर्क़ ये आँधियाँ
मुझे डर था बस इसी बात का लो चली हवा लो बुझा दिया

है 'शिहाब' वो बुते-नामाबर मेरे दिल के दैर में मोतक़िफ़
मगर उसने मुझको जज़ा न दी जो दिया तो हिज्रे-बक़ा दिया

-एजाज़ उल हक़ 'शिहाब'

अजी कुछ ज़बाँ भी हिले-डुले कुछ अगर-मगर की भी बात हो
कभी हाँ में हाँ की भी मात हो कभी ना-नुकर की भी बात हो

उसी एक सम्त ही देखना ये बहुत हुआ ये थका न दे
कुछ इधर-उधर भी नज़र पड़े कुछ इधर-उधर की भी बात हो

ये बुझी-बुझी सी जो आस है ये जो राख-राख उमीद है
इसे थोड़ा थोड़ा कुरेदिए कि शरर-वरर की भी बात हो

ये जो चौड़े-चौड़े से हाइवे हैं बड़ी-बड़ी हैं इमारतें
ये विकास जिसके सबब से है कभी उस हुनर की भी बात हो

मेरी कामयाबी की दास्ताँ पे जो तबसिरा हो 'नदीम' जी
मेरे हमसफ़र का भी ज़िक्र हो मेरी रहगुज़र की भी बात हो

-ओमप्रकाश नदीम

तू चली गयी तो लगा यही मेरी ज़िंदगी भी नहीं रही
ये अदब है मुझसे ख़फ़ा-ख़फ़ा कोई शायरी भी नहीं रही

थी बड़ी सुकून की रात वो मेरे हाथ में तेरा हाथ वो
मेरे रूबरू वो जो चाँद था वैसी चाँदनी भी नहीं रही

हूँ चिराग़ भी मैं थका-थका लगे यूँ कि जैसे अभी बुझा
मेरी आस भी है धुआँ-धुआँ ज़रा रौशनी भी नहीं रही

ये जो ऐतबार का ख़ून है ये जफ़ा का ही तो जुनून है
कोई बात इश्क़ की क्या करे यहाँ दोस्ती भी नहीं रही

ये सुना था प्यार है बंदगी यही बंदगी तो है ज़िंदगी
न रहा वो आज ख़ुदा मेरा और बंदगी भी नहीं रही

तू दिलो-दिमाग़ भी ले गया तू ख़ुशी का बाग़ भी ले गया
न तेरा ख़याल है अब मुझे मेरी आशिक़ी भी नहीं रही

-कुमार पंकजेश

है चली ये कैसी यहाँ हवा ये नयी-नयी है कोई वबा
ये जहान सारा ही ज़द में है, नहीं है अभी तो कोई दवा

है बिदेसी मरज़ अजीब-सा जो बचा वो उसका नसीब था
पूरे दो बरस तो गुज़र गये बड़ी थक चुकी है मेरी दुआ

अभी एक साँस पे जंग है कोई देवता कोई संग है
वो करेगा कैसे इलाज भी कि तबीब भी है डरा-डरा

कोई रोज़गार रहा नहीं कोई दर्द है जो सहा नहीं
है हर एक चीज़ ही दाँव पर जैसे ज़ीस्त है या कोई जुआ

सभी फ़ोन तक हैं हबीब भी वो जो रहते घर के क़रीब भी
जूँ ही फ़ोन आया तो ये लगा कहीं हादिसा तो नहीं हुआ

कोई कैसे टाले ये वक़्त भी जो है तल्ख़ भी बड़ा सख़्त भी
मुझे सब्र है न है हौसला नहीं चारा कोई मेरे ख़ुदा

-कुमार पंकजेश

तुझे देश सौंपा है इसलिए कि दुरुस्त बाद-ओ-आब हो
तुझे इसलिए नहीं लाये हैं कि ख़राब और ख़राब हो

कहाँ कितनी हो रही आय है, कहाँ कितना हो रहा ख़र्च है
कहो स्वार्थहीन तुम अपने को, भला इसका क्यों न हिसाब हो

तुझी से चमन है चहक रहा, तुझी से चमन है महक रहा
यही हर परिंद है कह रहा, यही जूही हो कि गुलाब हो

जहाँ बहकें संत-महात्मा, जहाँ ज्ञानी-ध्यानी तलब करें
वहाँ क्या बिसात अवाम की, जो पिलाते मस्त शराब हो

जहाँ ये सवाल कि कौन है जो करेगा तुमसे बराबरी
वहाँ क्या मिसाल कोई रखे कि तुम अपना ख़ुद ही जवाब हो

-केशव शरण

तिरे ग़ाफ़िलाना मिज़ाज में, कोई बख़्त अपना पिरो गया
हुआ आँसुओं से यूँ तर-ब-तर, तिरे आस्ताने को धो गया

मैं ग़ज़ल जो लिखने लगा कभी, तो ख़लल-सा दिल में हुआ नुमू
कोई शे'र चैन उड़ा गया, कोई मिस्रा' आँख भिगो गया

मैं कहूँ कि मेरी ये ज़िन्दगी, तिरी बेरुख़ी ने तबाह की
तू कहे कि मेरे नसीब में, जो लिखा था रब ने वो हो गया

तिरी याद की जो ज़मीन थी, उसे अपने अश्कों से सींच कर
वो सुख़नतराज़ सुख़नवरी की उदास फ़स्लों को बो गया

न रिज़ा मिली, न वफ़ा मिली, न सुकूँ मिला, न ही तक़्वियत
वो परीशाँ ही रहा उम्रभर, तिरी बारगाह में जो गया

-ज़ाहिद अबरोल

जो तू ज़िन्दगी में न मिल सका मुझे इसका कोई गिला नहीं
है गिला नसीब में फिर कभी भी वफ़ा का फूल खिला नहीं

मैं रहूँगी संग सदा तेरे तू जहाँ रहे मेरे हमसफ़र
मेरा आशियाँ तेरे दिल में है मेरी चाह कोई क़िला नहीं

मेरी हसरतें मेरे साथ ही तुझे याद कर के हैं थक गयीं
तेरी ख़ामुशी है सज़ा मुझे मेरे प्यार का ये सिला नहीं

ये जो ख़्वाब है मेरी आँख में तेरे दम से है ये बुना हुआ
तेरा अक्स आँख की झील में कई मुद्दतों से हिला नहीं

मेरे प्यार तुम तो नसीब हो मेरी ज़िंदगानी का नूर हो
मैं जहान भर में तलाश की मुझे तुम-सा कोई मिला नहीं

-डॉ. आरती कुमारी

❀

यूँ ही गर्दिशों की गिरफ़्त में, कई माहो-साल गुज़र गये
कभी तुम निगाह से गिर गये, कभी हम नज़र से उतर गये

वो हसीन ख़्वाब जिन्हें कि हम, कभी मान बैठे थे ज़िंदगी
ये न जाने किसकी नज़र लगी, सभी रेज़ा-रेज़ा बिखर गये

न तो बाग़बाँ से शिकायतें, न बहार ही से कोई गिला
इसी गुल्सिताँ के थे फूल हम, इसी गुल्सिताँ में बिखर गये

कई साल पहले जो देखकर, हमें मुस्कराता था आइना
वही आइना है मगर ये क्या कि हम अपने चेहरे से डर गये

मेरी आरज़ू, मेरी हसरतो! उन्हें ढूँढ़िए न यहाँ-वहाँ
वो मुहब्बतों के हसीन पल, जो गुज़र गये सो गुज़र गये

-डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़', मुरादाबाद

❀

यूँ न याद आ मुझे अजनबी, मिरी आँख से है झड़ी लगी
तुझे क्या ख़बर तिरी याद में, मैं हूँ नीम शब में तड़प रही

तू है जब से रूह पे छा गया, हुई हिचकियों की ये इन्तिहा
मिरी ख़ामुशी है ये पूछती, मिरा ख़्वाब है या तू ज़िन्दगी

तिरा इज़्न जब से हुआ मुझे, न कहा जो तूने, सुना मुझे
मिरी करवटों में ही शब गयी, यूँ ही शब उनींदी गुज़ार दी

मिरा दिल है तुझ से ही आश्ना, मिरी बन्दगी तू मिरा ख़ुदा
नहीं दर्द की है दवा कोई, न ही मेरा तेरे सिवा कोई

जो चराग़ तूने जला दिया, चला रौशनी का वो सिलसिला
ये जो आग दिल में दहक उठी, तू बता कि क्या करे 'नाज़ली'

-डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

नहीं साँस भी ली थी ढंग से, अभी आये थे अभी चल दिये
वो उसूल प्यार के आपने, क्यों हुज़ूर आज बदल दिये

न तो ठीक से थे खिले अभी, नहीं ख़ुशबुएँ ही रवाँ हुईं
भला फूल बीच बहार में, क्यों ख़िज़ाँ ने आके मसल दिये

न तो ख़त्म हो सकीं इल्लतें, नहीं क़िल्लतें ही फ़ना हुईं
ऐ नसीब! फिर तूने किसलिए, हमें ज़िल्लतों के ये पल दिये

उन्हें था ग़ुरूरो-गुमाँ बहुत, कि सबा बहायेंगे वो नयी
अभी तक उन्होंने मगर नहीं, किसी भी सवाल के हल दिये

ये तो वो ही जानें कि शाइरी के वो साथ कैसे रहे सुखी
हमें तो मगर इसी शौक़ ने, सदा दर्द के ही महल दिये

ऐ शजर! कहो किसी का हृदय, कैसे 'जीत' पाओगे तुम कभी
न तो राहगीर को छाँव दी, नहीं पंछियों को ही फल दिये

-ब्रह्मजीत गौतम

जो मेरा न था वो मिला नहीं, मुझे ज़िंदगी से गिला नहीं
मैं हूँ शाख़ ऐसी बहार की, जहाँ फूल कोई खिला नहीं

जो दुखा के दिल को किसी के भी यही चाहता है कि ख़ुश रहे
मुझे ऐसा शख़्स जहान में कोई ख़ुशनसीब मिला नहीं

उसे क्या ख़बर भला टीस की उसे क्या पता भला दर्द का
जो गुलाब काँटों के साथ में कभी मुस्कुरा के खिला नहीं

मेरा हौसला मेरा क़ायदा मेरी सादगी मेरा वलवला
यही देख के मेरे दुश्मनों मुझे पाया कोई हिला नहीं

मुझे एक बात का रंज है मुझे एक ही है मलाल ये
तुझे क्या बताऊँ मैं 'यास्मीं' तेरा प्यार मुझको मिला नहीं

-डॉ.यासमीन मूमल

मुझे इश्क़ का तो पता नहीं तेरे दिल का मुझको ख़याल है
जो मैं तुझ से मिल के न कह सका उसी बात का तो मलाल है

तुझे ग़ैर लेके चला गया मुझे दर्द उम्र का दे गया
मेरी आँख में तेरा अक्स भी करे मुझसे कितने सवाल है

तेरे आस्ताँ पे झुका हुआ मेरा हिज्र भी तो है सिरफिरा
मेरा इश्क़ मुझसे जो छीन ले ये भला किसी की मजाल है

ये जो चाँदनी के हैं सिलसिले ये पहाड़ों नदियों के क़ाफ़िले
ये जो आस्माँ का वजूद है ये इन्हीं के दम का कमाल है

मेरे इश्क़ पर न लगाम है जो जिगर पे तेरा ही नाम है
इसे वुसअतों की तलाश है मुझे रात दिन ये ख़याल है

तेरा शहर था कभी आशना मेरी दिलरुबा मेरी हमनवा
ये ख़फ़ा हुआ है जो बेसबब करे मुझसे कितने सवाल है

चली चाल ऐसी बशर ने अब, हुई कायनात ये दर-बदर
कि उजड़ गयीं हैं जो पीढ़ियाँ, ये नयी सदी का वबाल है

मैं खड़ा हूँ झील के उस तरफ़ ज़रा आके मिल मुझे इस तरफ़
ये 'शलभ' का वस्ले-निसार है हुई ज़िंदगी भी मुहाल है

-डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'

वो जो साथ तेरे रहीं सदा वही आरज़ू हैं मुहब्बतें
लिया हाथ तूने जो हाथ में मेरी आबरू हैं मुहब्बतें

कभी रुक गयीं जो ये धड़कनें न उदास होना तू हमनवा
ये न दरिया सी कहीं ठहरी हैं बनी आबजू हैं मुहब्बतें

जिसे लफ़्ज़ों ने न कहा कभी न लिखा कभी न पढ़ा कभी
वही अनकही वही, अनसुनी रही गुफ़्तगू हैं मुहब्बतें

रहें शीरीं के या हों लैला के भले सोहनी के ही क़िस्से हों
नहीं है अलग किसी एक की सभी हूबहू हैं मुहब्बतें

लो बदल रहा है ये वक़्त भी ज़रा अब बदल तू भी 'भवि' यहाँ
तेरी ज़ीस्त में यूँ खड़ी मिलीं जो भी दूबदू हैं मुहब्बतें

-शुचि 'भवि

मेरी ज़िंदगी का उसूल है कि मुहब्बतों का सिला दिया
जो मिला तो सजदे में झुक गया न मिला तो उसको भुला दिया

कि करी जो उसने जफ़ा कभी मैंने हँस के उसको दुआ ही दी
मैंने उसके देखो ग़ुरूर को यूँ ही चुटकियों में उड़ा दिया

वो नज़र में मेरी यूँ जा बसा कि पलक भी देखती रह गयी
तेरे आरिज़ों पे चमक उठा मेरा अज़्म उसने बढ़ा दिया

वो पहाड़ी रात का ख़्वाब था जिसे सुब्ह शम्स तलाशता
यूँ वजूद अपना गँवा के भी मैंने दंभ अपना दिखा दिया

उड़े जो परिंदे शजर से वो कभी लौट के भी न आ सके
कि पराई धरती के मोह में कैसे देश ही को भुला दिया

मेरी ज़िंदगी किसी और की इसे दरबदर मैं न होने दूँ
मैं 'शलभ' वफ़ा का चिराग़ हूँ मेरा क़ौल मैंने निभा दिया

-डॉ. विनोद प्रकाश गुप्त 'शलभ'

नये हादसे को न जोड़िए, गए हादसों के ग़ुबार से
इसे ख़ुदकुशी का न नाम दें, कोई गिर पड़ा है कगार से

यही सोचकर दबे पाँव हम निकल आए तेरे दयार से
कोई गुल किसी से न पूछ ले तुझे क्या मिला है बहार से

तू है बेज़ुबान तो क्या हुआ कोई ढूँढ़ने तुझे आ गया
कोई गूँज कर ज़रा शोर कर कोई हर्फ़ लेके पुकार से

ये सवाल करती है नग़मगी तेरा मसअला ज़रा साफ़ कर
तुझे नग़मे से हैं शिकायतें कि गिले हैं नग़मानिगार से

न हैं छत पे सूखते पैरहन कहो लोग घर के गये कहाँ
ये सवाल करती हैं बुलबुलें इक उदास-से बंधे तार से

मैं वही हूँ जिसकी मुराद में सभी लोग हैं ये क़तार में
तेरा साथ ही मेरा शौक़ है मुझे मत निकाल क़तार से

-विजय कुमार स्वर्णकार

मुझे क्यों लगे यही, बस यही, तू यहीं कहीं मेरे पास है
ये हवा भी मुझको बता गयी, तू यहीं कहीं मेरे पास है

ये फ़िज़ा, ये फूल, ये तितलियाँ, ये नदी, कछार, ये घाटियाँ
मुझे कह रहे हैं यही सभी, तू यहीं कहीं मेरे पास है

तेरी वो चहक, तेरी वो ललक, न मैं भूल पायी हूँ अब तलक
तेरी वो हँसी ये बता रही, तू यहीं कहीं मेरे पास है

मेरे उलझे-उलझे सवाल हैं, कभी आके इनका जवाब दे
मेरे दिल में बात ये जम गयी, तू यहीं कहीं मेरे पास है

मुझे क्यों लगे तू भी याद कर, मुझे आठों याम पुकारता
मुझे कह रही मेरी बेकली, तू यहीं कहीं मेरे पास है

न मैं पूछती किसी और से, न मैं खोजती कहीं और ही
मेरी रूह मुझसे ये बोलती, तू यहीं कहीं मेरे पास है

कभी बादलों की ही ओट से, कभी बिजलियों की लकीर से
मुझे तू भी आके बता कभी, तू यहीं कहीं मेरे पास है

-डॉ. सीमा विजयवर्गीय

हुआ किसलिए है तू बेवफ़ा जो बता सके तो बता मुझे
तुझे कौन मुझसे हसीं मिला जो बता सके तो बता मुझे

मुझे लूटकर मुझे तोड़कर मुझे छोड़कर मुझे भूलकर
भला किस तरह तू जिया किया जो बता सके तो बता मुझे

वही शाम है वही रंग है वही नूर है वही रौनक़ें
मेरा दिल है फिर क्यों बुझा-बुझा जो बता सके तो बता मुझे

तेरी आस है तेरी प्यास है तेरी आरज़ू तेरी जुस्तजू
नहीं पास क्यों है तेरी वफ़ा जो बता सके तो बता मुझे

मेरी रौशनी मेरी आशिक़ी मेरी शायरी मेरी ज़िन्दगी
तू बदल गयी तुझे क्या हुआ जो बता सके तो बता मुझे

-धर्मेन्द्र गुप्त साहिल

ऐ ख़ुदा यही है दुआ मेरी, मैं गिरूँ न दिल के मक़ाम से
मेरी ज़िन्दगी को नवाज़ दे तू मुहब्बतों के पयाम से

ये हयात देख महक रही, मेरी शायरी भी चमक रही
'तेरे ज़िक्र से, तेरी फ़िक्र से, तेरी याद से, तेरे नाम से'

ये हयात है तेरी चार दिन, न किसी को अपना रक़ीब गिन
तू मिटा दे दिल से ये दुश्मनी, अभी चाहतों के सलाम से

भला चैन कैसे वो पायेंगे, वो हमेशा दिल को जलायेंगे
जो गुज़ार देते हैं ज़िंदगी यहाँ देख रिज़्क़-ए-हराम से

ये जहान पढ़के कहे जिसे, तेरी शायरी में है बात कुछ
ऐ ख़ुदा 'अहद' को नवाज़ दे तू कभी तो ऐसे कलाम से !

-अमित 'अहद'

जो कहा किसी ने कभी मुझे, तेरा ग़मगुसार कोई तो हो
ये नगर है सारा ही अजनबी, तेरा राज़दार कोई तो हो

तू कहाँ से आया है यह बता, याँ हर इक नज़र है ये पूछती
तुझे किस बशर की तलाश है, तेरा आर पार कोई तो हो

जो हवा ने रुख़ है बदल लिया, तो ये रास तुझको न आएगी
तेरी ख़ूबियों का पता चले, कहीं जानकार कोई तो हो

तू भटक रहा लिये तिश्नगी, कभी कोह में कभी दश्त में
तेरी तिश्नगी जो बुझा सके, कहीं आबशार कोई तो हो

भरे गुलसितानों के शहर में, तेरा ख़ाली दामाँ रहे भी क्यूँ
कोई गुल नहीं तो नहीं सही, तेरे हिस्से ख़ार कोई तो हो

तेरी सोच है सबसे अलग, तेरा रास्ता सभी से जुदा
जो अकेला हो लिए क़ाफ़िला, उसी में शुमार कोई तो हो

तू है नूर सच का लिए हुए, तुम्हें 'अंजुम' आज बता ही दूँ
तेरे सच को जो पहचान दे, ऐसा संगसार कोई तो हो

-प्यासा अंजुम

नया गीत हो, नया साज़ हो नया जोश और उमंग हो
नये साल में नए गुल खिलें नयी हो महक नया रंग हो

है जो मस्त अपने ही हाल में कोई फ़िक्र कल की न हो जिसे
उसे रास आती है ज़िंदगी जो कबीर जैसा मलंग हो

वही रंजिशें, वही दुश्मनी, मिला क्या हमें बता जीत से
तेरी हार में मेरी हार है यही सोच लें तो न जंग हो

तुझे देखकर मुझे यूँ लगा, कोई संदली-सी है शाख़ तू
जो न रह सके तुझे छोड़कर, मेरा दिल ये जैसे भुजंग हो

हो न लिजलिजा बिना रीढ़ का, है यही दुआ ऐ मेरे ख़ुदा
दे वतन को ऐसा तू रहनुमा जो दिलेर और दबंग हो

- नीरज गोस्वामी

❀

तू किसी का ख़्वाब हो जब तलक मुझे देखने तो दे तब तलक
कोई होगा सच तेरा कल मगर मुझे सोचने तो दे तब तलक

जिसे जानता भी है तू नहीं वो तेरा ख़ुदा न बने कहीं
अभी संगे-दिल ये धड़क रहा इसे चाहने तो दे तब तलक

मैं तो माँगता ही रहा दुआ कोई लाये इनमें असर ज़रा
ये सदाएँ पहुँचें ख़लाओं में इन्हें गूँजने तो दे तब तलक

ये अँधेरा पूरा कटा कहाँ है रचा सवेरा नया कहाँ
अभी काम थोड़ा-सा है बचा मुझे जागने तो दे तब तलक

है तेरे लबों की जो अनकही वो मेरे लबों से ये कह रही
कोई सिल न दे इन्हें ज़ब्त कर मुझे बोलने तो दे तब तलक

ज़रा बचपना ज़रा सचपना वही करना करना जिसे मना
नहीं चाह कुछ रहे चाह में मुझे चाहने तो दे तब तलक

कभी रूह को न मिले बदन न बदन को ही कहीं पैरहन
ये जो ज़िंदगी का है सूत भर इसे कातने तो दे तब तलक

हों हवाओं में भरी ख़ुशबुएँ हों फ़िज़ाओं में सजी रंगतें
ये जहाँ मिले न मिले मगर मुझे माँगने तो दे तब तलक

मेरे हाथ में है कोई सिरा तेरे पास क्या वो जो दूसरा
हमें चलना है इसी डोर पर इसे बाँधने तो दे तब तलक

हैं मुहब्बतों की इबारतें तेरी साँसें ये तेरी धड़कनें
अभी जान जाने में देर है इन्हें जानने तो दे तब तलक

नयी ख़्वाहिशें नयी कोशिशें भले इन पे कितनी ही बंदिशें
ये ज़मीं ये आसमाँ एक कर इन्हें जोड़ने तो दे तब तलक

'अनिमेष' कैसी ये शायरी जो नहीं नज़र में भरी तरी
जो बना दे ज़िन्दगी-ज़िंदगी उसे ढूँढ़ने तो दे तब तलक

- प्रेम रंजन 'अनिमेष'

ये नये उसूल का शहर है, यहाँ ज़ाब्ता कोई और है
यहाँ ख़्वाब हैं किसी और के, यहाँ देखता कोई और है

मेरे दिल को जाने ये क्या हुआ, मुझे बारहा ये गुमाँ रहा
यहाँ रात है किसी और की, यहाँ जागता कोई और है

ये बसारतों की ख़ता नहीं, ये है क़िस्मतों का लिखा हुआ
मेरी आँख में तेरे ख़्वाब हैं, जिन्हें देखता कोई और है

यहाँ जो भी है वो ख़ुदा का है, न सुख़न मेरा, न नवा मेरी
यहाँ लफ़्ज़ हैं किसी और के, यहाँ बोलता कोई और है

वही क़ाफ़िला, वही तिश्नगी, वही कशमकश, वही बेबसी
मैं हुसैन हूँ, मगर आज का, मेरी कर्बला कोई और है

तू है बेख़बर, तू ही ख़ौफ़ कर, तू ही बादबा पे निगाह कर
मुझे छौड़ दे मेरे हाल पर, मेरा नाख़ुदा कोई और है

तू रहीम है, तू करीम है, मुझे इस भँवर से निकाल दे
मैं हबीब हूँ किसी और का, मुझे चाहता कोई और है

-मंसूर उस्मानी

कहीं और ऐसी लचक नहीं, कहीं और ऐसी झमक नहीं
जो ठसक है तेरी अदाओं में, कहीं और ऐसी ठसक नहीं

न तो कम पड़ा है मेरा हुनर, न तेरा जमाल ही कम हुआ
मगर आज जिसकी तलाश है, मेरे पास वैसी धनक नहीं

फ़क़त इसलिए ही तो हर तरफ़, दिले-नाउमीदों की भीड़ है
कहीं धड़कनों में धमक नहीं, कहीं चाहतों में कसक नहीं

न तो गुलशनों का अकाल है, न ही फूलों की है कमी, मगर
जिसे लम्से-दिल का शऊर हो, किसी फूल में वो महक नहीं

'नवीन' आप कुछ भी कहें मगर ये ही सच है सारे जहान का
कहीं तो फ़ुज़ूल का शोर है कहीं कानोंकान भनक नहीं

-नवीन सी चतुर्वेदी

❀

मेरा हमनवा मेरा हमनशीं, मेरा चैन मेरा नसीब है
वही धड़कनों में शुमार है, वही ज़िन्दगी है हबीब है

खुला दर मेरा तेरे वास्ते, ज़रा आज दिल में समा मेरे
मिलें हिम्मतें मिले हौसला, कि यक़ीनी तू ही रक़ीब है

ज़रा भूल जा तू ये नफ़रतें, तू चमन को यूँ न तबाह कर
कहे नेकियाँ की तू प्यार कर, तू ख़ुदा के यार क़रीब है

ये जुदाई कैसे बता सहें, अभी मंज़िलें बड़ी दूर हैं
मेरा दर्दे दिल भी है अब बढ़ा, बता क्या सनम तू तबीब है

ये सिला वफ़ा का है मिल रहा, कि नज़र में हैं तेरी चाहतें
ये ग़ज़ल कहाँ मेरी मिल्कियत, तेरा दर्द है, जो अदीब है

करे ये वबा भी तो दुश्मनी, हो निगाह कुछ तो मेरे ख़ुदा
लगा ढेर लाशों का हर तरफ़, कोई ज़लज़ला-सा मुहीब है

ले दुआएँ तू भी गरीब की, यही बंदगी है ख़ुदा सनम
चले उल्फ़तों की जो राह पे, वही जान सच्चा ख़तीब है

भला क्यों जले हैं, ये लोग सब, गले जब लगाते हो तुम मुझे
नहीं फ़लसफ़ा है ये इश्क़ का, कहो बात क्या ये अजीब है

करो मत ग़ुरूर भी दोस्तो, नहीं काम की हैं ये दौलतें
जो उदास औरों के ग़म में हो, वही रब का देख मुनीब है

-मीना भट्ट

❀

न चराग़ आस का है कहीं, न ही आसमाँ में क़मर अयाँ
हमें रौशनी की तलाश है, चलो ढूँढ़ते हैं कि है कहाँ

न तो चैन है न क़रार है, न मिला ग़मों से नजात ही
वही बेकसी, वही बेहिसी, वही दर्द है, वही है फ़ुग़ाँ

वही ज़िंदगी की मुसीबतें, नये हादसे यहाँ रोज़ ही
जो थी आरज़ू, जो थी जुस्तजू, जो भी ख़्वाब थे हुए राएगाँ

कहीं साज़िशें, कहीं राजिंशें, कहीं तल्ख़ियाँ, कहीं दुश्मनी
कोई हम-नवा है न हम-ज़बाँ, न यक़ीं है रिश्तों के दरमियाँ

वही दूरियाँ, वही फ़ासले, नया कारवाँ, नये हम-सफ़र
कड़ी धूप है अभी राह में, नहीं दूर तक कोई साएबाँ

कहीं बेबसी, कहीं मुफ़लिसी, कहीं माल-ओ-ज़र, कहीं भूख है
कोई मसअला नहीं हल हुआ, हमें दे रहे वो तसल्लियाँ

लगी दाँव पर यहाँ ज़िंदगी किसे है ख़बर ये न पूछिए
करे फ़िक्र कौन अवाम की यहाँ हर बशर लगे नातवाँ

जो हक़ूक़ है उसे याद रख, जो मिला नहीं उसे माँग ले
जो सवाल है उसे पूछ भी, जो मलाल है उसे दे ज़बाँ

-हिमकर श्याम

कोई रहगुज़र न हो हमसफ़र ये सफ़र रहेगा यक़ीन है
मेरे हौसलों मेरी हिम्मतों का असर रहेगा यक़ीन है

बड़ी बेबसी में ही छोड़ता कोई साथ अपनी ज़मीन का
मेरी राह देखता गाँव में मेरा घर रहेगा यक़ीन है

भले आयें कितनी मुसीबतें भले पाऊँ कितनी मसर्रतें
यूँ ही हर घड़ी मेरे कांधे पर मेरा सर रहेगा यक़ीन है

चलीं कैसी अब के हैं आँधियाँ भरा हर तरफ़ ही धुआँ-धुआँ
मेरे साथ साँसें सहेजता ये शजर रहेगा यक़ीन है

बड़े असलहे बड़ी साज़िशें अभी नफ़रतें अभी रंजिशें
कभी प्यार बन के लहू रगों में उतर रहेगा यक़ीन है

खड़ी धूप रह पे है छाँव ले यूँ ही बढ़ते जायेंगे पाँव ये
हैं दुआएँ सच्चे दिलों की जब तो असर रहेगा यक़ीन है

कोई पूँजी इसके सिवा कहाँ मेरे पास रिश्तों का ये जहाँ
इन्हें जोड़ने का सँजोने का ये हुनर रहेगा यक़ीन है

रही शायरी तो ये दर-ब-दर कभी अर्श पर कभी फ़र्श पर
वो जो सच है ख़्वाब ख़याल भी वो नगर रहेगा यक़ीन है

नयी सुबह की वही लौ लिये अभी जल रहे हैं कई दिये
है 'शरद' सुलगता जो सीने में वो शरर रहेगा यक़ीन है

-शरद रंजन 'शरद'

तेरी हर ख़ुशी का ख़याल हो, तेरी बेबसी का पता रहे
मेरे प्यार को तू ख़ता कहे, जो हुई ख़ता तो ख़ता रहे

तेरा लफ़्ज़-लफ़्ज़ रुबाई है, तेरी गुफ़्तगू है ग़ज़ल मेरी
मेरी नज़्म को तू क़ता कहे, जो क़ता कहे तो क़ता रहे

मेरी चुप्पियों का असर मुझे यूँ तो मुश्किलों से बचा गया
किसे क्या पता वही आजकल मुझे शोर बन के सता रहे

न यक़ीन था तेरी बात पर, मुझे लग रही है सहीह अब
नहीं फ़िक्र है किसी बात की, मुझे फ़ासले ही सता रहे

वो न दूसरे कोई और हैं, मेरे दोस्त हैं मेरे यार हैं
मेरी दोस्ती के जवाब में, हक़-ए-दुश्मनी जो जता रहे

मेरी ताक़तों को बढ़ा गया, मेरी ख़ामियों का वजूद ही
हुए वाक़ये से भी कम से कम, मेरे हौसले का पता रहे

-संजीव प्रभाकर

मुझे मुन्तिज़र न रखा करो मुझे सुब्ह-शाम मिला करो
न ख़फ़ा रहो न ख़फ़ा करो मुझे सुब्ह-शाम मिला करो

मैं मरीज़े-इश्क़ तुम्हारा हूँ मुझे तुमसे ही तो शिफ़ा मिले
न दवा करो, न दुआ करो मुझे सुब्ह-शाम मिला करो

ये दरख़्ते-ज़ीस्त हरा रहे कोई फूल इस पे खिला रहे
इसी वास्ते ये किया करो मुझे सुब्ह-शाम मिला करो

जो ख़ुशी मिले तो गले लगो कभी ग़म मिले तो न रो पड़ो
जो भी दिल में है वो कहा करो मुझे सुब्ह-शाम मिला करो

मेरी ज़िंदगी में है तीरगी, हो चराग़ की तुम्हीं रौशनी
मेरी ज़िंदगी में 'ज़िया' करो मुझे सुब्ह-शाम मिला करो

-सुभाष पाठक ज़िया

ये जो बादलों के पहाड़ हैं कोई देखो इन पे है चल रहा
बड़ा डर भरा है ये वाक़या कहीं कोई मुझमें दहल रहा

न वो अब उजालों की ख़्वाहिशें न वो अब ख़ुशी के हैं गीत ही
कहीं तितलियों के हैं पर नुचे कहीं दिल है फूलों का जल रहा

कहीं कोई मुझमें है तिश्नालब रहा खोया मैं भी सराब में
वही लग़्ज़िशों का है सिलसिला न तो गिर रहा न सँभल रहा

मेरा आसमाँ है ख़फ़ा-ख़फ़ा मेरा चाँद भी तो उदास है
वही तीरगी वही धुंध है मेरा आफ़ताब है ढल रहा

करूँ क्या गिला किसी और से कहूँ किसको बनने को हमसफ़र
ज़मीं मेरी मुझको है छोड़ती मुझे मेरा साया है छल रहा

किसे है ग़रज़ ज़रा पूछ ले सभी आप-आप में हैं लगे
कोई दश्त मुझमें झुलस रहा कोई संग मुझमें उबल रहा

कहूँ कैसे कैसी है कैफ़ियत यहाँ लम्हा-लम्हा अजीब है
कहीं 'ज्ञान' बर्फ़ है जम रही कहीं कोह कोई पिघल रहा

-ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

किसे है ख़बर सुने कौन अब जिसे देखिये हैं मचल रहे
ये जो चार-सू है धुआँ-धुआँ कहीं सब्ज़ पेड़ हैं जल रहे

न वो हर्फ़-हर्फ़ हयात अब न वो लम्स-लम्स सुकून ही
यहाँ ख़्वाब-ख़्वाब सुकूत बस, यहाँ ज़ेहन-ज़ेहन उडल रहे

ये जो चीख़ है जो शिगाफ़ ये उसी इक नदी का है आइना
उन्हीं आँसुओं के चनाब ये जो कि सूखकर भी सजल रहे

उन्हें क्या पता ये जो रहगुज़र कहाँ जा रही कहाँ खो गयी
उन्हें हाँकता कोई और है उन्हें काम चलने से चल रहे

ये जो आह है ये जो चीख़ है उन्हीं पर्वतों का अज़ाब है
जो हैं मुद्दतों से लरज़ रहे न तो गिर रहे न सम्हल रहे

-ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

मेरी ज़िन्दगी तू मुझे बता, मेरी बेबसी का है नाम क्या
ये जो बेख़ुदी-सी है क्या है ये, मेरी बेकली का है नाम क्या

मेरी धड़कनें बढ़ीं आज क्यूँ, तेरी क़ुर्बतें जो मिलीं मुझे
तेरे लम्स से हुआ आशना, मेरी बेहिसी का है नाम क्या

वो बदन तेरा किसी इत्र-सा, तेरी साँस में थी कोई महक
मेरे ज़ेहन पर जो ये छायी है, कहो साहिरी का है नाम क्या

कोई बनके अपना ये देखिए, मेरा ले गया है क़रार तक
सितम उस पे ये है कि बेरुख़ी, तेरी दोस्ती का है नाम क्या

मुझे क्या ख़बर मुझे क्या पता, मैं हूँ कब से देखिए लापता
मेरी बेख़ुदी में कोई नशा, मेरी गुमरही का है नाम क्या

मेरे लब को गुल-सी शगुफ़्तगी, तेरे लब को छू के ही मिल सकी
मेरी शायरी में असर तेरा, तेरी मयकशी का है नाम क्या

वो जो कल मिला था वो कौन था ये जो आइने में है कौन है
वो 'अज़ान' ग़म से था चूर तो तेरी इस ख़ुशी का है नाम क्या

-अरविन्द अज़ान

मैं हूँ बावफ़ा या कि बेवफ़ा करे तू सवाल तो क्या कहूँ
मेरे हमनवा मुझे तू बता करे तू सवाल तो क्या कहूँ

तेरी जुस्तजू मेरी ज़िन्दगी तेरा प्यार ही तो है हर ख़ुशी
मैं हूँ कौन फिर भी तू पूछता करे तू सवाल तो क्या कहूँ

मेरा ख़ैरख़्वाह न और है न तो हमसफ़र न ही मोतबर
नहीं सच पता तुझे बेवफ़ा करे तू सवाल तो क्या कहूँ

मेरी जीत हो या के हार हो रहा हाथ में तेरे मसअला
रहा जब तुझी पे था फ़ैसला करे तू सवाल तो क्या कहूँ

तेरी दिल्लगी तेरी मयकशी मेरी ज़िंदगी को निगल गयी
मुझे पूछता तू वजह बता करे तू सवाल तो क्या कहूँ

मेरे ख़ानदान को जो कहा रही चुप किया बड़ा सब्र-सा
था क़ुसूर क्या मेरे बाप का करे तू सवाल तो क्या कहूँ

न उसूल पर कभी ख़ुद चला सदा बन ख़ुदा तू मेरा रहा
मुझे पूछ मत मेरा दर्द क्या करे तू सवाल तो क्या कहूँ

तू सलीब पर मुझे टांग कर रहा मौज में तुझे फ़िक्र क्या
तेरे ख़ौफ़ से रही ग़मज़दा करे तू सवाल तो क्या कहूँ

-निर्मला कपिला

अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया
मिसरा-ए-तरह

कई फूल नज़रों में खिल उठे वो जो राह में मुझे तक गया
मेरे पाँव जम से गये वहीं मैं उसी जगह पे ठिठक गया

है अजब नशा तेरी आँख का मैं समझ सका न इसे कभी
ये शराब कैसी शराब है कि मैं बिन पिए ही बहक गया

ऐ क़मर यूँ अपनी ही चाँदनी पे न रह तू इतना भी ख़ुशफ़हम
ये तो शम्स का ही कमाल है कोई रात तू भी चमक गया

कई मंज़िलों से छला गया मैं मसर्रतों की तलाश में
ये तमाम उम्र की बात थी मेरा ज़र्फ़ यूँ न छलक गया

मैं तो हर चमन से निराश था मुझे ख़ुशबुओं की तलाश थी
तेरी याद आयी जो इक ज़रा मेरा अंग-अंग महक गया

मेरे गिर्द रक्स में जुगनुओं ने तो सारी रात गुज़ार दी
वो क़रीब आके पलक ज़रा मेरे सामने जो झपक गया

वो जो एक क़तरा-ए-अश्क मैंने सँजोए रक्खा था मुद्दतों
तेरे इंतज़ार में ऐ 'अनिल' ये भी जाने कैसे टपक गया

गिरह-
मेरी रहबरी का उमीदवार बना जो था वो तो आज ही
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

-अनिल कुमार सिंह

न हवा चली, न धुआँ उठा, मेरा दिल ये कैसे दहक गया
था मलाल एक छुपा हुआ, मेरी आँख से वो छलक गया

मुझे क़ासिदों ने ख़बर न दी, न हवा ने तेरा पता दिया
तेरे आबलों ने जहाँ छुआ, वहीं रास्ता ये महक गया

न झुकाया सर, न थका कभी, मैं सलीब से भी डरा नहीं
जो रक़ीब था मेरा डर गया, मेरी कोशिशों से ही थक गया

न हवा ही मेरे ख़िलाफ़ थी, न किसी ने रोका मुझे मगर
कभी मंज़िलों ने दग़ा किया, कभी रास्ता मैं भटक गया

तू हसीन है तू है रौशनी मेरे दिल में तेरा ही नूर है
तेरा अक्स जिसने भी छू लिया, तो वो आइना ही दमक गया

-अनुराग सुरूर

मुझे क्या हुआ मेरी आँख से ये लहू-लहू सा टपक गया
हुआ रेज़ा-रेज़ा वजूद यूँ कोई शीशा जैसे तड़क गया

कोई हद है अपनी रसाई की जिसे पार पाना मुहाल है
सरे-मुंतहा से भी आगे तक कोई आदमी न मलक गया

मुझे नाज़ है मेरे दोस्त पर हुआ तज़किरा जो कभी मेरा
मेरी ख़ूबियों का बयान कर मेरे ऐब सारे वो ढक गया

ये तो इंतिहा है जुनून की इसे नाम चाहे कुछ और दे
कि मैं अपनी मंज़िलें भूलकर तेरे साथ दूर तलक गया

तेरा ज़िक्र मिस्ले-बहार है तेरा ज़िक्र जैसे घटा कोई
ये हवाएँ तक भी महक उठीं जो दुपट्टा तेरा सरक गया

मेरे हक़ में किसकी दुआएँ आज क़ुबूल हो गयीं देखिये
मेरा हाल कैसे बदल गया ये नसीब कैसे चमक गया

वो जो उम्र भर मेरे साथ चलने की खा रहा था क़सम वो ही
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

-अयूब ख़ान बिस्मिल: तरही ग़ज़ल

वो लगा-लगाके जो बू गया यहाँ कूचा-कूचा महक गया
उसे सारा शहर तलाशता वो दिखा-दिखाके झलक गया

था सियाह रात के जाल में, ये कमाल तेरे जमाल का
वो कि चाँद हो कि सितारा हो, जो बुझा-बुझा था चमक गया

यूँ ही माह एक है चैत का, वहीं दूसरे का धरा दिवस
तभी पत्ता-पत्ता मचल उठा तभी पंछी-पंछी चहक गया

ये ज़रूर है कि ज़रा-ज़रा-सी शराब हमने चढ़ा रखी
मैं तुझे कहूँ तू बहक गया, तू मुझे कहे मैं बहक गया

किसी पेड़ पर नये पात हैं किसी पेड़ पर नये फूल हैं
किसी पेड़ पर नये फल लगे, मैं तो देख-देख लहक गया

मुझे है पता कि मैं हूँ कहाँ, मुझे लौटने की डगर पता
यहाँ मैं नज़ारों में खोया हूँ वहाँ होगा चर्चा भटक गया

ज़रा सोच कितनी उमंग से ये सफ़र था हमने शुरू किया
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

-केशव शरण

वो हमारे वस्ल की शाम थी तेरे बाज़ुओं में बहक गया
वो तेरी नज़र से शराब पी मैं लरज़ते होंठों तलक गया

तेरी ज़ुल्फ़ों की घनी छाँव में मेरी ख़ुशियों के हसीं गाँव में
तेरे लब की कलियों को चूमकर मेरा साँस-साँस गमक गया

कभी कल्पनाओं में डूबकर सभी लाज-शर्म से ऊबकर
सकुचाहटें सभी छोड़कर तेरे रू-ब-रू मैं दहक गया

यही मौसमों की तलब रही शबे-हिज्र जो थी न अब रही
तेरे हुस्ने-जिस्म की आँच में मेरा अंग-अंग लहक गया

सदा घर में रहने की बंदिशें वो दुआओं की रटी आयतें
तेरे एहतियात के जश्न थे जो कि वायरस का ठसक गया

-कालजयी 'घनश्याम'

रखे दो क़दम ज्यों ही आपने, पूरा बाग़ ख़ुशबू से छक गया
सभी पेड़-पौधे लहक उठे, इक-एक फूल महक गया

अभी ज़ुल्फ़ें खोलीं जो आपने, ये हसीन चेहरा भी ढक गया
यों लगा कि चाँद अकाश का, कहीं बादलों में सरक गया

ये तुम्हारे लब हैं कि शे'र के, दो हसीन मिसरे सजे हुए
इन्हें देखकर मेरे मन का कवि, किसी रिंद जैसा बहक गया

तुम्हें छूके आयी है ये हवा, जो पतंग-सी है मचल रही
लगी शाख़-शाख़ है झूमने और बूटा-बूटा थिरक गया

जो हिरन उमंग में शान से, था कुलाँचें भरता दिखा अभी
वो तुम्हारी चाल को देखकर, कहीं झुरमुटों में ठिठक गया

ये तुम्हारी आँखें बड़ी-बड़ी, है जिन्हें हमेशा ही हड़बड़ी
हुआ 'जीत' इनसे जो मुब्तला, वो तो राह से ही भटक गया

-डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

मेरे हमसफ़र को ये क्या हुआ कि वो रास्ता ही भटक गया
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

ये जो आदमी का ग़ुरूर है ये सबक़ भी देता ज़रूर है
ज़रा कामयाबी मिली नहीं कि नशे में वो तो बहक गया

बड़े लोग का ये कलाम है, चढ़े शम्स को ही सलाम है
ये भी सच है जिसने की ख़िदमतें वो भी शम्स-सा ही चमक गया

कभी दरिया-सा है ये आदमी, कभी जाम है, कभी तिश्नगी
कभी सदमे वो कई पी गया कभी ठेस से ही छलक गया

बुरा मान मत मेरी बात का मेरे दिल की तू ज़रा क़द्र कर
मुझे माफ़ कर जो बुरा लगा मुझे तेरा दर्द झलक गया

यहाँ तन्हा चलना है दाइमी यहाँ ज़िंदा रहना है लाज़िमी
कभी पाँव से ये ज़मीं गयी कभी सर से मेरे फ़लक गया

-कुमार पंकजेश

वही था जो मूनिस-ओ-मेहरबाँ वही आँख अपनी झपक गया
'अभी दो क़दम भी चला ना था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

मेरे हाल से रहा बेख़बर मेरा नाम दिल से भुला दिया
वही जिसके इश्क़ की आग में मेरा जिस्म सारा लहक गया

कभी तिश्नालब कभी जाँ-ब-लब कभी फ़ित्ना दिल में जगा दिया
कभी ख़ूने-दिल मेरी आँख से मेरा अश्क बन के टपक गया

यही उसकी सारी इनायतें, ये मुसीबतें, ये ज़लालतें
जिसे पाके दिल में सुरूर था कि मेरा नसीब चमक गया

तूने क्या वफ़ा का सिला दिया मेरी हसरतों को मिटा दिया
निहाँ राज़ होते गये अयाँ तेरा प्यार झूटा झलक गया

जिसे दोस्त समझी मैं आज तक वही आस्तीन का साँप था
किया क़त्ल क़िस्तों में इस तरह लगा दाग़ उस पे न शक गया

शबे-हिज्र में थीं जो लज़्ज़तें न रहीं वो अहदे-विसाल में
मुझे ग़म है 'शमा' फ़क़त यही कि मेरा रफ़ीक़ बहक गया

-डॉ. शमा नासमीन नाज़ाँ

चला जा रहा था अँधेरों में दिल-ए-ग़मज़दा, कि ठिठक गया
वो सितारा मेरे नसीब का तेरे आने से ही चमक गया

वो जो क़ौल था कि निभायेगा वो मसाफ़तें यहाँ उम्रभर
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

ब-सद एहतियात था गामज़न कि न लग़्ज़िश-ए-पा हो मगर
अभी दो क़दम ही चला था वो रह-ए-इश्क़ में कि बहक गया

वो सियाह ज़ुल्फ़ की निकहतें, वो नफ़स-नफ़स कोई मुश्कबू
हुआ ख़ाब में जो तेरा गुज़र मेरा रोम-रोम महक गया

यही कोशिशें रहीं ज़ब्त की कि अयाँ न हो कभी दर्द-ए-दिल
यहाँ ग़म शदीद था इस क़दर कि वो अश्क बन के छलक गया

-दीपक पुरोहित

जो बना सभी का था राहबर वही भूल अपनी सड़क गया
जो बनाया उसने था क़ाफ़िला वही राह में था भटक गया

वो न भूल अपनी समझ सका वो भटक गया तभी राह से
जो था मंज़िलों की तलाश में वो सफ़र में ही था अटक गया

उसे फूल बनने की चाह थी वो टिका रहा तभी शाख़ पर
जिसे खिलना था भरे बाग़ में वही ग़ुंचा कल था चटक गया

जो ज़ुबाँ पे सच लिये आ गया उसे सहन बज़्म न कर सकी
उसे ही निकाला था बज़्म से जो नज़र में सबकी खटक गया

जो नसीब ही रहा कोसता वही देखता रहा दूर से
वही पा गया जिसे भूक थी तभी आगे बढ़ के लपक गया

वो यक़ीन ख़ुद पे न रख सका तभी हार उसने क़ुबूल की
जो था जीत लेके निकल पड़ा उसी चेहरे से था झलक गया

है ज़मीनो-अर्श पे क्या हुआ किसे है ख़बर कोई ये कहे
वो रहा भटकता ही दरमियाँ जो ख़ला में ही था लटक गया

वो चला था साथ मेरे मगर नहीं चल सका था वो दूर तक
‘अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ साथ कि थक गया’

-प्यासा अंजुम

न इधर दिखे न उधर दिखे, जो दिखे ख़ुदा वो नज़र कहाँ
जिसे देखने की तलब रहे कहो उस बशर का बसर कहाँ

यूँ ही ज़िन्दगी ये गुज़ार दी, कभी धूप में कभी छाँव में
रहे हम परेशाँ यूँ इन दिनों, कि मिली ही उसकी ख़बर कहाँ

ये मलाल ही तो रहा मुझे, नहीं आप साथ रहे कभी
रहे आप भी तो ख़फ़ा-ख़फ़ा, है मेरी ख़ता भी मगर कहाँ

रहे ग़म लिये ही उदास तुम, रहे दूर मुझ से कि पास तुम
न कसम निभायी न की वफ़ा किसी भी दुआ में असर कहाँ

न हो साथ तुम न है ज़िन्दगी, है बुझी-बुझी सी ये ‘श्रेयसी’
ये जहाँ हसीं तो है हर घड़ी जो पनाह तेरी हो, पर कहाँ

-पूनम सिन्हा ‘श्रेयसी’

❀

कभी चाँद बनके चमक गया, कभी शम्स बनके दहक गया
तेरे रूप कितने हैं यह बता, इन्हें गिनते-गिनते मैं थक गया

कभी गुंचा बनके चटक गया, कभी फूल बनके महक गया
कभी शाख़ बनके लचक गया है, परिंद बनके चहक गया

तुझे हुस्न का भी ग़ुरूर है, तो शबाब का भी सुरूर है
मगर इसका भी है ख़याल कुछ कि दुपट्टा तेरा सरक गया

तू है अप्सरा या कि हूर है, कोई बात तुझ में ज़रूर है
कि तू तन तलक, कि तू मन तलक, कि तू जानो-रूह तलक गया

तूने देखा लाख इधर-उधर, ये दिखाया मुझ से है बेख़बर
तूने कीं छुपाने की कोशिशें, तेरा प्यार फिर भी छलक गया

है अजीब शख़्स ये शैख़ भी, नहीं लेता अक़्ल से काम ही
मुझे ग़ैर मानता है अभी, मुझे देखते ही खिसक गया

मेरे दोस्त तू ही यहाँ नहीं, सभी चीज़ आज भी हैं यहीं
न गये ये शम्सो-क़मर कहीं, न ज़मीं गयी, न फ़लक गया

मेरा रास्ता बड़ा सख़्त था, कहीं दूर तक न दरख़्त था
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

सरे-मयकदा भले ख़ूब पी, न ही बहका 'प्रेम' मगर कभी
तेरी आँखें हैं जो ये मदभरी, इन्हें देखते ही बहक गया

-प्रेम पहाड़पुरी

❀

मेरा सूनापन मेरा आशना मुझे छोड़ मोड़ तलक गया
थी वही गली वही घर वो दर कहाँ राह जाने भटक गया

कई ख़त लिखे न जवाब पा मैं ही बन के घूमता डाकिया
तेरा क्या पता है ख़ुदा बता तुझे ढूँढ़-ढूँढ़ के थक गया

अभी आने-जाने की है लगी अभी सबकी आँखों में रतजगी
रही ज़िंदगी ये कहाँ सगी कोई जाम फिर से छलक गया

बड़ी दूर से कड़ी धूप से तेरे दर पे आया था प्यास ले
वो न जाने किसकी थी याद जो पिया पानी जैसे सरक गया

कई पुण्य थे कई पाप भी जहाँ मेरे हाथों की छाप भी
मैं पुजारी ऐसा हूँ प्यार का जो सरग गया न नरक गया

तेरे साथ जो थी सलोनी-सी तेरे बिन हुई है अलोनी-सी
यूँ लगा बिछड़ के मुझे कहीं मेरी ज़िंदगी का नमक गया

न मिला कोई तो मलाल क्यों खुले भेद कितने दिलों के यों
वो जो शीशा था वो चटक गया वो जो मोम था वो बरक गया

मिले गिर के कितने ही धूल में कई दामनों में थमे धुले
वो भी क़तरा कितने नसीब का जो पलक से होंठों तलक गया

चलीं आँधियाँ कई गिर गये तो निशाने औरों पे लग गये
वो जो फल था पेड़ का आख़िरी कोई झोली देख टपक गया

है सयाना बच्चा ये दिल बड़ा जो पराया-अपना न देखता
तो ये मन बुज़ुर्ग का बचपना यूँ ही मचला, बहला, किलक गया

कभी आशिक़ी कभी ज़िंदगी है निभाव क्या यही पूछती
जहाँ बोलना था झिझक गया जहाँ करना कुछ था हिचक गया

'अनिमेष' क्या कोई देखेगा कोई सोचेगा कोई समझेगा
ये जहान भागता दौड़ता हुआ क्या कि ऐसे ठिठक गया

-प्रेम रंजन 'अनिमेष'

उसे शोहरतों की हवा लगी, तभी चार दिन में बहक गया
ज़रा छप गया जो इधर उधर, सरे-आम राह भटक गया

सरे-शाम आया अँधेरे में, मेरे बाज़ुओं में दमक गया
किसी भीनी-भीनी सुगंध से, मिरे मस्त दिल में महक गया

किया साँसें ख़ुशबू से तर-ब-तर, ढली रात पल में सरक गया
गो अँधेरी रात में आया था, मेरी चौखटों पे चमक गया

उसे सच की खुरदरी चादरों, में सुकून-चैन मिला नहीं
तभी झूठ से सजे मख़मली, किसी पैरहन में अटक गया

न थकेगा, कहता था जो कभी, मिरा साथ जम के निभाएगा
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

किसे इस चुनाव के दौर में, मिले शोरो-गुल से निजात जब
गली कूचों में किसी सिम्त से, जो जुलूस कोई टपक गया

न पयाम, ख़त न ही अर्ज़ियाँ, न तो फ़ोटो भेज मिरे लिए
मिरा फ़ेसबुक से है दिल भरा कि मैं व्हाटसप से भी थक गया

वो असूल पर न खरा रहा, वो क़ुबूल भूल न कर सका
मेरे होंठ हँसते रहें सदा इसी चाह में वो छलक गया

कि वो डीपी ज़ूम करे कभी कि वो फोटो चूम हँसे कभी
ये 'कँवल' पे तारी है कौन जो उसे लेके सू-ए-फ़लक गया

-रमेश 'कँवल'

कभी बुलबुलों-सा चहक गया कभी ख़ुशबुओं-सा महक गया
मेरे हमसफ़र तेरी याद-सा कई जुगनुओं में चमक गया

तेरे हुस्न का ये कमाल है तेरी सादगी का फ़ुसूँ है ये
जो पड़ा हुआ था सुकून से तुझे देखकर वो सनक गया

जो ये कह रहा था कि देखना मेरे हौसलों का कमाले-फ़न
वही आके नीचे पहाड़ के किसी रेत-घर में दुबक गया

मुझे ग़म तो इसका ज़रूर है प' ख़ुशी भी है किसी बात की
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

ये मुहब्बतों के फ़ुयूज़ हैं ये अता है मेरे ख़ुलूस की
जिसे ढूँढ़ते थे ज़मीन पर सरे-आसमाँ वो झलक गया

ज़रा सोचिए, ज़रा बोलिये, ज़रा देखिये इसे ग़ौर से
यहाँ सब के सब हैं शरीफ़ तो ये मकान कैसे लहक गया

उसे कल तलक इसी शहर में कहाँ जानता था बशर कोई
जो ग़ज़ल का उस पे करम हुआ वो मुशायरों में चमक गया

-शकील सासरामी

हुआ इस क़दर वो निगेहबाँ कि ज़माने को मैं खटक गया
हुई बात कुछ भी न थी मगर वो न जाने क्यों यूँ बिदक गया

वही शाम है, है वही सहर, वही तुम भी हो, वही मैं भी हूँ
हुआ क्या है जिसकी नहीं ख़बर वो जो दरमियाँ ही अटक गया

थीं अजीब-सी मेरी उलझनें, था अजीब थोड़ा मैं भी यहाँ
रहा ज़िंदा जिनके मैं प्यार से उसी प्यार पे ही था शक गया

थे सितारे गर्दिशों में मगर मेरे साथ आप रहे सदा
जो नहीं हो आप तो लग रहा ये गयी ज़मीं वो फ़लक गया

सुनो तुम से हैं ये गुज़ारिशें कभी दिल न देना किसी को तुम
जो छुपाया तुमने था 'भवि' कहीं वही अश्क अब लो छलक गया

है बड़ा ग़ज़ब का ये सिलसिला जो शुरू'अ उसने ही था किया
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ साथ कि थक गया'

-शुचि 'भवि'

सिवा इसके हो कोई चाह क्यों मैं तो ढाई हर्फ़ों तलक गया
जिन्हें साध मीरा अमर हुई जिन्हें गा के सूर थिरक गया

मेरी राह रोक के क्यों खड़े कहाँ शायरी की हैं सरहदें
ये सफ़र है सबकी ज़मीन का जो बढ़ा तो चूम फ़लक गया

कभी था ख़ुदा-सा कहाँ-कहाँ उसे छूने थे कई आसमाँ
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

वो जो दौलतों के लिए बहा वही इल्म आज ये कह रहा
जो सुखों के पीछे पड़ा रहा वो भटक गया वो बहक गया

उसे लाख कह लो बुरा-भला कहाँ मोम बर्फ़ में है ढला
वही एक रूप है तिफ़्ल का जो कि ग़म भी हो तो किलक गया

ये तो इश्क़ है किसी फूल-सा जो न शाख़ से है कभी गिरा
भले अपने दिल में खिला मगर वो जहान भर में महक गया

ये क़फ़स की रात को चीर कर है कहाँ से आयी नयी ख़बर
मेरे दिल में भोर की धुन लिये कोई पंछी दूर चहक गया

है पता सभी को फिर आयेगा वो 'शरद' नया दिन उगायेगा
कि सियाहियों से शुआएँ बुन वो फ़लक की छत पे झलक गया

-शरद रंजन 'शरद'

❀

वो हबीब है कि रक़ीब है मैं इसी कराँ में अटक गया
मैं न आशना, न वो आशना इसी सोच में ही भटक गया

उसे क्या ख़बर यही फ़र्क़-ए-ज़ुल्मत-ओ-नूर है या चिराग़े-लौ
मैंने तीरगी को मिटा दिया बस ख़याल में ही चमक गया

उसे अपने क़द पे ग़ुरूर था, थीं अना की भी तो ख़ुमारियाँ
वो उसी ही आग में जल गया कि जिस आग से था लपक गया

ये जो ज़िन्दगी का सफ़र तवील से भी तवील है हमनवा
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

जो क़ुसूर था तेरी आँख का मुझे आइनों से पता चला
मैं समझ गया था किनाये सब मेरा हरकतों पे ही शक गया

-सागर सियालकोटी

❀

तेरी याद का वो जो फूल है, वही फूल आज महक गया
जो सदा मिली है सुकूत में, तो उदास दिल भी चहक गया

तेरे हिज्र में जो गुज़र रही, ये घड़ी बड़ी ही तवील है
तेरी दीद को मैं तरस गया, तेरी राह देख के थक गया

मेरा यार है कि रक़ीब है, न समझ सका मैं कभी उसे
कभी वो गले से लिपट गया, कभी मेरा हाथ झटक गया

वो ख़ता करे कि जफ़ा करे, किसी और को ये ख़बर न हो
न हिसाब उसके गुनाह का, न सज़ा मिली न ही शक गया

मेरे साथ चलती है बेख़ुदी, कहाँ खो गया न ख़बर रही
जो क़रीब पहुँचा मक़ाम के, तो लगा कि राह भटक गया

इसी बात का ज़रा रंज है, वो रहा सफ़र में न देर तक
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ-साथ कि थक गया'

कोई चारासाज़ मिला नहीं, न मिली मरज़ की दवा कोई
न लगी किसी की दुआ मुझे, मेरा ग़म मचल के छलक गया

-हिमकर श्याम

अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो
मिसरा-ए-तरह

वो गली-गली वो नगर-नगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
तुम्हीं थे कभी मेरे हमसफ़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

बड़े प्यार से बड़े ढंग से, मेरा नाम मेहँदी के रंग से
जो लिखा था ख़ुद से ही हाथ पर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी झूठ-मूठ लड़े थे हम, कभी खुल के हँस के मिले थे हम
कभी मिल के रोए थे रातभर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मेरे साथ-साथ वो घूमना, मेरे गाल, हाथ को चूमना
'अभी कल की बात है सब मगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो'

वो पहाड़ियों का था रास्ता, चला मैं क़दम को सँभालता
मेरे शाने पे था तुम्हारा सर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मेरा ख़त बहुत ही अज़ीज़ था, जो कि सबसे क़ीमती चीज़ था
जो रखा था तुमने सँभालकर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो शरारतों से भरी नज़र, था ख़ुशी का रंग जो गाल पर
वो मिलन में थोड़ी-सी ना-नुकर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मेरी हसरतें मेरी बेबसी, मेरी ख़ूबियाँ मेरी हर कमी
तुम्हें इन सभी की थी हर ख़बर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो घटा जो बरसी थी ज़ोर से, थीं फ़िज़ूल बचने की कोशिशें
हुए साथ-साथ थे तर-ब-तर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

बड़ा ऐतबार था प्यार पर, मेरी बात पर मेरे साथ पर
न ज़माने का था ज़रा भी डर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें नाज़ था मेरी नज़्म पर, तुम्हें याद थी मेरी हर ग़ज़ल
तुम्हीं ने रखा था ये नाम 'असर', तुम्हें याद हो कि न याद हो

-अरविन्द असर

वो जो प्यार मुझसे था पुर-असर तुम्हें याद हो कि न याद हो
मेरी जुस्तजू, मेरी रहगुज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो वफ़ा के साँचे में ढलने की वो जो राह-ए-इश्क़ में चलने की
थी क़सम जो ऐ मेरे हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो हसीन रातें बहार की जहाँ बातें होती थीं प्यार की
वो जो दिन थे मस्ती के बेशतर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी तुमने मुझको हँसा दिया कभी तुमने मुझको रुला दिया
किसी राह में किसी मोड़ पर तुम्हें याद हो कि न याद हो

जाने एक पल में ये क्या हुआ मैं तुम्हारे प्यार में खो गया
मैंने तुमको देखा जो एक नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी चाँद तारों में ढूँढ़ना कभी दिल के शीशे में देखना
वो ग़म-ए-जुदाई में चश्मतर तुम्हें याद हो कि न याद हो

थे सुख़न में मेरे 'अरुण' तुम्हीं थी तुम्हीं से मेरी सुख़नवरी
मेरे फ़न में तुम ही थे जलवागर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-अरुण कुमार आर्य

❀

जहाँ हम खड़े थे वो रहगुज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
'अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो'

कभी तुम ने कुछ भी कहा नहीं कभी हम ने कुछ भी कहा नहीं
वही प्यार वाली हसीं नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

जहाँ हम खड़े थे खड़े रहे नहीं तुम ने देखा कभी हमें
तुम्हें देखती रही हर नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

वहाँ साथ-साथ चले थे हम कि जहाँ-जहाँ भी गये थे हम
कभी तुम रहे थे जो हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो अजीब काली-सी रात थी जहाँ हम तुम्हारे क़रीब थे
कभी हम ने देखी नहीं सहर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-असग़र शमीम, कोलकाता

❀

वो हमारे इश्क़ की रहगुज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
जहाँ हम जगे रहे रातभर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी फ़ुर्क़तों के वो रतजगे, कभी वस्ल के हसीं सिलसिले
अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

खुली वादियों में गगन तले मिरी बाँहों में जो थे शब ढले
मुझे याद है मेरे हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

कहीं इश्क़ की वो कहानियाँ, कहीं हुस्न की वो निशानियाँ
कभी कू-ब-कू भी उड़ी ख़बर तुम्हें याद हो कि न याद हो

जो उमड़-घुमड़ के बरस गये उन्हीं बादलों के ख़ुमार से
रहे हम ज़माने से बेख़बर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-कालजयी 'घनश्याम'

❀

था यहीं पे छोटा-सा अपना घर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
जहाँ खिलखिलाते थे बामो-दर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

हुए जब पसीने से तर-ब-तर, यहीं चैन पाते थे लौट कर
हमें छाँव देता था ये शजर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

गए आज दिल से भले उतर, कभी जाने-जाँ भी थे हम मगर
वो तुम्हारा कहना हमें क़मर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

ये कहा था तुमने ही चारागर! है दवा वफ़ा की ही कारगर
थी वो गुफ़्तगू बड़ी मुख़्तसर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

हुआ क़ौल हम में था ये सफ़र यूँ ही साथ तय करें उम्रभर
मुझे याद है मिरे हमसफ़र! तुम्हें याद हो कि न याद हो

-डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

❀

वो जहाने-इश्क़ की रहगुज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
कई रात गुज़री थीं जागकर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो धड़कता दिल, वो झुकी नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
हमें अब भी याद है वो सफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी चुपके-चुपके मिले अगर हो वो सुब्ह, शाम या दोपहर
हुई चश्म अश्कों से तर-ब-तर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो मज़े-मज़े की हिकायतें, वो मुहब्बतें, वो इनायतें
नहीं अब हैं वो जो थीं पेशतर तुम्हें याद हो कि न याद हो

न तो दिल में जज़्बा-ए-शौक़ है न ख़याल वादा वईद का
'अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो'

तुम्हें भूल जाने के मशवरे थे सदा ब-सहरा मेरे लिए
हुआ शम'अ-ए-दिल पे न कुछ असर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-डॉ. शमा नासमीन नाज़ाँ

वो अजीब दौर था हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
चले हम जिधर चले तुम उधर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो चमकते चाँद की रात थी वो हसीन ख़्वाब की बात थी
जहाँ दोनों रहते थे बेख़बर तुम्हें याद हो कि न याद हो

बड़ी उलझनों का था सामना किसी शाम गर न हो देखना
वो ख़ुमार छाया था किस क़दर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई राह हो या कि बज़्म हो मैं जहाँ-जहाँ से गुज़र गयी
तो तुम्हारी मुझ पे रही नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

मैं तुम्हारे दिल का असास थी मैं तुम्हारे ख़्वाब की आस थी
मैं ही शाम थी मैं ही थी सहर तुम्हें याद हो कि न याद हो

शबे-वस्ल में जो था फ़ासला मेरी जान कैसे था दिल जला
मेरे हमनवा, मेरे हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

सरे-चर्ख़ अब्रे-सियाह में वो छुपा था 'नूतन' बेनवा
बड़ा शर्मसार-सा वो क़मर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-डॉ. नूतन सिंह, जमुई, बिहार

रहे जन्म-जन्म में हमसफ़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो
चले साथ-साथ डगर-डगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी तुमने ही था कहा सनम कि हमेशा साथ रहेंगे हम
तुम्हीं चल दिये हमें छोड़कर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

अभी कल की ही तो है बात ये, तुम्हीं ख़्वाब में मेरे साथ थे
बड़ी आशिक़ाना थी वो नज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

जो हैं दर्दमंद उन्हें कभी, न कमी हो प्यार-दुलार की
चले तुम सदा इसी राह पर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो तुम्हारे वादे कहाँ गये, वो वफ़ा के दावे नये-नये
यहाँ तन्हा करते हैं हम गुज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें ढूँढ़ते हैं यहाँ-वहाँ, हुए किस जहाँ में हो तुम निहाँ
नहीं मिल रही है कोई ख़बर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

अरे 'जीत' यों न गिला करो, कभी ख़ुद से भी तो मिला करो
हो किसी के तुम भी तो मुन्तज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

-डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

वो दिवानगी सरे-अंजुमन तुम्हें याद हो कि न याद हो
जो मिले थे तुम से मेरे नयन तुम्हें याद हो कि न याद हो

थे सवार एक ही नाव में बही मैं नदी के बहाव में
नहीं हो सका कभी भी मिलन तुम्हें याद हो कि न याद हो

सभी मित्र शत्रु बने थे जब तुम्हीं थे जो मेरे रहे थे तब
वो मुहब्बतों की हसीं दुल्हन तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें मुझ पे कितना गुमान था मेरी बाँहों में ही जहान था
ये ज़माने में था नया चलन तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें जब भी दिल से पुकारती ये 'सुधा' के वश की ही बात थी
मेरे पास होते थे जाने-मन तुम्हें याद हो कि न याद हो

-प्रो.सुधा सिन्हा सावी

मेरी इल्तिजा रही बेअसर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
रहे मुझ से तुम सदा बेख़बर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी साथ बीता वो हर पहर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
तुम्हीं जब रहे मेरे हमसफ़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कहीं बेरियाँ, कहीं जामुनें, कभी आमियाँ रहे तोड़ते
वो ही बचपना, वो समर-शजर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी गोटियाँ, वो लुका-छिपी, रहे साथ-साथ जो खेलते
किसी मोड़ पर थे इधर-उधर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

ढली उम्र क्या गये छोड़कर, मेरी ज़िन्दगी हुई मुन्तशिर
रहा दर्द से सदा चश्मे-तर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

रहे तुम उधर, रही मैं इधर, रहे फ़ासले वही उम्रभर
मेरे हाल से रहे बेख़बर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

बने मुस्तक़िर थे रक़ीब के, रहे अपने घर से कटे-कटे
कभी लौटकर नहीं आए घर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी जो नसीमे-सहर चली, सनी ख़ुशबुओं में गली-गली
बड़े ख़ुशगवार से वो सफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

मेरे इम्तिहान का वक़्त था, हुई पास-फ़ेल किसे पता
सहा 'निर्मला' ने ही सब मगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

-निर्मला कपिला

मुझे याद है वो हसीं सफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
तुम्हें ढूँढ़ती थी मेरी नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी रोक लेतीं थी धूप में वो जो लाल फूलों की छतरियाँ
हमें याद आते हैं गुलमुहर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी क़हक़हों की थी मजलिसें कभी गीत-ग़ज़लों की शाम थी
कभी हम भी ग़म से थे बेख़बर तुम्हें याद हो कि न याद हो

मेरा घर बना कहीं रेत पर जो चली हवा तो बिखर गया
मैं रही हूँ तब से ही दर-ब-दर तुम्हें याद हो कि न याद हो

ये कहा था तुमसे कि है सुकूँ मुझे तुमसे कुछ भी गिला नहीं
ये तुम्हारे साथ का है असर तुम्हें याद हो कि न याद हो

तेरा हिज्र था मेरी बेबसी वो उदासियों का था सिलसिला
मैं हुई थी ख़ुद से भी बेख़बर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'

वो सुहानी शब, वो हसीं सहर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
वो जो वक़्त साथ गया गुज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें देखता था मैं एक टक, न नज़र तुम्हारी थी उठ सकी
था वो वक़्त जैसे गया ठहर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

जिसे तुमने तोड़के रख दिया, जिसे तुमने छोड़के रख दिया
कभी मेरा दिल था तुम्हारा घर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई दर्द हो कोई ज़ख़्म हो कि उदासियों का ही रोग हो
थे बस एक तुम ही तो चारागर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

यही बदनसीब वो मोड़ है, जहाँ एक दूजे को छोड़कर
मैं इधर गया, गये तुम उधर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

-धर्मेन्द्र गुप्त साहिल

❀

भरे पाँवों से थे ये रहगुज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो
कभी थे खुले सभी दिल के दर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो गली में बच्चों का खेलना वो बड़े बुज़ुर्गों का घूमना
अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

चलीं जाने कैसी ये आँधियाँ कि उजड़ गये कई आशियाँ
था इन्हीं में तिनकों का एक घर तुम्हें याद हो कि न याद हो

है तेरा रहम है तेरा करम कि जड़ों से अपनी उखड़ के हम
हुए भूखे-प्यासे यूँ दर-ब-दर तुम्हें याद हो कि न याद हो

मिलीं मोहलतें ज़रा फ़ुर्सतें तो कहाँ वो सोहबतें, क़ुर्बतें
कभी वक़्त मिलता था ढूँढ़कर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कहीं हाथ में कोई हाथ था, किसी राह पर कोई साथ था
थे कई सफ़र, कई हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो जो आँखों-आँखों की बतकही वो जो होंठों-होंठों की अनकही
मेरे साथ जायेगा उम्रभर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो थी पहली याद कि भूल वो या दुआ हुई न क़ुबूल जो
मुझे याद अब भी है भूलकर तुम्हें याद हो कि न याद हो

इन्हीं धूप राहों पे जब चले नहीं पाँव अपने कहीं जले
कभी साथ अपने था इक शजर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो जो यार थे वो जो यारियाँ वो जो गर्म चाय की चुस्कियाँ
अभी शोहरतों के मुक़ाम पर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई दिन अब ऐसा न बीतता कि न सिसकियों की सुनें सदा
थी इन्हीं में अपनी भी इक ख़बर तुम्हें याद हो कि न याद हो

ये 'अनिमेष' अपने ही गाँव घर ये जो जल रहे हैं नगर-नगर
कभी मुड़ के देखोगे जो इधर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-प्रेम रंजन 'अनिमेष'

मिले बारहा ही तो रहगुज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो
इसी राह पर इसी मोड़ पर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कहीं साथ कोई न देख ले, चले दूर-दूर ही हम सदा
इसी बात का तो मुझे था डर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

भरी बज़्म में मेरे शे'र पर दी थी दाद तुमने जो याद है
मेरा शे'र, बहर, ग़ज़ल असर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मुझे तुमसे बढ़ के अज़ीज़ था कभी ग़म तुम्हारा ऐ हमनवा
मुझे थी ख़ुशी इसी बात पर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मुझे याद है वो हर एक पल जो जुड़ा तुम्हारी हो याद से
'अभी कल की बात है सब, मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो'

-रवि खण्डेलवाल

थे ग़रीक़े-इश्क़ भी सर बसर तुम्हें याद हो कि न याद हो
कभी तुम ही अपने थे हमसफ़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो मुहब्बतों का उबालपन वो जुनूने-इश्क़ो-मु'आशक़ा
हमें सुबह लगती थी दो पहर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी फेंकना मेरी फ़ाइलें, कभी खैंचना मेरी टाई को
'अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो'

यूँ ही बे-सबब यूँ ही बे-सिला कभी शहर में कभी गाँव में
वो हमारा फिरना इधर-उधर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी कार में कभी बीच पर कभी बस में या किसी ट्रेन में
हमें देखती थी हर इक नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

कई रात अपनी खड़े-खड़े खुली छत पे यूँ ही गुज़र गयीं
कई खिड़कियों पे हुई सहर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो मुहब्बतें भी अजीब थीं वो जुनून अपना अजीब था
हमें कुछ नहीं था किसी का डर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-शकील सासरामी पटना

❀

यही राह जाती थी सबके घर तुम्हें याद हो कि न याद हो
'अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो'

न डिगे उसूलों पे ही चले यूँ ही औरों के लिए मर मिटे
यही फ़लसफ़ा रहा मुख़्तसर तुम्हें याद हो कि न याद हो

बिना कुछ कहे बिना कुछ सुने वो जो सपने पलकों ने थे बुने
कभी सच से लगते थे देखकर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो जो कहता इतने यक़ीन से कि फ़लक है मिलता ज़मीन से
वही भटका फिरता है दर-ब-दर तुम्हें याद हो कि न याद हो

अभी हाथ भी न बढ़ायेंगे जो मिले गले न लगायेंगे
कभी काँधे पर ही था रहता सर तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई आरज़ू न ही जुस्तजू यूँ ही ख़ुद से ख़ुद की ये गुफ़्तगू
कभी कोई था इसी मोड़ पर तुम्हें याद हो कि न याद हो

हुए अश्क भी अभी बेज़ुबाँ कोई भेजता है ये ख़त कहाँ
इन्हें भी अदब की लगी नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी चाहते जो मिले ख़ुदा तभी खोजते हैं वो बचपना
उसे देखते यूँ फिर आँख भर तुम्हें याद हो कि न याद हो

जो लुटा के अपना है सब रचा उसे दीमकों से बचा रहा
है 'शरद' सफ़र मेरा इतना भर तुम्हें याद हो कि न याद हो

-शरद रंजन 'शरद'

अन्य प्रचलित बहरों में
कुछ और बेहतरीन ग़ज़लें

श्री पवन कुमार - शुचि 'भवि'
विवाह की तिथि : 31 अक्टूबर 1996

कलाकृति - सिद्धेश्वर

21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के फ़ोटो

सुधीर कुमार प्रोग्रामर

चैतन्य चंदन

डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव

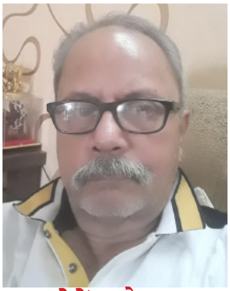

देवेंद्र गौतम

डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ

प्रणय कुमार सिन्हा

विज्ञान व्रत

डॉ. कृष्ण कुमार बेदिल

राजेश जैन 'राही'

दिनेश 'तपन'

ताराचन्द 'नादान'

'21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' के सुख़नवरों के जीवन साथी

अकमल नईम सिद्दिक़ी - शाईस्ता
विवाह की तिथि : 28 अक्टूबर 2002

अनिरुद्ध सिन्हा - प्रतिमा सिन्हा
विवाह की तिथि : 27 अप्रैल 1977

महा मृत्युंजय मंत्र

|| ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ||

भावार्थ : *"हम उस त्रिनेत्रधारी भगवान शिव की आराधना करते हैं जो अपनी शक्ति से इस संसार का पालन -पोषण करते हैं। हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे हमें इस जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त कर दें और हमें मोक्ष प्रदान करें।*

जिस प्रकार से एक ककड़ी अपनी बेल से पक जाने के पश्चात् स्वतः की आज़ाद होकर ज़मीन पर गिर जाती है उसी प्रकार हमें भी इस बेल रूपी सांसारिक जीवन से जन्म-मृत्यु के सभी बन्धनों से मुक्ति प्रदान कर मोक्ष प्रदान करें "।

आदित्य चौधरी

नाम : विज्ञान व्रत

जन्म तिथि : 17 अगस्त 1943

पता : एन - 138 , सेक्टर - 25 , नोएडा - 201301 (उ. प्र .)

मोबाइल : 9810224571

ई-मेल : vigyanvrat@gmail.com

विज्ञान व्रत - श्रीमती अशोक विज्ञान

विवाह की तिथि : 30 अप्रैल 1968

तुम हो तो ये घर लगता है
वर्ना इसमें डर लगता है

बहर - बहरे मुरब्बा सालिम
अर्कान - फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन

❀

आपका ख़त मिल गया है
और मुझको पढ़ रहा है

चित्र यों तो आपका है
सिर्फ़ चेहरा माँगता है

वो मुझे पहचानता है
पर दिखे अंजान-सा है

वो जो इतना डर रहा है
सामने क्या आइना है

हादिसा जिसने किया है
पूछता है क्या हुआ है

-विज्ञान व्रत

❀

आप कब किसके नहीं हैं
हम पता रखते नहीं हैं

जो पता तुम जानते हो
हम वहाँ रहते नहीं हैं

जानते हैं आपको हम
हाँ मगर कहते नहीं हैं

जो तसव्वुर था हमारा
आप तो वैसे नहीं हैं

बात करते हैं हमारी
जो हमें समझे नहीं हैं

-विज्ञान व्रत

❀

सिर्फ़ क़िस्सों में सुना हो
काश! ऐसा फ़ैसला हो

सुर्ख़ियों में जो रहा हो
क्या पता अब गुमशुदा हो

क़ुर्बतों को शर्म आये
आपसे यूँ फ़ासला हो

कौन किसको अब सुनेगा
बोलना ही जब मना हो

उस क़िले को कौन जीते
जो हवाओं में बना हो

-विज्ञान व्रत

बहर - बहरे रमल मुरब्बा महज़ूफ़
अर्कान - फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

आपसे रिश्ता हुआ
फिर मुझे धोखा हुआ

क्यों मिला मैं आपसे
और भी तन्हा हुआ

सब ठिकाने खो गये
दर-बदर मैं क्या हुआ

जो किसी का था नहीं
आज क्यों सबका हुआ

कौन हूँ मैं कौन हूँ
चल-बसा कहता हुआ

-विज्ञान व्रत

क्या बनाऊँ आशियाँ
कम पड़ेगा ये जहाँ

बिजलियाँ ही बिजलियाँ
और मेरा घर यहाँ

एक थे हम दो यहाँ
कौन आया दरमियाँ

ढूँढ़ते हो क्यों निशाँ
वो ज़माने अब कहाँ

था जहाँ से वो बयाँ
अब नहीं हूँ मैं वहाँ

-विज्ञान व्रत

है अजब ये ख़ामुशी
दे रही आवाज़ भी

होश हो या बेख़ुदी
याद रहती आपकी

क़ातिलाना हो गयी
आपकी ये सादगी

वो मुख़ातिब तो रहे
पर नहीं कुछ बात की

आप मेरी सोच हैं
आप भी सोचें कभी

-विज्ञान व्रत

बहर - बहरे मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ
अर्कान - फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन

❀

मुझ पर कर दो जादू-टोना
एक नज़र ऐसे देखो ना

इतने दिन में घर आये हो
घर जैसे कुछ देर रहो ना

बादल हो तुम या ख़ुशबू हो
बरसो खुलकर या बिखरो ना

ढूँढ़ न पाया ख़ुद को घर में
छान फिरा हूँ कोना-कोना

तुम से ख़ुद को वापस क्या लूँ
रक्खो अब तुम ही रख लो ना

-विज्ञान व्रत

❀

मै कुछ बेहतर ढूँढ़ रहा हूँ
घर में हूँ घर ढूँढ़ रहा हूँ

घर की दीवारों के नीचे
नींव का पत्थर ढूँढ़ रहा हूँ

जाने किसकी गर्दन पर है
मैं अपना सर ढूँढ़ रहा हूँ

हाथों में पैराहन थामे
अपना पैकर ढूँढ़ रहा हूँ

मेरे क़द के साथ बढ़े जो
ऐसी चादर ढूँढ़ रहा हूँ

-विज्ञान व्रत

❀

जुगनू ही दीवाने निकले
अँधियारा झुठलाने निकले

ऊँचे लोग सयाने निकले
महलों में तहख़ाने निकले

वो तो सबकी ही ज़द में था
किसके ठीक निशाने निकले

आहों का अंदाज़ नया था
लेकिन ज़ख़्म पुराने निकले

जिनको पकड़ा हाथ समझकर
वो केवल दस्ताने निकले

-विज्ञान व्रत

बहर - बहरे मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ
अर्कान - फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन

भर दे साक़ी अब पैमाना
मुश्किल है दिल को समझाना

उसकी यादों में डूबी हूँ
भूली अपना ठौर ठिकाना

मुश्किल में ये बात है समझी
कब देता है साथ ज़माना

कौन समझ पाया है इसको
प्यार, मुहब्बत, इश्क़, फ़साना

ये जीवन कुछ और नहीं है
साँसों का है ताना-बाना

काँटे हैं दिल के रस्ते में
बचकर इनसे दिल में आना

लाज के पथ से पाँव हटे तो
मुश्किल है ज़िंदा रह पाना

कैसे भूलेगी ये धड़कन
छुप-छुप के तन्हा मुस्काना

सब्र नहीं है जिनके अंदर
मुश्किल है उनको समझाना

उल्फ़त का तुम परचम लेकर
नफ़रत की दीवार गिराना

'मूमल' ये है दीवानापन
ज़िंदा रहकर ही मर जाना

- डॉ. यासमीन मूमल

बहर - बहरे मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ महज़ूफ़
अर्कान - फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ा

❀

उनका रोज़ बहाना भी
रोज़ाना आ जाना भी

बस्ती भी वीराना भी
अपना हूँ बेगाना भी

तुमसे ही तो जाना है
ना होना, हो जाना भी

आप मुझे गर समझें तो
जो समझें समझाना भी

दैरो-हरम के रस्ते में
काश! रहे मयख़ाना भी

-विज्ञान व्रत

❀

वो तब तक दरिया न हुआ
मैं जब तक सहरा न हुआ

ख़ुद से भी मिलना न हुआ
लेकिन मैं तन्हा न हुआ

वो जब तक मेरा न हुआ
मैं ख़ुद भी अपना न हुआ

दुनिया में क्या-क्या न हुआ
मैं उसकी दुनिया न हुआ

मैं अब तक ख़ुद-सा न हुआ
ये होना, होना न हुआ

-विज्ञान व्रत

नाम : कृष्ण कुमार ‘बेदिल’
जन्म तिथि : 18-07-1943
पता : डी-115, सूर्या पैलेस, दिल्ली रोड मेरठ (उ.प्र.) 250 002
मोबाइल : 9410093943
ई-मेल : kkrastogi73@gmail.com

डॉ. कृष्ण कुमार बेदिल - उर्मिला रस्तोगी
विवाह की तिथि : 26 जून 1964

मेरी दुनिया फ़क़त तुम हो, मुहब्बत में वफ़ा में तुम
इबादत में, ज़ियारत में तुम्हीं हो, इल्तिजा में तुम

बहर - बहरे रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अर्कान - फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

हर तरफ़ एक तीरगी है क्या लिखूँ कैसे लिखूँ
क़ैद में अब रौशनी है क्या लिखूँ कैसे लिखूँ

उड़ गयी फूलों से ख़ुशबू, रंग फीके पड़ गये
हर तरफ़ वीरानगी है, क्या लिखूँ कैसे लिखूँ

कोठियों की ख़ामुशी में क़ब्रगाहों का मिज़ाज
भटकी-भटकी ज़िन्दगी है क्या लिखूँ कैसे लिखूँ

दर्द आँसू सब के सब नीलाम हो जाने को हैं
अब तिजारत शाइरी है, क्या लिखूँ कैसे लिखूँ

लेके 'बेदिल 'आ गए उस मोड़ पर हालात अब
साँस लेना ख़ुदकुशी है, क्या लिखूँ कैसे लिखूँ

-डॉ. कृष्ण कुमार बेदिल

राख के ढेरों में कुछ चिंगारियाँ रह जायेंगी
जब खुलेंगे राज़ तो हैरानियाँ रह जायेंगी

मालो-ज़र तो ये सभी औलाद में बँट जायेगा
जो मिलीं अख़बार से वो सुर्ख़ियाँ रह जायेंगी

रेत लेकर हाथ में कितना भी कसकर भींच लो
ये फिसल जायेगी ख़ाली मुट्ठियाँ रह जायेंगी

नीव में जायें ये पत्थर या शिखर पर ये सजें
जो तराशेंगी इन्हें वो छेनियाँ रह जायेंगी

चुन लिये मोती सभी ग़ज़लों के ग़ालिब,मीर ने
क्या पता था हम पे 'बेदिल' सीपियाँ रह जायेंगी

-डॉ. कृष्ण कुमार बेदिल

ज़हर के कोने से जब, आवाज़ देती है ग़ज़ल
गीत बनतीं धड़कनें और साज़ देती है ग़ज़ल

मौत को आना है लेकिन उससे पहले क्यों मरें
ज़िन्दगी जीने का एक अंदाज़ देती है ग़ज़ल

इल्म का तालिब हूँ मैं, तहज़ीब का मकतब है ये
दीन और दुनिया के सारे राज़ देती है ग़ज़ल

पाँव हैं मेरे ज़मीं पर, आसमानों पर नज़र
पर भी देती है मुझे, परवाज़ देती है ग़ज़ल

ताज भी तुझको मुबारक,तख़्त भी 'बेदिल' तुझे
वलवलों के साथ में, एज़ाज़ देती है ग़ज़ल

- डॉ. कृष्ण कुमार बेदिल

बहर - बहरे -रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अर्कान - फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन
फ़ाइलुन / फ़ाइलान

क्या हुआ तुमको अगर चेहरे बदलना आ गया
हमको भी हालात के साँचे में ढलना आ गया

रौशनी के वास्ते धागे को जलते देखकर
ली नसीहत मोम ने उसको पिघलना आ गया

शुक्रिया, बेहद तुम्हारा शुक्रिया, ऐ पत्थरो!
सर झुकाकर जो मुझे रस्ते पे चलना आ गया

सरफिरी आँधी से उसकी दोस्ती क्या हो गयी
धूल को इंसान के सर तक उछलना आ गया

बिछ गये फिर ख़ुद-ब-ख़ुद रस्तों में कितने ही गुलाब
जब हमें काँटों पे नंगे पाँव चलना आ गया

चाँद को छूने की कोशिश में तो नाकामी मिली
हाँ मगर, नादान बच्चे को उछलना आ गया

पहले बचपन, फिर जवानी, फिर बुढ़ापे के निशान
उम्र को भी देखिए कपड़े बदलना आ गया

-डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

कुछ इधर रक्खा गया तो कुछ उधर रक्खा गया
मेरे क़दमों में बहुत सारा सफ़र रक्खा गया

शख़्स कोई भी हो, रहमत उस पे रब की है ज़रूर
हर किसी इन्सान में कोई हुनर रक्खा गया

तूल देना बात को उनको रहा है नागवार
इसलिए क़िस्से को बेहद मुख़्तसर रक्खा गया

मच न जाये अफ़रातफ़री, इसलिए हर शख़्स को
आने वाले मौसमों से बेख़बर रक्खा गया

जब तख़य्युल की उड़ानें 'नाज़ली' भरने लगी
उसके अन्दर ही उसे पर काटकर रक्खा गया

-डॉ. नलिनी विभा नाज़ली

ज़िंदगी का ख़ूबसूरत फ़लसफ़ा रख लीजिए
साथ गुल के ख़ार से भी राब्ता रख लीजिए

आस का मन में जलाकर इक दिया रख लीजिए
आँधियाँ थम जाएँगी बस हौसला रख लीजिए

आएँगे फिर से गले मिलने मिलाने के वो दिन
दरमियाँ बस और कुछ दिन फ़ासला रख लीजिए

ख़ुद से मिलना है कभी तो ये कोई मुश्किल नहीं
मुस्कुराकर सामने इक आइना रख लीजिए

भेजकर पैग़ाम ख़्वाबों को बुलाकर जब कभी
ज़िंदगी पर अपनी बज़्म-ए-तब्सिरा रख लीजिए

ज़िंदगी में वक़्त भी रहता नहीं है एक-सा
सोचकर इस वक़्त को रब की रज़ा रख लीजिए

आस पर दुनिया है क़ायम फिर मिलेंगे एक दिन
दीजिए अपना पता मेरा पता रख लीजिए

मौन दीवारें हैं घर की खो गयीं किलकारियाँ
सहन में अपने बनाकर घोंसला रख लीजिए

इक पुरानी मय के जैसे कारगर होगा बहुत
बाप दादा का ज़रा-सा तज़रिबा रख लीजिए

-राजेश कुमारी राज

बहर - बहरे -रमल मुसम्मन महज़ूफ़
फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

हर नयी ईजाद की कल तक हमीं बुनियाद थे
लोग लोहा भी न थे जिस वक़्त, हम फ़ौलाद थे

आज ही तय कीजिये कल क्या कहेंगे क़ौम को
हम अभी आज़ाद हैं या हम कभी आज़ाद थे

झर चुके पत्ते हवा से कह रहे हैं ग़म नहीं
वो जड़ें ज़िंदा हैं अब भी जिनसे हम आबाद थे

अब मेरी बढ़ती हुई गुमनामियों का क्या क़ुसूर
वो ज़माना जा चुका कब का जिसे हम याद थे

कौन सुनता अजनबी की अजनबी भाषा में बात
शोर के दरबार में हम मौन के संवाद थे

-विजय कुमार स्वर्णकार

होड़ कितनी मच रही है चारपाई के लिए
लोग कैसे मर रहे काली कमाई के लिए

क्या हुआ, क्यों हो गये संवेदना से शून्य सब
हर कोई तैयार बैठा है लड़ाई के लिए

प्यार करना गर बुराई है, बुरा मैं हूँ बहुत
छोड़ सकता हूँ ज़माना इस बुराई के लिए

लौ कन्हैया से लगाकर बावरी घोषित हुई
देख मीरा उम्रभर भटकी सगाई के लिए

हम गिरें भी और कितना, इंतिहा ये हो गयी
गन्दगी को दे दिया ठेका सफ़ाई के लिए

कोई कहता था कि उनमें ये हुनर तो है बहुत
हम मुसलमाँ हो गये केवल रसाई के लिए

क़ाफ़िले की बदनसीबी, या कि नाबीना हैं सब
एक अन्धा ढूँढ़ लाये, रहनुमाई के लिए

हार को फिर जीत में बदलें, करें कुछ इस तरह
हम किसी का अपहरण कर लें रिहाई के लिए

-प्रमोद रामावत 'प्रमोद' नीमच

लोकप्रिय साहित्य को जब हम समर्पित हो गये
काव्यमय अभिव्यक्ति से तन-मन प्रफुल्लित हो गये

मोह-माया तज के अर्जुन ने उठाया जब धनुष
श्लोक गीता के सभी तब सारगर्भित हो गये

पीठ पीछे की प्रशंसा, ही प्रशंसा जानिये
सामने आलोचना से लोग विकसित हो गये

बाँट लें संपत्ति, बेटों ने कहा, बापू की अब
अस्थियाँ और पुष्प गंगा में विसर्जित हो गये

गर्व क्योंकर हो न अपने बाल-बच्चों पर उन्हें
आचरण से जिनके अब माँ-बाप चर्चित हो गये

गाँव ही में छोड़ आये थे जिन्हें बचपन में हम
कौन जाने? हैं अभी, या काल-कवलित हो गये

देख कैसे पायेगा उन दीन-दुखियों को 'रक़ीब'
चक्षु, सुनकर ही व्यथा जब अश्रूपूरित हो गये

-सतीश शुक्ल 'रक़ीब'

नाम : राजेश जैन 'राही'

जन्म तिथि : 17 नवम्बर 1968

पता : काव्यालय, 35 प्रथम तल, कमला सुपर मार्केट, तेलघानी नाका, स्टेशन रोड, रायपुर (छ. ग.) 492009

मोबाइल : 94252 86241

ई-मेल : rajeshjainrahi@gmail.com

राजेश जैन 'राही' - अनिता जैन
विवाह की तिथि : 16 जुलाई, 1991

चाँद रातों का शृंगार हो तुम
मीत जन्मों का एक प्यार हो तुम

बहर-हज़ज मुसम्मन अशतर मक्फ़ूफ़ मक़बूज़ मुख़न्नक सालिमुल आख़िर
अर्कान - फ़ाइलुन मुफ़ाईलुन फ़ाइलुन मुफ़ाईलुन

❀

प्यार की कहानी अब हो गयी पुरानी है
दौर है सियासत का बात बस बनानी है

रैलियाँ हुई होंगी आपके नगर में भी
जागिये ज़रा श्रीमन जाँच अब करानी है

सीख कुछ मिली होगी आपका भरम है ये
कुछ फटी किताबों पर जिल्द बस चढ़ानी है

क्या हुआ वहाँ दिनभर बोलिये ज़रा खुलकर
आपके हवाले से ये ख़बर छपानी है

अब लहर न आयेगी आप भी सुधर जाएँ
नेह की नयी दुनिया फिर हमें बसानी है

-राजेश जैन 'राही'

❀

बारिशों में आ जाओ प्यार में नहाना है
इस तरफ़ घटाएँ हैं उस तरफ़ ज़माना है

आपका इशारा हो चाँद भी ठहर जाये
रात के बदन पर इक मोगरा खिलाना है

गीत ये अधूरा है, अंतरा न मुखड़ा है
आपकी सिफ़ारिश पर अब इसे सजाना है

बंद हैं सभी राहें, बाग़ सब हुए सूने
आपकी पनाहों में अब समय बिताना है

करवटें बदलता है वक़्त बेरहम काफ़ी
आपकी हँसी हो तो ये सफ़र सुहाना है

आपकी निगाहों में इक कसक सलोनी-सी
इक नयी कहानी को छाँव में बसाना है

होंठ मुस्कुराते से नैन जगमगाते से
आपकी छुवन मीठी दिल भी आशिक़ाना है

-राजेश जैन राही

नाम	: दिनेश 'तपन'
जन्म तिथि	: 31-01-1940
पता	: स्टेट बोरिंग गली, भट्ठा रोड (विषहरी स्थान के निकट) भीखनपुर, गुमटी नं० 2, भागलपुर,(बिहार)-812001
मोबाइल	: 9431090390
ई-मेल	: dineshtapan31baba@gmail.com

दिनेश 'तपन' - भारती तिवारी
विवाह की तिथि : 30-6-1975

प्यार किये जी भर तपन,
झगड़े कभी कभार।
गुस्ताखी में मिल गया
प्यारा घर संसार॥

बहर - बहरे - रमल मुसद्दस महज़ूफ़
अर्कान - फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

घर नहीं होता दरो दीवार से
घर तो होता है परस्पर प्यार से

आदमी से मुस्कुराता है जहाँ
आदमी होता नहीं संसार से

गर मुहब्बत से किसी को देख लो
तल्ख़ियाँ मिट जाएँगी दीदार से

इक हसीं ख़ुशरंग कर देती फ़िज़ा
मुस्कुराकर पूछिये बीमार से

इक मुहब्बत का ज़रा-सा लम्स भी
जीत जाता तेग़ से, तलवार से

क्यों नहीं इठलायगा भँवरा कहो
ताकती हो हर कली जब प्यार से

रूठ जाए इश्क़ में जो भी 'तपन'
बेहिचक उसको मना लो प्यार से

-दिनेश तपन

बहर - बहरे - रमल मुसद्दस महज़ूफ़
अर्कान - फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

लाज में लिपटा हुआ शृंगार है
चाँदनी-सा आपका व्यवहार है

मुस्कुराकर आपने स्वागत किया
कैद में लेकिन अभी इज़हार है

फूल पर शबनम लुभाती है मुझे
प्रीत की मीठी छुअन स्वीकार है

भेंट होली में हुई थी आपसे
ईद का अब आ गया त्यौहार है

आम मीठे आ गये बाज़ार में
पेड़ पर इमली प्रिये तैयार है

रूप यौवन से मिला तो यूँ लगा
अब धरा पर हो रही बौछार है

तितलियों के रंग अब भाने लगे
हो गया लगता किसी से प्यार है

-राजेश जैन 'राही'

तू ख़याल-ए-यार में हलकान है
ये मजाज़न इश्क़ का तूफ़ान है

हौसले की एक ही पहचान है
दर्द दिल में, मुखड़े पे मुस्कान है

देखकर ये दिल मेरा हैरान है
क्यूँ दरीचा आपका सुनसान है

कब छुपाये से है छिपता इश्क़, मुश्क
फ़ैलती ही बात कानों-कान है

सादगी भी जान-लेवा हुस्न की
हर अदा पर जाँ मेरी क़ुर्बान है

अक़्ल की मीज़ान पर तौलें 'सुनील'
इश्क़ ही अहद-ए-वफ़ा ऐलान है

-सुनील कुमार

(हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं पुण्यतिथि (योमे-वफ़ात) के अवसर पर 16 जून, 2021 को ज़ूम क्लाउड पर आयोजित ऑनलाइन मुशायरा में पढ़ी गयी ग़ज़ल)

आदमी बिकने लगा बाज़ार में
झूठ था जो कल छपा अख़बार में

पैरवी जो कर रहा था न्याय की
कौल से वो फिर गया दरबार में

जो भगोड़ा था कभी क़ानून का
दबदबा उसका बढ़ा सरकार में

रोटियाँ भी दी नहीं मजबूर को
थी नहीं संवेदना ज़रदार में

आदमी बेचैन फिरते हैं सभी
खोट कोई रह गया किरदार में

-रघुविन्द्र यादव

बहरे-हज़ज मुसम्मन अख़रब
अर्कान - मफ़ऊलु मफ़ाईलुन मफ़ऊलु मफ़ाईलुन

मैं दिल की ख़ता लिक्खूँ, तुम अपनी अदा लिखना
ख़त अबके अगर लिखना, हर ज़िक्र नया लिखना

जो मुझको छुपाता था, उस पेड़ की शाख़ों ने
पहनी कि नहीं पहनी फूलों की क़बा लिखना

अख़बार तो पढ़ते हैं, इस बार मगर तुम भी
घर किसका जला लिखना, घर किसका बचा लिखना

देखें किसे मिलती है ताईद ज़माने की
मैं ख़ूने-जिगर लिक्खूँ, तुम बादे-सबा लिखना

इक शाम तुम्हें मैंने कुछ शेर सुनाये थे
हों याद अगर तुमको वो शेर ज़रा लिखना

'मंसूर' इबादत का इक ये भी तरीक़ा है
हर लग़्ज़िशे-दुनिया को तुम अपनी ख़ता लिखना

-मंसूर उस्मानी

बहरे हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
मुफाईलुन मुफाईलुन फऊलुन

वो सबका है मगर मेरा नहीं है
मेरे जाने से जो तन्हा नहीं है

अजब है नस्ल ये जो आयी है अब
इसे ग़लती का पछतावा नहीं है

हो अच्छा तुम अगर ये जान जाओ
बिना कुछ धूप के साया नहीं है

घने बादल से तुम बरसे भी होते
ये दिल मुद्दत हुई भीगा नहीं है

मुख़ालिफ़ ही मिले सब, सिर्फ़ उनके
मेरा जिनसे कोई रिश्ता नहीं है

हमारी आँखों में तस्वीर जिसकी
उसी ने हमको पहचाना नहीं है

ये सच है साँस इक दूजे की हम हैं
मगर हाँ दरमियाँ वादा नहीं है

ख़ुशी का शम्स देखो जगमगाता
ग़मों का अब इधर रस्ता नहीं है

भले झूठा रहा हो इश्क़ उसका
मगर 'भवि' की वफ़ा ज़ाया नहीं है

-शुचि 'भवि'

नाम : ताराचन्द 'नादान'
जन्म तिथि : 29/10/1962
पता : H-54C, रामा पार्क रोड, निकट सुनील डेयरी, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नयी दिल्ली-110059
मोबाइल : 9582279345
ई-मेल : taracsharma@gmail.com

ताराचन्द 'नादान'-सरला शर्मा
विवाह की तिथि : 23 नवम्बर,1987

मेरे जीवन की राहों में, जब-जब तम-सागर गहराया
तब-तब प्यार तुम्हारा दीपक बनकर आँखों में लहराया

मन के आँगन की धरती पर, तपन बढ़ी है जब भी कोई
बनकर नीर भरी इक बदली, नेह मेह तुमने बरसाया

बहर - बहरे - खफीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़ मुसक्किन
अर्कान - फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन

❀

चंद अश'आर देखिए साहिब
दर्द में प्यार देखिए साहिब

इतनी सरगोशियाँ सुनीं, फिर भी
चुप है दीवार देखिए साहिब

चेहरा कब सच बयान करता है
आप किरदार देखिए साहिब

रू-ब-रू जो है वो छलावा है
इसके उस पार देखिए साहिब

कट के 'नादान' अपनी मिट्टी से
हो गया ख़्वार देखिए साहिब

-ताराचन्द 'नादान'

❀

तेरा जल्वा हर एक महफ़िल में
ग़म का दूल्हा है आज मुश्किल में

धीरे-धीरे सभी हुए रुख़सत
अब तेरी याद तक नहीं दिल में

राहतों के चिराग़ हैं रौशन
देर कुछ भी नहीं है मंज़िल में

ज़ायक़ा उनके हुस्न का लीजे
देखिये उनको माहे-कामिल में

हुस्ने-मक़तल में है अजब सज-धज
जो है क़ातिल, वही है बिस्मिल में

अब मिटा डाला है सियासत ने
फ़र्क़ आलिम में और जाहिल में

चीन में हर नगर का चाँद जुदा
हम 'कँवल' आज भी हैं महमिल में

-रमेश 'कँवल'

❀

मेरी दुखती रगें दबाओ तुम
दोस्त बचपन के हो बताओ तुम

मत करो इतनी भी पज़ीराई
मुझसे क्या काम है सुनाओ तुम

अपनी ख़ुदग़र्ज़ी के लिए बेशक
हक़ तुम्हारा ही है गिराओ तुम

ख़ुद के देखो कभी गिरेबाँ में
तब मुझे आइना दिखाओ तुम

आस्तीं में रहे हो तुम अब तक
इक दफ़ा ज़हर तो चखाओ तुम

-कुमार पंकजेश

(हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं पुण्यतिथि (योमे-वफ़ात) के अवसर पर 16 जून, 2021 को ज़ूम क्लाउड पर आयोजित ऑनलाइन मुशायरा में पढ़ी गयी ग़ज़ल)

❀

लोग जब हालचाल पूछेंगे
दूसरा ही सवाल पूछेंगे

ज़िक्र कर फिर किसी फ़साने का
उस पे तेरा ख़याल पूछेंगे

बीच बाज़ार कोई दिल होगा
और सब इस्तेमाल पूछेंगे

शाम लौटेंगे घर तो अचरज से
है ये किसका कमाल पूछेंगे

होगी तारीख़ कोई तो ऐसी
हम जिसे साल-साल पूछेंगे

दिन जो आने थे रह गये वो कहाँ
जिनकी होगी मजाल पूछेंगे

किसलिए ज़ख़्मों को हरा करना
अब मिले तो न हाल पूछेंगे

रात फिरते जुलूस से वापस
घर का रस्ता मशाल पूछेंगे

आयें क्यों हम तुम्हारी दुनिया में
कोख से नौनिहाल पूछेंगे

जा रहीं जानें हर तरफ़ हर दिन
फिर भी कुछ लोग माल पूछेंगे

आदमीयत कहीं जो मिल जाये
कब हुआ इंतक़ाल पूछेंगे

कोई तकलीफ़ तो नहीं बोलो
ख़ाक पर ख़ाक डाल पूछेंगे

राख हो जायेगी कभी दुनिया
ज़र्रे तब हक़ -हलाल पूछेंगे

हम नये ख़्वाब लेके आये हैं
किन से साजो सँभाल पूछेंगे

आज तय हो रहा है कल 'अनिमेष'
बच्चे कैसे सवाल पूछेंगे

-प्रेम रंजन 'अनिमेष'

(हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं पुण्यतिथि (योमे-वफ़ात) के अवसर पर 16 जून, 2021 को ज़ूम क्लाउड पर आयोजित ऑनलाइन मुशायरा में पढ़ी गयी ग़ज़ल)

बहर - बहरे - खफीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़ मुसक्किन
अर्कान - फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन

सिर्फ़ उम्मीद पर टिकी मिट्टी
कुछ नये ख़्वाब देखती मिट्टी

उड़ लो जितना यहीं पे आओगे
कह रही है ज़मीन की मिट्टी

रौंद लो कितना, ये हक़ीक़त है
एक दिन सबको रौंदती मिट्टी

मैंने देखा है ऐसा भी मंज़र
मिट्टी-मिट्टी में मिल गयी मिट्टी

प्यार जिसको नहीं मिला समझो
हो गयी उसकी ज़िन्दगी मिट्टी

आइना कैसे साफ़ दिखलाता
उसके चेहरे पे थी सनी मिट्टी

ख़त दबाया है मैंने मिट्टी में
मेरा हमराज़ बन गयी मिट्टी

इक नयी ज़िन्दगी की चाहत में
चाक पर घूमती रही मिट्टी

-आराधना प्रसाद

(हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं पुण्यतिथि (योमे-वफ़ात) के अवसर पर 16 जून, 2021 को ज़ूम क्लाउड पर आयोजित ऑनलाइन मुशायरा में पढ़ी गयी ग़ज़ल)

ख़त हमें भी लिखा करे कोई
याद हक़ से किया करे कोई

बाज़ुओं में जहाँ समाएगा
दायरे को बड़ा करे कोई

ज़िंदगी बेवफ़ा है सब जानें
कैसे उससे वफ़ा करे कोई

आइना है ये सच दिखायेगा
झूठ की क्यूँ रज़ा करे कोई

सूखती जा रही है वो तुलसी
गाँव में भी रहा करे कोई

वो खिलौने भी अपने फेंक आया
भूख में क्या मज़ा करे कोई

मेरे सीने पे उनका ख़ंजर है
आज दिल से दुआ करे कोई

एक बुझता हुआ शरर हूँ मैं
काश! आकर हवा करे कोई

लम्स तक से सभी लगे बचने
दौर ऐसा है क्या करे कोई

ज़िंदगी मेरी, दास्ताँ मेरी
इस पे क्यूँ तब्सिरा करे कोई

-राजेश कुमारी राज

❀

नारेबाज़ों में गूँगे ग़म जैसे
शोर में क्या कहेंगे हम जैसे

कैसे छूकर हों धन्य हम जैसे
आप हैं चाँद पर क़दम जैसे

हम तो हैं कर्म लीक से हटकर
और वे धर्म के नियम जैसे

ख़ुद को हम दूसरे-से लगते हैं
भाव मत दो हमें प्रथम जैसे

हमसफ़र सुर में सुर मिला देना
चल पड़े हम अगर रिदम जैसे

सृष्टि में हर कोई अनोखा है
किसलिये ढूँढ़िये स्वयं जैसे

हमको रास आती है नयी दुनिया
आपके शौक़ म्यूज़ियम जैसे

-विजय कुमार स्वर्णकार

❀

ये हक़ीक़त कि ख़्वाब है कोई
सामने बेनक़ाब है कोई

है तसव्वुर में हुस्ने-दोशीज़ा
या पुरानी शराब है कोई

भेजना कर के सैकड़ों पुर्ज़े
ख़त का यह भी जवाब है कोई

ज़िन्दगी क़ैदे-बा-मशक़्क़त है
इससे बढ़कर अज़ाब है कोई?

बन्दगी में तेरी किफ़ायत क्यों
रहमतों का हिसाब है कोई

चाँद पर छाये ऐसे बादल हैं
रुख़ पे जैसे नक़ाब है कोई

जिसको देखो 'रक़ीब' पढ़ता है
जैसे चेहरा किताब है कोई

-सतीश शुक्ल 'रक़ीब'

क़तरा-क़तरा पिघल रही हूँ मैं
लम्हा-लम्हा बदल रही हूँ मैं

मेरी पहचान खो गयी मुझसे
तेरे साँचे में ढल रही हूँ मैं

तेरी साँसों की है तपिश ऐसी
चाँदनी में भी जल रही हूँ मैं

चल रही हूँ मैं रेत पर ऐसे
गिरते-गिरते सँभल रही हूँ मैं

तेरी ख़ुशबू का है असर ऐसा
ख़ार पर भी मचल रही हूँ मैं

तेरी आवाज़ पर लगा मुझको
ख़ुद से बाहर निकल रही हूँ मै

-डॉ. अनिता सिंह

मौत का इन्तज़ार सारा दिन
आज भी था बुख़ार सारा दिन

एक अरसा हुआ पिये हमको
पर रहा है ख़ुमार सारा दिन

मौत अब भी यहीं-कहीं होगी
ज़िन्दगी का शिकार सारा दिन

प्रीत की साँस-साँस अटकी है
सिर्फ़ रोता है प्यार सारा दिन

शाम तक की ख़बर नहीं लेकिन
आरज़ूएँ हज़ार सारा दिन

हौसलों में उड़ान थी कल तक
अब कहाँ ऐतबार सारा दिन

रात में कुछ क़रार आएगा
सब रहे बेक़रार सारा दिन

ज़िन्दगी कल तो मुस्कुराएगी
फिर रहेगी बहार सारा दिन

-प्रमोद रामावत 'प्रमोद'

अर्कान -फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन

अब वो पहले-सी मुलाक़ात कहाँ होती है
बात होती है मगर बात कहाँ होती है

संग-ए-मरमर से बने घर तो बहुत ख़ूब हैं पर
सोंधी-सोंधी सी वो बरसात कहाँ होती है

सुब्ह से शाम तलक फ़िक्र में डूबे रहिए
पुर-सुकूँ एक भी अब रात कहाँ होती है

उसके होने से फ़रोज़ाँ हुआ करता था ये घर
अब नशिस्तों में कोई बात कहाँ होती है

हाल-ए-दिल आपका ये कैसे बयाँ होगा 'ओसैद'
आपकी उनसे मुलाक़ात कहाँ होती है

-ओसैद रहमान

बहरे-रमल मुसम्मन मख़बून महज़ूफ़
अर्कान -फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन

तेरे क़दमों को ढलक कर जो छुएँगे आँसू
अपनी क़िस्मत पे बहुत नाज़ करेंगे आँसू

कौन फिर दर्दे-मुहब्बत की गवाही देगा
बात-बेबात अगर यूँ ही बहेंगे आँसू

ये करिश्मा भी मुहब्बत में यक़ीनन होगा
तेरे दामन पे मेरा नाम लिखेंगे आँसू

ये भी दौलत हैं, इन्हें दिल में छुपाकर रखलो
दर्द जागेगा तो ढूँढ़े न मिलेंगे आँसू

रोने वालों पे जो हँसते हैं, बता दो उनको
उनके ग़म पर भी किसी रोज़ हँसेंगे आँसू

मेरी आँखों को भी ग़ज़लों का हुनर आता है
आप समझें तो हर इक बात कहेंगे आँसू

ज़िक्र पर उसके यही होगा तमाशा 'मंसूर'
तुम न बोलोगे मगर बोल पड़ेंगे आँसू

-मंसूर उस्मानी

अर्कान -मुफ़ाइलुन फ़इलातुन मुफ़ाइलुन फ़इलुन

फ़लक को कैसे बताएँगे बेज़ुबान के पर
कि सिर्फ़ जिस्म नहीं, कट गये हैं जान के पर

नये शिकारी जड़ों तक कतर के रख देते
नज़र की ज़द में जो आ जाते आसमान के पर

किसी ने भर दिये हैं कान आसमानों के
किसी ने काट दिये मेरे मेहरबान के पर

समझ की चीटियों के पर तो उड़ गये फिर भी
निकलते जा रहे हैं ज़ेहन-ए-बदगुमान के पर

नयी ज़बान निवालों की आड़ ले-लेकर
कतरती जा रही है मादरी ज़बान के पर

फ़लक पे दिखता हूँ लेकिन हूँ आशियाने में
उड़ान भर रहे हैं अब मेरी उड़ान के पर

-विजय कुमार स्वर्णकार

अर्कान -मुफ़ाइलुन फ़इलातुन मुफ़ाइलुन फ़इलुन

हैं एक सफ़ में क़लंदर भी मैं भी दुनिया भी
सितम-ज़दा भी, सितमगर भी मैं भी दुनिया भी

ख़ुदा के नाम पे क्या-क्या फ़रेब देते हैं
ज़माना-साज़ ये रहबर भी मैं भी दुनिया भी

वो एक लम्हा कि हम सब लिपट के रोए थे
उदास रात का मंज़र भी मैं भी दुनिया भी

दुआएँ माँगते रहते हैं तुझ से मिलने की
उदास-उदास मिरा घर भी मैं भी दुनिया भी

सफ़र पे निकले तो अक्सर भटक गये जानाँ
तुम्हारी याद के लश्कर भी मैं भी दुनिया भी

ग़ज़ल के साँचे में ढलते हैं टूट जाते हैं
वफ़ा की राह के पत्थर भी मैं भी दुनिया भी

जुदा-जुदा हैं मगर फिर भी साथ हैं 'मंसूर'
मुहब्बतों के समुंदर भी मैं भी दुनिया भी

-मंसूर उस्मानी

अर्कान -मुफ़ाइलुन फ़इलातुन मुफ़ाइलुन फ़इलुन

ये सोच-सोच के करते हैं ख़ुदकुशी पत्थर
कि इस दयार में आकर हुई नदी पत्थर

नज़रनवाज़ उजाले कहाँ उन आँखों में
जड़े हुए हैं जहाँ दो नुमाइशी पत्थर

गुनाह क्या है, सज़ा क्या है और क्या तौबा
जवाब सुन के न हो जाएँ आप भी पत्थर

जो झुक के चूम ले वो ताजदार हो जाए
जड़ा है दर पे तेरे ऐसा जादुई पत्थर

सदी बदल गयी फिर भी दिखाई देती है
इलाहाबाद के पथ पर वो तोड़ती पत्थर

-विजय कुमार स्वर्णकार

मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ मक़्सूर
मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफाईलु फ़ाइलान

रोकें न अपनी फ़िक्र को पतझड़ के आसपास
दीमक लगी हुई है हर इक जड़ के आसपास

वो बेधड़क घरों में भी आएँगे एक दिन
जो ख़ौफ़ लामबंद हैं नुक्कड़ के आसपास

ऐ खुरदुरे समय न कोई बोझ दिल में रख
गुज़री है ज़िन्दगी मेरी बीहड़ के आसपास

लड़ते हुए कबंध बहुत दूर तक गये
सर एक भी नहीं था किसी धड़ के आसपास

धरना न दे तो क्या करे, पानी गली-गली
कितने मकान बन गए जोहड़ के आसपास

-विजय कुमार स्वर्णकार

बहर - बहरे - मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
अर्कान - मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन

❀

शामिल मैं मुद्दतों से, तेरी आदतों में हूँ
बनके लहू रवाँ मैं, तेरी इन रगों में हूँ

आकर मुझे समेट ले, बिखरा हूँ जा-ब-जा
जिनमें गया तू छोड़, उन्हीं साअतों में हूँ

बेशक हूँ मुफ़लिसी का सताया हुआ मगर
तहक़ीर से न देख, तेरे दोस्तों में हूँ

रातों की तीरगी ने, तराशा मेरा बदन
साया हूँ, एक ख़ौफ़ का सबके दिलों में हूँ

कैसे निजात पाऊँ, मैं आसेबे-इश्क़ से
उलझा हुआ मैं कबसे इन्हीं उलझनों में हूँ

हरगिज़ न रह सकेगा, तू मुझसे जुदा कभी
तू दिल है गर, तो मैं भी तेरी धड़कनों में हूँ

पहचान ले मुझे कि हूँ तेरा वजूद मैं
तेरे ख़ुलूसो-इश्क़, तेरी चाहतों में हूँ

मुझसे निज़ामे-ज़िन्दगी, मंसूब है 'करन'
मौजूद इश्क़ की मैं सभी आयतों में हूँ

-करन कटारिया

❀

मैंने कहा कि जीते रहो, ख़ुश रहो मियाँ
उसने कहा- दुआएँ नहीं, सिर्फ़ रोटियाँ

इतना धुआँ कि साँस भी लेना हुआ मुहाल
ऐसे सुलग रही हैं कुछ इस बार लकड़ियाँ

करती रहीं गुलों से बहुत देर बातचीत
बच्चों के इंतज़ार में बैठी थीं तितलियाँ

तू है बड़ा, तो अपने बड़प्पन का ध्यान रख
क़दमों में आ ही जाती हैं मग़रूर पगड़ियाँ

ईंटें रंगी थीं जिनकी ग़रीबों के ख़ून से
वीरान हो गयी हैं सब ऐसी हवेलियाँ

पोखर की मछलियों को है इस बात का मलाल
क्योंकर सुकून में हैं समंदर की मछलियाँ

होंठों पे है हँसी की लिपस्टिक सजी हुई
आँखों से फिर भी झाँक रही हैं उदासियाँ

-डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन

बुझने न दो चिराग़े-वफ़ा जागते रहो
पागल हुई है अबके हवा जागते रहो

सजदों में है ख़ुलूस तो फिर चाँदनी के साथ
उतरेगा आँगनों में ख़ुदा जागते रहो

अल्फ़ाज़ सो न जाएँ किताबों को ओढ़कर
दानिशवराने-क़ौम ज़रा जागते रहो

पहले तो उसकी याद ने सोने नहीं दिया
फिर उसकी आहटों ने कहा, जागते रहो

फूलों में, ख़ुशबुओं में, सितारों में, चाँद में
खोलेगा कोई बंदे-क़बा जागते रहो

जब भी क़लम को मेरे कभी आयीं झपकियाँ
आँखों ने आँसुओं से लिखा, जागते रहो

'मंसूर' रतजगे तो तुम्हारा नसीब हैं
जब तक जले सुख़न का दिया जागते रहो

-'मंसूर' उस्मानी

(हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं पुण्यतिथि (योमे-वफ़ात) के अवसर पर 16 जून, 2021 को ज़ूम क्लाउड पर आयोजित ऑनलाइन मुशायरा में पढ़ी गयी ग़ज़ल)

लगते शराब के हैं पियाले तुम्हारे ख़त
बनते हैं तीरगी में उजाले तुम्हारे ख़त

दुनिया की दौलतों से निराले तुम्हारे ख़त
हैं इश्क़ के भी पाक रिसाले तुम्हारे ख़त

गर्दिश में साथ देते हैं हरदम हमारा ये
करते नहीं किसी के हवाले तुम्हारे ख़त

रूदाद-ए-इश्क़ इनसे न कोई भी पढ़ सका
हमने बुरी नज़र से सँभाले तुम्हारे ख़त

पढ़ने लगे जो लोग, तो फिर वाह! कर उठे
शेरो-सुख़न में हमने यूँ ढाले तुम्हारे ख़त

हमने कभी लिखी थी मुहब्बत की दास्ताँ
आयी जो हमको याद निकाले तुम्हारे ख़त

नासूर बन गया था कोई ज़ख़्म-ए-इश्क़ जब
पेटी में हमने जाके खँगाले तुम्हारे ख़त

'मीना' फ़िज़ा में फैल गयीं कितनी ख़ुशबुएँ
जब भी उठा के हमने उछाले तुम्हारे ख़त

-मीना भट्ट

उसने नज़र नज़र से मिलाई ज़रा-ज़रा
उल्फ़त की आग दिल में लगाई ज़रा-ज़रा

बस यूँ लगा कि आज क़यामत ही आ गयी
तुमसे अभी हुई है जुदाई ज़रा-ज़रा

क्या जाने क़हर ढाये शरारत ये प्यार की
दिन में मुझे है रात दिखाई ज़रा-ज़रा

कैसा असर हुआ है मुहब्बत का हम-नफ़स
होंठों की प्यास और बढ़ाई ज़रा-ज़रा

मदहोश हो गया मैं ख़ुमारी-सी वो चढ़ी
आँखों से मय जो तुमने पिलाई ज़रा-ज़रा

तारी हैं फिर ज़ेहन पे मेरे क्यों उदासियाँ
किसने सनम नज़र है लगाई ज़रा-ज़रा

ख़ुद को सँभालता हूँ कहीं होश खो न दूँ
'मीना' नक़ाब उसने उठाई ज़रा-ज़रा

-मीना भट्ट

अपनों के दरमियान सलामत नहीं रहे
दीवारो-दर, मकान सलामत नहीं रहे

नफ़रत की गर्द जम'अ निगाहों में रह गयी
उल्फ़त के क़द्रदान सलामत नहीं रहे

यूँ इख़्तिलाफ़ बढ़ गया क़ौमों के दरमियाँ
मिल्लत के सायबान सलामत नहीं रहे

रौशन हैं आरज़ू के बहुत ज़ख़्म आज भी
ज़ख़्मों के कुछ निशान सलामत नहीं रहे

लौटा रहे हैं लोग पुरस्कार इन दिनों
यानी ये मेहरबान सलामत नहीं रहे

ऐसा नहीं कि सिर्फ़ यक़ीं दर-ब-दर हुआ
दिल के कई गुमान सलामत नहीं रहे

महफ़ूज़ बामो-दर हैं सदाक़त के आज भी
धोखे के पायदान सलामत नहीं रहे

अपनों से अपने लहजे में बातों का है कमाल
कुछ शख़्स बदज़ुबान सलामत नहीं रहे

वो लोग बेअदब थे 'कँवल' बेख़ुलूस थे
हम जैसे बेज़ुबान सलामत नहीं रहे

-रमेश 'कँवल'

नाज़ुक बदन लिये हुए मैं ख़ंजरों में हूँ
यानी कि ख़ाली हाथ मैं फिर दुश्मनों में हूँ

चाहत का मेरी देखिये अंजाम ये हुआ
मैं भी शुमार दोस्तों अब दिलजलों में हूँ

मेरे सफ़र का हाल समझ इससे लीजिये
मंज़िल नहीं है जिस पे मैं उन रास्तों में हूँ

सच ही बयान करने के ऐवज़ में दोस्तों
हर बार तोड़े जो गये उन आइनों में हूँ

बुझने से पहले तेज़ फड़कती है जिनकी लौ
मैं तेज़ रौशनी के उन्हीं दीपकों में हूँ

जिसने निगल लिये हैं जहाज़ों के क़ाफ़िले
टूटा सफ़ीना ले मैं उन्हीं ज़लज़लों में हूँ

मतलब से ओढ़ता है जिसे आदमी यहाँ
'साहिल' मैं वक़्ती तौर के उन पैकरों में हूँ

-साहिल मिश्र

बहर - बहरे - मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
अर्कान - मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन

हिम्मत पे सिर्फ़ अपनी भरोसा किया करो
जितना हो अपने ख़्वाब का पीछा किया करो

इस दौर में किसी का नहीं कोई नाख़ुदा
अपने ही दम पे पार ये दरिया किया करो

सबने किया फ़रेब तेरे साथ है मगर
फिर भी किसी के साथ न धोखा किया करो

पत्थर का दिल भी बोल पड़ेगा यक़ीन है
उसके फ़रेब का न तमाशा किया करो

हो जाए मौत क्यों न खड़ी सामने मियाँ
ईमान का न आप यूँ सौदा किया करो

होती तो हौसले की हमेशा ही जीत है
लड़ने से पहले दिल में इरादा किया करो

गर तीरगी कहीं भी दिखे आपको मियाँ
तो दिल जला के रह में उजाला किया करो

देगा न 'शाद' काम कोई इस जहान में
पत्थर भले ही रोज़ तराशा किया करो

-इकराम हुसैन शाद

बहर- ए-मुक़्तज़िब मुसम्मन मख़्बून मरफ़ूअ मख़्बून मरफ़ूअ मुसक्किन
अर्कान-फ़ऊल फ़ेलुन फ़ऊल फ़ेलुन फ़ऊल फ़ेलुन फ़ऊल फ़ेलुन

यक़ीं नहीं था मुझे कि तुम भी ज़माने भर की कही कहोगे
उम्मीद ये थी कि कम से कम तुम जो सच दिखेगा वही कहोगे

ग़लत सही है, सही ग़लत है सब अपनी-अपनी सहूलतें हैं
ग़लत जिसे कल कहा था तुमने उसे ही कल तुम सही कहोगे

कहेगी धन-मोल चाहे दुनिया धन और अन में है फ़र्क़ सच में
हटाओ दुनिया को, तुम बताओ दिखेगा अ तो अ ही कहोगे!

बुरी तरह से थके हो फिर भी मेरे लिए चल पड़ोगे हँसकर
'तुम्हारी ख़ातिर तो यार कुछ भी' मुझे पता था यही कहोगे

सुना है मैंने तुम्हारे बारे में कुछ अजब-सा कि किस तरह तुम
हर एक हरकत के बाद हँसकर 'बताओ कैसी रही' कहोगे

हो कितने 'अनमोल' एक दिन तो तमाम दुनिया भी देख लेगी
अगर ज़रूरत तुम्हारी हाँ की हुई कभी तो न ही कहोगे

-के.पी.अनमोल

हमारी जड़ में है खाद-पानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर
ये ज़िंदगानी है ज़िंदगानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर

हर एक धड़कन, हर एक हलचल, हर एक रौनक़, हर एक बनठन
हर एक जुम्बिश, हर इक रवानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर

तुम्हारे दम पर हमारी ख़ातिर हज़ार तारे चमक रहे हैं
ज़मीं हमारी है आसमानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर

हमारी किरणों की रौशनी जो तमाम दुनिया पे छा रही है
हुई है इसकी चमक सुहानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर

ख़ुशी के रस्तों में फूल हैं और ग़मों की साँसें उखड़ रही हैं
ये सीन मुमकिन हुआ है जानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर

फ़लक पकड़कर है झूल जाना अजीब है ना! तो और सुन लो
हमें ये दुनिया है सर उठानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर

अधूरा आधा-सा एक लड़का घड़ी में 'अनमोल' हो गया है
है इसके पीछे की हर कहानी तुम्हारे दम पर तुम्हारे दम पर

-के.पी.अनमोल

ऊपर की तीनों ग़ज़लें इस बहर में भी सहीह उतरती हैं। तक्ती कर के देखिये-
बहर-ए-रजज़ मुसद्दस मख़्बून मरफ़ूअ मख़लूअ।
अर्कान: मुफ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ऊलुन (दो बार)
मात्रा-क्रम: १२१२ २१२ १२२ (दो बार)

उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं योमे-वफ़ात (पुण्यतिथि) पर 16 जून 2021 की शाम 7 बजे ज़ूम क्लाउड पर एक ऑनलाइन शामे-ग़ज़ल की रूदाद

उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी की 13 वीं योमे-वफ़ात (पुण्यतिथि) पर 16 जून 2021 की शाम 7 बजे ज़ूम क्लाउड पर एक ऑनलाइन शामे-ग़ज़ल का आयोजन किया गया जिसमें निम्नलिखित शो'अरा और शाइरात ने अपने कलाम पेश किये।

1 - आराधना प्रसाद ,पटना
2 - ओंकार सिंह विवेक, रामपुर
3 - ओसैद रहमान, दिल्ली
4 - एकराम हुसैन शाद, भागलपुर
5 - कुमार पंकजेश,पटना
6 - डॉ. अख़्तर मसूद, वाराणसी (हफ़ीज़ बनारसी के ज्येष्ठ पुत्र)
7 - डॉ. अब्दुल क़ादिर, दिल्ली (हफ़ीज़ बनारसी के कनिष्ठ पुत्र)
8 - डॉ. आरती कुमारी, मुज़फ़्फ़रपुर
9 - डॉ. कृष्ण कुमार नाज़, मुरादाबाद
10 - डॉ. नूतन सिंह, जमुई
11 - डॉ. सुधा सिन्हा ,पटना
12 - देववंश दुबे ,अंबिकापुर
13 - नसर आलम नसर ,पटना
14 - निर्मला कपिला, नंगल, पंजाब
15 - पूनम सिन्हा 'श्रेयसी', पटना
16 - प्रेम रंजन 'अनिमेष', मुंबई
17 - मंसूर उस्मानी, मुरादाबाद
18 - रमेश कँवल, पटना
19 - राज कांता राज, पटना
20 - विजय वाजिद, लुधियाना
21 - शुचि 'भवि', भिलाई, छतीसगढ़
22 - शुभ चन्द्र सिन्हा, मुंबई
23 - सुनील कुमार, पटना

श्रोतागण / दर्शकगण

1 - इंदिरा गुप्ता, पटना
2 - उदय शंकर साह,पटना
3 - दिनेश कुमार भगत, फोरबिसगंज

4 - राजेंद्र कुमार राजू, पटना
5 - रौशन गुप्ता, सिलीगुड़ी
6 - स्वाति प्रसाद, सिलीगुड़ी
7 - साहिला ओबैद, दिल्ली
8 - हबीब मुर्शिद ख़ान, भागलपुर

मुलाहिज़ा फ़रमाइए कुछ बेहतरीन ग़ज़लें

हँसते-हँसते तय रस्ते पथरीले करने हैं
हमको बाधाओं के तेवर ढीले करने हैं

कैसे कह दूँ बोझ नहीं अब ज़िम्मेदारी का
बेटी के भी हाथ अभी तो पीले करने हैं

ये जो बैठ गये हो यादों का बक्सा लेकर
क्या तुमको फिर अपने नैना गीले करने हैं

फ़िक्र नहीं है आज किसी को रूह सजाने की
सबको एक ही धुन है, जिस्म सजीले करने हैं

होते हैं तो हो जाएँ लोगों के दिल घायल
उनको तो शब्दों के तीर नुकीले करने हैं

तुम तो ख़ुद ही मुँह की खाकर लौटे हो हज़रत
कहते थे दुश्मन के तेवर ढीले करने हैं

जैसे भी संभव हो पाये, प्यार की धरती से
ध्वस्त हमें मिलकर नफ़रत के टीले करने हैं

-ओंकार सिंह विवेक

दिखा कब सही शख़्स था आइने में
रहा शक्ल का रौब-सा आइने में

मिलाता रहा हाँ में हाँ झूठ सच से
मिला सामने जो दिखा आइने में

निशाँ शक्ल पर अक़्ल के साफ़ देखे
ज़ुबाँ पर लगा ख़ूँ रहा आइने में

ज़रूरी न था देखना रूप मुझको
नहीं था छुपा कुछ मेरा आइने में

चलो आइने पर सभी तल्फ़ लिखकर
करें शोर सच भी दिखा आइने में

न हासिल सही साफ़ मक़सद रखाकर
दिखेगा तेरा क़द बड़ा आइने में

अयाँ कुछ, निहाँ कुछ, मगर बे-असर सब
लगाता रहा आइना आइने में

दिखी बेगुनाही हमेशा नज़र को
नज़र का गिरा कब दिखा आइने में

-शुभ चंद्र सिन्हा

मेरे हाथों की लकीरों को तू गाढ़ा कर दे
मेरी ख़्वाहिश में ज़रा और इज़ाफ़ा कर दे

तीर नज़रों के हैं या है तेरा पैग़ामे-ख़ुलूस
मैं हूँ नादान ज़रा लब से खुलासा कर दे

हर तरफ़ दिल में अँधेरे का सितम जारी है
मेरी हसरत है कि अब थोड़ा उजाला कर दे

उसकी मर्ज़ी है, कभी राह बदल ले अपनी
पर किसी मोड़ पे मिलने का वो वादा कर दे

ये महब्बत का सफ़र चैन से कट जाएगा
अपनी ज़ुल्फ़ों का अगर मुझ पे तू साया कर दे

-देववंश दुबे

इनके अलावा भी अनेक ग़ज़लें ओं लाइन मुशायरा में पढ़ी गयीं जो दिए गए सफ़्हा पर दी रकम हैं :

1 -	मंसूर उस्मानी - चाहे दिल ही जले रौशनी के लिए	-251
2 -	डॉ. सुधा सिन्हा सावी - मेरे होंटों पे माना हँसी आ गयी	-225
3 -	राजकांता राज - मेरी ख़ुशियों में माना कमी आ गयी	-329
4 -	पूनम सिन्हा श्रेयसी - कभी कहती, कभी सुनती तेरी आँखें मेरी आँखें।	-391
5 -	डॉ.आरती कुमारी- जो तू ज़िन्दगी में न मिल सका मुझे इसका कोई गिला नहीं	-427
6 -	डॉ. कृष्ण कुमार नाज़ -क्या हुआ तुमको अगर चेहरे बदलना आ गया	-480
7 -	सुनील कुमार- तू ख़याल-ए-यार में हलकान है	- 488
8 -	कुमार पंकजेश - मेरी दुखती रगें दबाओ तुम,	- 491
9 -	प्रेम रंजन 'अनिमेष'- लोग जब हालचाल पूछेंगे	- 492
10 -	आराधना प्रसाद - सिर्फ़ उम्मीद पर टिकी मिट्टी	- 493
11 -	इकराम हुसैन शाद- हिम्मत पे सिर्फ़ अपनी भरोसा किया करो	- 502
12 -	मंसूर उस्मानी- बुझने न दो चिराग़े - वफ़ा जागते रहो	- 500
13 -	शुचि भवि- वो सबका है मगर मेरा नहीं है	- 489

ऑनलाइन मुशायरा देर शाम तक चलता रहा। उस्ताद हफ़ीज़ बनारसी मरहूम के लिए दुआ की गयी। सभी ने भरपूर आनंद लेकर मुशायरे को कामयाब बनाया।

और अब इस किताब की आख़िरी ग़ज़ल
एक दोशीज़ा के इज़हार-ए-जज़्बात मुलाहिज़ा फ़रमाइए

दिल ये कहता है कोई कहानी लिखूँ
तुमको राजा लिखूँ ख़ुद को रानी लिखूँ

डूब जाने का दिल मेरा जब भी करे
ख़ुद को कश्ती लिखूँ तुमको पानी लिखूँ

ख़ुद को झोंका लिखूँ एक पुरवाई का
तुमको सावन की रिमझिम सुहानी लिखूँ

गुफ़्तुगू जो हुई वस्ल की रात में
उसको कैसे मैं अपनी ज़बानी लिखूँ

ज़िंदगी 'यास्मीं' को अता जिसने की
क्यूँ न अपनी उसे ज़िन्दगानी लिखूँ

-डॉ. यास्मीन मूमल

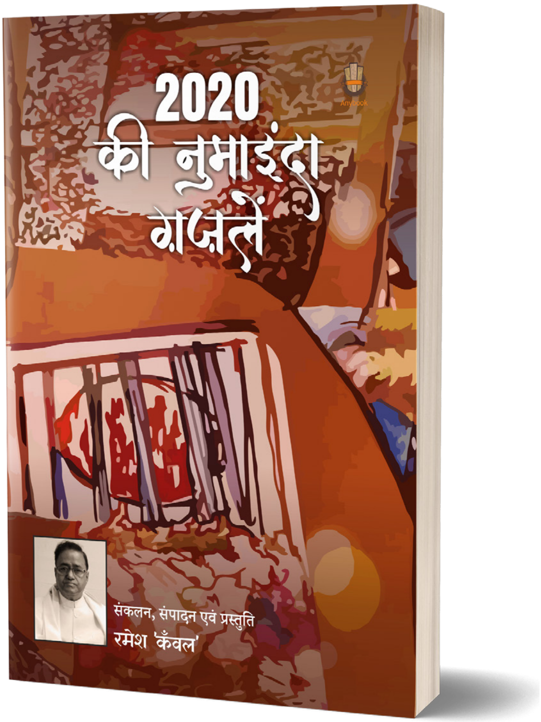

‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ पर प्रतिक्रियाएँ

1. वाह वाह बधाई बधाई बधाई रमेश भाई बहुत-बहुत बधाई बहुत-बहुत बधाई दिल से शुक्रिया आपका आगे बढ़ते रहें और इसी तरह से अदब की सेवा करते।

-डॉ.शंकर प्रसाद, 13-01-2021

2. किताब बेहद ख़ूबसूरत बन पड़ी है। रमेश जी ने कमाल की मेहनत की है इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। अद्भुत काम किया है उन्होंने... ढेरों बधाई...

-नीरज गोस्वामी

3. अभी-अभी मिली। आपने बहुत मेहनत की। दिल से शुक्रिया आदरणीय कँवल सर।

-कविता विकास, धनबाद

4. भाई आपकी मेहनत रंग लाई।

2020 के संदर्भ में एक मुकम्मल काम को अंजाम देने के लिए आपको व संग्रह में शामिल सभी शाइर व शाइरात को बहुत-बहुत बधाई।

-रवि खंडेलवाल, इंदौर

5. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें'
बहुत सुंदर कलेवर के साथ एक अच्छा और पठनीय ग़ज़ल संकलन
बारंबार शुक्रिया इस ख़ूबसूरत किताब के लिए आदरणीय रमेश कँवल साहब
आज मेरे पास भी आपकी मुहब्बतों की सौग़ात पहुँच गयी।

-गोविन्द गुलशन,गाज़ियबाद

6. किताब आज मिल गयी, शुक्रिया।

- कुँवर कुसुमेश,लखनऊ

7. आदरणीय रमेश जी,
सादर नमस्कार।

2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें प्राप्त हुई, ममनून हूँ। किताब पर पर्याप्त श्रम, ऊर्जा और धन का निवेश हुआ है। आज के इस घोर व्यावसायिक दौर में साहित्य को समर्पित आपकी यह विशुद्ध सेवा ख़ूब प्रतिष्ठा अर्जित करे ऐसी कामना करता हूँ।

किताब बहुत सुन्दर और संग्रहणीय बन गयी है, इस हेतु मेरी हार्दिक बधाई और साधुवाद स्वीकार करें।

मुझे शामिल करने के लिए आपका हृदय से आभार। बड़े और नामचीन शाइरों के बीच आपने इस नाचीज़ तुकबन्दिये को भी स्थान प्रदान किया है तो इसे मेरी योग्यता नहीं मेरे प्रति आपकी उदारता ही कहा जा सकता है।

एक बार पुनः तहेदिल से आपका शुक्रिया और मुबारकबाद के साथ सलाम।

आपका अपना एक और भी।

- लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'
जयपुर 16-01-2021

8. मान्यवर रमेश कँवल साहब

2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें की प्रति प्राप्त हुई,एक संग्रहणीय संकलन जिससे बहुत सीखने को मिलेगा, इस संकलन में मुझे भी स्थान दिया साभार नमन सर।

-डॉ. सीमा विजयवर्गीय, अलवर

9. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' आज राँची पहुँच गयी। अभी-अभी मिली। बहुत सुंदर कलेवर के साथ पठनीय एवं संग्रहनीय संकलन है। निश्चय ही एक बड़ा, अनूठा और श्लाघनीय काम हुआ है। यह आपकी कड़ी मेहनत का ही नतीजा है। मुझे भी स्थान दिया, आभारी हूँ।

-हिमकर श्याम,राँची 16-01-2021

10. मनोज कुमार मित्तल कैफ़: सौ से ज़ियादा शायरों के कलाम के मजमूए की तालीफ़ को अंजाम देना और वह भी इस तरह कि वह हमअस्र शायरों की फ़िक्र का एक गुलदस्ता बन जाए नामुमकिन तो नहीं लेकिन मुश्किल काम ज़रूर है।

रमेश 'कँवल' जी ने यह काम बहुत ख़ूबसूरती से अंजाम दिया है। उन्होंने न केवल कलाम को एक जगह किया बल्कि किताब '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' को भी बड़ी ख़ूबसूरती से सँवारा है। कवर डिज़ाइन ने किताब को और भी निखार दिया है।

एनीबुक्स से छपी हुई शायरी की कई किताबें मैंने देखी हैं। हमेशा की तरह इस किताब की छपाई भी निहायत उम्दा है। इसका कारण पराग अग्रवाल जी का ज़ौक़ ए सुख़न और उनकी अदब से मुहब्बत ही है।

ऐसे मजमूए दस्तावेज़ की हैसियत रखते हैं। यहाँ कलाम के मेयार की नहीं बल्कि एक ख़ास दौर की शायरी के मुख़्तलिफ़ रंगो और उस्लूबों की शिनाख़्त होती है।

नयी नस्ल के कई शायर इस किताब का हिस्सा नहीं बन पाए हैं। उम्मीद है कि आने वाले वक़्त में उन शायरों के कलाम भी रमेश जी की सुख़नशनासी का मर्कज़ बनेंगे।

मुझे ख़ुशी है कि मेरी ग़ज़लों को इस किताब में जगह दी गयी जिसके लिए मैं शुक्रगुज़ार हूँ।

आप सभी से मेरी गुज़ारिश है कि इस किताब को पढ़ें ताकि रमेश जी की काविश कामयाब हो सके।

-मनोज कुमार मित्तल 'कैफ़' 16-01-2021

11. पवन शर्मा,भादरा,शायर: 🙏🏼

12. मैं भी मनोज जी और साहिल साहब के साथ हूँ। क्योंकि मैं इन दोनों की तरह इस ख़ूबसूरती से रमेश जी का न तो शुक्रिया अदा कर पाऊँगा न ही उनके काम की तारीफ़ इसलिए मैं मनोज जी और साहिल साहब के कमैंट्स को ही अपनी तरफ़ से भी इस्तेमाल कर रहा हूँ और रमेश जी को दिल की गहराइयों से शुक्रिया कहता हूँ जिन्होंने मुझ जैसे नौसिखिए को भी अपनी किताब में जगह दी जिसमें एक से बढ़ कर एक शायरों के क़लाम हैं। मेरी किताब भी मेरे घर पहुँच चुकी है, हालाँकि मैं स्वयं बाहर होने के कारण देख नहीं पाया हूँ लेकिन फ़ोटो देख लीं। इंतज़ार है कि कब घर पहुँच कर पूरी किताब को पढ़ सकूँ।

साथ ही मैं बड़े भाई नीरज गोस्वामी जी का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने इतने बड़े शायरों के साथ मुझे भी अपनी ग़ज़लें भेजने को कहा और रमेश जी से परिचय करवाया।

- सत्य चंदन 16-01-2021

13. बहुत शुक्रगुज़ार हूँ आदरणीय श्री रमेश 'कँवल' का जिन्होंने मुझ नाचीज़ को अपने ज़ेहन में रखा और ये अनमोल किताब भेजी। मेरी एक गुज़ारिश की अपना अकाउंट डिटेल भी साझा करें ताकि मैं इस पे लिखी क़ीमत भेज सकूँ। तहे-दिल से शुक्रिया !

-संजीव प्रभाकर, गाँधीनगर, गुजरात 16-01 -2021

14. मोहतरम जनाब रमेश कँवल जी संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति, '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' आपका ये बेशक़ीमती मुहब्बतों का नज़राना 16, जनवरी, 2021 शनीचर के रोज़ मौसूल हुआ, आप ने ख़ाकसार को दुआयों में याद रखा इस के लिए आपका बहुत बहुत शुक्रिया

हस्बे मामूल आप का काम हमेशा ही लाजवाब होता है ये ख़ूबियाँ ख़ुदा हर किसी को अता नहीं करता।

जितनी बार भी देखा उनको इक नया अंदाज मिला
इतने रंग कहाँ होते हैं एक शख़्स की शख़्सियत में

अदब में इतना काम करना और अपने उस्ताद जनाब हफ़ीज़ बनारसी जी को अदबी दुनिया में ज़िंदा रखना ये आप जैसी मायानाज़ हस्तियाँ ही कर सकती हैं आपकी काविशों को मेरा सलाम है और आपकी इंतज़ामिया कमेटी को नमन और शुभकामनाएँ और दिली मुबारकबाद शुक्रिया।

-ख़ाकसार सागर सियालकोटी लुधियाना 16-01-2021

15. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' सम्पादक-रमेश कँवल जी

ये बेहतरीन मजमूआ, ग़ज़लों का गुलदस्ता इस वक़्त मेरे हाथों में है।

बहुत ख़ूबसूरत कलेवर 342 पेज़, 120 शायरों की ग़ज़लें जिसमें ख़ुश क़िस्मती से मुझ नाचीज़ की ग़ज़लों को भी शामिल किया गया है।

रमेश कँवल साहब का नये साल में ये तोहफ़ा पाकर फूली नहीं समा रही हूँ।

मैं तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ रमेश साहब की।

धीरे धीरे सभी की ग़ज़लों का लुत्फ़ उठाऊँगी।

रमेश कँवल साहब और इसमें शामिल होने वाले सभी शोअरा को तहेदिल से मुबारकबाद देती हूँ।

इतनी ग़ज़लों को संकलित करना उनको जाँचकर शामिल करना आसान काम नहीं था जिसको बख़ूबी अंजाम दिया कँवल साहब ने और उनकी मेहनत के फल का रसास्वादन करने के लिए इस वक़्त मेरे हाथों में पँहुच गयी है।

बहुत बहुत धन्यवाद कँवल साहब ! मैं ममनून हूँ !

-राजेश कुमारी राज, मुंबई 18-01-2021

16. आत्मीय भाई श्री रमेश कँवल जी,

आपकी निःस्वार्थ साहित्य सेवा और समर्पण का प्रामाणिक दस्तावेज

'2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें' अभी ही प्राप्त हुई। मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ, यह बता पाना बहुत कठिन लग रहा है। आप ने जो कर दिखाया है वह अद्भुत है। बहुत बधाइयाँ और साधुवाद देता हूँ। आजकल कौन करता है इतना?

पुस्तक भी देखते ही आँखों में बस जाती है। सुन्दर-दिलकश छपाई, आकर्षक मुखपृष्ठ और त्रुटिरहित मुद्रण, बस सब कुछ वाह-वाह है ।

रमेश कँवल जी ज़िंदाबाद।

-प्रमोद रामावत प्रमोद नीमच 18-01-2021

17. अभी-अभी post box से निकाल कर लाया हूँ। बहुत ही ख़ूबसूरत get up. मज़ा आ गया छपाई की तरतीब भी बहुत क़रीने से की गयी है। बहुत मेहनत की है आपने। बहुत बहुत शुक्रिया। मेरी किताबें भी आप के पास पहुँचने वाली होंगी। मिलने पर इत्तिला' कीजियेगा।

-ज़ाहिद अबरोल ऊना हिमाचल प्रदेश

18. सर ! प्रणाम

'2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' अभी-अभी दस्तयाब हुई। एक नज़र में पुस्तक बहुत ख़ास मालूम पड़ रही है। बंजर होते इस दौर में साहित्य के लिए इस तरह का विशिष्ट कार्य निश्चित रूप से अलग से रेखांकित किये जाने योग्य व स्तुत्य है। पढ़कर तफ़सील से राय दूँगा। बहुत बहुत शुक्रिया।

सादर

-अखिलेश तिवारी जयपुर 20-01-2021

19. Aaj aapki kitaben Mil gai hain. Shukriya.

-Sayeed rahmaani 20-01-2021

20. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' : 21वीं सदी का महत्वपूर्ण ग़ज़ल-संकलन

-डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

आदरणीय श्री रमेश कँवल जी द्वारा संकलित व संपादित ग़ज़ल-संकलन '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' प्राप्त हुआ। 342 पृष्ठीय इस पुस्तक को कँवल जी ने अपने पूज्य माता-पिता जी की पावन स्मृतियों को समर्पित किया है। साथ ही अपने उस्तादे-मोहतरम हफ़ीज़ बनारसी साहब को भी श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं। इसके अलावा 11 पृष्ठों में पुस्तक में सम्मिलित 124 रचनाकारों के रंगीन चित्र क़ीमती आर्ट पेपर पर दिए गये हैं।

पुस्तक में 121 रचनाकारों को दो-दो पृष्ठ दिए गये हैं। प्रारंभिक पृष्ठ पर ग़ज़लकार का सचित्र परिचय और एक ग़ज़ल तथा दूसरे पृष्ठ पर चार ग़ज़लें। इसके अलावा जिन रचनाकारों ने माँ के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए शेर कहे हैं, उनको चार पृष्ठ दिए गये हैं। पिता पर शेर कहने वाले ग़ज़लकारों के लिए दो पृष्ठ और गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने वाले ग़ज़लकारों को एक पृष्ठ दिया गया है।

डा. ब्रह्मजीत गौतम का 'आमुख' और श्री नीरज गोस्वामी की भूमिका प्रशंसनीय है। रमेश कँवल जी की 23 पृष्ठीय समीक्षा स्वयं में अनुपम है। इसमें विभिन्न शायरों के विभिन्न मौज़ूआत पर आधारित शेरों को सम्मिलित किया गया है। 'धरोहर' शीर्षक के अंतर्गत कँवल जी ने अपने गुरुवर मुहम्मद अब्दुल हफ़ीज़ साहब का साहित्यिक परिचय देते हुए चार पृष्ठों में उनकी सात ग़ज़लें सम्मिलित की हैं। 'श्रद्धांजलि' शीर्षक के अंतर्गत दो पृष्ठों में कोरोना से ग्रस्त होने के

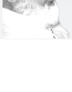

कारण हम सबसे बिछुड़े साहित्यकार कैलाश झा किंकर जी की पाँच ग़ज़लें शामिल की गयी हैं। तत्पश्चात 'सरोकार' शीर्षक के अंतर्गत कँवल जी ने अपने शुरूआती दौर के उस्ताद वफ़ा सिकंदरपुरी साहब की 14 ग़ज़लें चार पृष्ठों में समाहित की हैं। इसके बाद चार पृष्ठों में 2020 के नुमाइंदा सुख़नवरों के पसंदीदा अशआर (दीगर शायरों के) तथा तत्पश्चात तीन पृष्ठों में 2020 के नुमाइंदा सुख़नवरों के पसंदीदा अशआर (दीगर शायरात के) प्रस्तुत किए हैं।

74 पृष्ठों की उक्त सामग्री के पश्चात पुस्तक का मुख्य भाग 'सुख़नवर' शीर्षक से पृष्ठ संख्या 75 से आरंभ होता है, जिसमें 121 रचनाकारों को 241 पृष्ठ देकर यह भाग 316 पृष्ठ पर समाप्त होता है।

इसके पश्चात छः पृष्ठ में शायर और शायरात की विवरणी दी गयी है, जो राज्यवार और शहरवार है। इसके बाद पाँच पृष्ठ में रचनाकारों की शैक्षिक योग्यता का विवरण है, जबकि एक पृष्ठ में रचनाकारों की डिग्रियों का विवरण है। इसमें दर्शाया गया है कि कोई डिग्री धारण करने वाले कितने रचनाकार हैं। अगले पृष्ठ पर पुस्तक में शामिल कुल 21 महिला रचनाकारों के नाम हैं। इसके अलावा छः पृष्ठ में सभी रचनाकारों की जन्मतिथि और वर्ष का उल्लेख तिथिवार और माहवार किया गया है। एक पृष्ठ में यह विवरण दिया गया है कि किस दशक में कितने शायर और शायरात ने जन्म लिया है। तत्पश्चात तीन पृष्ठ में '2020 के नुमाइंदा सुख़नवरों के नुमाइंदा अशआर' शीर्षक से विभिन्न रचनकारों का एक-एक शेर दिया गया है। अंत में 'हार्दिक आभार संसूचन' शीर्षक के अंतर्गत पृष्ठ संख्या 340 से 342 तक समस्त रचनाकारों का आभार व्यक्त किया गया है। इस प्रकार 342 पृष्ठीय यह ग्रंथ मुकम्मल होता है। 'ऐनीबुक' द्वारा प्रकाशित इस ग्रंथ में सिद्धेश्वर जी द्वारा तैयार किया गया मुखपृष्ठ बहुत आकर्षक और सारगर्भित है।

मैं आश्चर्य चकित हूँ कि 67 वर्षीय रमेश कँवल जी ने हर दृष्टि से ग्रंथ को उपयोगी बनाया है। सभी रचनाकारों को वर्णानुक्रम देना और उनके परिचय को गहराई से पढ़कर प्रत्येक पहलू पर विचार करना, फिर अलग स्वरूप में उसको लेकर आना बड़े परिश्रम का कार्य है। यह ग्रंथ निश्चित रूप से ग़ज़ल के शोधार्थियों के लिए तो उपयोगी है ही, इसका पैटर्न भी उन लोगों के लिए उपयोगी है जो विभिन्न विधाओं में पुस्तकों का संपादन कर रहे हैं। इस ग्रंथ ने यह बता दिया है कि संपादन रचनाओं का मात्र संकलन नहीं है।

आज मैं देखता हूँ कि विभिन्न तथाकथित संपादक और प्रकाशक नये रचनाकारों की प्रकाशन-लालसा का लाभ उठाकर दो या तीन पृष्ठ पुस्तक में देने के लिए हज़ारों की धनराशि वसूल लेते हैं। यहाँ रमेश कँवल जी ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने अपनी जेब से धन भी ख़र्च किया और असीम परिश्रम भी किया। साथ ही सभी रचनाकारों को पंजीकृत डाक से पुस्तक भी प्रेषित की। उन्होंने साहित्य के प्रति अपना समर्पण भी सिद्ध कर दिया। मैं उनके अथक परिश्रम और साहित्यिक समर्पण को नमन करता हूँ तथा मुझ नाचीज़ को ग्रंथ में स्थान देने के लिए उन्हें हृदय से धन्यवाद भी देता हूँ और आभार भी व्यक्त करता हूँ।

-डॉ.कृष्ण कुमार नाज़, मुरादाबाद 21-01-2021

21 इस पोस्ट पर सिद्धेश्वर जी की प्रतिक्रिया ----

संक्षिप्त में, एक-एक पहलू का परिचय देना, सब के लिए संभव नहीं !

हमारी हार्दिक बधाइयाँ स्वीकार कीजिए!!

बहुत सारे लोग तो चित्रकार को हाशिये पर रख देते हैं, लेकिन आपने हमें भी बहुत ही शिद्दत से याद किया, इसके लिए पुनः आपको धन्यवाद।

और रमेश कँवल तो धन्यवाद के पात्र हैं ही। उनके प्रति हार्दिक आभार, इसलिए भी कि उन्होंने हमारी कलाकृति को अपने आवरण पृष्ठ पर स्थान दिया। वे हमारी कलाकृति के प्रशंसक रहे हैं, इसलिए भी मैंने उन्हें सहयोग देना अपना धर्म समझा।

-सिद्धेश्वर

22. सिद्धेश्वर जी के पोस्ट पर डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़' की प्रतिक्रियाँ

भाई साहब सिद्धेश्वर जी, किसी पुस्तक का अवलोकन करते समय सबसे पहले उसका मुखपृष्ठ आता है और मुखपृष्ठ से जुड़ा होता है चित्रकार का नाम। चित्रकार सिर्फ़ चित्रकार नहीं, बल्कि वह चरित्रकार भी होता है और भावी पीढ़ी का निर्माण करता है। इस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर आपका चित्र सजीव, सारगर्भित और सकारात्मक है। आपको एक बार फिर हृदय से बधाइयाँ और शुभकामनाएँ। माँ सरस्वती आपकी इस प्रतिभा को और उच्चस्तरीय करें, मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ

- डॉ.कृष्ण कुमार नाज़

23. '2020की नुमाइंदा ग़ज़लें': एक सुंदर सृजन

342 पृष्ठों की पुस्तक को 121 सुख़नवरों की रचनाओं से सजा-धजाकर प्रस्तुत किया गया है। सुख़नवरों की रंगीन तस्वीरों से इसकी ख़ूबसूरती में चार चाँद लग गये हैं । इसे देखकर ऐसा लगता है कि इस पर काफ़ी मेहनत किया गया है। रमेश 'कँवल' जी ने बड़ी लगन से इसे तराशा है। किसी कलाकार की ही ऐसी कृति हो सकती है।

देश के बड़े-बड़े शायरों की चुनिन्दा ग़ज़लों को एकत्रित करना और फिर इन्हें इस तरह सजा देना कि किसी की भावना आहत न हो; यह आसान काम नहीं था, पर कँवल जी ने किया। फिर इसे कलाकारों के पते पर प्रेषित करना : इनके हृदय की विशालता का परिचायक है। अपने प्रशासनिक सेवा काल में भी इन्होंने बख़ूबी धैर्य एवं अनुशासन का परिचय दिया था। 120 ग़ज़लकार, प्रत्येक की 5 ग़ज़लें अर्थात कुल 600 ग़ज़लें, प्रत्येक के जन्म दिन की जानकारी, गुरू ,माता पिता पर प्रत्येक के चन्द अशआर -- यह सब आसान न था पर कँवल जी ने किया। फिर सिद्धेशवर जी का कभर फोटो भी बड़ा जीवन्त है। माँ बाप के प्रति समर्पण एवं गुरू के प्रति श्रद्धा बरबस ही इनके प्रति आदर की भावना उत्पन्न करती है। निष्पक्ष भाव से आकलन करना इनकी ख़ासियत है

इन्होंने यह पुस्तक भेंट स्वरूप देते हुए कहा था - यह एक ऐतिहासिक कृति है। मैं पढ़ती गयी, पढ़ती गयी और डूबती गयी। यह ऐतिहासिक तो है ही, दिल पर भी अमिट छाप छोड़ती है। नववर्ष में साहित्य जगत को दिया गया एक नायाब तोहफ़ा है।

ढेर सारी शुभकामनाएँ

-डॉ.सुधा सिन्हा 'सावी' 22-01-2021

24 ग़ज़ल हर दौर में पाठकों की पहली पसंद रही है। लगातार लोकप्रिय हो रही इस विधा के कारण ही 21वीं सदी को हिंदी ग़ज़ल का स्वर्ण युग कहा जाता है। सद्यः प्रकाशित '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' आदरणीय रमेश कँवल जी द्वारा संकलित और सम्पादित है। 'एनिबुक' द्वारा प्रकाशित इस ग़ज़ल-ग्रंथ का प्रथम आकर्षण आदरणीय सिद्धेश्वर जी के कूचियों की कारीगरी है जो स्पंदित करती हैं। देश के ख्यातिलब्ध ग़ज़लकारों के बीच अपनी ग़ज़लों को पाकर मैं

गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ इसके लिए आदरणीय संपादक जी का हृदय तल से आभार। लगभग तमाम हिंदी भाषी प्रदेशों के ग़ज़लकारों ने 2020 में घटित होने वाली लगभग तमाम समस्याओं और उपलब्धियों पर बड़ी बारीकी से अपनी क़लम चलाई है एवं ग़ज़लों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान किया है। एक साथ कई पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करते हुए संग्रह के रचनाकारों ने जन-सरोकारों से पूर्ण ग़ज़लें कही हैं। 342 पृष्ठों से लैस यह संग्रह इस सदी का मुकम्मल दस्तावेज़ है। आनेवाली पीढ़ी के लिए यह संग्रह किसी 'वर्कशॉप' की मानिंद है। भरोसा है कि यह संग्रह रचनात्मक लेखन के साथ-साथ शैक्षणिक क्षेत्र में भी मील का पत्थर साबित होगा। नये तकनीक एवं साज-सज्जा से पूर्ण यह संग्रह संपादक जी के कठिन श्रम, श्रद्धा एवं समर्पण का प्रतिफल है इसके लिए उनकी साधना को प्रणाम। अपने काल को समेटे हुए यह संग्रह कालातीत हो इसकी शुभकामनाएँ।

-पंकज कर्ण 23-01-2021

25. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' संकलन प्राप्त हुआ।

पहली नज़र में ही यह संग्रह लाजवाब और बेमिसाल साबित हुआ है। एतदर्थ संग्रह के संपादक भाई रमेश कँवल जी, एनीबुक प्रकाशन के अग्रवाल जी, चित्ताकर्षक आमुख के लिए भाई सिद्धेश्वर जी को व संग्रह में शामिल सभी सुख़नवरों को हार्दिक बधाई।

-रवि खंडेलवाल

26. आज '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' किताब मिली। ख़ूबसूरत कवर में पैक की गयीं 2020 की बेहतरीन ग़ज़लें पढ़ने को मिली इसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ आदरणीय रमेश कँवल जी की।

एनीबुक का काम बहुत अच्छा है।

मेरी किताब 'कौन हो तुम' इन्हीं के प्रकाशन में छपी है। मुझे इस संकलन में शामिल करने के लिए एक बार फिर बहुत बहुत धन्यवाद आदरणीय भाई रमेश कँवल जी, नीरज गोस्वामी जी

-निर्मल आर्य 28-01-2021

27 . '2020की नुमाइंदा ग़ज़लें' वाली यह ख़ूबसूरत किताब जैसे ही हाथ में आयी मन प्रसन्न हो गया। जैसे लगा कि भावनाओं का सागर मेरे तलहथियों पर सिमटकर आ गया। पूरी किताब पढ़ डाली, एक से बढ़कर एक रचनाकार और उनके अशआर, आँखों से होते हुए ज़ेहन में उतरते चले गये। इस साहित्यिक यज्ञ के लिए मैं देश के लब्धप्रतिष्ठ शायर आदरणीय रमेश 'कँवल' सर का बहुत-बहुत आभार प्रकट करती हूँ कि आप एक वट-वृक्ष की भाँति भारत के विभिन्न प्रदेशों के रचनाकारों को इस किताब की छत्रछाया में लाकर स्थापित कर दिये। साथ ही आदरणीय सिद्धेश्वर सर का भी हार्दिक आभार के साथ बधाई देती हूँ कि आप किताब का मुखड़ा रूपी मुख्य पृष्ठ को बहुत ही मन से अपने चित्रकारी के द्वारा नवेली दुल्हन का रूप देकर निखार दिये हैं। साथ ही एनीबुक को भी हार्दिक बधाई और शुभकामना देती हूँ कि आपने बहुत सलीक़े से किताब को खिलते हुए फूलों से मुअत्तर कर प्रस्तुत किया है। पुस्तक में शामिल सभी क़लमकारों को सादर प्रणाम।

- डॉ.नूतन सिंह 28-01-2021

28. मोहतरम रमेश कँवल साहब। आदाब।

आपकी दिलो-जान से की गयी काविश का नतीजा, ‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ मिली। उर्दू अदब की जितनी ख़िदमात आप कर रहे हैं वो क़ाबिले-तारीफ़ है। आपको शत् शत् नमन। उर्दू अदब सदा-सदा इसके लिए आपका क़र्ज़दार रहेगा। बहुत ही मेंयारी और ख़ूबसूरत तोहफ़े के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

-डॉ. प्रेम भण्डारी 30-01-2021

29. 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें
संकलन, सम्पादन एवं प्रस्तुति
श्री रमेश ‘कँवल’
पब्लिशर- एनीबुक
मूल्य- ₹499
क़ीमत- अनमोल

किताब हाथ में लेते साथ ही सुखद अनुभूति हुई, इसलिए नहीं कि 124 सुख़नवर में शुचि ‘भवि’ की पाँच ग़ज़लों को जगह मिली है, बल्कि इसलिए कि यह पहली किताब है जिसमें जनेऊ के धागे में इंगित तीनों ऋण को कुछ कम करने की कोशिश आदरणीय रमेश ‘कँवल’ जी ने की है।

माता-पिता और गुरुओं को तो उन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से नमन किया ही है, सरस्वती व लक्ष्मी जी की अपार कृपा जो उन पर है उसे भी मुक्त हृदय और मुक्त हस्त से उन्होंने अदब की सेवा में ख़र्च किया है।

नायाब है यह संकलन। यदि कहूँ कि मेरे पुस्तकालय को इस पुस्तक ने धनी कर दिया है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

हर शेर अपने आप में राजा है , इस किताब का।

कुछ नाम जो फ़ेसबुक पर दिखते हैं, इस किताब में मिले, बड़ा अच्छा लगा उन्हें भी पढ़कर। पूरा भारत 342 पन्नों में सिमट आया है। लगभग हर राज्य के, हर उम्र के शाइर हैं इस मजमूए में।

मेरे लिए इस किताब का मिलना और मेरा भी इन महान विभूतियों के साथ छपना, एक स्वप्न-सा है जिसे श्री रमेश ‘कँवल’ जी ने साकार किया है।

आदरणीय रमेश जी को इस किताब के उत्कृष्ट संकलन व सम्पादन के लिए कोटिशः बधाई।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आप स्वस्थ रहते हुए शताधिक वर्षों तक सुखपूर्वक यूँ ही अदब की ख़िदमत करते रहें

आमीन !

-शुचि ‘भवि’
भिलाई, छत्तीसगढ़
31.01.2021

30. शुचि भवि साहिबा नमस्कार। आपने ‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ पर जो इज़हार-ए-मुहब्बत किया है क़ाबिले-तारीफ़ और क़ाबिले-ग़ौर है। चंद अल्फ़ाज़ में रमेश कँवल जी का

शुक्रिया अदा किया बहुत ख़ूब रमेश कँवल जी की रहनुमाई और मेहनत क़ाबिले-तारीफ़ है। शुक्रिया

-सागर सियालकोटी 31.01.2021

31. रवि खंडेलवाल

रमेश 'कँवल' : 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें - एक_परिचय

मुहब्बतों का शायर 'रमेश कँवल' जी के संपादन में उनकी स्मृतिशेष पूजनीया माँ कमला देवी एवं उनके स्मृति शेष पूज्य पिता श्री हाकिम चन्द प्रसाद जी को समर्पित यह संकलन एनीबुक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित व बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना की दूसरी पेशकश है ।

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के चेयर पर्सन जनाब 'रमेश कँवल' द्वारा व्हाट्सएप पर शायरों के एक समूह का संचालन किया जा रहा है जिसका नाम हर साल बदलता रहता है। यथा - '2019 की ग़ज़लें', '2020 की ग़ज़लें' और अब यह समूह '2021 की ग़ज़लें' नाम से संचालित किया जा रहा है। जैसा कि संकलन के नाम से ही ज़ाहिर है कि संकलन में समाहित अधिकांश ग़ज़लें 2020 के दरम्यान कही गयी हैं।

2020 का पूरा का पूरा साल कोरोना काल में तब्दील हो जाने के कारण बकौल संपादक -

"इसी दौरान ख़याल आया कि क्यों नहीं इस लॉकडाउन पीरियड की ग़ज़लों का संकलन कर बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना, के ज़ेरे-एहतमाम शाया किया जाय। ये किताब जिसमें 14 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों के क़रीब 120 शायरों की लगभग 600 ग़ज़लों को शामिल किया गया है, अपने आप में बेमिसाल है।" संकलन का चित्ताकर्षक आमुख कवि सिद्धेश्वर जी द्वारा तैयार किया गया है। संकलन पहली ही नज़र में देखने पर अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहता और दिल दिमाग़ कह उठता है वाह, लाजवाब, बेमिसाल।

यही कारण है कि किताब को पूरा पढ़े बिना भी नहीं रहा जा सकता। एक से एक उम्दा ग़ज़लों से लबरेज़ यह संकलन सच कहूँ तो ग़ज़लों पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए बहुत ही महत्व का बन पड़ा है।

संकलन की खास बात यह है कि संकलन में शामिल शाइर और शाइरात की संख्या बल को दर्शाते हुए उनके नाम के साथ ग़ज़लकारों की प्रदेशवार व शहरवार विवरणी, शायरों की डिग्रियाँ, सुख़नवरों की शिक्षा की डिग्रियाँ, सुख़नवरों के जन्म दिन, उम्रवार विवरणी, सुख़नवरों के नुमाइंदा अशआर आदि को संकलन में बड़े ही सलीक़े से समायोजित किया गया है यही नहीं इस संकलन में शामिल शाइर और शाइरात द्वारा माँ, पिता और गुरु पर कही गयी ग़ज़लों के अशआर को भी बड़े सम्मान के साथ स्थान प्रदान किया गया है।

हाँ एक अहम बात यह भी कि संकलन में शामिल शाइर और शाइरात के अपने-अपने पसंदीदा शाइरों के शे'रों को उनके नाम के साथ भी इस किताब में शामिल किया गया है।

'धरोहर' शीर्षक के अंतर्गत हफ़ीज़ बनारसी जी के परिचय के साथ उनकी सात ग़ज़लों को भी ससम्मान स्थान प्रदान किया गया है। कोरोना काल का दंश झेल रहे हमारे शाइर भी इसके वज्रपात से बच नहीं सके, उन्हीं में एक शाइर कैलाश झा किंकर जी को उनकी पाँच ग़ज़लें प्रकाशित कर श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गयी है।

रमेश कँवल जी के शुरूआती दौर के पहले उस्ताद शाइर वफ़ा सिकंदरपुरी की चौदह ग़ज़लों को स्थान प्रदान कर उनके प्रति सम्मान और आभार व्यक्त किया गया है।

इस संकलन में संपादक रमेश कँवल जी के सहयोगी रहे नीरज गोस्वामी जी का भी एक

आलेख '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें - यानी हमने तो दिल जला के सरे-आम रख दिया' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

उर्दू के इल्म-ए-अरूज़ से वाक़फ़ियत रखने वाले व हिंदी के छंद शास्त्र पर अपनी पकड़ रखने वाले शायर जनाब ब्रह्मजीत गौतम जी को संकलन के 'आमुख' पर अपने विचार रखने का कार्यभार सौंपा गया जो उन्होंने अपने संक्षिप्त किंतु सारगर्भित आलेख में बख़ूबी निभाया है।

इस संकलन का एक और ख़ूबसूरत पहलू जो मुझसे छूटा जा रहा है वह यह कि इस संकलन में शामिल सभी शाइर और शाइरात के रंगीन चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं।

कुल मिलाकर यह संकलन एक अनूठा, अनुपम, अप्रतिम और संग्रहणीय संकलन है जिसे कि आप अपनी लाइब्रेरी का हिस्सा बना कर ख़ुद को अवश्य ही गौरवान्वित महसूस करना चाहेंगे।

संकलन में संपादक जी द्वारा मेरी भी पाँच ग़ज़लों को स्थान प्रदान किया गया है, जिसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ।

संकलन को यहाँ से प्राप्त किया जा सकता है -
'2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें'
पृष्ठ संख्या - 342
मूल्य - 499/-
प्रकाशक - एनीबुक Anybook
ई-मेल :- contactanybook@gmail.com
Mob. 9971698930
एवं
संपादक - श्री रमेश कँवल
ई-मेल - rameshkanwal78@gmail.com
bazmehafeezbanarasipatna@gmail.com
Mob. +91 70915 96715

-रवि खंडेलवाल, इंदौर के फ़ेसबुक वाल से साभार

32. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' ख़ूबबसूरत गेटअप, बेहतरीन काग़ज़ और सुन्दर प्रिन्टिंग का लिबास पहने हुए मेरे सामने है। शायरों का कलाम एकत्र करना,उसे सलीक़े से एक माला में मोतियों की तरह पिरोना, कोई आसान काम नहीं था। माता, पिता और गुरू के प्रति आदर भाव, आप की शख़्सियत का परिचय देता है। कुल मिला कर एक-एक वरक़ से आपकी मेहनत और साहित्य के लिए प्रेम झलकता है। मैं आपके जज़्बे,आपकी कोशिश और साहित्य प्रेम को सलाम करता हूँ।

ग़ज़लों की ऐसी क़ीमती दस्तावेज़ में मेरी ग़ज़ले भी जगह पा सकीं यह मेरे लिए ख़ुशी की बात है।

शुक्रिया

-डॉ. मुजाहिद 'फ़राज़' 4-02-2021

33. @रमेश कँवल साहब का मनःपूर्वक आभार,
इस ख़ूबसूरत किताब में मेरी ग़ज़लियात को जगह देने के लिए।

उन्होंने इस किताब को लोगों तक पहुँचाने के लिए क्या क्या प्रयास किए होंगे, किन कठिनाइयों का सामना किया होगा, इसका तो अनुमान लगाना भी शायद मुश्किल हो। यह किताब उनका हम सब पर क़र्ज़ है।

मैं Neeraj Goswamy जी का भी हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मुझे रमेश कँवल जी से परिचित कराया।

Anybook publications ने क्या ही ख़ूबसूरत छपाई की है इस किताब की! Parag Agrawal Anybook जी की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। मेरी ग़ज़लियात इस में देख कर ख़ुशी तो हुई ही मगर मेरे सारे पसंदीदा शाइरीन और शाइरात की ग़ज़लियात देखकर ख़ुशी कईं गुना बढ़ गयी। मेरे उन सारे मित्रों को हार्दिक बधाई जिनकी नुमाइंदा ग़ज़लियात इस किताब में छपी है।

-नवीन जोशी 'नवा' 05-02-2021

34. "500 रूपये में चार ग़ज़लें छपवाएँ" - टाइप ग़ज़ल संग्रह नहीं है यह। साल में अनेक ऐसे अवसर आप के समक्ष भी आते होंगे जब लोग आप को अप्रोच कर के कहते हों कि भाई हम एक ग़ज़ल संग्रह निकालने जा रहे हैं। आप अपनी चार ग़ज़लें, फ़ोटोग्राफ़, परिचय और पाँच सौ रूपये भेज दें। भाई रमेश कँवल जी ने ऐसा नहीं किया। रमेश जी ने बाक़ायदा शायरों का इंतिख़ाब किया, उनकी ग़ज़लों को पढ़ा, पढ़वाया और तब किताब में जगह दी। किसी से पैसा नहीं लिया बल्कि सभी को फ्री में किताब भेजी। यह संग्रह इसलिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि इस संग्रह में रमेश जी ने अपने कारोबारी अनुभव का भी भरपूर सदुपयोग किया है। इस संग्रह में हमें रमेश जी कभी अनुशासित प्रशासनिक अधिकारी के समान लगते हैं तो कभी सांख्यिकीय विभाग के एक मँझे हुए खिलाड़ी। डेटा अनेलिसिस का अद्भुत नज़ारा पेश किया गया है। इस संग्रह में जिन शायरों का कलाम इंतिख़ाब किया गया है उनसे यह भी पूछा गया है कि आप अपनी पसंद के दीगर शायर / शायरा का एक-एक शेर भी पेश कीजिये। माँ-बेटी वाले शेरों का संग्रहण तो पुरानी रिवायत का हिस्सा है मगर इस संकलन में गुरू/उस्ताद की शान वाले अशआर शामिल करना विशिष्ट लगा। यह एक अनूठी पहल प्रतीत हुई। इस पहल से हमें उक्त शायर/शायरा के व्यक्तिगत चरित्र एवं अध्ययन का भी एक छोटा-सा ही सही मगर परिचय प्राप्त होता है। जिन-जिन लोगों ने इस संग्रह में अपना योगदान दिया है रमेश जी ने उन सभी साथियों का भी आभार ज्ञापन किया है। नये-पुराने छोटे-बड़े सभी रचनाधर्मियों को यथोचित सम्मान के साथ प्रस्तुत करना भी इस संग्रह की विशेषता है। रमेश जी इस कार्य के लिए अनेकानेक बधाई के पात्र हैं। माँ शारदे उन्हें ऐसे ही महत्कर्मों के लिए भविष्य में भी प्रेरित करती रहें। हमारा फ़र्ज़ बनता है कि जिस व्यक्ति ने हम सभी के कलाम को विस्तार दिया, हम भी उस के चन्द मिसरे अवश्य कोट करें :-

पुण्य-कर्मों के फल थे बाबूजी
सोच ऊँची, सरल थे बाबूजी

मुश्किलों में भी मुसकुराते थे
मन से कितने प्रबल थे बाबूजी

उनके जीवन के लक्ष्य थे हम सब
झोंपड़ी में महल थे बाबूजी

संग्रह का नाम - ‘2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें’
संकलनकर्ता - रमेश कँवल
मोबाइल नम्बर - 7091596715
प्रकाशक - Anybook - मोबाइल - 9971698930

आदरणीय विज्ञान व्रत जी द्वारा प्रयुक्त किए जाते रहे जुमले के साथ अपनी बात को विराम देता हूँ । शुभास्ते सन्तु पंथान:।

सादर सप्रेम जय श्री कृष्ण

-नवीन सी. चतुर्वेदी
9967024593
06-02 2021

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी के चेयर पर्सन और जाने माने अदीब और अदब नवाज़ जनाब ‘रमेशकँवल’ के संपादन में प्रकाशित किताब ‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ मिली।

वर्ष 2020 के कोरोना काल में जब सदी की सबसे बड़ी वबा से ख़ौफ़ज़दा लोग अपने-अपने घरों में क़ैद हो गये तो ऐसे में क़लमकारों की क़लम की रफ़्तार तेज़ हो गयी । ‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ इस दौर के चश्मदीद देश भर के नामचीन शाइरों के फ़िक्रो-फ़न का नायाब इज्तिमाई मजमूआ है, जिसमें तमाम नामचीन ग़ज़लकारों की ग़ज़लें शामिल हैं।

क़दीमी, जदीदी और फ़िक्री तीनों तरह के तग़ज़्ज़ुल से लबरेज़ यह किताब न केवल पढ़ने बल्कि ताउम्र सहेजकर रखने के क़ाबिल है।

किताब की रूपरेखा चमत्कृत करती है। उम्दा कवर पेज, साफ़-सुथरा छपाई के साथ सुख़नवरों की रंगीन तस्वीरें, उनके शहर, डिग्रियाँ, शिक्षा -तालिका, जन्मदिन,

महिला ग़ज़लकारों की सूची और सुख़नवरों के नुमाइंदा अशआर के लिए बा-कायदा अलहदा पेजों की जगह मुकम्मल है। मेरी नज़र में इस तरह की यह पहली किताब होगी।

मैं इस किताब पर तब्सिरा करने की जुरअत नहीं कर सकती, लेकिन इतना ज़रूर कहूँगी कि इस किताब के मंजरे-आम पर आने से अदब के फ़लक पर एक ख़ूबसूरत और नायाब बाब जुड़ गया है।

मैं इस किताब के संपादक जनाब रमेश कँवल साहब को किताब की कामयाबी की बहुत -बहुत मुबारकबाद देती हूँ और साथ ही तहे-दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ कि देश भर के तमाम नामचीन शाइरों के बीच उन्होंने मुझ जैसे नवोदित ग़ज़ल-गो को इसमें शामिल किया। मेरी दुआ है कि वो अपने अदबी सफ़र में यूँ ही गामज़न रहें और अपने हुनरो-इल्म से अदब के आसमान में ज़िया बिखेरते रहें। उनकी आने वाली किताब के लिए अपनी तमामतर दुआओं के साथ ..

-ज्योति मिश्रा, पटना
बिहार

इस किताब का समापन एक भावपूर्ण गीत से कर रहा हूँ
गीत डॉ. यास्मीन मूमल

मैंने तुमसे प्यार किया है, सब कुछ तुम पर वार दिया है।
सच तो यह है तुमने मुझको प्यार भरा संसार दिया है॥

तुमने छुआ तभी यह जाना
क्या होती है छुअन प्यार की
तुम क्या जानो कैसे काटीं
मैंने घड़ियाँ इंतजाज़ार की।

तुमने मेरे कच्चे मन के सपनों को आकार दिया है॥
सच तो यह है तुमने मुझको प्यार भरा संसार दिया है॥

तुमसे सीखा है जीवन की
बग़िया के फूलों ने खिलना
तुमसे सीखा है नयनों में
बस कर के सपनों में मिलना।

तुमने मुझको आतुर मन से बाहों का गलहार दिया है।
सच तो यह है तुमने मुझको प्यार भरा संसार दिया है॥

तुम प्यासे मन का गंगाजल
बन जाओ तो फिर क्या कहने
गीतों में स्वर सरगम पायल
बन जाओ तो फिर क्या कहने।

आभारी हूँ इस जीवन में कैसा स्नेह अपार दिया है ।
सच तो यह है तुमने मुझको प्यार भरा संसार दिया है॥

-डॉ.यास्मीन मूमल

शायरों के जन्म दिन

क्र.	**शायर**	**जन्म तिथियाँ**
1.	अकमल नईम सिद्दीक़ी	13 अप्रैल 1974
2.	अनिरुद्ध सिंहा	02 मई 1957
3.	अनिल कुमार सिंह	02 जनवरी 1959
4.	अनुराग ‘सुरुर’ (अनुराग मेहता)	05 जुलाई 1974
5.	अमित ‘अहद’	23 जून 1981
6.	अय्यूब ख़ान बिस्मिल	09 दिसम्बर 1974
7.	अरविंद अज़ान	16 दिसम्बर 1982
8.	अरविन्द असर	10 अगस्त 1970
9.	अरुण कुमार आर्य	16 मई 1955
10.	अशोक अंजुम	15 दिसंबर 1966
11.	अशोक भण्डारी ‘नादिर’	24 अप्रैल 1947
12.	असग़र शमीम	01 नवम्बर 1975
13.	असीम आमगाँवी	14 नवंबर 1969
14.	आनन्द पाण्डेय तन्हा	31 अगस्त 1957
15.	आराधना प्रसाद	23 मई 1974
16.	इक़बाल दानिश	15 अक्टूबर 1972
17.	एकराम हुसैन शाद	05 जनवरी 1975
18.	एजाज़ उल हक़ ‘शिहाब’	19 सितम्बर 1987
19.	‘ऐनुल’ बरौलवी	04 जुलाई 1957
20.	ओंकार सिंह विवेक	01 जून 1965
21.	ओम प्रकाश नदीम	26 नवम्बर 1956
22.	ओसैद रहमान	14 अक्टूबर 1995
23.	कमल कटारिया ‘करन’	28 सितम्बर 1984
24.	कालजयी घनश्याम (घनश्याम राम)	01 जुलाई 1964
25.	काशिफ़ अहसन	01 फ़रवरी 1986
26.	कुमार पंकजेश	19 सितम्बर 1962
27.	कुमारी स्मृति कुमकुम	29 मार्च
28.	के. पी. अनमोल	19 सितंबर 1989
29.	केशव शरण	23 अगस्त 1960
30.	कैलाश मनहर (कैलाश चन्द्र शर्मा)	02 अप्रैल 1954
31.	चैतन्य चंदन	28 फ़रवरी 1980
32.	ज़फ़र महमूद	24 जून 1964
33.	ज़ाहिद अबरोल (विजय कुमार अबरोल)	20 दिसम्बर 1950
34.	डॉ. अनिता सिंह	16 सितम्बर 1971
35.	डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव	4 अक्टूबर 1962
36.	डॉ. अब्दुल क़ादिर	01 सितम्बर 1978

क्र.	शायर	जन्म तिथियाँ
37.	डॉ. आदर्श मिश्रा 'साहिबा'	13 फ़रवरी
38.	डॉ. आरती कुमारी	25 मार्च 1977
39.	डॉ. कविता विकास	28 फ़रवरी
40.	डा. कृष्ण कुमार 'नाज़'	10 जनवरी 1961
41.	डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति	18 जून 1959
42.	डॉ. कृष्ण कुमार 'बेदिल'	18 जुलाई 1943
43.	डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'	05 दिसम्बर 1954
44.	डॉ. नूतन सिंह	15 दिसम्बर 1969
45.	डॉ.ब्रह्मजीत गौतम	28 अक्टूबर 1940
46.	डॉ भावना	20 फ़रवरी 1976
47.	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	22 जुलाई 1940
48.	डॉ. यासमीन मूमल	05 मार्च 1985
49.	डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'	17 अप्रैल 1949
50.	डॉ. श्याम सखा 'श्याम'	28अगस्त 1948
51.	डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ	5 जनवरी 1978
52.	डॉ. सीमा विजयवर्गीय	03 नवम्बर
53.	डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा	16 फ़रवरी
54.	तारा चंद नादान	29 अक्टूबर 1962
55.	'दिल' सीकरी ओमप्रकाश खींची	27 फ़रवरी 1955
56.	दिनेश तपन	31 जनवरी 1940
57.	दीपक पुरोहित	04 जनवरी 1954
58.	देव वंश दुबे	11 फ़रवरी 1961
59.	देवेन्द्र गौतम	08 जनवरी 1955
60.	धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'	07 जुलाई 1964
61.	नवीन सी. चतुर्वेदी	27 अक्टूबर 1968
62.	नसर आलम नसर	06 जून 1975
63.	निर्मला कपिला	25 नवम्बर 1949
64.	निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'	11 जनवरी 1970
65.	नीरज गोस्वामी	14 अगस्त 1950
66.	प्यासा अंजुम (विजय उप्पल)	29 सितम्बर 1949
67.	पूनम सिन्हा श्रेयसी	05 सितम्बर
68.	प्रणय कुमार सिन्हा	10 जुलाई 1954
69.	प्रमोद रामावत प्रमोद	05 मई 1949
70.	प्रेमकिरण	15 जनवरी 1953

क्र.	शायर	जन्म तिथियाँ
71.	प्रेम पहाड़पुरी (प्रेम कुमार शर्मा)	15 दिसम्बर 1952
72.	प्रेम रंजन 'अनिमेष'	18 अप्रैल 1968
73.	फ़रीदा अंजुम	25 मई 1995
74.	मंसूर उस्मानी	01 मार्च 1954
75.	मीना भट्ट	30 अप्रैल 1953
76.	रघुविंद्र यादव	27 सितम्बर 1966
77.	रवि खण्डेलवाल	14 सितम्बर 1951 अनंत चतुर्दशी
78.	रमेश 'कँवल'	25 अगस्त 1953
79.	राजकान्ता राज	8 जून 1968
80.	राजेन्द्र तिवारी	02 मार्च, 1960
81.	राजेश कुमारी राज	10 जून 1956
82.	राजेश जैन 'राही'	17 नवंबर 1968
83.	लोकेश कुमार सिंह साहिल	6 अप्रैल 1957
84.	विजय वाजिद	14 सितम्बर,1968
85.	विज्ञान व्रत	17 अगस्त 1943
86.	शकील सासरामी	05 जुलाई 1966
87.	शरद रंजन 'शरद'	19 अप्रैल 1958
88.	शुचि 'भवि'	24 नवम्बर 1971
89.	ई० शुभचन्द्र सिन्हा	27 मार्च 1950
90.	संजीव प्रभाकर	03 फ़रवरी 1980
91.	सईद रहमानी	25 जून 1936
92.	सतीश शुक्ला 'रक़ीब'	04 अप्रैल 1961
93.	सागर सियालकोटी	18 जनवरी 1952
94.	साहिल मिश्र	4 फ़रवरी 1981
95.	सिद्धेश्वर	20 जून 1959
96.	सुधीर कुमार प्रोग्रामर	1 अक्टूबर 1961
97.	सुनील कुमार	21 जनवरी 1964
98.	सुभाष पाठक 'ज़िया'	15 सितम्बर 1990
99.	सुरेंद्र नाज़ बदायूनी	15 फ़रवरी 1974
100.	सोनिया वर्मा	20 अक्टूबर
101.	हरिवंश प्रभात	05 नवम्बर 1949
102.	हिमकर श्याम	16 जनवरी 1973
103.	ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	9 फ़रवरी 1979

शायरों के शुभ विवाह की तिथियाँ

क्र.	विवाह तिथियाँ	शायर /पत्नी-पति	
1.	25 जनवरी 1996	निरूपमा चतुर्वेदी 'रूपम'	रोहित चतुर्वेदी
2.	27 जनवरी,1993	धर्मेन्द्र गुप्त साहिल	स्मृति गुप्ता
3.	27 जनवरी 1995	रघुविंद्र यादव	शील यादव
4.	11 फ़रवरी, 2008	अशोक अंजुम	भारती शर्मा
5.	20 फ़रवरी 1977	डॉ. आदर्श मिश्र साहिबा	स्व.बी.के.मिश्र
6.	21 फ़रवरी 2007	अमित 'अहद'	आरती
7.	22 फ़रवरी,1976	प्रेम पहाड़पुरी (प्रेम कुमार शर्मा)	श्रीमती शारदा शर्मा
8.	22 फ़रवरी, 1981	दीपक पुरोहित	कल्पना पुरोहित
9.	27 फ़रवरी, 2001	डॉ. भावना	डॉ अनिल कुमार
10.	6 मार्च 1992	सिद्धेश्वर	वीणा
11.	8 मार्च 1994	ओंकार सिंह विवेक	रेखा सैनी
12.	09 मार्च 2003	ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	अभिलाषा तिवारी
13.	10 मार्च 1992	शरद रंजन 'शरद'	सुधा सिंह
14.	13 मार्च 1995	शकील सासरामी	नसरीन बानो
15.	16 मार्च 1984	रवि खंडेलवाल	श्यामा खण्डेलवाल
16.	8 अप्रैल 2015	के.पी.अनमोल	श्रीमती अनामिका
17.	24 अप्रैल 2005	सरफ़राज़ हुसैन फ़राज़	रिज़वाना नर्गिस
18.	25 अप्रैल 1978	डॉ. श्याम सखा श्याम	प्रमोद मुद्गल
19.	26 अप्रैल,2001	अनुराग सुरूर	सोनिया मेहता
20.	27 अप्रैल 1977	अनिरुद्ध सिन्हा	प्रतिमा सिन्हा
21.	30 अप्रैल 1968	विज्ञान व्रत	अशोक विज्ञान
22.	01 मई 1993	पूनम सिन्हा श्रेयसी	नरेन्द्र कुमार सिन्हा
23.	03 मई 1977	राजेश कुमारी राज	वीरेंद्र सिंह
24.	04 मई 1990	नवीन सी चतुर्वेदी	रेखा नवीन चतुर्वेदी
25.	06 मई 1987	राजेन्द्र तिवारी	श्रीमती स्वर्णलता
26.	07 मई 1982	अनिल कुमार सिंह	इंदिरा सिंह
27.	07 मई 2009	अरविन्द अज़ान	अंकिता शर्मा
28.	12 मई 1986	डॉ. कृष्ण कुमार नाज़	अनिता वर्मा
29.	18 मई 1992	असीम आमगाँवी	रेखा धर्मेन्द्र भालेकर
30.	18 मई 1997	डॉ. आरती कुमारी	माधवेन्द्र प्रसाद
31.	20 मई 1977	प्रणय कुमार सिन्हा	माया सिन्हा
32.	24 मई 2001	प्रेम रंजन 'अनिमेष'	श्वेता
33.	28 मई 1973	हरिवंश प्रभात	शोभा प्रभात
34.	28 मई 1979	अरुण कुमार आर्य	वीणा आर्य
35.	29 मई 1963	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	डॉ. सुशीला राव
36.	04 जून 1985	देव वंश दुबे	रेणु दुबे

क्र.	विवाह तिथियाँ	शायर /पत्नी-पति	
37.	04 जून 1987	डॉ. अनिता सिंह	अनिल कुमार सिंह
38.	11 जून 1983	ऐनुल बरौलवी	रज़िया ख़ातून
39.	12 जून 1992	एकराम हुसैन शाद	किश्वर जहाँ
40.	17 जून 1994	सतीश शुक्ला 'रक़ीब'	अनुराधा
41.	18 जून 1982	कालजयी घनश्याम	निर्मला देवी
42.	19 जून 1974	प्यासा अंजुम विजय उप्पल	पुष्पा उप्पल
43.	22 जून 2004	अरविन्द असर	श्वेता सोनकर
44.	22 जून 1978	रमेश कँवल	मंजु प्रसाद
45.	23 जून 1980	मीना भट्ट	पुरुषोत्तम भट्ट
46.	23 जून 1987	डॉ. कविता विकास	विकास कुमार
47.	23 जून 1987	राज कांता राज	ई.अनिल कुमार
48.	24 जून 1985	डॉ. नूतन सिंह	ई.संजय कुमार
49.	25 जून 1975	प्रेम किरण	उषा वर्मा
50.	26 जून 1964	डॉ. कृष्ण कुमार बेदिल	उर्मिला रस्तोगी
51.	28 जून 1979	ओमप्रकाश नदीम	सुमन श्रीवास्तव
52.	28 जून 2012	साहिल मिश्र	अनामिका मिश्रा
53.	03 जुलाई 1972	'दिल' सीकरी ओमप्रकाश खींची	चन्द्रकाँता खींची चाँदसा
54.	03 जुलाई 1991	कुमार पंकजेश	हेमलता
55.	06 जुलाई 1964	डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	स्मृतिशेष रमा गौतम
56.	06 जुलाई 1988	सुनील कुमार	श्रीमती नीलम कुमारी
57.	10 जुलाई 1994	इक़बाल दानिश	इशरत परवीन
58.	12 जुलाई 2013	चैतन्य चन्दन	अनुपा केसरी
59.	16 जुलाई 1991	राजेश जैन 'राही'	अनीता जैन
60.	16 जुलाई 2007	संजीव प्रभाकर	श्रीमती हेतल खख्खर प्रभाकर
61.	17 जुलाई 1981	ई०शुभचन्द्र सिन्हा	डॉ. रेणु सिन्हा
62.	17 जुलाई 2013	करण कटारिया	रूपाली
63.	30 अगस्त 2003	असग़र शमीम	अतिया फ़िरोज़
64.	18 सितम्बर 2010	डॉ. अब्दुल क़ादिर	सना अफ़ज़ल
65.	10 अक्टूबर 2011	अयूब ख़ान बिस्मिल	रूबी खान
66.	11 अक्टूबर 1983	ज़ाहिद अबरोल	रीटा अबरोल
67.	21 अक्टूबर 1992	डॉ. शमा नास्मीन नाज़ाँ	असरार आलम सैफ़ी
68.	28 अक्टूबर 2002	अकमल नईम सिद्दिक़ी	शाईस्ता
69.	30 अक्टूबर 1972	निर्मला कपिला	श्री मनमोहन कपिला
70.	31 अक्टूबर 1996	शुचि 'भवि'	श्री पवन कुमार
71.	06 नवम्बर 2012	काशिफ़ अहसन	फौज़िया ज़माँ
72.	09 नवम्बर 1973	डॉ. विनोद प्रकाश गुप्त 'शलभ'	शशि किरण
73.	11 नवम्बर 1973	अशोक भण्डारी नादिर	संगीता भण्डारी
74.	22 नवम्बर 1971	डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा	प्रो.(डॉ.) विपिन बिहारी स्वरूप

क्र.	विवाह तिथियाँ	शायर /पत्नी-पति	
75.	23 नवम्बर 1987	तारा चन्द नादान	सरला शर्मा
76.	24 नवम्बर 1988	लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'	मीना सिंह
77.	30 नवम्बर 1995	आराधना प्रसाद	संजय प्रसाद
78.	05 दिसम्बर 2012	सुभाष पाठक 'ज़िया'	श्रीमती नीलम पाठक
79.	08 दिसम्बर 1984	आनंद पाण्डेय 'तन्हा'	सविता पाण्डेय
80.	11 दिसम्बर 1975	कैलाश मनहर	निर्मला शर्मा
81.	13 दिसम्बर 1975	नीरज गोस्वामी	अरुणा गोस्वामी
82.	26 दिसम्बर 1984	डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति	दीपा प्रजापति
83.	अविवाहित	ओसैद रहमान	
84.	अविवाहित	सोनिया वर्मा	
85.	अविवाहित	एजाज़ उल हक़	
86.	अविवाहित	डॉ.यासमीन मूमल	

शायरों के शहर और राज्य

क्र.	शायर का नाम	शहर	राज्य
1	अकमल नईम सिद्दीक़ी	जोधपुर	राजस्थान
2	अनिरुद्ध सिन्हा	मुंगेर	बिहार
3	अनिल कुमार सिंह	सुपौल	बिहार
4	अनुराग सुरूर	मुरादाबाद	यू.पी.
5	अमित अहद	सहारनपुर	उत्तर प्रदेश
6	अय्यूब ख़ान बिस्मिल	जयपुर	राजस्थान
7	अरविन्द अज़ान	जयपुर	राजस्थान
8	अरविन्द असर	दिल्ली	
9	अरुण कुमार आर्य	पटना	बिहार
10	अशोक अंजुम	अलीगढ़	उत्तर प्रदेश
11	अशोक भण्डारी नादिर	पंचकुला	हरियाणा
12	असग़र शमीम	कोलकाता	प.बंगाल
13	असीम आमगाँवी	आमगाँव	महाराष्ट्र
14	आनंद पाण्डेय तन्हा	कानपुर	उत्तर प्रदेश
15	आराधना प्रसाद	पटना	बिहार
16	एक़बाल दानिश	रोहतास	बिहार
17	एकराम हुसैन शाद	भागलपुर	बिहार
18	एजाज़ उल हक़ शिहाब	जयपुर	राजस्थान
19	ऐनुल बरौलवी	छपरा	बिहार
20	ओंकार सिंह विवेक	रामपुर	उत्तर प्रदेश
21	ओम प्रकाश नदीम	लखनऊ	उत्तर प्रदेश
22	ओसैद रहमान	नई दिल्ली	
23	करण कटारिया	भटिंडा	पंजाब
24	कालजयी घनश्याम	नई दिल्ली	
25	काशिफ़ अहसन	बांकुड़ा	प.बंगाल
26	कुमार पंकजेश	पटना	बिहार
27	कुमारी स्मृति कुमकुम	पटना	बिहार
28	के.पी.'अनमोल'	रुड़की	उत्तराखंड
29	केशव शरण	वाराणसी	उत्तर प्रदेश
30	कैलाश मनहर	जयपुर	राजस्थान
31	चैतन्य चंदन	पटना	बिहार
32	ज़फ़र महमूद	रियाज़	सऊदी अरब
33	ज़ाहिद अब्रोल	उना	हिमाचल प्रदेश
34	डॉ. अनिता सिंह	मुज़फ्फ़रपुर	बिहार
35	डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव	पटना	बिहार
36	डॉ. अब्दुल क़ादिर	नई दिल्ली	

क्र.	शायर का नाम	शहर	राज्य
37	डॉ. आदर्श मिश्रा 'साहिबा'	पुणे	महाराष्ट्र
38	डॉ. आरती कुमारी	मुज़फ्फ़रपुर	बिहार
39	डॉ. कविता विकास	धनबाद	झारखण्ड
40	डॉ. कृष्ण कुमार नाज़	मुरादाबाद	उत्तर प्रदेश
41	डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति	राउरकेला	ओड़िसा
42	कृष्ण कुमार 'बेदिल'	मेरठ	उत्तर प्रदेश
43	डॉ. नलिनी विभा नाज़ली	हमीरपुर	हिमाचल प्रदेश
44	डॉ. नूतन सिंह	जमुई	बिहार
45	डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	गाज़ियाबाद	उत्तर प्रदेश
46	डॉ. भावना	मुज़फ्फ़रपुर	बिहार
47	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	पटना	बिहार
48	डॉ. यास्मीन मूमल	शाहजहाँपुर,मेरठ	उत्तर प्रदेश
49	डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता शलभ	जीरकपुर	पंजाब
50	डॉ. शमा नासमीन नाज़ाँ	पटना	बिहार
51	डॉ. श्याम सखा श्याम	पंचकूला	हरियाणा
52	डॉ. सीमा विजयवर्गीय	अलवर	राजस्थान
53	डॉ. सुधा सिन्हा सावी	पटना	बिहार
54	तारा चन्द नादान	नई दिल्ली	
55	दिल सीकरी	सीकर	राजस्थान
56	दिनेश तपन	भागलपुर	बिहार
57	दीपक पुरोहित	जयपुर	राजस्थान
58	देववंश दुबे	जयपुर	राजस्थान
59	देवेंद्र गौतम	ग़ाज़ियाबाद	उत्तर प्रदेश
60	धर्मेन्द्र गुप्ता साहिल	वाराणसी	उत्तर प्रदेश
61	नवीन सी चतुर्वेदी	मुंबई	महाराष्ट्र
62	नसर आलम नसर	पटना	बिहार
63	निरूपमा चतुर्वेदी रूपम	जयपुर	राजस्थान
64	निर्मला कपिला	नया नंगल जिला रोपड़	पंजाब
65	नीरज गोस्वामी	जयपुर	राजस्थान
66	पूनम सिन्हा श्रेयसी	पटना	बिहार
67	प्यासा अंजुम	जम्मू	
68	प्रणय कुमार सिन्हा	पटना	बिहार
69	प्रमोद रामवत प्रमोद	नीमच	मध्य प्रदेश
70	प्रेम किरण	पटना	बिहार

क्र.	शायर का नाम	शहर	राज्य
71	प्रेम पहाड़पुरी	जयपुर	राजस्थान
72	प्रेम रंजन 'अनिमेष'	मुंबई	महाराष्ट्र
73	फ़रीदा अंजुम	पटना	बिहार
74	मंसूर उस्मानी	मुरादाबाद	उत्तर प्रदेश
75	मीना भट्ट	जबलपुर	मध्य प्रदेश
76	रघुविन्द्र यादव	नारनौल	हरियाणा
77	रमेश 'कँवल'	पटना	बिहार
78	रवि खंडेलवाल	इंदौर	मध्य प्रदेश
79	राजकांता राज	पटना	बिहार
80	राजेंद्र तिवारी	कानपुर	उत्तर प्रदेश
81	राजेश कुमारी राज	मुंबई	महाराष्ट्र
82	राजेश जैन राही		
83	लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'	जयपुर	राजस्थान
84	विजय वाजिद	लुधियाना	पंजाब
85	विज्ञान व्रत	गाज़ियाबाद	उत्तर प्रदेश
86	शकील सहसरामी	पटना	बिहार
87	शरद रंजन 'शरद'	पटना	बिहार
88	शुचि 'भवि'	भिलाई	छतीसगढ़
89	शुभ चन्द्र सिन्हा	पटना	बिहार
90	सईद रहमानी	कटक	ओड़िसा
91	संजीव प्रभाकर	गाँधीनगर	गुजरात
92	सतीश शुक्ल 'रक़ीब'	मुंबई	महाराष्ट्र
93	सागर सियाल कोटी	लुधियाना	पंजाब
94	साहिल मिश्र		
95	सिद्धेश्वर	पटना	बिहार
96	सुधीर कुमार प्रोग्रामर	सुल्तानगंज	बिहार
97	सुनील कुमार	पटना	बिहार
98	सुभाष पाठक ज़िया	शिवपुरी	मध्य प्रदेश
99	सुरेन्द्र नाज़	बदायूँ	उत्तर प्रदेश
100	सोनिया वर्मा	रायपुर	छतीसगढ़
101	हरिवंश प्रभात	पलामू	झारखंड
102	हिमकर श्याम	राँची	झारखण्ड
103	ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	कोलकाता	प.बंगाल

हार्दिक आभार संसूचन

अकमल नईम सिद्दीक़ी
अनिरुद्ध सिन्हा
अनिल कुमार सिंह
अनुराग सुरूर
अमित अहद
अय्यूब ख़ान बिस्मिल
अरविन्द अज़ान
अरविन्द असर
अरुण कुमार आर्य
अशोक अंजुम
अशोक भण्डारी नादिर
असग़र शमीम
असीम आमगाँवी
आनंद पाण्डेय तन्हा
आराधना प्रसाद
एक़बाल दानिश
एकराम हुसैन शाद
एजाज़ उल हक़ शिहाब
ऐनुल बरौलवी
ओंकार सिंह विवेक
ओम प्रकाश नदीम
ओसैद रहमान
करण कटारिया
कालजयी घनश्याम
काशिफ़ अहसन
कुमार पंकजेश
कुमारी स्मृति कुमकुम
के.पी.'अनमोल'
केशव शरण
कैलाश मनहर

चैतन्य चंदन
ज़फ़र महमूद
ज़ाहिद अब्रोल
डॉ. अनिता सिंह
डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
डॉ. अब्दुल क़ादिर
डॉ. आदर्श मिश्रा 'साहिबा'
डॉ. आरती कुमारी
डॉ. कविता विकास
डॉ. कृष्ण कुमार नाज़
डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति
डॉ. कृष्ण कुमार 'बेदिल'
डॉ. नलिनी विभा नाजली
डॉ. नूतन सिंह
डॉ. ब्रह्मजीत गौतम
डॉ. भावना
डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
डॉ. यास्मीन मूमल
डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता शलभ
डॉ. शमा नासमीन नाज़ाँ
डॉ. श्याम सखा श्याम
डॉ. सीमा विजयवर्गीय
डॉ. सुधा सिन्हा 'सावी'
तारा चन्द नादान
दिल सीकरी
दिनेश तपन
दीपक पुरोहित
देववंश दुबे
देवेंद्र गौतम
धर्मेन्द्र गुप्ता साहिल

नवीन सी चतुर्वेदी
नवीन माथुर पंचोली
नसर आलम नसर
निर्मला कपिला
निरूपमा चतुर्वेदी रूपम
नीरज गोस्वामी
प्यासा अंजुम
पूनम सिन्हा श्रेयसी
प्रमोद रामावत
प्रणय कुमार सिन्हा
प्रेम किरण
प्रेम पहाड़पुरी
प्रेम रंजन 'अनिमेष'
फ़रीदा अंजुम
मंसूर उस्मानी
मीना भट्ट
रघुविन्द्र यादव
रमेश 'कँवल'
रवि खंडेलवाल
राजकांता राज
राजेंद्र तिवारी
राजेश कुमारी राज
राजेश जैन राही

लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'
विजय वाजिद
विजय कुमार स्वर्णकार
विज्ञान व्रत
शकील सहसरामी
शरद रंजन 'शरद'
शुचि 'भवि'
शुभ चन्द्र सिन्हा
सईद रहमानी
संजीव प्रभाकर
सतीश शुक्ल 'रक़ीब'
सागर सियालकोटी
साहिल मिश्र
सिद्धेश्वर
सुधीर कुमार प्रोग्रामर
सुनील कुमार
सुभाष पाठक ज़िया
सुरेन्द्र नाज़
सोनिया वर्मा
हरिवंश प्रभात
हिमकर श्याम
ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

जिनकी ग़ज़लों की ख़ूबसूरती ने 2021 की ग़ज़लों की नुमाइन्दगी में इज़ाफ़ा किया

रमेश 'कँवल'
चेयरमैन पर्सन
बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना